

बून्दी जिले में चावल उद्योग का
स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप
**SPATIO-TEMPORAL PATTERN OF RICE
INDUSTRY IN DISTRICT BUNDI**

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (भूगोल) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थी

मीठा लाल मीणा



शोध पर्यवेक्षक

डॉ. बाबू लाल शर्मा

भूगोल विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

2021

प्रमाण पत्र

मुझे प्रमाणित करते हुए प्रसन्नता हो रही है, कि शोध प्रबन्ध “बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप” “SPATIO-TEMPORAL PATTERN OF RICE INDUSTRY IN DISTRICT BUNDI” शोधार्थी मीठा लाल मीणा (RS/586/13) ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के सामाजिक विज्ञान संकाय में पीएच.डी. (भूगोल) के नियमानुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ मेरे पर्यवेक्षण में पूर्ण किया है।

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क पूर्ण किया है।
2. शोधार्थी ने 200 दिन के आवासीय आवश्यकता नियम को पूरा किया है।
3. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार समय-समय पर अपने कार्य का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है।
4. शोधार्थी ने विभाग व संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी द्वारा यू.जी.सी. से अनुमोदित शोध-पत्रिका में शोध पत्र का प्रकाशन किया गया है।

मैं इस शोध प्रबन्ध को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा को पीएच.डी. उपाधि प्रदत्त किये जाने हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुशंसा करता हूँ।

दिनांक :

स्थान : कोटा

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. बाबू लाल शर्मा

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D. thesis titled “बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप” “SPATIO-TEMPORAL PATTERN OF RICE INDUSTRY IN DISTRICT BUNDI” by **Meetha Lal Meena (RS/586/13)** has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

- a. Thesis has significant new work/Knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim for previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.
- b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of other have been presented as author's own work.
- c. There is no fabrication of data or result which have been compiled and analyzed.
- d. There is no falsification by manipulation research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or result such that the research is not accurately represented in the research record.
- e. The thesis has been checked using ‘**Urkund**’ software and found within limits as per HEC plagiarism policy and instructions issued from time to time.

(Meetha Lal Meena)

Research Scholar

Place : Kota

Date :

(Dr. Babu Lal Sharma)

Research Supervisor

Place : Kota

Date:

शोध सार

बून्दी जिले में धान की कृषि तथा चावल उद्योग परस्पर पूरक आर्थिक क्रियाएँ हैं। प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य “बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप” का अध्ययन करना रहा है। धान की कृषि बून्दी जिले के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की रीढ़ है। प्रस्तुत शोध प्रबन्धन का सार इस प्रकार है—

बून्दी जिले की आकृति अनियमित समलम्ब चतुर्भुज के समान है। जिले की भौगोलिक सीमाएँ 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22वां स्थान है। बून्दी जिले की भौगोलिक सीमा टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, सवाई माधोपुर तथा कोटा जिलों से लगती हैं। बून्दी जिले में 6 तहसीलें (बून्दी, नैनवां, केशवरायपाटन, हिण्डोली, इन्द्रगढ़ तथा तालेड़ा) हैं। बून्दी जिले में सिंचित क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हुई है और यही वृद्धि जिले में धान की पैदावार के लिए सहायक है। बून्दी जिले में जनसंख्या का प्रारूप एवं प्रतिरूप औद्योगिक अर्थव्यवस्था को विशेष प्रकार से प्रभावित करता है।

जिला बून्दी में मुख्यतः बासमती चावल तथा खाद्य तेल उत्पादित किया जाता है। बासमती चावल का निर्यात बून्दी जिले से भारत में ही नहीं, अपितु कुवैत, सऊदी अरब, ईराक, ईरान, जकार्ता, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया आदि को भी किया जाता है। बून्दी जिले से खाद्य तेल व खली का निर्यात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात आदि राज्यों को किया जाता है।

जिला बून्दी प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला जिला रहा है। यहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 68.78 प्रतिशत भाग कृषि एवं सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है। अनुकूल भौगोलिक दशाओं के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार की फसलें यथा—चावल, गन्ना, सरसों, सोयाबीन आदि फसलों का उत्पादन होता है। बून्दी जिले में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली फसलों में क्रमशः गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, धान एवं उड़द हैं। बून्दी जिले के कृषि

उत्पादन प्रतिरूप में तहसील स्तर पर पर्याप्त भिन्नता पाई गई है, जिन तहसीलों में सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में हैं, वहाँ पर कृषि उत्पादन अधिक पाया गया है।

बून्दी जिले में विगत 21वर्षों के दौरान चावल उत्पादक क्षेत्र में 85.10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 से वर्ष 2014-15 में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत बून्दी, नैनवां, हिण्डोली तथा इन्द्रगढ़ तहसील में वृद्धि एवं केशवरायपाटन तहसील में कमी पाई गई है। 21 वर्षों के दौरान सर्वाधिक वृद्धि नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुई है। बून्दी जिले में कृषि उत्पादकता एक प्रकार से क्षेत्र के उत्पाद का गुणांक सम्बोधन है। कृषि उत्पादकता अभिवृद्धि में जिले के जिन कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है, उनमें भौतिक पृष्ठभूमि के अलावा उन्नतशील बीज, उर्वरक, सिंचाई एवं यंत्रीकरण है।

बून्दी जिले में चावल के उत्पादन में अधिक तीव्र गति से वृद्धि हुई है। जिसमें वर्ष 1994-95 से 2014-15 के दौरान 108.29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। जिले में धान की कृषि के अन्तर्गत कुल उत्पादन खाद्यान्नों के उत्पादन का 24.19 प्रतिशत एवं समस्त अनाज उत्पादन का 26.80 प्रतिशत है। बून्दी जिले में सर्वाधिक धान उत्पादक क्षेत्र बून्दी तहसील में 28427 हेक्टेयर है जो कुल जिले का 82.28 प्रतिशत क्षेत्र रखता है। जिले में चावल उत्पादक क्षेत्रफल में प्रथम स्थान पर बून्दी तहसील तथा द्वितीय स्थान पर केशवरायपाटन तहसील है।

वर्ष 1998-99 का वर्ष बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्वर्णयुग था क्योंकि इस वर्ष चावल उद्योगों ने 1.50 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। वर्तमान समय में बून्दी जिले में 32 चावल मिलें कार्यरत हैं। बून्दी जिले में वर्ष 1991 में सर्वाधिक औद्योगिक लब्धि सूचकांक नैनवां तहसील में 1.47 है। जिसका प्रमुख कारण नैनवां तहसील में लघु व ग्रामीण स्तर पर तेल घाणी उद्योग, गुड़-खांडसारी उद्योग, दाल-मसाला उद्योग, आटा पिसाई उद्योग, फर्नीचर उद्योग, इलेक्ट्रिक उद्योग कार्यरत होना है, जिनमें तहसील की लगभग 1.36 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है जो बून्दी जिले में सर्वाधिक है।

स्थानिक लब्धि सूचकांक की दृष्टि से बून्दी तहसील वर्ष 1991 में अन्तिम स्तर पर एवं वर्ष 2011 में तृतीय स्तर पर रही।

बून्दी जिले की कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 2.12 प्रतिशत भाग औद्योगिक कार्यों में संलग्न हैं। उद्योगों का विकास व्यापार तथा परिवहन के विकास का पूरक माना जाता है, क्योंकि उद्योगों से तैयार माल व्यापार तथा परिवहन के माध्यम से स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जाता है। बून्दी जिले में फसल प्रतिरूप में विभिन्नता के कारण विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों का विकास अधिक हुआ है। राजस्थान राज्य उद्योग विकास और निवेश निगम लिमिटेड द्वारा बून्दी जिले में 6 औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है, जिनमें बाईपास रोड़, चित्तौड़गढ़, नैनवां रोड़, गोविंदपुर बावड़ी, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमंडी एवं हट्टीपुरा क्षेत्र है। बून्दी जिले में कुल औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत 208.36 एकड़ भूमि आवंटित है।

बून्दी जिले में चावल उद्योगों की दशा को जानने के लिए कच्चा माल, बाजार, श्रम तथा आधारभूत सुविधाओं परिवहन, ऊर्जा, श्रमिक, पूंजी, तकनीक, प्रबंधन व मशीनरी जैसे कारकों को आधार मानकर अध्ययन किया है। उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के निवास स्थान के आधार पर उनके रोजगार, पारिवारिक स्थिति, उद्योग से प्राप्त आय का अध्ययन किया गया है। फलस्वरूप ज्ञात हुआ है कि श्रमिकों की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विकास निम्न से मध्य स्तर का है। बून्दी जिले में चावल उद्योग निरन्तर प्रगति के पथ पर है, किन्तु चावल उद्योग बून्दी व राजस्थान के नागरिकों के अलावा बाह्य राज्यों यथा— उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल के नागरिकों को ही अधिक रोजगार प्रदान कर रहा है।

बून्दी जिले में चावल आधारित उद्योगों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले के औद्योगिक भू-दृश्य में कृषि आधारित उद्योगों की प्रधानता है, किन्तु बून्दी जिले में धान उत्पादन की संभावनाओं तथा चावल आधारित उद्योगों की वर्तमान दशा के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चावल आधारित उद्योगों का विकास विद्यमान संभावनाओं की तुलना में पर्याप्त नहीं हो पाया है जिसका प्रमुख कारण चावल आधारित उद्योगों के विकास में विद्यमान बाधक निम्न

समस्याएँ हैं —बून्दी जिले का कृषि उत्पादन प्रतिरूप निरन्तर परिवर्तनशील रहा है। जिले में सिंचाई की सुविधाएँ भी कृषि क्षेत्र व कृषि उत्पादन की तुलना में अपर्याप्त हैं। जिला बून्दी धान की विभिन्न उत्तम किस्मों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है किन्तु धान उत्पादक किसानों को भी प्रशासन व सरकार की उदासीन नीतियों तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है।

बून्दी जिले में चावल आधारित उद्योगों के प्रबन्धन व नीति निर्धारण हेतु निम्न **सुझाव** क्रियान्वित किये जाने चाहिये —औद्योगिक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार एवं सिंचाई व्यवस्थाओं में सुधार करने की आवश्यकता है। कृषकों को रियायती दरों पर कृषि ऋण, कृषि यंत्र व उपकरणों पर सरकारी सहायता एवं उर्वरकों की यथा समय पर उपलब्धता की जावें। जिले में “कृषि व कृषि उद्योग विकास संस्थान” की स्थापना, “राजकीय कृषि उद्योग प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना”, जिले के कृषि आधारित उद्योगों में प्राचीन मशीनरी व तकनीकी का अपेक्षाकृत नवीन तकनीकी से प्रतिस्थापन पर बल दिया जाए। जिला उद्योग केन्द्र में प्रबन्धकीय क्षमता से दक्ष व्यक्तियों की नियुक्ति की आवश्यकता है। बून्दी जिले में धान उत्पादन में वृद्धि हेतु सिंचाई सुविधाओं का विकास इस रूप में किया जाना चाहिए ताकि चम्बल नदी (कोटा बैराज) की बायीं नहर से सिंचित होने वाले अंतिम सिरे तक पानी की उपलब्धता हो, जिससे प्रति एकड़ उपज में वृद्धि हो सके और उद्योगों को पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध हो सके। चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं की समय-समय पर मेडिकल कैंप लगाकर जांच करने की व्यवस्था उद्योग प्रबंधक द्वारा की जाए।

प्रस्तुत शोध प्रबन्धन के क्रियान्वयन से बून्दी जिले के चावल आधारित उद्योगों के विकास एवं अवस्थापना को नई दिशा प्रदान किया जाना संभव है, साथ ही इससे जिले के सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा तथा भारत में जिला बून्दी चावल आधारित उद्योगों के विशिष्ट केन्द्र के रूप में उभरेगा।

घोषणा शोधार्थी

मैं **मीठा लाल मीणा** (शोधार्थी-भूगोल विभाग) यह घोषणा करता हूँ, कि मेरा यह शोध-प्रबन्ध “**बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप**” “**SPATIO-TEMPORAL PATTERN OF RICE INDUSTRY IN DISTRICT BUNDI**” जो मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है, यह मेरा अपना शोध कार्य है। मैंने यह शोध कार्य **डॉ. बाबू लाल शर्मा**, शोध पर्यवेक्षक, भूगोल, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा के निर्देशन में पूरा किया है। यह मेरा अपना मौलिक कार्य है। मैंने अपने विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है और जहाँ दूसरे विचारों व शब्दों का प्रयोग किया है, वह मेरे द्वारा मान्य स्रोतों से लिया गया है। अपरिहार्य स्थिति में ली गई ऐसी हर सामग्री का यथास्थान सन्दर्भ एवं आभार व्यक्त कर दिया गया है, जो कार्य इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि मैंने विश्वविद्यालय के सभी अकादमिक नियमों का निष्ठा एवं ईमानदारी से पालन किया है तथा किसी तथ्य को गलत प्रस्तुत नहीं किया है। मैं समझता हूँ कि मेरे द्वारा किसी भी नियम उल्लंघन पर मेरे खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही की जा सकती है। मेरे खिलाफ जुर्माना भी लगाया जा सकता है यदि मैंने किसी स्रोत से बिना उसका नाम दर्शाये या जिस स्रोत से अनुमति की आवश्यकता हो, बिना अनुमति के लिया हो।

दिनांक :

स्थान : कोटा

मीठा लाल मीणा

शोधार्थी

(RS/586/13)

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी **मीठा लाल मीणा (RS/586/13)** द्वारा दी गई उपर्युक्त सभी सूचनाएँ मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

दिनांक :

स्थान : कोटा

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. बाबू लाल शर्मा

प्राक्कथन

संसार में प्रत्येक प्राणी किसी न किसी अभिलाषा के साथ जीवन व्यतीत करता है। प्राणी अपने किये गये कार्यों के आधार पर समाज में अपना अस्तित्व निर्धारित करता है। बाल्यावस्था से ही मेरा जीवन ग्रामीण परिवेश का होने के कारण मैं हमेशा प्रकृति से प्रभावित रहा हूँ। प्राकृतिक घटनाएँ हमेशा हमें कुछ नया संदेश देना चाहती हैं। पृथ्वी के प्रति मेरी इन्ही प्रवृत्तियों ने रुचि दिखाई एवं अध्ययन विषय में भूगोल को अपनी प्राथमिकता दी।

जिन्दगी के बढ़ते सफर में जब मैंने बून्दी जिले में चावल उद्योग को देखा तो मेरे दिलो-दिमाग में चावल उद्योग को पूर्णरूप से जानने की इच्छा जाग्रत हुई और कल्पना करते हुए इस पर शोध करने का मन बना। इससे प्रभावित होकर मैंने शोध हेतु अपने आप को तैयार किया और जिसे पूर्ण करने का कोटा विश्वविद्यालय, कोटा ने अवसर प्रदान किया।

इस शोध को साकार रूप देने का कार्य मेरे शोध पर्यवेक्षक पूज्यवर श्रद्धेय डॉ. बाबू लाल शर्मा, प्राचार्य (से.नि.) भूगोल विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा ने किया। आपने अपने सत्परामर्श एवं कृपापूर्ण व्यवहार से मेरे अध्ययन का मार्गदर्शन ही नहीं किया अपितु समय-समय पर सत्प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देकर मुझे निरंतर कार्य में संलग्न रखा। आपके प्रति अपनी भावनाओं को श्रद्धापूर्वक व्यक्त करके भी मैं आपके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता हूँ।

मैं, मेरे आदरणीय गुरुजन डॉ. एन. के. जैतवाल, डॉ. संदीप यादव, डॉ. एम. जेड. ए. खॉन, डॉ. एल.सी. अग्रवाल, डॉ. जे.पी. शर्मा, डॉ. हरिनारायण कोली, श्रीमती रेणु शर्मा एवं श्रीमती सीमा चौहान का विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे शोध अध्ययन के दौरान न केवल प्रोत्साहित किया अपितु समय-समय पर सुझाव एवं मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

मैं अपने पिता श्री गोपी लाल मीणा, माता श्रीमती कस्तुरी मीणा, बड़े भाई डॉ. हरिराम मीणा, पप्पू लाल, छोटे भाई राकेश एवं हरिभजन का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने शोध कार्य पूरा करने में पारिवारिक वातावरण प्रदान किया।

मैं मेरे प्रिय मित्र डॉ. सुरेश मीणा, डॉ. तोताराम मीणा, डॉ. बुद्धि प्रकाश गौतम, डॉ. भारतेन्दु गौतम, डॉ. मनीष चौरसिया, अजय कुशवाह, मयंक गौतम, वरुण शर्मा, राकेश राजोरा आदि का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर आवश्यक सुझाव व सहयोग प्रदान किया।

मैं मेरे मित्र सत्यनारायण नागर (मानचित्रकार) शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने शोध कार्य हेतु मानचित्र तैयार करने में सतत मार्गदर्शन प्रदान किया।

अन्त में मैं धर्मपत्नी श्रीमती गरिमा मीणा, पुत्र प्रत्युष एवं पुत्री सोनाक्षी के लिए स्वयं को निःशब्द पाता हूँ जिन्होंने शोध अवधि के दौरान मेरी अनुपलब्धता में भी स्वयं को सहज बनाये रखा और मेरे लक्ष्य प्राप्ति में किसी प्रकार का अवरोध नहीं आने दिया।

इस शोध प्रबन्ध के कलात्मक एवं त्रुटि रहित मुद्रण कार्य के लिए मैं कम्प्यूटर ऑपरेटर, श्री योगेश कुमार नामा, निकुंज कम्प्यूटर एण्ड जॉब वर्क सेन्टर, केशवपुरा, कोटा (राज.) को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तता और व्यक्तिगत कार्यों की मजबूरी के बाद भी अथक सहयोग प्रदान किया उनके सहयोग से ही अपने शोध प्रबन्ध को इच्छित समय में प्रस्तुत करने में मैं समर्थ हो पाया हूँ। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को शुद्ध करने का मैंने यथा सम्भव प्रयास किया है फिर भी टंकण सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हो, तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

अन्त में मैं उपर्युक्त महानुभावों के साथ-साथ सर्वशक्तिमान ईश्वर का हृदय के अन्तरतम से कृतज्ञ हूँ, जिनकी असीम कृपा से यह गूढ़ कार्य सम्पन्न होकर वर्तमान कलेवर में प्रस्तुत हुआ।

स्थान : कोटा
दिनांक :

मीठा लाल मीणा
शोधार्थी, भूगोल
पंजीयन क्रमांक RS/586/13
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज.)

अनुक्रमणिका

अध्याय सं.	विषय	पृष्ठ सं.
प्रथम अध्याय	शोध विषय एक परिचय	1-16
	1.1 परिचय	
	1.2 धान की ऐतिहासिक समीक्षा	
	1.3 चावल की उपयोगिता	
	1.4 शोध विषय का चयन	
	1.5 शोध विषय का महत्व	
	1.6 साहित्य समीक्षा	
	1.7 शोध के उद्देश्य	
	1.8 शोध परिकल्पनाएँ	
	1.9 शोध विधि तन्त्र	
	1.10 अध्याय योजना	
	संदर्भ सूची	
द्वितीय अध्याय	बून्दी जिले का भौगोलिक स्वरूप	17-61
	2.1 अध्ययन क्षेत्र : एक परिचय	
	2.2 अवस्थिति एवं विस्तार	
	2.3 उच्चावच व भू-आकृति	
	2.4 भूगर्भिक संरचना	
	2.5 अपवाह तंत्र	
	2.6 मृदा संसाधन	
	2.7 वनस्पति एवं वन्य जीव	
	2.8 जलवायु	
	2.9 खनिज संसाधन	
	2.10 पशु संसाधन	
	2.11 सिंचाई	
	2.12 जनसंख्या संरचना	
	2.13 आर्थिक-सामाजिक विकास	
	2.14 परिवहन एवं संचार	
	2.15 व्यापार	
	2.16 पर्यटन	
	संदर्भ सूची	
तृतीय अध्याय	सामान्य भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप	62-79
	3.1 प्रस्तावना	
	3.2 बून्दी जिले का सामान्य फसल प्रारूप	
	3.3 कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारक	
	3.4 भूमि उपयोग प्रतिरूप	

	3.5 फसलों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप संदर्भ सूची	
चतुर्थ अध्याय	बून्दी जिले में धान कृषि का विकास एवं परिवर्तित स्वरूप	80—93
	4.1 धान कृषि का सामान्य परिचय	
	4.2 धान फसल को प्रभावित करने वाले कारक	
	4.3 धान फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल	
	4.4 धान फसल के अन्तर्गत उत्पादन	
	4.5 धान फसल के अन्तर्गत उत्पादकता संदर्भ सूची	
पंचम अध्याय	चावल उद्योग का स्थानीयकरण	94—109
	5.1 परिचय	
	5.2 चावल उद्योग के स्थानीयकरण के कारक	
	5.3 चावल उद्योग की स्थापना व विकास संदर्भ सूची	
षष्ठम अध्याय	बून्दी जिले में चावल उत्पादन एवं औद्योगिक स्वरूप	110—124
	6.1 परिचय	
	6.2 चावल उद्योग में चावल तैयार करने की प्रक्रिया	
	6.3 चावल उद्योग के बून्दी जिले में केन्द्रित होने के कारण	
	6.4 चावल निर्यात	
	6.5 बून्दी जिले में सम्भावित चावल उद्योग अवस्थिति	
	6.6 बून्दी जिले में औद्योगिकीकरण स्तर का मापन संदर्भ सूची	

सप्तम अध्याय	आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका	125—140
	7.1 परिचय	
	7.2 आर्थिक विकास	
	7.3 औद्योगिक क्षेत्र	
	7.4 औद्योगिक विकास	
	7.5 आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका	
	संदर्भ सूची	
अष्टम अध्याय	चावल उद्योग का विकास एवं स्थानिक प्रतिदर्श अध्ययन	141—166
	8.1 परिचय	
	8.2 चावल उद्योग का प्रतिदर्श अध्ययन	
	8.3 चावल उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का	
	विश्लेषण	
	संदर्भ सूची	
नवम अध्याय	सारांश — समस्याएँ एवं सुझाव	167—186
संदर्भ ग्रन्थ सूची		187—189
प्रकाशित शोध पत्र		
प्रश्नावली एवं परिशिष्ट		

तालिका सूची

क्र. सं.	तालिका संख्या	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	1.1	प्रमुख कृषि आधारित उद्योग	7
2.	1.2	जिला बून्दी : प्रतिदर्श के रूप में चयनित चावल उद्योग एवं उत्तरदाता	13
3.	2.1	जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना (2016-17)	17
4.	2.2	जिला बून्दी : वन एवं वनों का प्रतिरूप	30
5.	2.3	जिला बून्दी : वनों का क्षेत्रीय वर्गीकरण, 2015	32
6.	2.4	जिला बून्दी : वार्षिक वर्षा प्रतिरूप	35
7.	2.5	जिला बून्दी : खनिज पदार्थों का उत्पादन एवं रोजगार	38
8.	2.6	जिला बून्दी : पशु संसाधन	40
9.	2.7	जिला बून्दी : कुल सिंचित क्षेत्रफल (2014-15)	42
10.	2.8	जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप	44
11.	2.9	जिला बून्दी : जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर	46
12.	2.10	जिला बून्दी : लिंगानुपात (2011)	47
13.	2.11	जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व (2011)	48
14.	2.12	जिला बून्दी : ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या (2011)	51
15.	2.13	जिला बून्दी : अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या (2011)	52
16.	2.14	जिला बून्दी : कार्यकारी संरचना (2011)	54
17.	2.15	जिला बून्दी : सड़कें एवं उनका वर्गीकरण	56
18.	2.16	जिला बून्दी : पर्यटकों का आगमन	56
19.	3.1	जिला बून्दी : मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल (2014-15)	63

20.	3.2	जिला बून्दी : भूमि उपयोग प्रतिरूप (2004-05 से 2014-15)	69
21.	3.3	जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल	73
22.	3.4	जिला बून्दी : तहसीलानुसार कृषि उत्पादन	76
23.	4.1	जिला बून्दी : धान उत्पादन व उत्पादक क्षेत्र का तुलनात्मक प्रतिरूप	85
24.	4.2	जिला बून्दी : धान फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल	86
25.	4.3	जिला बून्दी : धान उत्पादन	90
26.	4.4	जिला बून्दी : धान उत्पादकता	91
27.	5.1	जिला बून्दी : प्रमुख चावल उत्पादक इकाइयाँ	104-105
28.	5.2	जिला बून्दी : तहसीलानुसार चावल उद्योग का वितरण प्रारूप (वर्ष-2018)	106
29.	6.1	जिला बून्दी : चावल उद्योगों की संख्या तथा चावल के उत्पादक क्षेत्र(वर्ष-2014-15)	116
30.	6.2	जिला बून्दी : उद्योगों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत	118
31.	6.3	जिला बून्दी : स्थानिक लब्धि सूचकांक	119
32.	7.1	जिला बून्दी : उद्योगों का तुलनात्मक प्रतिरूप	127
33.	7.2	जिला बून्दी : औद्योगिक क्षेत्र	129
34.	7.3	जिला बून्दी : पंजीकृत लघु-कुटीर उद्योग रोजगार व निवेश (1995-2015)	133
35.	8.1	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना	154
36.	8.2	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सामान्य सुविधा	156
37.	8.3	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना	157

38.	8.4	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का पारिवारिक खर्च	158
39.	8.5	जिला बून्दी : चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के जलापूर्ति के स्रोत	160
40.	8.6	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के घरों में ईंधन का उपयोग	162

मानचित्र सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	जिला बून्दी : अवस्थिति	19
2.	जिला बून्दी : भौतिक स्वरूप	21
3.	जिला बून्दी : धरातलीय स्वरूप	22
4.	जिला बून्दी : भूगर्भिक संरचना	24
5.	जिला बून्दी : अपवाह प्रतिरूप	26
6.	जिला बून्दी : मृदा	28
7.	जिला बून्दी : वनस्पति	31
8.	जिला बून्दी : जलवायु दशाएँ	33
9.	जिला बून्दी : चट्टाने एवं खनिज	37
10.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार जनसंख्या घनत्व (2011)	49
11.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार धान उत्पादक क्षेत्र	87
12.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार धान उत्पादक क्षेत्र में परिवर्तन (1994-95 से 2014-15)	88
13.	जिला बून्दी : चावल उत्पादक इकाइयाँ वर्ष-2018	103
14.	जिला बून्दी : धान उत्पादन क्षेत्र एवं चावल उद्योग का केन्द्रीकरण	107
15.	जिला बून्दी : बासमती चावल का निर्यात	115
16.	जिला बून्दी : धान उत्पादक क्षेत्र एवं सम्भावित चावल मिलों की अवस्थिति	117
17.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार औद्योगीकरण स्तर (वर्ष-1991)	120
18.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार औद्योगीकरण स्तर (वर्ष-2011)	121
19.	जिला बून्दी : तहसीलानुसार औद्योगीकरण स्तर में परिवर्तन(1991 से 2011)	123

20.	जिला बून्दी : औद्योगिक क्षेत्र	128
21.	जिला बून्दी : औद्योगिक प्रतिरूप वर्ष-2018	131
22.	जिला बून्दी : चावल उद्योग की प्रतिदर्श अवस्थिति	142

आरेख सूची

क्र. सं.	आरेख संख्या	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	2.1	जिला बून्दी : वर्षा परिवर्तनशीलता प्रारूप	36
2.	2.2	जिला बून्दी : पशु संसाधन प्रतिरूप (2012)	40
3.	2.3	जिला बून्दी : शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रारूप (2006 से 2015)	42
4.	2.4	जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप (2001 एवं 2011)	44
5.	2.5	जिला बून्दी : जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर	46
6.	2.6	जिला बून्दी : लिंगानुपात (2011)	47
7.	2.7	जिला बून्दी : कॉलेज स्तर पर छात्र संख्या (2014-15)	50
8.	2.8	जिला बून्दी : अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या (2011)	53
9.	3.1	जिला बून्दी : मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल (वर्ष 2014-15)	63
10.	3.2	जिला बून्दी : भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2004-05)	70
11.	3.3	जिला बून्दी : भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2014-15)	70
12.	3.4	जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल	74
13.	3.5	जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत तहसीलानुसार क्षेत्रफल (वर्ष 2014-15)	74
14.	3.6	जिला बून्दी : तहसीलानुसार कृषि उत्पादन (वर्ष 2014-15)	77
15.	3.7	जिला बून्दी : प्रमुख फसलों का औसत उत्पादन (वर्ष 2014-15)	77
16.	4.1	जिला बून्दी : धान उत्पादक क्षेत्रफल की प्रवृत्ति	86
17.	4.2	जिला बून्दी : धान उत्पादन	90
18.	4.3	जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता (1995-96 से 2015-16)	92

19.	5.1	जिला बून्दी : चावल उद्योग का प्रतिरूप	108
20.	6.1	जिला बून्दी : औद्योगीकरण का स्तर	119
21.	7.1	जिला बून्दी : आवंटित औद्योगिक क्षेत्र	129
22.	7.2	जिला बून्दी : उद्योगों का विकास	132
23.	7.3	जिला बून्दी : पंजीकृत लघु-कुटीर उद्योग रोजगार व निवेश (1995-2015)	134
24.	7.4	जिला बून्दी : आशुतोष चावल उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक	136
25.	7.5	जिला बून्दी : श्री शंकर उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक	136
26.	7.6	जिला बून्दी : राज राइस मिल के अन्तर्गत श्रमिक	138
27.	7.7	जिला बून्दी : पैरामाउंट चावल उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक	138
28.	8.1	जिला बून्दी: आशुतोष चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन	144
29.	8.2	जिला बून्दी: श्री शंकर चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन	144
30.	8.3	जिला बून्दी: राज राइस मिल के अन्तर्गत उत्पादन	149
31.	8.4	जिला बून्दी: पैरामाउंट चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन	149
32.	8.5	जिला बून्दी : श्रमिकों में शिक्षा का स्तर	151
33.	8.6	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना	154
34.	8.7	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सामान्य सुविधा	156
35.	8.8	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का पारिवारिक खर्च	158
36.	8.9	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के घरों में शौचालय की स्थिति	160
37.	8.10	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के जलापूर्ति के स्रोत	161
38.	8.11	जिला बून्दी : कार्यरत श्रमिकों के घरों में ईंधन का उपयोग	162
39.	8.12	जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधा	164

छायाचित्र

क्र. सं.	छायाचित्र संख्या	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	2.1	जिला बून्दी : तारागढ़ दुर्ग	57
2.	2.2	जिला बून्दी : सुखमहल एवं जैत सागर	57
3.	2.3	जिला बून्दी : चौरासी खम्भों की छतरी	58
4.	2.4	जिला बून्दी : नवल सागर	58
5.	8.1	जिला बून्दी : आशुतोष चावल उद्योग	145
6.	8.2	जिला बून्दी : श्री शंकर उद्योग	145
7.	8.3	जिला बून्दी : राज राइस मिल	147
8.	8.4	जिला बून्दी : पैरामाउंट चावल उद्योग	147

प्रथम अध्याय
शोध विषय एक परिचय

प्रथम अध्याय शोध विषय एक परिचय

1.1 परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि का इतिहास भारत में सिन्धु घाटी सभ्यता से भी प्राचीन माना जाता रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में भी, जबकि पूरे विश्व में कृषि योग्य भूमि घटती नजर आ रही है, ऐसे में भी कृषि योग्य भूमि की दृष्टि से भारत विश्व में द्वितीय स्थान पर है। यदि सन् 2018 के आंकड़ों पर दृष्टि डाले तो कृषि कार्यों में भारत की लगभग 50 प्रतिशत श्रमिक क्षमता लगी हुई, जो कि भारत की विकास दर या जी.डी.पी. में 17-18 प्रतिशत का योगदान भी करती है। यदि फसलों के उत्पादन की दृष्टि से या उसमें प्राप्त विविधता की दृष्टि से देखें तो भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है।¹

भारत की अधिकांश जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि आजीविका का प्रमुख आधार है, यह एक जीवन शैली है, जिस पर मानव की सभ्यता, सांस्कृतिक धरोहर एवं सामाजिक व्यवस्था निर्भर करती है। कृषि से विविध उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त होता है, जो देश में विनिर्माण उद्योग प्रक्रिया में अनेकों उत्पाद के रूप जन्म लेते हैं। यही उत्पाद मानव समाज एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। आज भी देश की लगभग 60 से 70 प्रतिशत जनसंख्या सीधे रूप से कृषि रूपी रोजगार से जुड़ी हुई है।²

मानव आदिकाल से ही अपनी संस्कृति के विकास क्रम में विभिन्न प्रकार के उद्यमों, व्यवसायों और आर्थिक क्रियाकलापों में लगा रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा है। ज्यों-ज्यों जनसंख्या वृद्धि एवं विकास की सीमाएँ बढ़ती गईं त्यों-त्यों आवश्यकताएँ भी बढ़ती गईं, जिनका निराकरण केवल स्थायी जीवन के कृषि एवं उद्योग जैसे व्यवसाय से ही सम्भव है।

कृषि के व्यापक अर्थ को उसके अंग्रेजी समानार्थी शब्द "Agriculture" की व्युत्पत्ति से आंशिक रूप से समझा जा सकता है। यह शब्द लैटिन भाषा के "एगर" (Ager - Field or Soil) तथा "कल्चर" (Culture - The Care of, The Tilling of) से बना है, जिसका अर्थ है— "भूमि को जोतकर फसल पैदा करना"।³

जिम्मरमैन ने कृषि की व्याख्या कृषि में किये जाने वाले उन सभी क्रिया कलाओं के आधार पर की है, जिसमें उन्होंने माना कि भूमि से सम्बन्धित मानव द्वारा किये गए सभी उत्पादन कार्य कृषि है, यथा— पशुपालन, फसल उगाना, वृक्ष लगाना, सिंचाई करना, फार्मिंग करना, मछली पालन आदि।⁴

कृषि जहाँ एक ओर खाद्यान्नों की पूर्ति करती है, वहीं दूसरी ओर अनेक उद्योगों को कच्चा माल भी प्रदान करती है। कृषि पर आधारित उद्योगों में बून्दी जिले में चावल उद्योग महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में कृषि के क्षेत्र में औद्योगिक क्रान्ति से विशिष्टीकरण हुआ है। फरवरी, 2018 को वित्तमंत्री द्वारा संसद में पेश बजट में चार क्षेत्रों पर विशेष जोर दिया है। जिनमें कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र, बुनियादी संरचना, स्वास्थ्य एवं एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रमों) के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराना रखा गया है।

वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री ने केन्द्रीय बजट 2018—19 में मध्यम, लघु और सूक्ष्म उद्यमों के लिए 3794 करोड़ रुपये प्रावधान की घोषणा करते हुए कहा कि इस क्षेत्र को ऋण सहायता, पूंजी और ब्याज सब्सिडी तथा नवप्रयोग उपलब्ध कराने के लिए प्रावधान किया गया है⁵ अतः स्पष्ट है कि देश कृषि आधारित औद्योगिक क्षेत्र की ओर अग्रसरित हो रहा है।

इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र जिला बून्दी में भी कृषि आधारित औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि हो रही है, जहाँ कृषि आधारित औद्योगिक दृष्टि से चावल उद्योग एवं तेल उद्योग के क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

1.2 धान की ऐतिहासिक समीक्षा

धान के पौधे का वैज्ञानिक नाम 'ओरिजा सेटिवा' (Oryza sativa) है, जो एक नम तथा आर्द्र जलवायु का पादप है।⁶

धान एक प्रकार से जंगली घास के रूप में जाना जाता था, जिसका विस्तार हिमालय की पूर्वी तलहटी में फैला हुआ था। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी उत्पत्ति दक्षिणी भारत में हुई है, जहाँ से यह उत्तरी भारत होता हुआ चीन गया। चीन से धान का पौधा कोरिया एवं 2000 बी.सी. तक यह फिलिपींस पहुँचा। 100 बी.सी. में जापान तथा इंडोनेशिया में उपजाया जाने लगा। 327 बी.सी. में इसे अलेक्जेंडर द्वारा भारत लाया गया तथा बाद में ग्रीक पहुँचा। अरबवासियों द्वारा यह इजिप्त, मोरक्को, स्पेन तथा धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों तक पहुँचा। संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1685 ई. में उत्तरी कैरोलिना और जोर्जिया में चावल की खेती की गयी।⁷

प्रारम्भ में चावल का उत्पादन पूरे विश्व में बहुत ही धीमी गति से हुआ किन्तु धीरे-धीरे यह लोगों के लिए प्रमुख कृषि एवं आर्थिक उत्पादन की प्राथमिकता बन गया। वर्तमान में भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग चावल उत्पादन करता है। भारत चावल उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान रखता है, जहाँ विश्व का 21 प्रतिशत चावल उत्पादन होता है।⁸ भारत में चावल की तीन फसलें प्रतिवर्ष उगायी जाती हैं – 1. ओस, 2. अमन तथा 3. बोरो।

आज चावल दैनिक भोजन का महत्वपूर्ण अंग बन गया है, जिसे अमीर व गरीब दोनों की थाली में परोसा जाता है। हिन्दू समाज के पर्व व त्योहार के धार्मिक कार्यों में चावल विशेष महत्व रखता है। भारत में हस्तिनापुर में चावल के जो साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, वह विश्व में सबसे पुराने साक्ष्य माने गए हैं। इस प्रकार दक्षिण-पश्चिम हिमालय क्षेत्र से जो चावल के प्रकार तथा किस्में प्राप्त हुई हैं, उस आधार पर इसे चावल का उत्पत्ति स्थान माना जाता है।

डी कोन्डोले (1886) तथा वॉट (1862) के अनुसार भी दक्षिण भारत को चावल की उत्पत्ति का केन्द्र माना है। डी. चटर्जी (1948) के अनुसार ओरिजा सेटिवा की 24 जातियाँ पाई जाती हैं, जिसमें से 21 जंगली तथा केवल 2 प्रजातियाँ खेती में पाई जाती हैं, जो ओरिजा सेटिवा तथा ओरिजा म्लेनेरिमा के नाम से जानी जाती हैं।

ओरिजा सेटिवा सभी चावल उत्पादन क्षेत्रों में पाई जाती है, लेकिन ओरिजा म्लेनेरिमा केवल पश्चिमी अफ्रीका में ही पाई जाती है। इससे पता चलता है, कि चावल उत्पादन के दो उत्पत्ति केन्द्र रहे हैं— दक्षिण-पूर्वी एशिया (भारत, म्यांमार तथा थाइलैण्ड) और पश्चिमी अफ्रीका।⁹

1.3 चावल की उपयोगिता

चावल सभ्यता, भोजन तथा उत्पादकता में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विश्व की लगभग आधी जनसंख्या चावल पर निर्भर है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2004 को “अन्तर्राष्ट्रीय चावल वर्ष” घोषित किया। वर्तमान में चावल दुनिया के लगभग 50 प्रतिशत से अधिक व्यक्तियों का महत्वपूर्ण भोजन है।⁷ विश्व का 70 प्रतिशत चावल उत्पादन केवल चार देशों में अर्थात् चीन, भारत, इण्डोनेशिया और बांग्लादेश में उत्पन्न किया जाता है।

भारत में गेहूँ के बाद चावल द्वितीय महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। चावल खरीफ के मौसम में देश की सर्वप्रमुख फसल है। देश की कुल कृषित भूमि के एक-चौथाई भाग पर इसकी खेती की जाती है। देश में धान की कृषि का विस्तार वर्षा की मात्रा और मिट्टी के गुणों से संबन्धित है। धान के प्रमुख प्रदेश भारत में उन भागों में केन्द्रित है, जहाँ वर्षा की मात्रा 100 से 200 सेन्टीमीटर तक होती है। इस प्रकार चावल का उत्पादन मानसून पर अधिक निर्भर है। भारत विश्व का 21 प्रतिशत चावल उत्पादन करता है तथा विश्व में दूसरा स्थान रखता है। देश के कुल बोए क्षेत्र के एक चौथाई भाग पर चावल बोया जाता है।¹⁰

राजस्थान में वर्ष 1996-97 में 1.74 लाख टन, 2007-08 में 2.60 लाख टन एवं वर्ष 2014-15 में 5.50 लाख टन चावल का उत्पादन किया गया। राज्य में चावल उत्पादन बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, बून्दी, कोटा, बारां, उदयपुर, हनुमानगढ़ एवं गंगानगर जिलों में होता है।¹¹

बून्दी जिला राजस्थान में चावल का प्रमुख उत्पादक जिला है जो राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में आर्द्र दक्षिणी-पूर्वी मैदानी क्षेत्र

(खण्ड—अ) कृषि जलवायु प्रदेश में विस्तृत है। यह क्षेत्र चम्बल—मेज नदियों के मध्यवर्ती भाग के अन्तर्गत आता है।

वर्ष 2014—15 में राज्य के कुल चावल उत्पादन (550014 मीट्रिक टन) का 20.93 प्रतिशत उत्पादन बून्दी जिले में किया गया।¹² इस प्रकार बून्दी जिला राजस्थान में चावल उत्पादन में हनुमानगढ़ के पश्चात् द्वितीय स्थान रखता है। अतः जिले में प्रचुर मात्रा में चावल उत्पादन के कारण ही चावल उद्योगों का विकास हुआ है।

1.4 शोध विषय का चयन

मनुष्य सदैव से जिज्ञासु प्रकृति का प्राणी रहा है तथा हमेशा कारण—परिणाम की खोज करता है। मानव का यह स्वभाव है, कि जो घटनाएँ या प्राकृतिक—परिस्थितियों को वह अपने आस—पास के वातावरण तथा क्षेत्र में देखता है। उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क पर अधिक गहरा होता है।

शोध विद्यार्थी के रूप में मेरे द्वारा इस क्षेत्र का चुनाव करने का उद्देश्य भी यही है, कि मैं स्वयं अपने प्रदेश की स्थिति को जान व समझ सकूँ। उक्त प्रदेश का निवासी होने तथा बाल्यावस्था से धान की फसल को देखने तथा फैंक्ट्रियों को देखने से मन हमेशा से उक्त क्षेत्र की ओर उन्मुख रहा है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने से उक्त क्षेत्र की वास्तविक परिस्थितियों को जानने की इच्छा प्रबल हुई। अतः शोध विषय—“बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक—सामयिक प्रतिरूप” का चयन किया है।

अन्य कारण में प्रथम राजस्थान में केवल बून्दी जिले में बासमती चावल का उत्पादन होना तथा भारत के चावल उत्पादन राज्यों में राजस्थान की भागीदारी नगण्य होना एवं द्वितीय यह है कि क्या कारण है कि कोटा सम्भाग में बून्दी जिले में धान का उत्पादन अन्य जिलों से अधिक क्यों है ? अतः उपरोक्त कारणों को आधार मान कर इस विषय का चयन किया गया है। हाड़ौती प्रदेश में बून्दी जिले में धान का अधिक उत्पादन होता है, किन्तु यहाँ पर चावल आधारित इकाइयों की कमी है, अतः जिले में चावल आधारित

इकाइयों की कमी के कारणों को जानने की उत्सुकता के साथ ही नवप्रवर्तन ने अध्ययन को प्रेरित किया।

1.5 शोध विषय का महत्व

चावल केवल भोजन का महत्वपूर्ण अंग ही नहीं है, बल्कि मांगलिक कार्यों का प्रतीक भी है। शुभ अवसरों पर चावल का उपयोग किया जाता है। हल्दी युक्त पीले चावल देने का तात्पर्य 'शुभ विवाह' का आमंत्रण समझा जाता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी प्रचलित है। इसी प्रकार किसी की विदाई आदि में चावल व कुमकुम का तिलक लगाकर भेंट दी व स्वीकार की जाती है, अतः भारतीय परम्परा व सभ्यता में चावल का धार्मिक महत्व भी अत्यधिक है।

चावल का प्रचलन धीरे-धीरे इतना हो गया है, कि वर्तमान समय में चावल भोजन का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। शिशु के जन्म के समय भी उसे चावल का जल पिलाया जाता है तथा उसके पश्चात् उसे चावल खाने के साथ दिये जाते हैं। यह पौष्टिक होने के साथ-साथ पाचन युक्त होता है, अतः बड़े व बच्चे आसानी से इसे पचा पाते हैं। वर्तमान समय में चावल विश्व का महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थ है तथा भारत में विशेषकर दक्षिण भारत का अति महत्वपूर्ण भोजन है।

जिला बून्दी कृषि आधारित उद्योगों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बून्दी जिले में कार्यरत चार वृहद-मध्यम स्तर के उद्योगों में तीन कृषि आधारित हैं। वृहद-मध्यम स्तर पर कृषि आधारित उद्योग बून्दी जिले में लगभग 800 व्यक्तियों तथा लघु व कुटीर उद्योग स्तर पर लगभग 5000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराते हैं। बून्दी जिले के औद्योगिक उत्पादों से होने वाली आय में चावल जैसे उत्पादों का महत्वपूर्ण स्थान है।

जिला बून्दी राजस्थान राज्य का लगभग 20 प्रतिशत चावल उत्पादित करता है तथा जिले की महत्वपूर्ण स्थिति के कारण चावल की मांग में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जिसका प्रभाव बून्दी जिले के चावल उद्योगों पर सकारात्मक नजर आ रहा है, किन्तु जिला स्तर

पर योजनाओं के अभाव तथा समन्वय की कमी के कारण योजनाओं का लाभ उद्योगों को प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

तालिका 1.1
प्रमुख कृषि आधारित उद्योग

क्र. सं.	कृषि आधारित उद्योग	प्रयुक्त कृषि उत्पाद
1	वस्त्र उद्योग	कपास
2	चीनी उद्योग	गन्ना (रस)
3	गुड-खांडसारी उद्योग	गन्ना (रस)
4	पशु आहार उद्योग	कृषि व कृषि उत्पादों से प्राप्त अवशिष्ट
5	चावल उद्योग	धान
6	खाद्य तेल उद्योग	विभिन्न तिलहन
7	दाल उद्योग	अपरिष्कृत दालें
8	बेकरी उद्योग	खाद्यान्न

किसी भी जिले में खाद्यान्न उत्पादन तथा उद्योग की किस्म उसकी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग होती है। बून्दी जिले में चावल की उत्पादकता में वृद्धि तथा उसके विकास की संभावनाएँ होने के पश्चात् भी उपयुक्त विकास न हो पाना विभिन्न कारणों को इंगित करता है। अतः सही कारणों की खोज कर उनका समुचित उपाय तथा समाधान ज्ञात कर विकास की संभावनाओं में अभिवृद्धि किया जाना संभव है।

यदि योजनाओं का प्रबन्धन तथा आयोजन तहसील स्तर पर किसानों के समन्वय द्वारा किया जाये तो प्रयास निश्चित तौर पर सफल होंगे। कृषि प्रधान जिला होने के कारण जिले का आर्थिक तथा औद्योगिक विकास कृषि के विकास पर निर्भर करता है। यदि कृषि आधारित उद्योगों तथा उत्पादों को उचित वातावरण प्रदान किया जाये तथा विभिन्न योजनाओं के द्वारा सुविधाएँ तथा पद्धतियों का

उपयोग किया जाये तो निश्चित तौर पर आर्थिक व्यवस्था में सुधार संभव है।

बून्दी जिले में चावल उद्योग से सम्बन्धित शोध कार्य न्यूनतम है। अतः यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उपरोक्त उद्योग की विकास की संभावनाओं को किस प्रकार से वृद्धि की ओर अग्रसर किया जाना संभव है।

1.6 साहित्य समीक्षा

कृषि आधारित उद्योगों का अध्ययन एवं विश्लेषण पूर्व में विभिन्न विद्वानों द्वारा उनके शोध कार्यों में किया गया है।

लोकनाथन (1932) ने भारत में सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, लोहा इस्पात उद्योग, कागज उद्योग, सीमेंट उद्योग आदि उद्योगों में स्थानीयकरण तत्वों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया। वी.एस.एल. प्रकाशराव (1942) ने किसी भी उद्योग की स्थापना के पूर्व भौगोलिक तत्वों के प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण किया। ए.एस. पीयर्स (1955) ने भारत के सूती वस्त्र उद्योगों का गहनता से विश्लेषण कर उनके विविध पक्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला। नरोत्तम चौरिया (1957) ने भारत में व्यापार व सूती वस्त्र उद्योगों का विभिन्न दृष्टिकोणों से गहन अध्ययन कर अपने शोध कार्य में उनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। एस. चन्द्रा (1960) ने भारत में सूती वस्त्र उद्योग का गहन विश्लेषण करते हुए भारतीय सूती वस्त्र मिलों की संरचना व उत्पादकता पर भी विस्तृत प्रकाश डाला।

तिवाड़ी (1961) ने चीनी उद्योगों की अवस्थिति पर आर्थिक तत्वों की अवस्थिति के प्रभाव का गहन विश्लेषण किया। दुर्गानी (1965) ने अपने शोध कार्य में राजस्थान में उद्योगों के विकास में उत्तरदायी अवस्थिति तत्वों का गहन अध्ययन करते हुए उनके विविध पक्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला। सी.बी. तिवारी (1969) ने प्रदेश के चीनी उद्योगों का गहन अध्ययन व विश्लेषण प्रस्तुत किया। चौधरी (1970) ने भारत में कृषि आधारित उद्योगों समेत महत्वपूर्ण उद्योगों की अवस्थिति का विश्लेषण किया। लालचन्द व हीराचन्द (1971) ने मेवाड़ सूती वस्त्र मिल में श्रमिक स्थिति का आर्थिक सर्वेक्षण एवं

अध्ययन किया। सिंह (1979) ने कानपुर शहर का औद्योगिक भूगोल व बड़े छोटे पैमाने के उद्योगों के लिए उत्तरदायी अवस्थिति तत्वों के वितरण प्रारूप का अध्ययन कर उद्योगों की अवस्थापना में उनके योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला। ए. गुप्ता (1980) ने वाराणसी के रेशम उद्योग का गहन अध्ययन व विश्लेषण किया। शर्मा (1981) ने गंगा यमुना दोआब में कृषि आधारित उद्योगों की अवस्थिति तथा उनके प्रदेश के आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन कर उनके भावी विकास हेतु सुझाव भी दिये। सत्यदेव (1981) ने श्री गंगानगर शुगर मिल का औद्योगिक भौगोलिक अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया। एस. चन्द्रा (1982) ने श्री गंगानगर शुगर मिल का आर्थिक सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया।

हेमलता जोशी (1990) ने राष्ट्रीय स्तर पर रासायनिक-खाद उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण कर उनके विविध पक्षों पर विस्तृत प्रकाश डाला। आर.एन. बैरवा (1991) ने राजस्थान के चीनी उद्योग का बहुपक्षीय विश्लेषण व अध्ययन किया। डी.एम. दिवाकर (1991) ने भारत में कृषि आधारित उद्योगों के अनियमित वितरण प्रारूप का अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया। एल.सी. मीणा (1992) ने सूती वस्त्र उद्योग, अवस्थिति व वृद्धि एवं प्रादेशिक आर्थिक विकास का गहन अध्ययन किया। कौशिक एवं गौतम (2000) ने अपनी पुस्तक 'संसाधन भूगोल' में सूती वस्त्र उद्योग, ऊनी व रेशम वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग आदि का विश्व स्तर पर गहन विश्लेषण किया। जगदीश प्रसाद शर्मा (2002) ने राजस्थान में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन किया। अल्का रांका (2002) ने अजमेर जिले के पोल्ट्री फार्म उद्योग का स्थानिक विश्लेषण कर उसके विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।

श्रीचन्द (2005)¹³ "भरतपुर जिले में सिंचित कृषि का विस्तार एक कृषि भौगोलिक अध्ययन" में कृषि आधारित प्रमुख उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन एवं विश्लेषण करके उद्योगों की अवस्थिति, उनको प्रभावित करने वाले कारक, स्थानिकालिक वितरण, क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

वत्सला शर्मा (2006)¹⁴ ने “अजमेर जिले के संदर्भ में कृषि आधारित उद्योगों का अवस्थिति विश्लेषण” विषय पर अपना विस्तृत शोध कार्य अजमेर जिले के संदर्भ में प्रस्तुत किया।

नवीन चौहान (2006)¹⁵ ने “बीकानेर जिले में खनिज आधारित उद्योगों का विकास एवं सम्भावनाएँ” में स्थानीय संसाधनों पर आधारित औद्योगिक विकास क्षेत्रीय विषमता को दूर करने के लिए खनिज आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन किया है इनके अनुसार बीकानेर जिले में अवसादी खनिजों की उपलब्धि और उनके खनन से वर्तमान दशकों में खनिज आधारित उद्योगों के विकास में तीव्रता आयी है।

भारतेन्दु गौतम (2010)¹⁶ ने बून्दी जिले में कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण कर जिले में उद्योगों के विकास एवं अवस्थापना हेतु सुझाव प्रस्तुत किया।

मोहम्मद उस्मान (2010)¹⁷ ने बून्दी जिले में मानव संसाधन एवं कृषि विकास के स्तर का अध्ययन कर जिले के मानव एवं आर्थिक विकास का गहन विश्लेषण किया।

1.7 शोध के उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य में उद्देश्य का स्थान अति महत्वपूर्ण होता है। बिना उद्देश्य के कार्य निश्चित दिशा व स्थान की ओर अग्रसर नहीं होता है ना ही उसके निश्चित निष्कर्ष प्राप्त हो पाते हैं। उद्देश्यों की पूर्ति से निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित रूप से संभव हो पाती है।

बून्दी जिले के चावल उद्योग का स्थानिक-सामयिक प्रतिरूप के अनुसार बून्दी जिले की भौगोलिक स्थिति, जलवायु व पर्यावरणीय स्थिति, चावल का उत्पादन व पैदावार, चावल का मूल्य, मृदा की गुणवत्ता के साथ-साथ वृद्धि में जो स्थायित्व आ रहा है तथा विकास की संभावनाएँ हैं, तो यह जानना कि किस प्रकार विकास को गति प्रदान की जाये। नवाचार युक्त पद्धतियों, संकरित बीजों, उन्नत खाद आदि के उपयोग व उपभोग से किस प्रकार किस उद्योग को गति

प्रदान की जाये, जिससे बून्दी की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक प्रभाव नजर आये।

शोध की दिशा निर्धारण व स्पष्टता के उद्देश्य से शोध कार्य को निम्न उद्देश्यों में आबद्ध कर पूरा किया गया है –

- (1) बून्दी जिले की भौगोलिक विशेषताओं को स्पष्ट करना जो चावल उद्योग का आधार है।
- (2) जिले में कृषि की वर्तमान स्थिति का विशेषकर चावल उत्पादन हेतु भूमि उपयोग तथा चावल प्रतिरूप का स्थानिक वितरण प्रस्तुत करना।
- (3) चावल उद्योग का स्थानिक वितरण व सामयिक परिवर्तन का विश्लेषण।
- (4) आर्थिक एवं सामाजिक विकास पर चावल उद्योग के होने वाले प्रभावों की विवेचना।
- (5) चावल उद्योग से सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण कर उनके समाधान हेतु उपायों को प्रस्तुत करना।

1.8 शोध परिकल्पनाएँ

शोध कार्य के उद्देश्यों की पूर्ति एवं शोध कार्य को आधार प्रदान करने हेतु परिकल्पनाओं का निर्धारण अत्यन्त आवश्यक हैं। परिकल्पनाएँ शोध की आधारशिला होती हैं जो निष्कर्ष व परिणाम का द्योतक होती हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निर्धारित प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नानुसार हैं:—

- (1) बून्दी जिले की भौगोलिक दशाएँ जैसे जलवायु, जल की उपलब्धता धान उत्पादन का आधार है।
- (2) बून्दी जिले में चावल उद्योग की अवस्थिति तथा धान के उत्पादन क्षेत्र में सहसम्बन्ध हैं।
- (3) चावल उद्योग के विकास का प्रभाव बून्दी जिले के आर्थिक—सामाजिक विकास पर परिलक्षित होता है।

उक्त परिकल्पनाओं के निर्धारण के परिणामस्वरूप शोधकार्य में समकों के विश्लेषण हेतु पर्याप्त आधार प्राप्त हुआ है। परिकल्पनाओं

को शोध प्रबन्ध में यथा स्थान समकों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं सर्वेक्षण के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पुष्टिकरण किया गया है।

1.9 शोध विधि तंत्र

विधि तंत्र शोध कार्य का महत्वपूर्ण पक्ष है जो सम्पूर्ण शोधकार्य का आधार होता है। शोध विषय व शोध क्षेत्र के चयन से लेकर समकों के एकत्रीकरण, विश्लेषण, निष्कर्ष प्राप्ति एवं सुझाव प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया तक शोध विधि तंत्र का महत्वपूर्ण योगदान है।

बून्दी जिले में प्राथमिक आँकड़े अनुसूची तथा साक्षात्कार विधि के द्वारा एकत्रित किये गए हैं। जिले के कृषि आधारित उद्योगों में चावल उद्योगों एवं उनमें संलग्न श्रमिक परिवारों का चयन कर उनसे प्राप्त समकों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए प्रतिचयन विधि (Purposive Sampling) का प्रयोग कर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में प्रतिचयन हेतु कुल 32 इकाइयाँ अर्थात् चावल उद्योगों के 12 प्रतिशत उद्योगों का सर्वेक्षण किया गया है। चावल आधारित उद्योगों में कार्यरत कुल श्रमिकों के 40 प्रतिशत प्रतिचयन के रूप में श्रमिक परिवारों (उत्तरदाताओं) का चयन किया गया जिनका आधार निम्न रहा है –

1. उत्तरदाता सर्वेक्षित उद्योग में कार्य करता हो।
2. उत्तरदाता का शैक्षिक स्तर प्राथमिक या उच्च हो।
3. उत्तरदाता की आयु 40 वर्ष या उससे अधिक हो।

इनके अलावा प्रत्येक चावल उद्योग में एक प्रबन्धक या उद्योग संचालक से साक्षात्कार विधि द्वारा जानकारी भी प्राप्त की गई है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में कुल 4 उद्योग एवं कुल 131 श्रमिक परिवारों का निर्देशन के रूप में सर्वेक्षण कर अध्ययन किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में चयनित उत्तरदाता को तालिका-1.2 में दर्शाया गया है।

तालिका-1.2

जिला बून्दी : प्रतिदर्श के रूप में चयनित चावल उद्योग एवं उत्तरदाता

क्र.सं.	चावल उद्योग	प्रतिदर्श / उत्तरदाता	
		श्रमिक	मिल संचालक
1.	आशुतोष चावल उद्योग	27	1
2	श्री शंकर उद्योग	42	1
3.	राज राइस मिल	30	1
4.	पैरामाउंट चावल उद्योग	28	1
	कुल	127	4

बून्दी जिले की तहसीलों में औद्योगीकरण स्तर के मापन हेतु स्थानिक लब्धि विधि (Location Quotient Method) को उपयोग में लिया है।¹⁸

‘अ’ तहसील में औद्योगिक कार्यों में
लगी जनसंख्या का प्रतिशत

$$\text{औद्योगीकरण स्तर का मापन (स्थानिक लब्धि विधि)} = \frac{\text{‘अ’ तहसील में औद्योगिक कार्यों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत}}{\text{जिले में औद्योगिक कार्यों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत}}$$

द्वितीयक आँकड़ों के लिए जनगणना विभाग, जयपुर के प्राथमिक आँकड़े, जिला सांख्यिकीय रूपरेखा (2016, 2011 एवं 1996), विविध संदर्भ पुस्तकें तथा अप्रकाशित शोध को उपयोग में लिया गया है।

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त समकों के सारगर्भित परिणाम के लिए भूगोल विषय में प्रयुक्त जैसे- सारणीकरण विधि, प्रतिशत, औसत का प्रयोग किया है। सूचनाओं के बेहतर प्रदर्शन के लिए मानचित्र एवं आरेखों का यथासंभव उपयोग किया गया है। बून्दी

जिले के जी.आई.एस. और दूर संवेदन तकनीक एवं स्थलाकृतिक अंशचित्रों की सहायता से मानचित्र बनाये गए हैं।

1.10 अध्याय योजना

अध्याय योजना के अन्तर्गत शोध विषय को 9 अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय शोध विषय एक परिचय से सम्बन्धित जिसके अन्तर्गत शोध विषय का चयन, महत्व, उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, विधि तन्त्र, साहित्य पुनरावलोकन, अध्याय योजना तथा शोध विषय का महत्व प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय में बूंदी जिले का भौगोलिक स्वरूप एवं जनांकिकीय संरचना का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सामान्य भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप, कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों एवं फसलों के क्षेत्रीय विवरण प्रतिरूप का विश्लेषण कर विवेचन दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय में बूंदी जिले में धान कृषि का विकास एवं परिवर्तित स्वरूप, धान फसल को प्रभावित करने वाले कारकों, धान फसल के अन्तर्गत उत्पादकता एवं उत्पादन विश्लेषण कर विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में चावल उद्योग का स्थानीकरण के कारकों, चावल उद्योग की स्थापना व विकास का विश्लेषण किया गया है। षष्ठम अध्याय में बूंदी जिले में चावल उत्पादन, औद्योगिक स्वरूप, चावल उद्योग में चावल तैयार करने की प्रक्रिया एवं चावल उद्योग के जिले में केन्द्रित होने के कारणों को बताया गया है।

सप्तम अध्याय में आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका, औद्योगिक क्षेत्र का विश्लेषण कर समालोचना की गई है। अष्टम अध्याय में चावल उद्योग का विकास एवं स्थानिक प्रतिदर्श के अन्तर्गत श्रमिकों सम्बन्धित सामाजिक—आर्थिक समंकों का विश्लेषण कर विवेचन किया गया है। नवम् अध्याय में शोध सारांश एवं सम्बन्धित समस्याएँ एवं सुझावों को बताया गया है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, बी.एल, भारद्वाज, पलक, (2017), भारतीय कृषि भूगोल सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—295
2. अग्रवाल, एन.एल., (2015), भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं.—17
3. कृषि भूगोल, (2011), वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं.—3
4. शर्मा, बी.एल. एवं भारद्वाज, पलक, (2017), कृषि भूगोल : सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—3.
5. भारद्वाज, अनिल, (2018), लघु एवं कुटीर उद्योग : मजबूती का वाहक, योजना, नई दिल्ली, पृ.सं.—13.
6. Biology of oryza sativa, (2011), department of biotechnology, government of india p-1
7. कुमार, प्रमील एवं शर्मा, श्रीकमल, (2000), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—228.
8. कौशिक, एस. डी. एवं गौतम, अलका, (2015), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—237.
9. कौशिक, एस. डी. एवं गौतम, अलका, (2015), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—234.
10. कौशिक, एस. डी. एवं गौतम, अलका, (2015), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.—237.
11. सक्सेना, एच.एम., (2017), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं.—119.
12. Rajasthan Agricultural Statistics- at A Glance (2015-16), P-66.
13. श्रीचन्द्र, (2005), “भरतपुर जिले में सिंचित कृषि का विस्तार एक कृषि भौगोलिक अध्ययन” पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

14. शर्मा, वत्सला, (2006), "अजमेर जिले के संदर्भ में कृषि आधारित उद्योगों की अवस्थिति विश्लेषण" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
15. चौहान, नवीन, (2006), "बीकानेर जिले में खनिज आधारित उद्योगों का विकास एवं सम्भावनाएं" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
16. गौतम, भारतेन्दु, (2010), "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।
17. उस्मान, मोहम्मद, (2010), "बून्दी जिले में मानव संसाधन एवं कृषि विकास" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।
18. शर्मा, जे.पी., (2002), राजस्थान में कृषि आधारित उद्योग- एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, पृ.सं.-96

द्वितीय अध्याय
बून्दी जिले का भौगोलिक
स्वरूप

द्वितीय अध्याय

बून्दी जिले का भौगोलिक स्वरूप

2.1 अध्ययन क्षेत्र : एक परिचय

अध्ययन क्षेत्र जिला बून्दी राजस्थान राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह मैदानों, पठारी एवं पहाड़ियों का सम्मिश्रित स्वरूप है। बून्दी जिला इतिहास में प्रेम, बलिदान, शौर्य व त्याग की कहानियाँ समेटे हुए हैं। कुण्ड तथा बावड़ियों की इस ऐतिहासिक नगरी को 'सिटी ऑफ स्टेपवेल्स' भी कहा जाता है। सन् 1241 में हाड़ा वंश के श्री राव देवा ने मीणा सरदारों से जीता और बून्दी राज्य की स्थापना की। प्रशासनिक दृष्टि से बून्दी जिले के रूप में 1987 के दौरान अस्तित्व में आया। 15 जनवरी, 1987 में संभागीय व्यवस्था के अन्तर्गत राजस्थान राज्य को 7 संभागों में विभाजित किया गया है, जिसके अन्तर्गत बून्दी जिला कोटा संभाग में सम्मिलित है।

तालिका 2.1

जिला बून्दी : प्रशासनिक संरचना (2016-17)

क्र.सं.	प्रशासनिक इकाइयाँ	संख्या
1	उपखण्ड	6
2	तहसील	6
3	नगर परिषद	1
4	नगर पालिका	5
5	आबाद ग्राम	183
6	गैर आबाद ग्राम	5

स्रोत – जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2018)

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 11,10,906 है, जिनमें से पुरुष जनसंख्या 51.95 प्रतिशत तथा महिला जनसंख्या 48.05 प्रतिशत है। बून्दी जिले के अन्तर्गत ग्रामीण जनसंख्या 79.95 प्रतिशत तथा नगरीय जनसंख्या

20.05 प्रतिशत निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र में उपजाई जाने वाली फसलों में धान, ज्वार, गेहूँ तथा सोयाबीन प्रमुख है। जिले में सन् 2016-17 में फ़ैक्ट्री एक्ट के अन्तर्गत कुल पंजीकृत उद्योग संख्या 120 है, जिनमें कुल कार्यरत श्रमिक संख्या 2218 रही है।

2.2 अवस्थिति एवं विस्तार

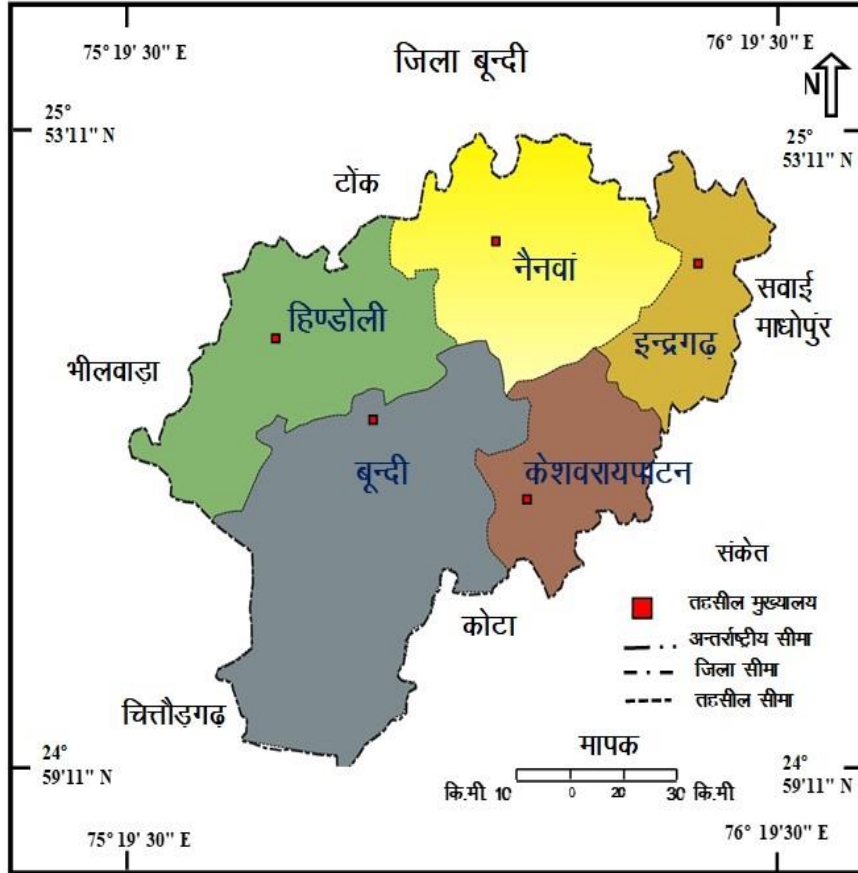
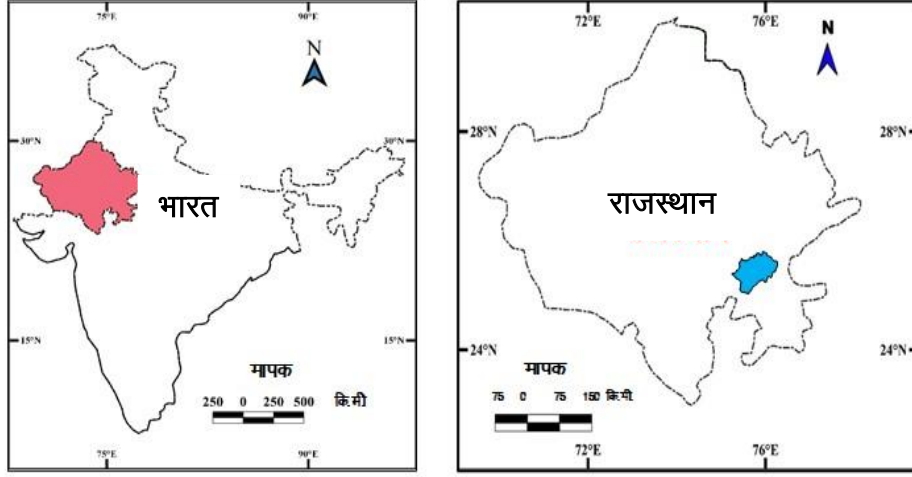
जिला बून्दी की आकृति अनियमित समलम्ब चतुर्भुज के समान है, जो पूर्व की ओर झुका हुआ है। जिले की भौगोलिक सीमाएँ 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।¹ जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार बून्दी जिले का कुल क्षेत्रफल 5763.00 वर्ग किलोमीटर है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22 वाँ स्थान है। बून्दी जिले का उत्तर से दक्षिण विस्तार 104.6 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार 111 किलोमीटर है।² बून्दी जिले के उत्तर में टोंक जिला, पश्चिम में भीलवाड़ा, दक्षिण-पश्चिम में चित्तौड़गढ़ तथा दक्षिण में कोटा जिला स्थित है। कोटा जिले को चम्बल नदी बून्दी जिले से विभाजित करती है।

बून्दी जिले में मूलतः पाँच तहसील थी, किन्तु सन् 2011 में प्रशासनिक हित को ध्यान में रखते हुए बून्दी तहसील को दो ब्लॉक (बून्दी तथा तालेड़ा) में विभाजित किया गया है।

अतः वर्तमान में कुल छः तहसील यथा— बून्दी, नैनवां, केशवरायपाटन, हिण्डोली, इन्द्रगढ़ तथा तालेड़ा है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी तहसील हिण्डोली है जिसका क्षेत्रफल 1340.38 वर्ग किलोमीटर है तथा सबसे छोटी तहसील इन्द्रगढ़ है जिसका क्षेत्रफल 660.65 वर्ग किलोमीटर है। जिले की अन्य तहसीलों में नैनवां का क्षेत्रफल 1189.95 वर्ग किलोमीटर, केशवरायपाटन तहसील का क्षेत्रफल 706.13 वर्ग किलोमीटर तथा बून्दी तहसील (बून्दी तथा तालेड़ा ब्लॉक) का क्षेत्रफल 1922.27 वर्ग किलोमीटर है।³ मानचित्र-1 में जिला बून्दी की सापेक्ष अवस्थिति एवं तहसील अनुसार प्रशासनिक विभाजन को दर्शाया गया है।

जिला बून्दी : अवस्थिति



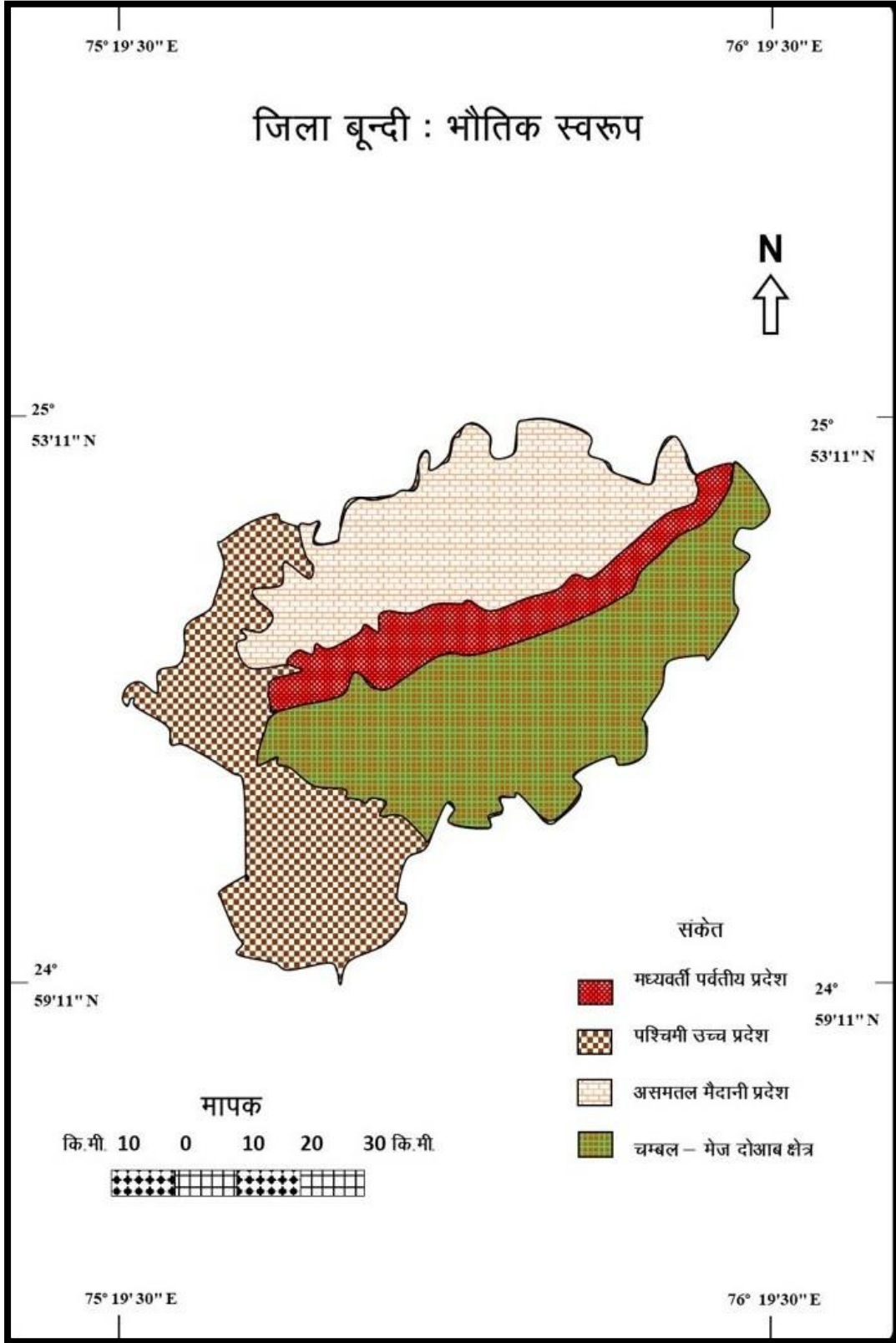
2.3 उच्चावच एवं भू-आकृति

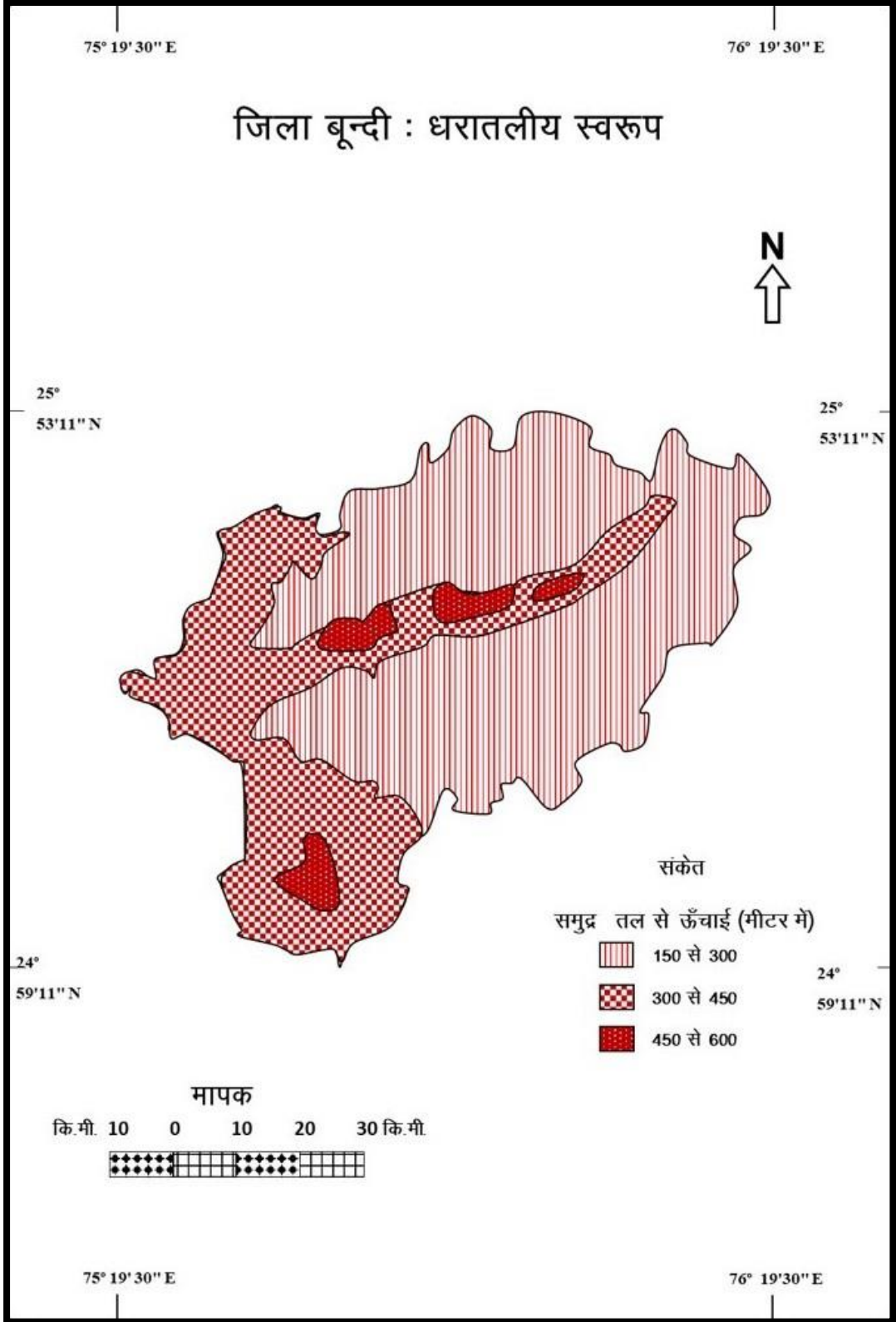
धरातलीय दृष्टि से जिला बून्दी राजस्थान में भू-भौतिक प्रदेश दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है, जिसे हाड़ौती के पठार के नाम से भी जाना जाता है। जिला बून्दी का भू-आकृतिक स्वरूप अरावली तथा विन्ध्यन श्रेणी की देन है। बून्दी की पर्वत श्रेणी दोहरी पर्वतमाला है, जिसकी लम्बाई लगभग 96 किलोमीटर है, जो उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक फैली है। अरावली श्रेणी की औसत ऊँचाई 300 से 350 मीटर है।⁴ अरावली श्रेणी का विस्तार हिण्डोली तहसील के खण्डारिया ग्राम से इन्द्रगढ़ तहसील के कनकपुरा ग्राम की सीमा तक फैला हुआ है। जिले बून्दी का सर्वोच्च शिखर जिला मुख्यालय से 10 किलोमीटर पश्चिम में सथूर ग्राम के समीप (1793 फीट) है। अन्य ऊँची चोटियाँ बून्दी (1626 फीट) तथा लाखेरी (1648 फीट) है। मानचित्र-2 में अध्ययन क्षेत्र जिले बून्दी के भौतिक प्रदेश दिखाये गये हैं।

जिले बून्दी में अरावली श्रेणी में प्रमुख चार दर्रे हैं— पहला बून्दी के निकट बून्दी तहसील में है, जहाँ से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग-12 गुजरता है, दूसरा जैतावास के निकट है जहाँ से टोंक मार्ग जाता है, तीसरा रामगढ़ एवं खटकड़ के मध्य है, जहाँ से मेज नदी मार्ग बनाती हुई प्रवाहित होती है, चतुर्थ दर्रा उत्तर-पूर्व में लाखेरी में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र की अन्य प्रमुख भू-आकृतिक संरचना बून्दी तहसील में सथूर ग्राम के निकट "महान सीमान्त भ्रंश" (Great Boundary Fault) है।⁵ भ्रंश के सहारे विन्ध्यन व अरावली क्रम की चट्टानें अलग होती है। जिले का सामान्य ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। मानचित्र-3 में अध्ययन क्षेत्र जिला बून्दी का सामान्य उच्चावच व ढाल स्वरूप दिखाया गया है।

2.4 भूगर्भिक संरचना

भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से जिले बून्दी में अरावली समूह, बालुका मिट्टी के जमाव, रायलो क्रम तथा ऊपरी विन्ध्यन समूह की चट्टानें पाई जाती है।





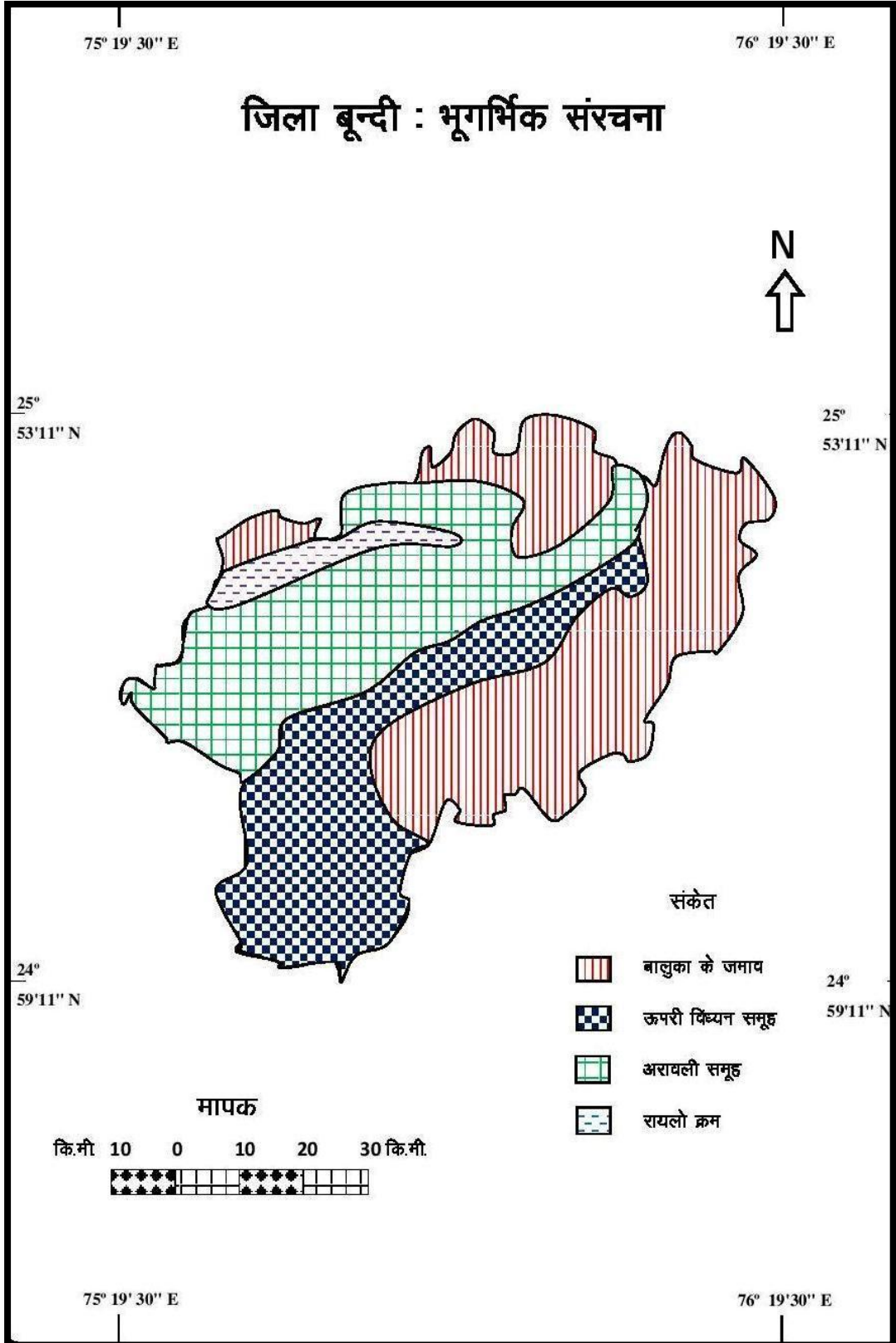
जिले का पश्चिमी भाग प्रमुख रूप से अरावली क्रम की शिष्ट चट्टानों से बना है, जो कि विंध्यन काल में कुडप्पा क्रम के बाद निर्मित है इन चट्टानों में क्वार्टजाइट व चूने के मोटे निक्षेप पाये जाते हैं। अरावली क्रम की शैल संस्तर का विस्तार हिण्डोली, नैनवां व बून्दी तहसीलों में फैला हुआ है। बून्दी जिले में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर प्रवाहित होने वाली चम्बल, मेज एवं इनकी सहायक नदियों द्वारा नदी घाटियों में काली मिट्टी का निक्षेपण करती है। इस प्रकार बालू मिट्टी के जमाव केशवरायपाटन, नैनवां व बून्दी तहसील में मिलते हैं। रायलो क्रम की चट्टानें हिण्डोली तहसील के उत्तरी भाग में संकरी पट्टी के रूप में मिलती हैं। बून्दी जिले में ऊपरी विंध्यन समूह की चट्टाने जिले के दक्षिणी भाग में विस्तृत रूप में पाई जाती हैं, जिनका विस्तार एक पट्टी के रूप में तालेड़ा, बून्दी व नैनवां तहसील में फैला हुआ है। मानचित्र-4 में बून्दी जिले की सामान्य भूगर्भिक संरचना दिखाई गई है।

2.5 अपवाह तंत्र

जिले बून्दी में अपवाह तंत्र ने जनसंख्या वितरण, कृषि एवं औद्योगिक विकास को अधिक प्रभावित किया है अतः इसका अध्ययन महत्वपूर्ण है। जिले का अपवाह तंत्र मुख्यतः चम्बल, मेज, मांगली, भीमलत, कुराल, बाजन, घोड़ापछाड़, माछली तथा तालेड़ा की नदियों द्वारा निर्मित है।⁶ मानचित्र-5 में बून्दी जिले का अपवाह प्रतिरूप दर्शाया गया है।

2.5.1 चम्बल नदी

मानचित्र-5 से स्पष्ट है कि जिला बून्दी की मुख्य नदी चम्बल नदी है यद्यपि चम्बल नदी बून्दी जिले से होकर प्रवाहित नहीं होती है परन्तु कोटा व बून्दी जिले की सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है यह नदी बून्दी जिले की दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है। बून्दी जिले में चम्बल की मुख्य सहायक नदी मेज नदी है। चम्बल नदी को पौराणिक चर्मण्यवती के नाम से भी जाना जाता है इसे कामधेनु भी कहते हैं। केशवरायपाटन में चम्बल नदी के तट पर भगवान केशवराय जी का भव्य मंदिर है।



यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर भव्य मेले का आयोजन होता है।

2.5.2 मेज नदी

मेज नदी भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ के समीप समुद्र तल से लगभग 45 मीटर ऊँचाई से निकलकर बून्दी में नेहगढ़ के निकट प्रवेश करती है। मेज बून्दी जिले में चम्बल की मुख्य सहायक नदी है। बून्दी तहसील में मेज नदी भीमगंज के निकट प्रवेश कर अन्त में सीनपुर (लाखेरी) के निकट चम्बल नदी में मिल जाती है।

2.5.3 मांगली नदी

मांगली नदी मेज नदी की सहायक नदी है, जो मेवाड़ से आकर घोड़ापछाड़ तथा तालेड़ा नदी का पानी लेकर भैंसखेड़ा के पास मेज नदी में मिल जाती है। मांगली नदी की अन्य सहायक नदियों में दुगारी, भीमलत एवं चितावा प्रमुख हैं। तालेड़ा नदी मांगली नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है, जो बिजौलिया से निकलकर तालेड़ा तहसील में बहती हुई संग्गावदा में मांगली से मिल जाती है।

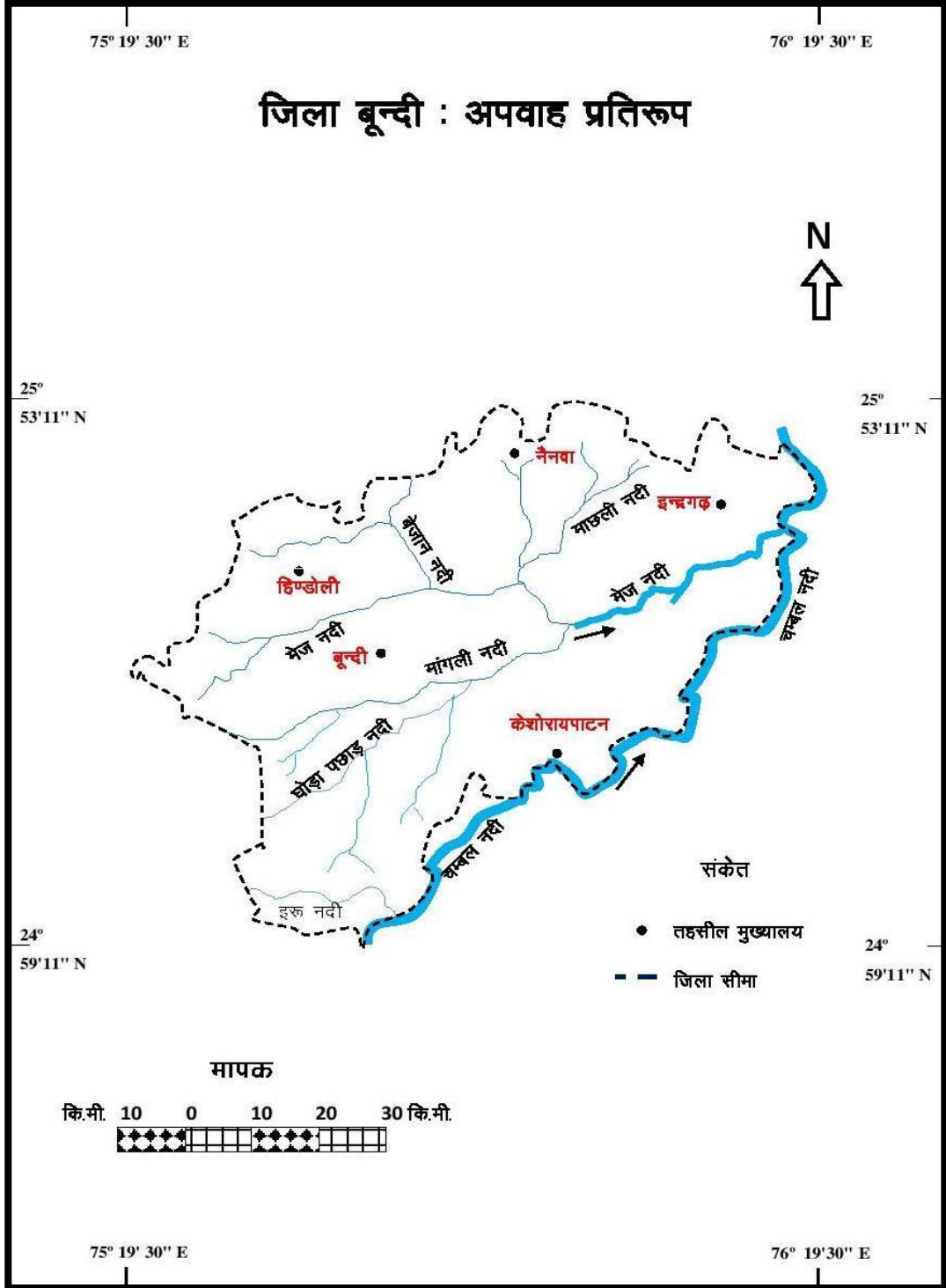
2.5.4 भीमलत नदी

बून्दी से 19.30 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ों के मध्य भीमताल नामक झील से एक जल की धारा निकलती है, जो आगे जाकर भीमलत नदी के नाम से जानी जाती है। यह नदी माहरामपुरा के पास मांगली नदी में मिल जाती है।

2.5.5 घोड़ापछाड़ नदी घोड़ापछाड़ नदी मांगली नदी की सहायक नदी है यह मुख्यतः बून्दी तहसील में प्रवाहित होती है। बून्दी के शासक राव सुभाण्ड देव (1433-1456) जब युद्ध के पश्चात् घोड़े लूटकर लौट रहे थे तो यह नदी पार करते समय घोड़े बहकर दूर निकल गये थे। अतः इस नदी को "घोड़ापछाड़" नदी कहते हैं।⁷ तालेड़ा नदी बरदा बाँध (बरदा गाँव) के पास से निकल कर पीपल्दा गाँव के निकट घोड़ा पछाड़ नदी में मिल जाती है।

2.6 मृदा संसाधन

प्राकृतिक वातावरण की अमूल्य सम्पदा में मिट्टी महत्वपूर्ण सम्पदा है, जो एक संसाधन के रूप में कृषि समृद्धि, कृषि उत्पादन

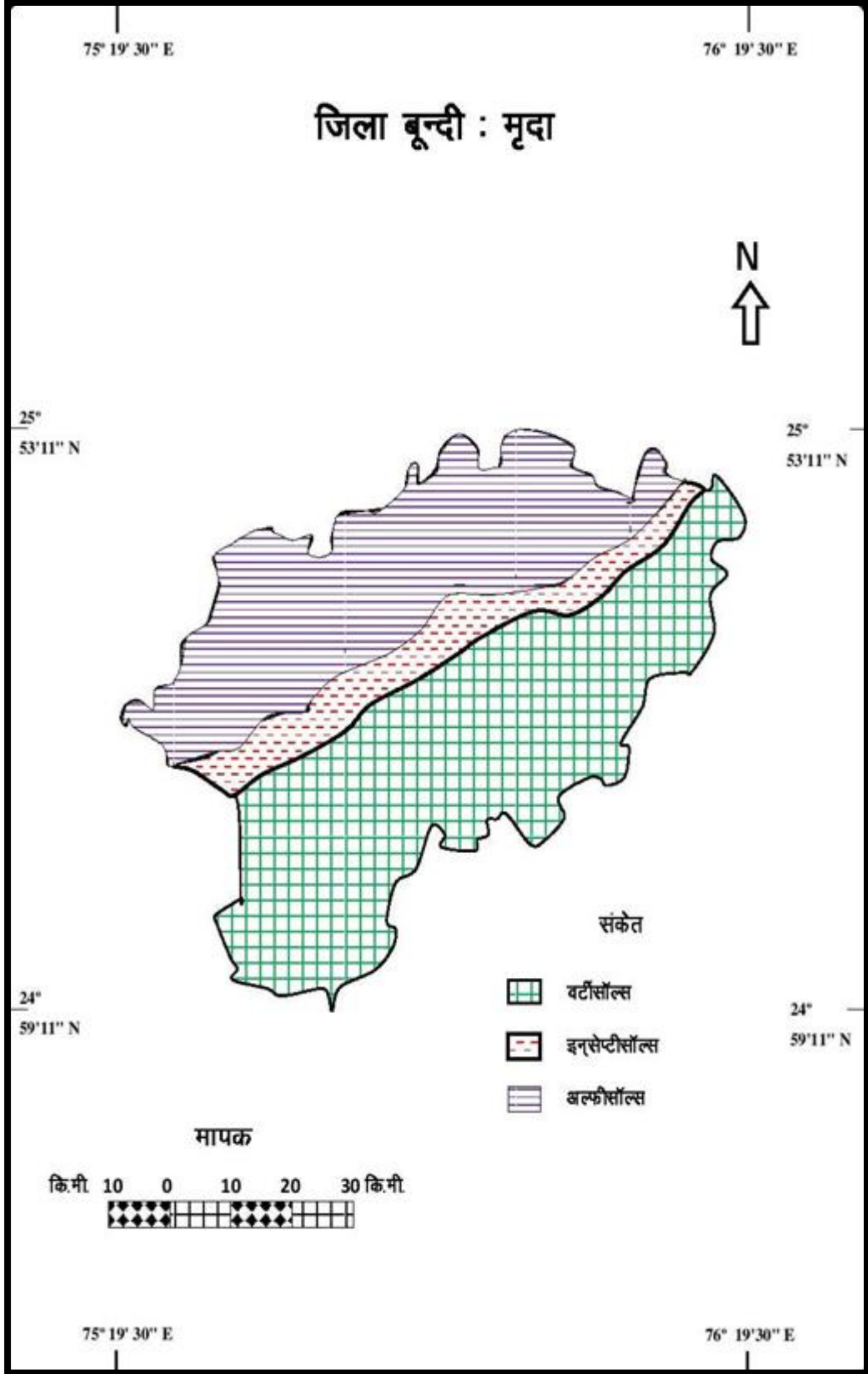


एवं अन्य संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से आधार प्रदान करती है। बून्दी जिला कृषि प्रधान होने से यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं उद्योगों से सृजित रोजगार से ही अपना जीवन यापन करती है। जिले में प्रवाहित चम्बल, मेज एवं उनकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी जिले में धान की कृषि के लिए उपयुक्त है। धान चावल उद्योग में प्रमुख कच्चा माल होता है। अतः जिले में कृषि की दृष्टि से मिट्टियों की जानकारी करना आवश्यक है।

व्यापक मृदा वर्गीकरण तन्त्र (Comprehensive Soil Classification System) के अनुसार बून्दी जिले की मृदा को तीन प्रमुख व पाँच उपभागों में विभक्त किया है।⁸ मानचित्र-6 में बून्दी जिले में मृदा प्रतिरूप दर्शाया गया है, जिसके आधार पर बून्दी जिले का मृदा वर्गीकरण निम्न प्रकार है –

2.6.1 अल्फीसॉल्स – यह मृदा मुख्यतः बून्दी जिले के उत्तर व उत्तरी-पश्चिमी भागों में फैली हुई है, जिसका विस्तार हिण्डोली, नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसीलों में फैला हुआ है। पहाड़ी व चट्टानी क्षेत्र होने के कारण इस भाग की मृदा के दो उपवर्ग (अ) मिश्रित लाल-काली मृदा (ब) पुरातन जलोढ़ मृदा। इस मृदा का निर्माण ग्रेनाइट, नीस व शिष्ट जैसी चट्टानों के अपरदन से प्राप्त पदार्थों से हुआ है। इसका रंग लोहे के ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण भूरे कथई से लेकर लाल तक होता है।

2.6.2 वर्टीसॉल्स – यह मृदा जिले बून्दी के पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी भागों में पाई जाती है। अध्ययन क्षेत्र में इनके दो प्रमुख उपवर्ग (अ) गहरी भूरी-दोमट मृदा (ब) मध्यम भूरी-दोमट मृदा है। यह मृदा हाड़ौती पठार, जो दक्कन लावा पठार का ही एक भाग है, के अपरदन से प्राप्त पदार्थों से निर्मित है। बून्दी तहसील के दक्षिणी भाग में मध्यम काली व उत्तरी-पूर्वी भाग में विशेषतः गहरी काली मृदा फैली है। इन्द्रगढ़ तहसील के पूर्वी भाग तथा केशवरायपाटन के सम्पूर्ण क्षेत्र में गहरी काली मृदा का विस्तार पाया जाता है। यह मृदा विशेषतः सरसों, सोयाबीन, धान, मसालें, मक्का, गेहूँ आदि की कृषि हेतु उपयुक्त है।



2.6.3 इन्सेप्टीसॉल – में मृदा का प्रमुख उपवर्ग छिछली काली मृदा का है। भौगोलिक दृष्टि से इनका विस्तार बून्दी जिले में अरावली के पूर्वी ढालों एवं तलहटी के मैदानों में पाया जाता है। पहाड़ी व पर्वतीय भाग होने के कारण मृदा हल्की कम गहरी तथा छिछली है जिसमें सरसों, मक्का, गोहूँ आदि की कृषि सिंचाई के साधन कुएँ एवं नलकूप की सहायता से की जाती है।

2.7 वनस्पति एवं वन्य जीव

बून्दी जिले में प्रमुख रूप से उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी पतझड़ वन पाये जाते हैं। इन वनों में धोकड़ा, ढाक, गूलर, आम, बरगद, नीम, तेंदू, जामुन, खैर, कीकर, बबूल आदि के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं। सन् 2015 में बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 17.23 प्रतिशत क्षेत्र वनों के अन्तर्गत है।⁹

तालिका-2.2 से स्पष्ट है, कि बून्दी जिले में वर्ष 1994-95 में वनों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 1482.34 वर्ग किलोमीटर था। जो वर्ष 2004-05 में वास्तविक वृद्धि दर 2.90 प्रतिशत के साथ 1525.40 वर्ग किलोमीटर हो गया है। इस प्रकार वार्षिक वन वृद्धि दर 0.29 प्रतिशत रही है, किन्तु अवर्गीकृत वन क्षेत्र में 5.96 प्रतिशत ऋणात्मक वार्षिक वृद्धि दर के साथ कमी आई है।

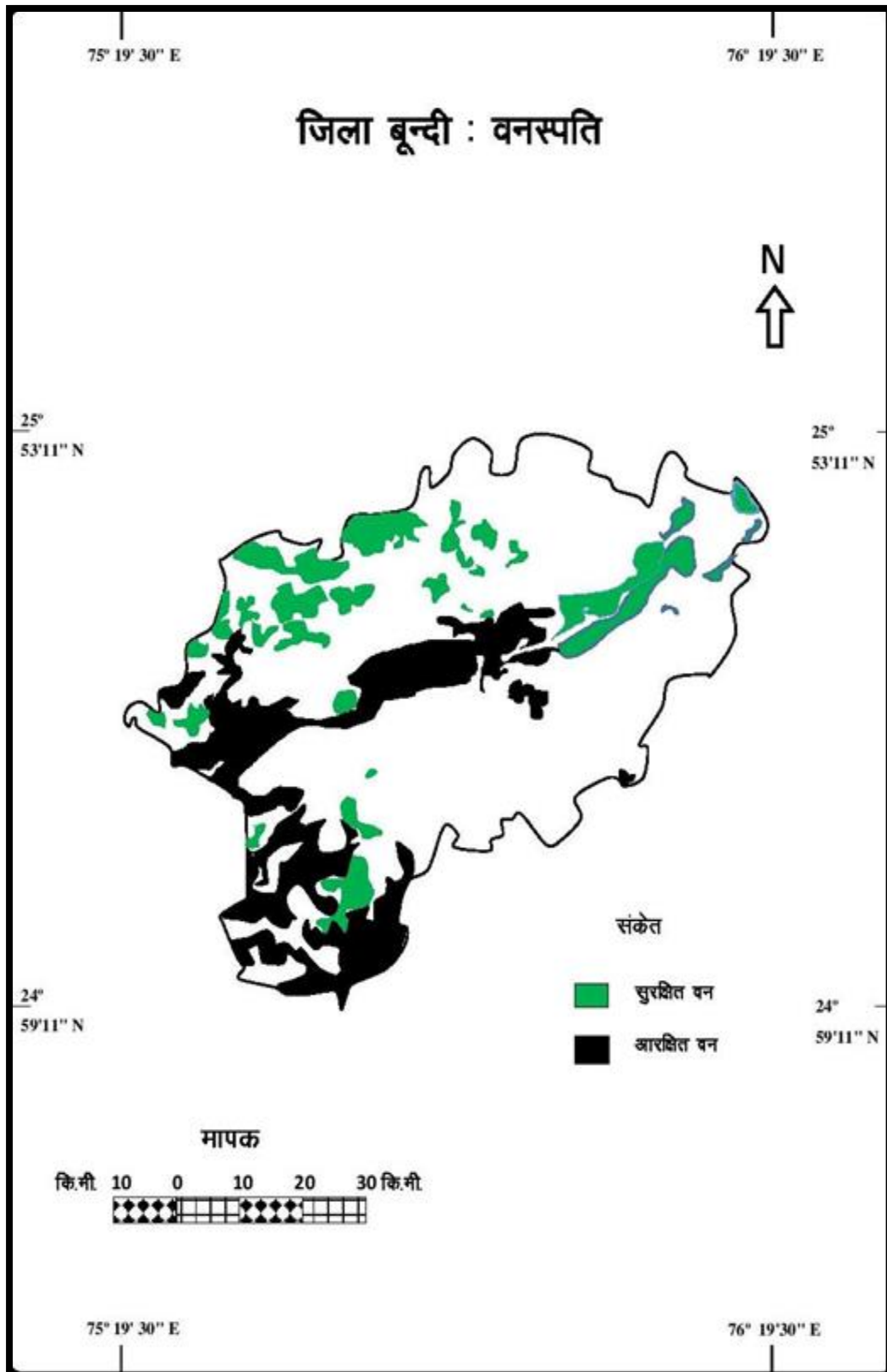
मानचित्र-7 में बून्दी जिले में वन प्रतिरूप दर्शाया गया है। जिससे स्पष्ट है, कि बून्दी जिले के पूर्वी एवं उत्तरी-पश्चिमी भागों में संरक्षित प्रकार के वन अधिक पाये जाते हैं, किन्तु जिले के पश्चिमी, दक्षिणी एवं मध्यवर्ती क्षेत्र में आरक्षित वनों का विस्तार अधिक फैला हुआ है। केशवरायपाटन तहसील में मैदानी प्रदेश एवं कृषि कार्य की अधिकता के कारण वनों का विस्तार कम पाया जाता है।

तालिका-2.3 से ज्ञात होता है, कि भौगोलिक दृष्टि से सन् 2015 में बून्दी जिले में वनों का सर्वाधिक विस्तार डाबी क्षेत्र में पाया गया है, जबकि सबसे कम वन क्षेत्र इन्द्रगढ़ क्षेत्र में है। संरक्षित एवं अवर्गीकृत वनों के अन्तर्गत सर्वाधिक वन क्षेत्र क्रमशः हिण्डोली क्षेत्र एवं नैनवां क्षेत्र में फैले हुए हैं।

तालिका-2.2
जिला बून्दी : वन एवं वनों का प्रतिरूप
(क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.)

क्र.सं.	वर्ष	आरक्षित	संरक्षित	अवर्गीकृत	योग
1.	1994-1995	800.50	647.07	34.77	1482.34
2.	1995-1996	800.49	671.61	10.24	1482.34
3.	1996-1997	800.49	671.61	10.24	1482.34
4.	1997-1998	800.49	671.61	10.24	1482.34
5.	1998-1999	834.75	710.59	9.77	1555.11
6.	1999-2000	834.75	710.59	9.77	1555.11
7.	2000-2001	801.26	693.34	12.85	1507.45
8.	2001-2002	801.26	693.34	12.85	1507.45
9.	2002-2003	704.38	693.34	13.85	1411.57
10.	2003-2004	704.38	693.34	13.85	1411.57
11.	2004-2005	804.71	706.65	14.04	1525.40
12.	2005-2006	705.85	706.65	16.04	1428.54
13.	2006-2007	705.85	706.65	16.04	1428.54
14.	2007-2008	705.85	706.65	16.04	1428.54
15.	2008-2009	705.85	706.65	16.04	1428.54
16.	2009-2010	710.94	712.50	11.60	1435.04
17.	2010-2011	710.94	712.50	11.60	1435.04
18.	2011-2012	818.89	712.68	11.40	1542.98
19.	2012-2013	588.97	579.55	8.98	1177.50
20.	2013-2014	552.21	432.14	8.61	992.96

स्रोत-जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996, 2006, 2012 एवं 2016)



तालिका-2.3

जिला बून्दी : वनों का क्षेत्रीय वर्गीकरण, 2015

(वर्ग किलोमीटर)

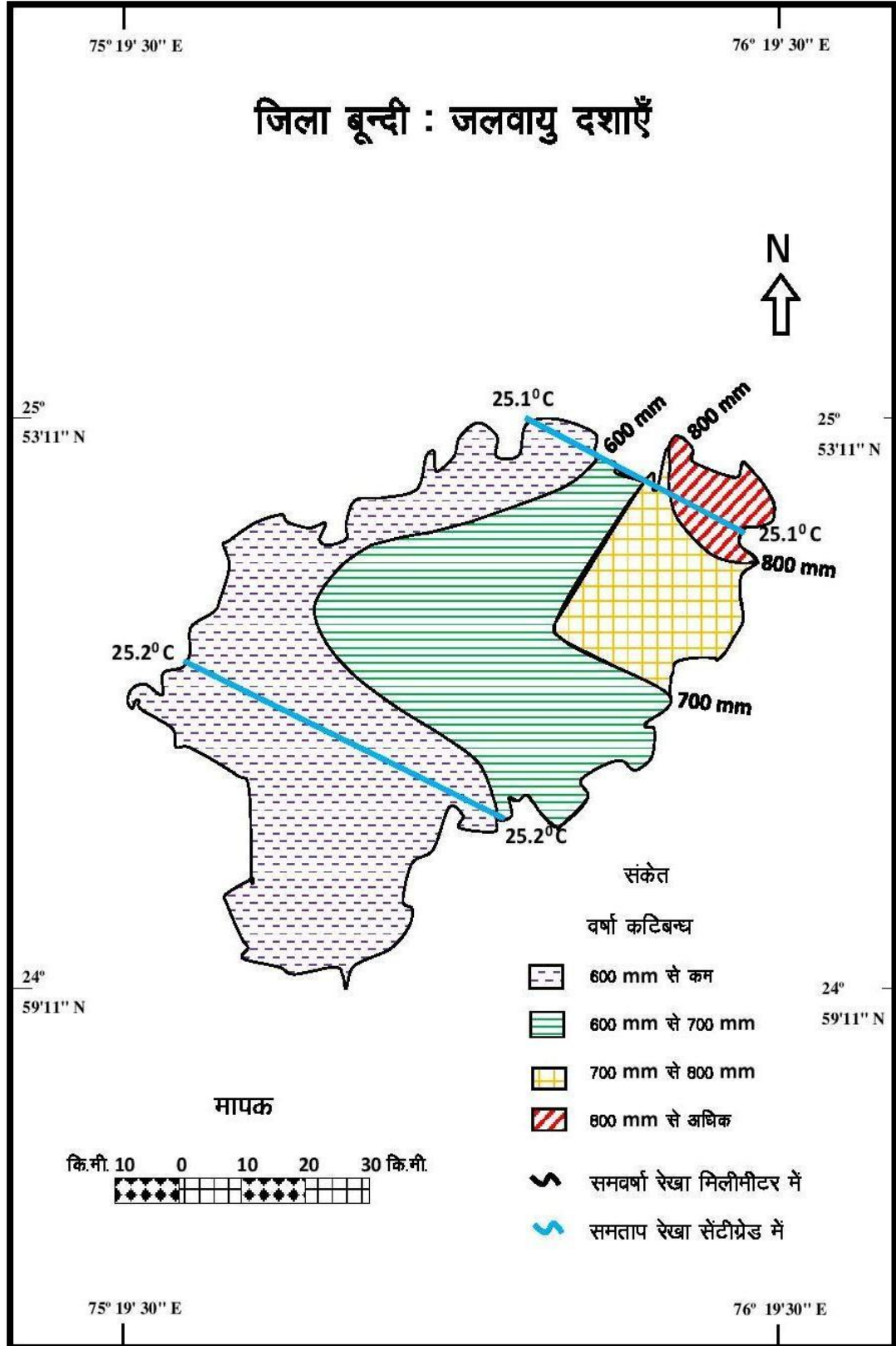
क्र. सं.	वृत्त	आरक्षित	संरक्षित	अवर्गीकृत	योग
1.	बून्दी	126.27	8.38	1.43	136.08
2.	हिण्डोली	102.92	200.42	1.55	304.89
3.	के.पाटन	-	16.34	0.31	16.65
4.	नैनवां	-	101.24	5.17	106.41
5.	डाबी	323.02	89.81	-	412.83
6.	इन्द्रगढ़	-	15.95	0.15	16.1

स्रोत-जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2016)

जिला बून्दी की नैनवां तहसील में स्थित रामगढ़ वन्य जीव अभयारण्य बून्दी जिले का जैव आरक्षित तथा सुरक्षित वन क्षेत्र है, जिसका कुल क्षेत्रफल 307.00 वर्ग किलोमीटर है। बून्दी जिले के अन्य अभयारण्यों में जवाहर सागर अभयारण्य, राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य एवं कनक सागर पक्षी अभयारण्य है। इनमें बाघ, रीछ, जरख, जंगली सूअर, काला भालू, नीलगाय, गीदड़, चीतल, चिंकारा, लोमड़ी, भेड़िया आदि पशु एवं अनेक पक्षी यथा- कौआ, गोरैया, कबूतर, मैना, बुलबुल, मोर, रॉबिन, जंगली मुर्गा, जंगली बतख आदि पाये जाते हैं। राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य में घड़ियाल के अतिरिक्त मगरमच्छ, गांगेय सूंस भी पाये जाते हैं।

2.8 जलवायु

जलवायु भौतिक पर्यावरण का एक घटक है, जो एक ओर प्राकृतिक तत्वों को प्रभावित करता है, तो दूसरी ओर मानव की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है। यद्यपि जिले में उच्चावचों का अन्तर इतना अधिक नहीं है



कि यह जलवायवी विभिन्नताओं को निश्चित कर सके, तथापि यहाँ की जलवायु इस क्षेत्र की अवस्थिति, स्थलाकृति तथा इस क्षेत्र की वायुराशि से प्रभावित होती है। डॉ. एल.आर. भल्ला ने अपनी पुस्तक "राजस्थान का भूगोल" में बून्दी जिले को आर्द्र जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत रखा है, जबकि कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के आधार पर बून्दी जिले को Cwg जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत रखा गया है।

2.8.1 तापमान एवं आर्द्रता

जिले बून्दी में ग्रीष्म ऋतु का औसत तापमान 32° से 34° से.ग्रे. रहता है। कभी-कभी यह 48° से.ग्रे. तक भी पहुँच जाता है। शीत ऋतु का औसत तापमान 16° से 18° से.ग्रे. के मध्य ही रहता है।¹⁰ सन् 2015 में जिले में जलवायु के आँकड़ों के आधार पर उच्चतम तापमान 45° से.ग्रे. एवं न्यूनतम तापमान 6° से.ग्रे. रहा है, जबकि औसत तापमान 15° से.ग्रे. है, किन्तु जून महीने में अधिकतम तापमान 45° से.ग्रे. तथा न्यूनतम तापमान 23° से.ग्रे. एवं औसत तापमान 33° से.ग्रे. रहा है। जिले में जनवरी माह में अधिकतम आर्द्रता 100 प्रतिशत, न्यूनतम आर्द्रता 18 प्रतिशत एवं औसत आर्द्रता 72 प्रतिशत रही है। मानचित्र-8 में बून्दी जिले की तापमान व वर्षा सम्बन्धी जलवायविक दशाएँ प्रस्तुत की गई है।

2.8.2 वर्षा

जिले बून्दी में वर्षा का वार्षिक औसत एक समान नहीं है वर्ष 1995 में 64.28 सेन्टीमीटर, 2000 में 58.23 सेन्टीमीटर, 2005 में 58.87 सेन्टीमीटर, 2010 में 65.35 सेन्टीमीटर एवं 2015 में 79.63 सेन्टीमीटर रहा है, जिनका 95 प्रतिशत भाग मानसून काल जून, जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर माह में प्राप्त होता है। शेष वर्षा मावठ के रूप में शीतकालीन मानसून से प्राप्त होती है। तालिका-2.4 में बून्दी जिले में गत दस वर्षों की औसत वार्षिक वर्षा, वास्तविक वर्षा व औसत से विचलन दिखाया गया है।

सन् 2015 में जिले बून्दी में तहसील अनुसार वार्षिक वर्षा के वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि बून्दी जिले

में वार्षिक वर्षा का सर्वाधिक औसत हिण्डोली तहसील में 99.00 सेन्टीमीटर है, जबकि न्यूनतम औसत इन्द्रगढ़ तहसील में 63.60 सेन्टीमीटर है।

तालिका-2.4

जिला बून्दी : वार्षिक वर्षा प्रतिरूप (सेन्टीमीटर में)

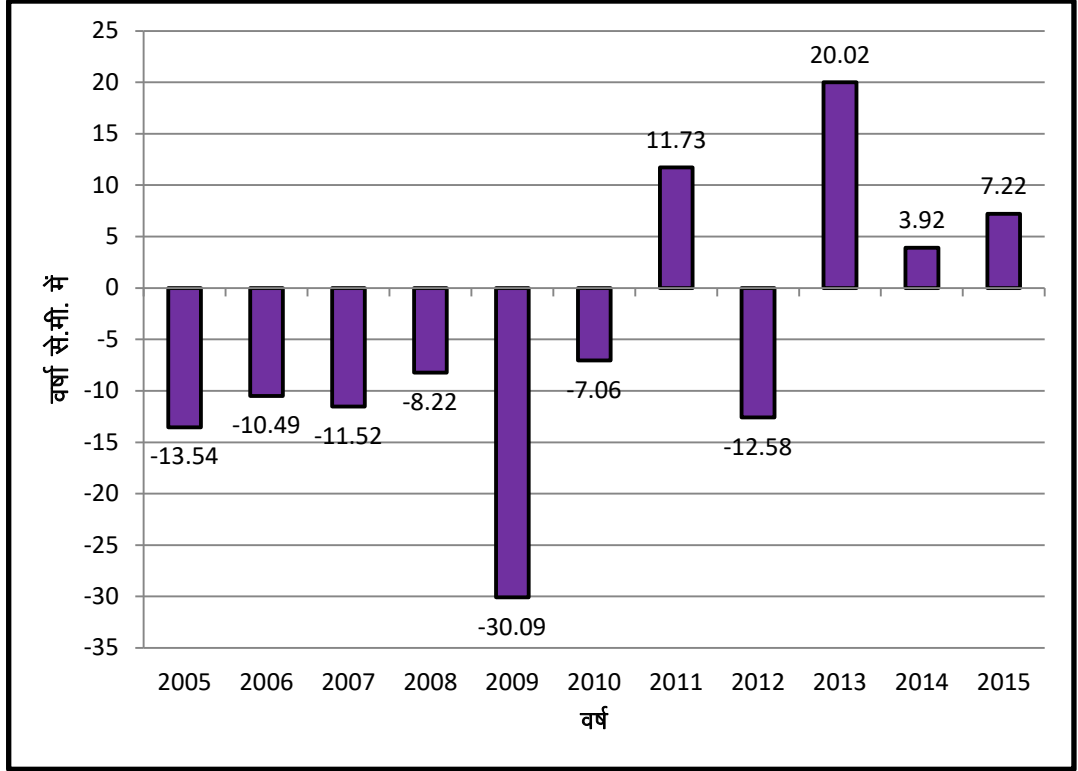
वर्ष	औसत वार्षिक वर्षा	वास्तविक वर्षा	औसत से विचलन
2005	72.41	58.87	(-)13.54
2006	72.41	61.92	(-)10.49
2007	72.41	60.89	(-) 11.52
2008	72.41	64.19	(-) 8.22
2009	72.41	42.32	(-) 30.09
2010	72.41	65.35	(-) 7.06
2011	72.41	84.14	(+) 11.73
2012	72.41	59.83	(-) 12.58
2013	72.41	92.43	(+) 20.02
2014	72.41	76.33	(+)3.92
2015	72.41	79.63	(+)7.22

स्रोत – जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2006, 2012 एवं 2016)

आरेख-2.1 में बून्दी जिले में वर्ष 2005-2015 की अवधि में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप दर्शाया गया है, जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त 11 वर्ष की अवधि में मात्र चार वर्षों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई है। बून्दी जिले में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप ने बून्दी जिले के कृषि प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है जिसका प्रभाव कृषि आधारित उद्योगों की अवस्थिति व विकास पर पड़ा है।

आरेख – 2.1

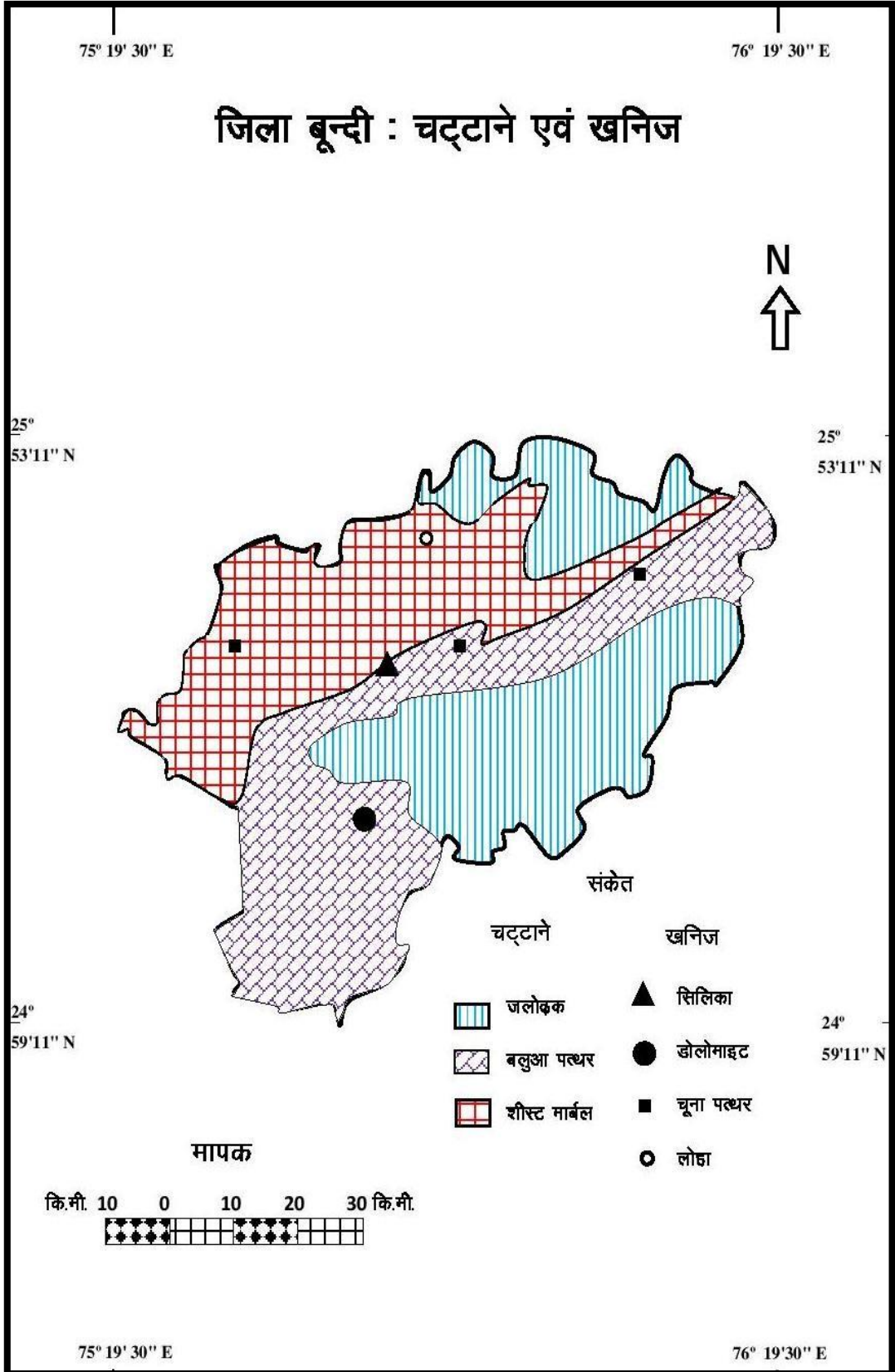
जिला बून्दी : वर्षा परिवर्तनशीलता प्रारूप



स्रोत— जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2006, 2012 एवं 2016).

2.9 खनिज संसाधन

जिला बून्दी खनिज पदार्थों की विविधता व उत्पादन दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है किन्तु जिले में धात्विक खनिज की तुलना में अधात्विक खनिज अधिक मात्रा में मिलता है। मानचित्र—9 में बून्दी जिले में खनिज संसाधनों का वितरण दर्शाया गया है, जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है, कि बून्दी जिले में पाये जाने वाले प्रधान खनिजों में लाईमस्टोन, चायना क्ले, सिलिका सेण्ड तथा गौण खनिजों में सेण्डस्टोन, मारबल, स्लेट स्टोन, मेसेनरी स्टोन, लाईम स्टोन (बर्निंग), कंकर, बजरी एवं मुर्रम मिट्टी हैं।¹¹ चूनापत्थर हिण्डोली व इन्द्रगढ़ तहसील, इमारती पत्थर बून्दी तहसील, कांच बालुका हिण्डोली तहसील की बड़ोदिया खान तथा बजरी बून्दी जिले की नदियों में, मार्बल हिण्डोली व बून्दी तहसील में पाये जाते हैं।



तालिका- 2.5

जिला बून्दी : खनिज पदार्थों का उत्पादन एवं रोजगार

खनिज पदार्थों का नाम	1994-95		2014-15	
	उत्पादन (मै.टन)	औसत रोजगार प्राप्त व्यक्ति प्रतिदिन (संख्या)	उत्पादन (मै.टन)	औसत रोजगार प्राप्त व्यक्ति प्रतिदिन (संख्या)
अ- प्रधान खनिज				
1. लाईम स्टोन	-	-	613871	573
2. सिलिका सेण्ड	2734	190	93412	134
3. चायना क्ले	-	-	24862	8
ब- अप्रधान खनिज				
1. सेण्ड स्टोन	1240280	14490	21478846	10573
2. मारबल	1140	160	14125	181
3. स्लेट स्टोन	5320	37	500	5
4. मेसेनरी स्टोन	120860	331	1537425	678
5. लाईम स्टोन (बर्निंग)	77190	1120	416612	305
6. कंकर बजरी	3300	30	90852	200
7. मुर्रम	-	-	8000	6
8. मिट्टी	-	-	60378	0
कुल	1450824	16358	24338883	12663

स्रोत- जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996 एवं 2016)

इन्द्रगढ़ तहसील के लाखेरी के समीप पर्याप्त मात्रा में चूना पत्थर उपलब्ध होने के कारण लाखेरी में सीमेंट उद्योग की स्थापना हुई है, इसी प्रकार बून्दी तहसील के डाबी, गुढ़ा, बुधपुरा, धनेश्वर आदि इमारती पत्थर उद्योग हेतु प्रसिद्ध है। बून्दी जिले की बड़ौदिया खान से कांच बालुका का निर्यात कोटा, धौलपुर के काँच कारखानों को किया जाता है।

तालिका-2.5 के अवलोकन करने से स्पष्ट होता है, कि जिले में सेण्ड स्टोन, मेसेनरी स्टोन, लाईम स्टोन का अधिक खनन होता है। सन् 1994-95 में कुल खनिज उत्पादन का 85.49 प्रतिशत उत्पादन सेण्ड स्टोन खनिज का रहा है, जिसके फलस्वरूप 14490 व्यक्तियों को प्रति दिन रोजगार मिलता था, जो वर्ष 2014-15 में 2.76 प्रतिशत अधिक उत्पादन होने की अपेक्षा 3917 व्यक्तियों को प्रति दिन रोजगार कम प्राप्त हुआ है।

2.10 पशु संसाधन

जिला बून्दी पशु पालन तथा पशु संसाधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले में पाले जाने वाले प्रमुख पशु गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़ तथा मुर्गे व मुर्गियाँ हैं। तालिका-2.6 में बून्दी जिले में वर्ष 2003 एवं 2012 की पशु गणना के आधार पर पशु संसाधन का विवरण दिया गया है। जिला पशुधन गणना प्रतिवेदन सन् 2003 के अनुसार बून्दी जिले में कुल पशुधन 938857 था, जो वर्ष 2012 में 5.96 प्रतिशत वृद्धि के साथ 994774 हो गया है।¹² जिसमें 316926 भैंस, 260832 गाय-बैल, 308107 बकरियाँ, 66921 भेड़, 3742 ऊँट, 819 घोड़े एवं टट्टू, 8823 सूअर, 32935 मुर्गे-मुर्गियाँ, 2020 गधे, 107 खरगोश हैं। वर्ष 2003 की अपेक्षा 2012 में पशु संसाधनों के अन्तर्गत भैंस, बकरियाँ, सूअर, घोड़े एवं टट्टू में वृद्धि तथा गाय-बैल, भेड़ें, गधे, ऊँट, खरगोश, बतखे एवं मुर्गा-मुर्गियों में कमी दर्ज की गई हैं। जिला बून्दी में पशुधन

संसाधन में सर्वाधिक वृद्धि 69.72 प्रतिशत के रूप में घोड़े एवं टट्टूओं में हुई है, जबकि बतखों के अन्तर्गत 100 प्रतिशत की कमी आई है।

तालिका-2.6

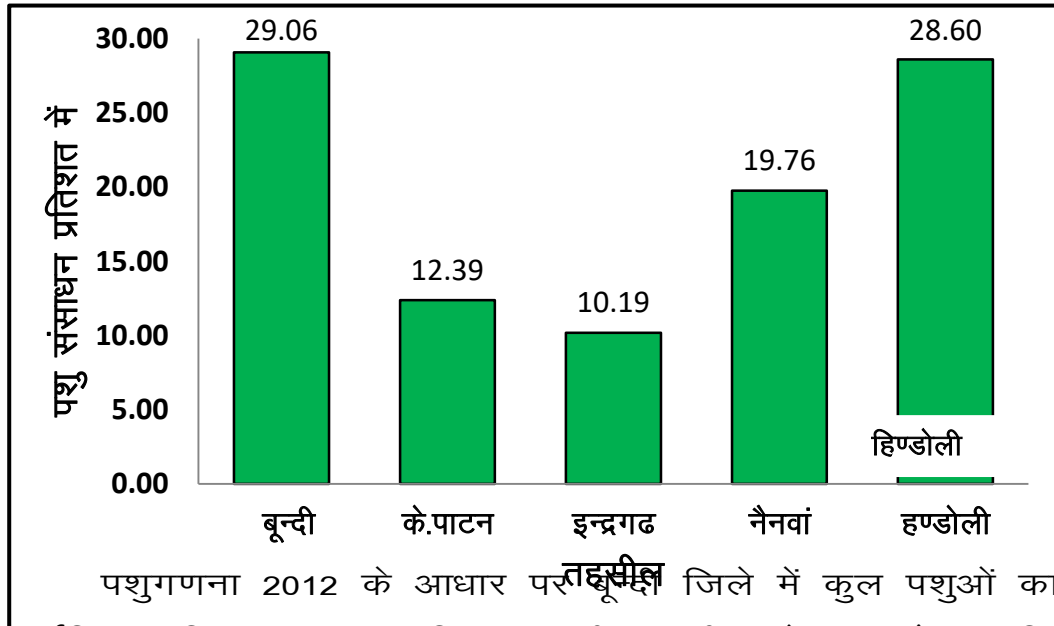
जिला बून्दी : पशु संसाधन

क्र.सं.	पशुधन एवं कुक्कुट	संख्या		वृद्धि / कमी
		वर्ष 2003	वर्ष 2012	
1	गाय एवं बैल	260832	242957	-6.85
2	भैंस / भैंसे	244901	316926	29.41
3	भेड़ें	66921	54027	-19.27
4	बकरियाँ	308107	329366	6.90
5	घोड़े एवं टट्टू	819	1390	69.72
6	गधे	2020	734	-63.66
7	ऊँट	3742	2737	-26.86
8	सूअर	8823	13595	54.09
9	खरगोश	221	107	-51.58
10	बतखें	50	-	-100.00
11	मुर्गे / मुर्गियाँ	42421	32935	-22.36
12	कुल पशुधन एवं कुक्कुट	938857	994774	5.96

स्रोत - जिला पशुगणना (2003, 2012)

आरेख -2.2

जिला बून्दी : पशु संसाधन प्रतिरूप (2012)



सर्वाधिक प्रतिशत 29.06 प्रतिशत बून्दी तहसील में रहा है, जबकि

इन्द्रगढ़ तहसील 10.19 प्रतिशत के रूप में न्यूनतम रही है। अन्य तहसीलों में पशु संसाधन का प्रतिशत क्रमशः हिण्डोली तहसील में 28.60 प्रतिशत, नैनवां तहसील में 19.76 प्रतिशत एवं केशवरायपाटन तहसील में 12.39 प्रतिशत है। बून्दी तहसील के अन्तर्गत गाय-बैल, भैंस एवं गधों का प्रतिशत क्रमशः 33.31 प्रतिशत, 38.96 प्रतिशत एवं 39.24 प्रतिशत के रूप में सर्वाधिक है। अन्य पशुओं में भेड़ एवं बकरियों का सर्वाधिक प्रतिशत हिण्डोली तहसील एवं घोड़े तथा टट्टूओं का सर्वाधिक प्रतिशत नैनवां तहसील के अन्तर्गत है। इन्द्रगढ़ तहसील जिले के कुल खरगोशों का 52.34 प्रतिशत पशुधन रखता है, जो कि अन्य तहसीलों से सर्वाधिक है।

2.11 सिंचाई

जिला बून्दी की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि कार्य है अतः यह एक कृषि प्रधान जिला है। इसलिए बून्दी जिले के अर्थतंत्र में सिंचाई का अध्ययन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बून्दी जिले में सिंचाई का प्रमुख साधन नहरें हैं। नहरों द्वारा वर्ष 2005-06 में बून्दी जिले के कुल कृषित क्षेत्र का 59.06 प्रतिशत क्षेत्र सिंचित था, जो वर्ष 2014-15 में कुल सिंचित क्षेत्र का 51.71 प्रतिशत क्षेत्र ही रहा है। वर्ष 2014-15 में कुओं द्वारा 20.77 प्रतिशत, नलकूप द्वारा 23.77 प्रतिशत एवं तालाबों से 0.35 प्रतिशत भूमि सिंचित हुई है।

बून्दी जिले में तहसील अनुसार सिंचाई प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्ष 2005-06 में बून्दी जिले में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र इन्द्रगढ़ तहसील में है, जहाँ बून्दी जिले के कुल सिंचित क्षेत्र का 36.16 प्रतिशत स्थित था, किन्तु वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र बून्दी तहसील में है जहाँ बून्दी जिले के कुल सिंचित क्षेत्र का 33.83 प्रतिशत स्थित है। वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में सिंचित क्षेत्र की दृष्टि से इन्द्रगढ़ तहसील अन्तिम स्थान पर है जहाँ बून्दी जिले के कुल सिंचित क्षेत्र का केवल 10.88 प्रतिशत स्थित है।

तालिका— 2.7

जिला बून्दी : कुल सिंचित क्षेत्रफल (2014-15)

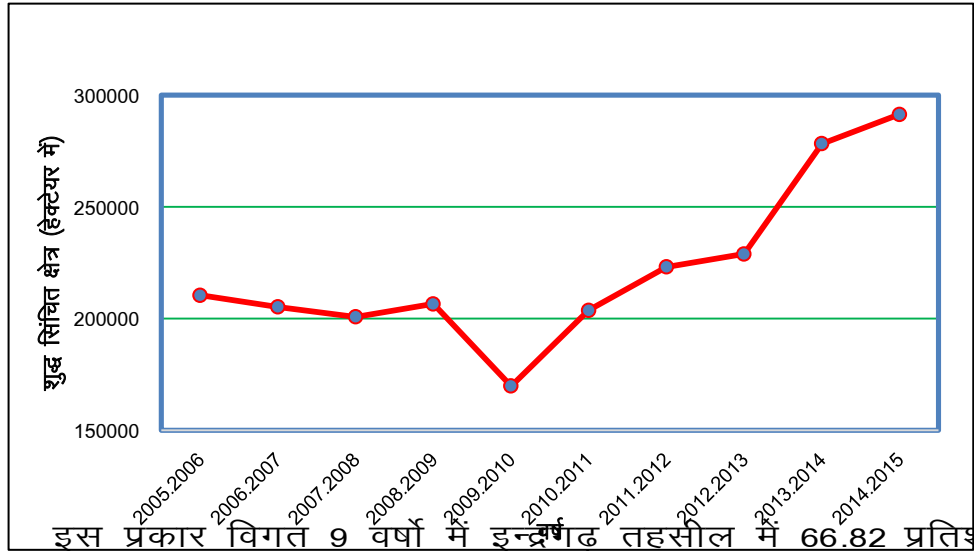
(हेक्टेयर में)

क्र. सं.	तहसील	कुल सिंचित क्षेत्रफल		वृद्धि / कमी	प्रतिशत में
		वर्ष 2005-06	वर्ष 2014-15		
1	बून्दी	40318	98602	58284	144.56
2	के.पाटन	42851	50388	7537	17.59
3	इन्द्रगढ़	95571	31706	-63865	-66.82
4	नेनवां	58354	66278	7924	13.58
5	हिण्डोली	27242	44454	17212	63.18
6	जिला बून्दी	264336	291428	27092	10.25

स्रोत - जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2006 एवं 2016)

आरेख -2.3

जिला बून्दी : शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रारूप (2006 से 2015)



इस प्रकार विगत 9 वर्षों में इन्द्रगढ़ तहसील में 66.82 प्रतिशत ऋणात्मक कमी हुई है। आरेख क्रमांक 2.3 से स्पष्ट है कि वर्ष 2009-10 से बून्दी जिले में सिंचाई के साधनों में निरन्तर वृद्धि हुई है।

2.12 जनसंख्या संरचना

जनसंख्या से तात्पर्य उस भू-भाग में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या से है जो एक निश्चित अवधि में प्रदर्शित की जाती है। जनसंख्या की संरचना अलग-अलग क्षेत्रों पर अलग-अलग प्रकार की होती है। बून्दी जिले में भी जनसंख्या प्रारूप एवं प्रतिरूप भिन्न-भिन्न प्रकार का है, जो औद्योगिक अर्थव्यवस्था को विशेष रूप से प्रभावित करती है अतः जिले में जनसंख्या संरचना के अन्तर्गत जनसंख्या, लिंगानुपात, साक्षरता, नगरीय एवं ग्रामीण संघटन आदि का अध्ययन किया गया है।

2.12.1 जनसंख्या

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 11,10,906 है जिनमें स्त्रियों की संख्या 5,33,746 तथा पुरुषों की जनसंख्या 5,77,160 है। जनसंख्या की दृष्टि से बून्दी जिला राजस्थान में 30वाँ स्थान रखता है तथा राज्य की कुल जनसंख्या में जिले बून्दी का योगदान मात्र 1.62 प्रतिशत है।¹³ तालिका-2.8 में तहसील अनुसार जनसंख्या वितरण प्रतिरूप दर्शाया गया है, जिस पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि बून्दी जिले में जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर बून्दी तहसील (411533) जो कुल जनसंख्या का 37.04 प्रतिशत है तथा अन्तिम स्थान पर 11.50 प्रतिशत के साथ इन्द्रगढ़ तहसील है।

आरेख-2.4 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार जनसंख्या प्रतिरूप दर्शाया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी तहसील कुल जनसंख्या की दृष्टि से अग्रणी है, जिसका प्रमुख कारण तहसील का आर्थिक विकास की दृष्टि से अग्रणी होना है। वर्ष 2001 की अपेक्षा 2011 में बून्दी एवं हिण्डोली तहसील में वृद्धि तथा नैनवां, केशवरायपाटन एवं इन्द्रगढ़ में कमी पाई गई है।

तालिका- 2.8

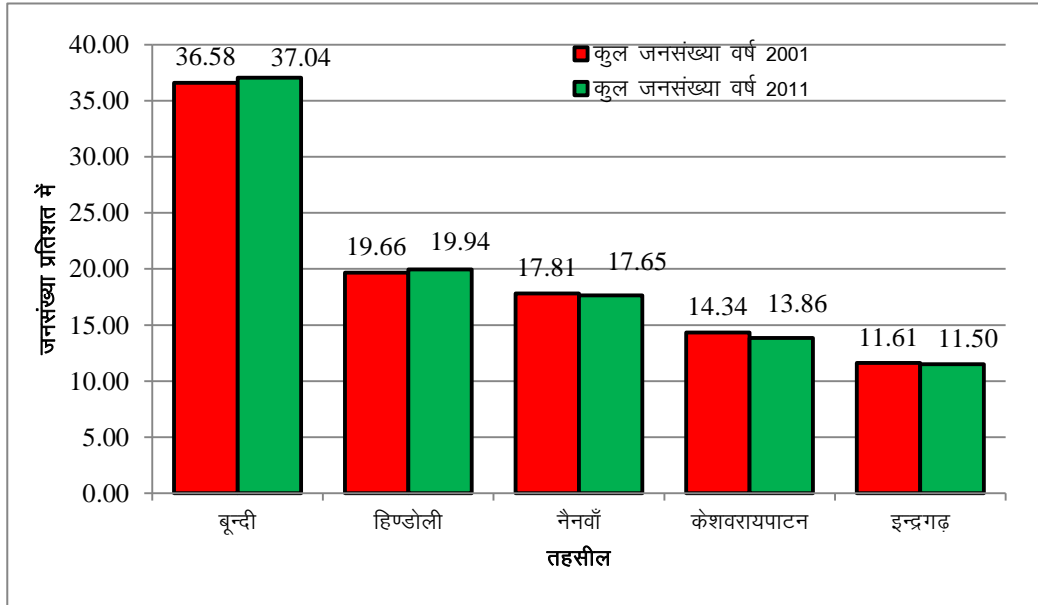
जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप (2001 एवं 2011)

क्र. सं.	तहसील	महिला		पुरुष		कुल जनसंख्या	
		वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष	वर्ष
		2001	2011	2001	2011	2001	2011
1	हिण्डोली	99580	115099	89710	106502	189290	221601
2	नैनवां	89733	102334	81668	93736	171401	196070
3	बून्दी	185097	66461	167077	61254	352174	411533
4	केशवरायपाटन	58194	79664	53553	74323	138008	153987
5	इन्द्रगढ़	72214	213602	65794	197931	111747	127715
6	जिला बून्दी	504818	577160	457802	533746	962620	1110906

स्रोत : जिला जनगणना, बून्दी (2001,2011)

आरेख - 2.4

जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप (2001 एवं 2011)



2.12.2 जनसंख्या वृद्धि दर

2001–2011 के दशक में बून्दी जिले में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 15.40 प्रतिशत रही है, जो 1991–2001 के दशक की तुलना में 9.58 प्रतिशत कम है। जिले की 2001–2011 की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर से तुलना करने पर स्पष्ट है, कि राज्य (21.30 प्रतिशत) की तुलना में बून्दी जिले की दशकीय वृद्धि दर कम रही है।¹⁴ तालिका–2.9 एवं आरेख–2.5 में बून्दी जिले में 1941 से 2011 की दशकीय वृद्धि दर के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर 1971 में (32.84 प्रतिशत) व न्यूनतम वृद्धि दर वर्ष 1951 में (12.49 प्रतिशत) रही एवं 1951 के बाद सन् 2011 में दस वर्षीय वृद्धि दर कम रही है। इस प्रकार विगत 50 वर्षों (1961 से 2011) में बून्दी जिले की जनसंख्या में सवा तीन गुना वृद्धि हुई है परन्तु 1991 के पश्चात् जनसंख्या वृद्धि दर में कमी दर्ज हुई है।

2.12.3 लिंगानुपात

प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या लिंगानुपात कहलाती है। बून्दी जिले का लिंगानुपात वर्ष 2001 में 907 था, जो वर्ष 2011 में 18 स्त्रियाँ प्रति हजार की वृद्धि के साथ 925 हो गया है। राजस्थान में वर्ष 2001 के लिंगानुपात (928) की तुलना में जिले का लिंगानुपात 21 स्त्रियाँ कम है। जिले में 0 से 6 आयु वर्ग में लिंगानुपात 894 है।¹⁵ 2011 के अनुसार जिले में ग्रामीण क्षेत्रों में 924 तथा शहरी क्षेत्रों में 929 की अपेक्षा कम लिंगानुपात पाया गया है। बून्दी जिले में तहसील अनुसार लिंगानुपात के प्रतिरूप विश्लेषण से स्पष्ट है, कि वर्ष 2011 में बून्दी जिले में सर्वाधिक लिंगानुपात केशवरायपाटन तहसील में 933 है। जबकि न्यूनतम लिंगानुपात नैनवां तहसील में 916 है। सर्वाधिक ग्रामीण लिंगानुपात केशवरायपाटन व नगरीय लिंगानुपात इन्द्रगढ़ तहसील में क्रमशः 932 व 935 है। तालिका–2.10 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार लिंगानुपात दर्शाया गया है।

तालिका- 2.9

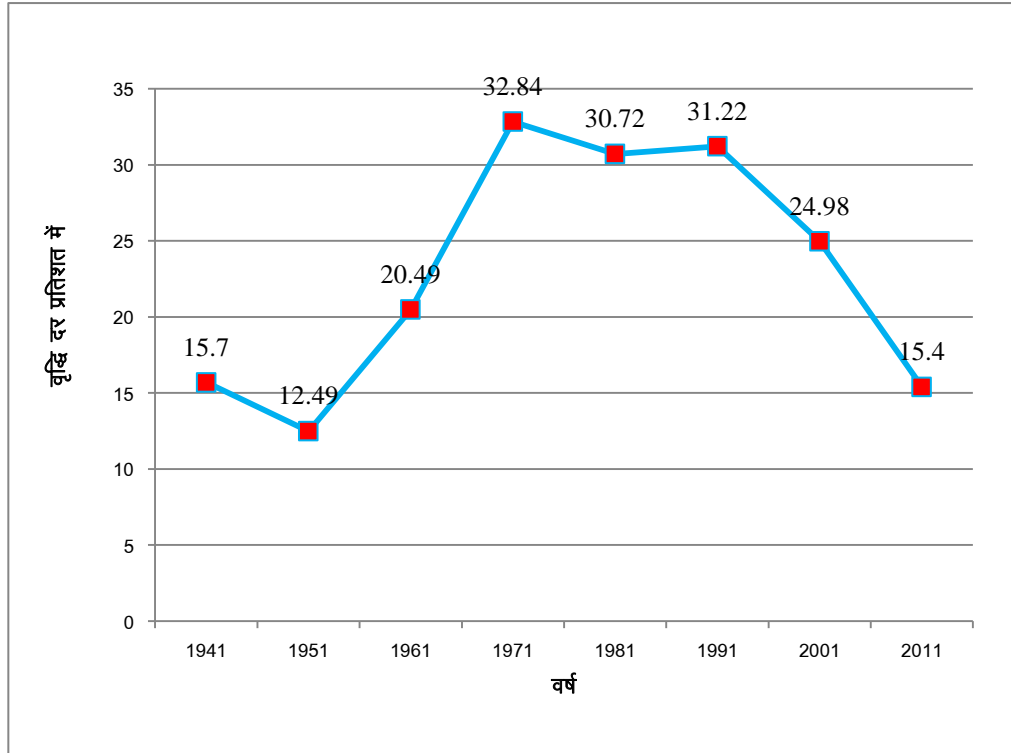
जिला बून्दी : जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर

वर्ष	वृद्धि /कमी
1941	15.70
1951	12.49
1961	20.49
1971	32.84
1981	30.72
1991	31.22
2001	24.98
2011	15.40

स्रोत : जिला जनगणना, बून्दी (1996, 2006 एवं 2012)

आरेख - 2.5

जिला बून्दी : जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर

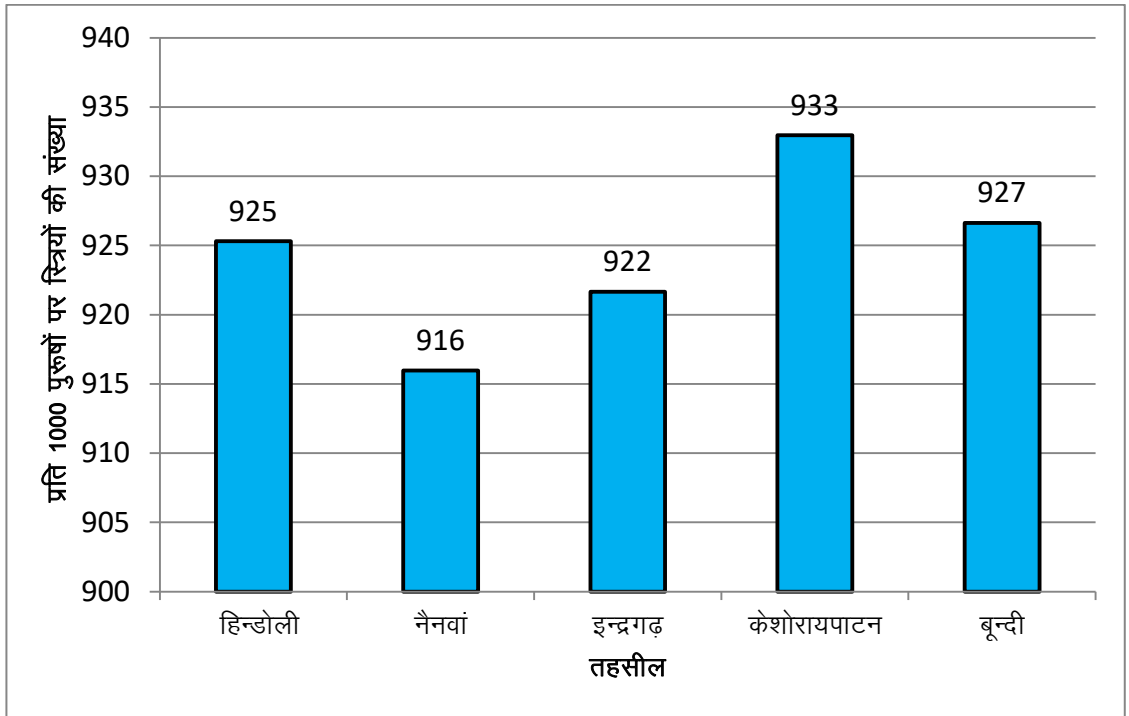


तालिका- 2.10
जिला बून्दी : लिंगानुपात (2011)

क्र. सं.	तहसील / वर्ष	लिंगानुपात		
		ग्रामीण	नगरीय	कुल
1	हिन्डोली	925	905	925
2	नैनवां	914	930	916
3	इन्द्रगढ़	915	935	922
4	केशवरायपाटन	932	934	933
5	बून्दी	927	926	927
6	2001	908	903	907
7	2011	924	929	925

स्रोत : जिला जनगणना, बून्दी (2002 एव 2012)

आरेख - 2.6
जिला बून्दी : लिंगानुपात (2011)



2.12.4 जनसंख्या घनत्व

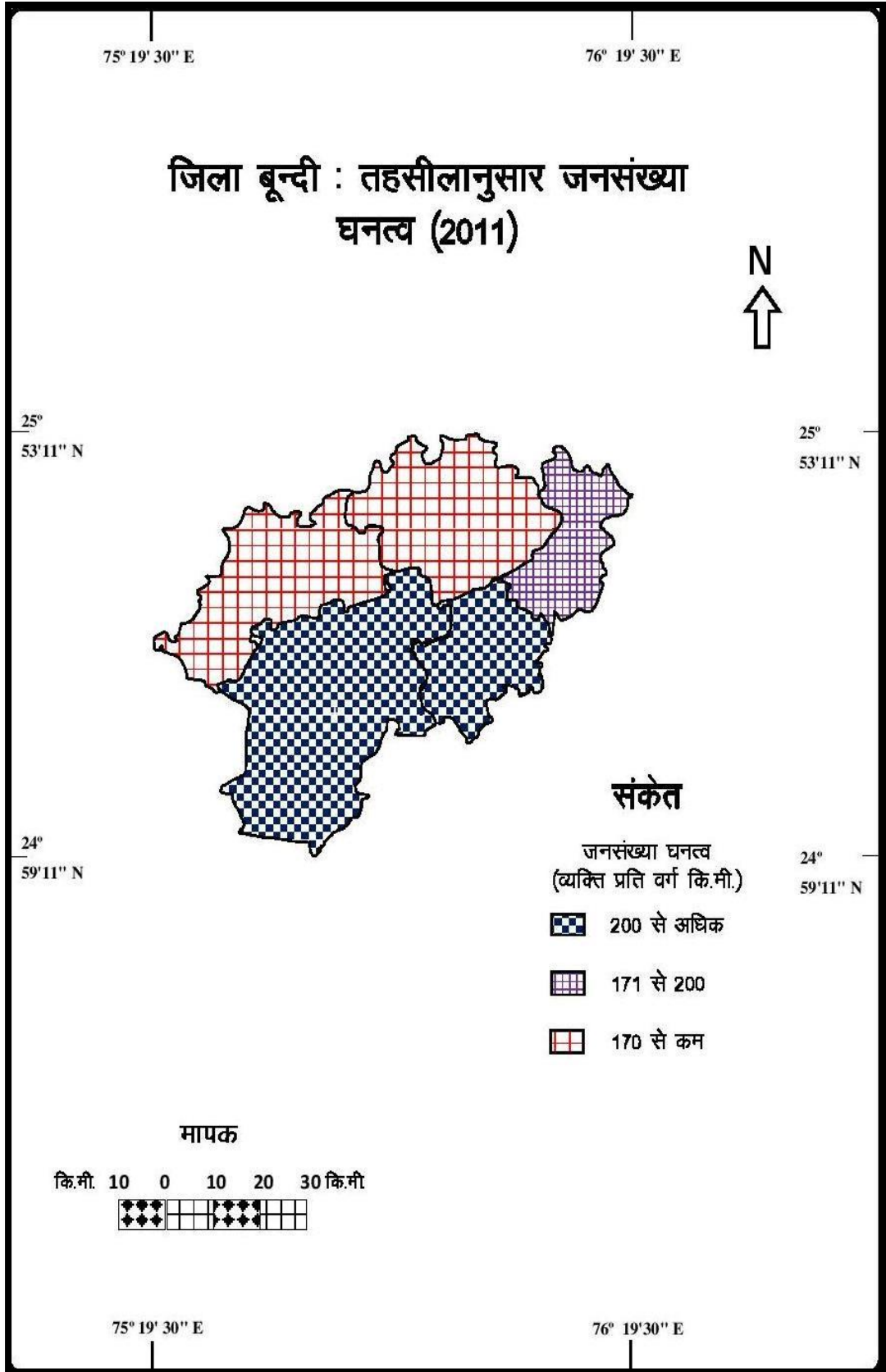
किसी प्रदेश के क्षेत्रफल और जनसंख्या के अनुपात को ही सामान्यतः जनसंख्या घनत्व कहते हैं। इस प्रकार जनसंख्या घनत्व भूमि पर जनसंख्या के दबाव को प्रदर्शित करता है। सन् 2011 में बून्दी जिले का जनसंख्या घनत्व 192 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। तहसील अनुसार जनसंख्या घनत्व वितरण पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है, कि बून्दी जिले में जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से केशवरायपाटन तहसील (218) प्रथम स्थान पर है। बून्दी तहसील (214) द्वितीय स्थान पर है तथा हिण्डोली एवं नैनवां तहसील (165) अन्तिम स्थान पर है। ग्रामीण जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक केशवरायपाटन तहसील (176) व नगरीय जन घनत्व सर्वाधिक बून्दी तहसील (3345) है।¹⁶ तहसील अनुसार जनसंख्या घनत्व का यह प्रतिरूप स्पष्ट करता है, कि केशवरायपाटन तथा बून्दी तहसीलों में मैदानी भाग एवं अधिक वर्षा के कारण उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

तालिका-2.11

जिला बून्दी : जनसंख्या घनत्व (2011)

तहसील	घनत्व (व्यक्ति/वर्ग किलोमीटर)		
	ग्रामीण	नगरीय	कुल
हिण्डोली	164	-	165
नैनवां	150	1392	165
बून्दी	157	3345	214
केशवरायपाटन	176	505	218
इन्द्रगढ़	128	838	193
जिला बून्दी	159	1259	192

स्रोत- जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2012)



तालिका-2.11 में बून्दी जिले में वर्ष 2011 का जनसंख्या घनत्व प्रारूप स्पष्ट किया गया है। इसी प्रकार मानचित्र-10 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार घनत्व वितरण प्रतिरूप दर्शाया गया है।

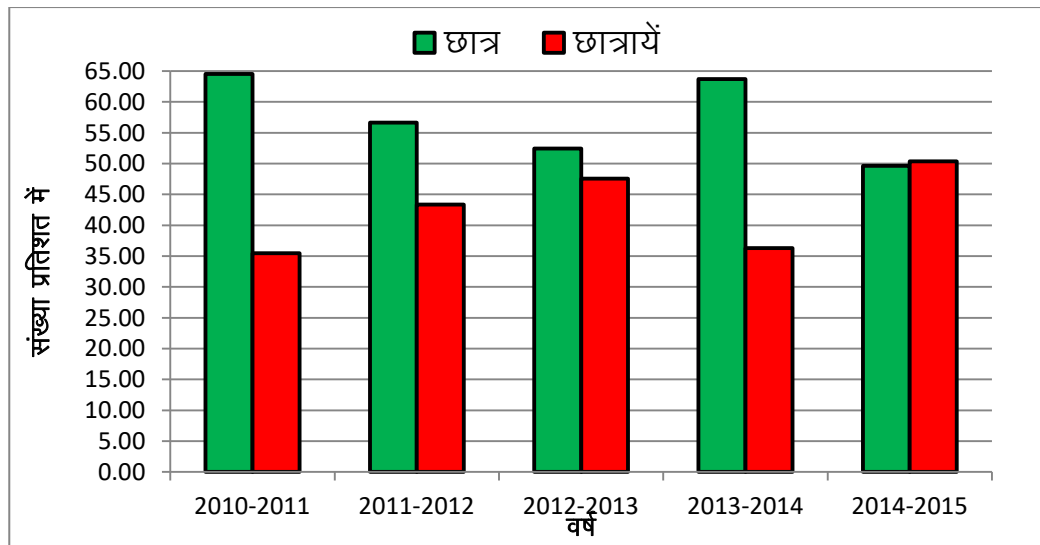
2.12.5 साक्षरता

शिक्षा व्यक्ति के जीवन के गुणात्मक पहलुओं को मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान अदा करती है। शिक्षा का महत्वपूर्ण मापदण्ड साक्षरता है, जो लोगों की गुणवत्ता मापन का एक आधार है। बून्दी जिले की कुल साक्षरता वर्ष 2001 में 55.80 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2011 में 61.5 प्रतिशत हो गई है। बून्दी जिले की साक्षरता दर राज्य की साक्षरता दर 66.10 प्रतिशत की तुलना में 4.5 प्रतिशत कम है। वर्ष 2011 में जिले में पुरुष साक्षरता दर 75.40 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता दर 46.60 प्रतिशत है।

जिला बून्दी में वर्ष 2014-15 में सामान्य शिक्षा हेतु कॉलेज संख्या 13, उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय संख्या 442, उच्च प्राथमिक विद्यालय संख्या 914 एवं प्राथमिक विद्यालय संख्या 1198 हैं।

आरेख - 2.7

जिला बून्दी : कॉलेज स्तर पर छात्र संख्या (2014-15)



स्रोत - जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2012 एवं 2016).

वर्ष 2014-15 में सामान्य शिक्षा हेतु कॉलेजों के अन्तर्गत छात्रों की संख्या 4922 तथा छात्राओं की संख्या 4995 है। आरेख-2.7 से स्पष्ट है, कि जिले में बालिका एवं महिला शिक्षा पर अधिक कार्य किया गया है।

2.12.6 ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 11,10,906 है, इसमें ग्रामीण जनसंख्या 8,88,205 और नगरीय जनसंख्या 2,22,701 है अर्थात् ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 79.95 और नगरीय जनसंख्या का 20.05 प्रतिशत है। तालिका-2.12 से स्पष्ट है कि 2001 में जिले में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 81.35 था, जो 2011 में 79.9 प्रतिशत रह गया। जबकि नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 2001 में 18.8 था वह 2011 में 20.05 हो गया।

तालिका- 2.12

जिला बून्दी : ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या (2011)

वर्ष / तहसील	ग्रामीण			नगरीय		
	पुरुष	स्त्री	योग	पुरुष	स्त्री	योग
2001	410483	372575	783058	94335	85227	179562
2011	461734	426471	888205	115426	107275	222701
हिण्डोली	114242	105726	219968	857	776	1633
नैनवां	92236	84349	176585	10098	9387	19485
इन्द्रगढ़	45457	41609	87066	21004	19645	40649
केशवरायपाटन	56203	52409	108612	23461	21914	45375
बून्दी	153596	142378	295974	60006	55553	115559

स्रोत - जिला जनगणना, बून्दी (2011)

बून्दी जिले में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या बून्दी तहसील में 33.32 प्रतिशत है, इसके पश्चात् हिण्डोली तहसील में 27.77 प्रतिशत है। सबसे कम ग्रामीण जनसंख्या इन्द्रगढ़ तहसील में 12.23 प्रतिशत है। नगरीय जनसंख्या में सर्वाधिक बून्दी तहसील में 51.89 प्रतिशत

तथा केशवरायपाटन में 20.37 प्रतिशत है। सबसे कम नगरीय जनसंख्या हिण्डोली तहसील में 0.73 प्रतिशत है।

2.12.7 अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले में अनुसूचित जाति की संख्या 210788 एवं अनुसूचित जनजाति की संख्या 228549 है, जो जिले की कुल जनसंख्या का क्रमशः 18.97 प्रतिशत एवं 20.57 प्रतिशत है।¹⁷ जिला में वर्ष 2001 में अनुसूचित जाति की संख्या 174346 थी। जो वर्ष 2011 में 20.90 प्रतिशत वृद्धि के साथ 210788 हो गई है। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की संख्या वर्ष 2001 में 194851 थी। जो 2011 में 17.29 प्रतिशत वृद्धि के साथ 228549 हो गई है। अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति का सर्वाधिक प्रतिशत बून्दी तहसील में क्रमशः 37.13 प्रतिशत एवं 36.07 प्रतिशत है। हिण्डोली तहसील में 19.48 एवं 17.95 प्रतिशत, नैनवां तहसील में 16.54 एवं 18.22 प्रतिशत, केशवराय पाटन में 14.69 एवं 14.24 प्रतिशत जनसंख्या पाई जाती हैं। इन्द्रगढ़ तहसील में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की न्यूनतम प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जिनका प्रतिशत क्रमशः 12.16 प्रतिशत एवं 13.52 प्रतिशत है। तालिका-2.13 एवं आरेख-2.8 में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की संख्या एवं प्रतिशत को भली-भांति दर्शाया गया है।

तालिका- 2.13

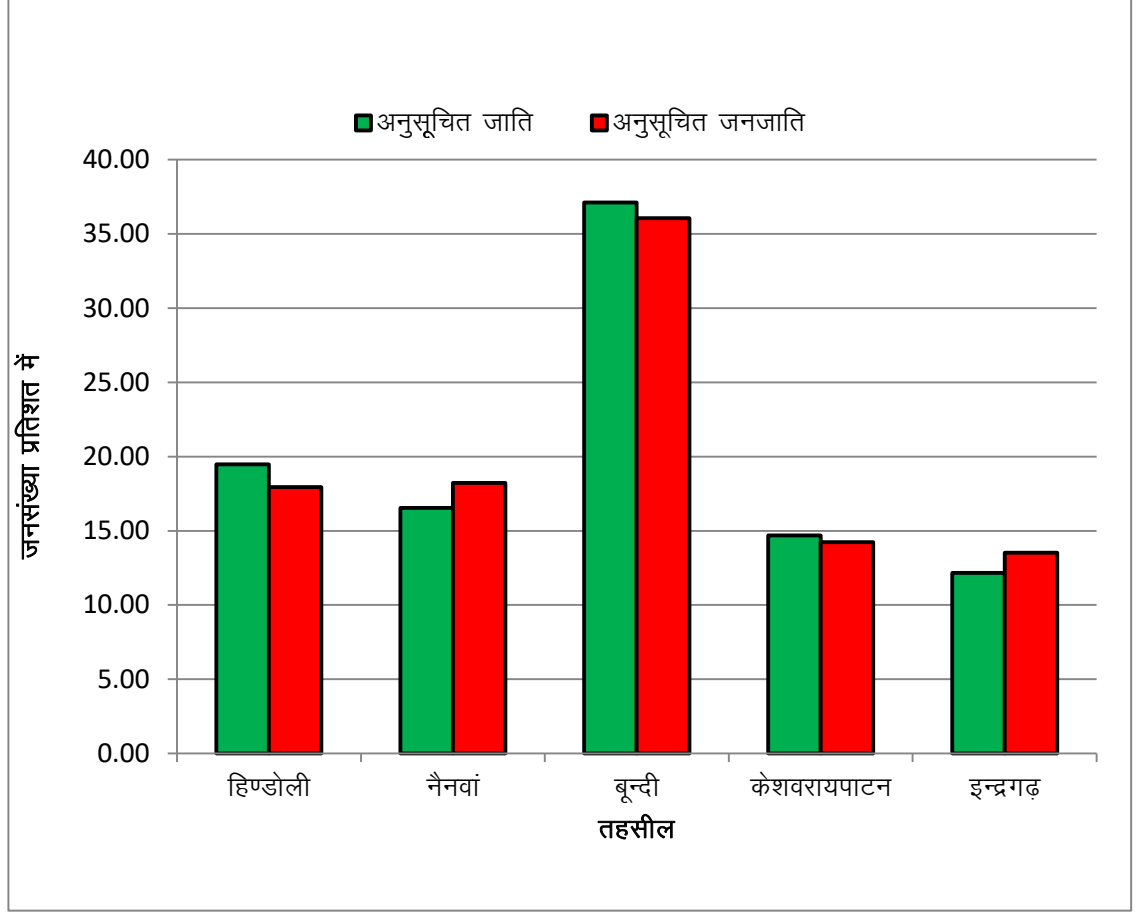
जिला बून्दी : अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या (2011)

क्र. सं.	तहसील	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अनुसूचित जाति (प्रतिशत में)	अनुसूचित जनजाति (प्रतिशत में)
1	हिण्डोली	41057	41022	19.48%	17.95%
2	नैनवां	34861	41643	16.54%	18.22%
3	बून्दी	78263	82433	37.13%	36.07%
4	केशवरायपाटन	30969	32552	14.69%	14.24%
5	इन्द्रगढ़	25638	30899	12.16%	13.52%
6	कुल	210788	228549	18.97%	20.57%

स्रोत - जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2012)

आरेख-2.8

जिला बून्दी – अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या (2011)



2.13 आर्थिक-सामाजिक विकास

आर्थिक विकास की दृष्टि से बून्दी जिला अधिक प्रगति नहीं कर पाया है। बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। बून्दी जिले की कुल जनसंख्या का लगभग 72 प्रतिशत भाग कृषि व सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है तथा कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 67.20 प्रतिशत कृषित क्षेत्र के अन्तर्गत है। औद्योगिक विकास की दृष्टि से बून्दी जिले की गणना पिछड़े जिलों में की जाती है। बून्दी जिले में वृहद-मध्यम स्तर के सात उद्योग स्थित है जिनमें से तीन उद्योग खाद्य तेल आधारित, एक सीमेंट उद्योग, एक चावल उद्योग, तथा एक चीनी उद्योग तथा एक रेशा आधारित उद्योग है। बून्दी

जिले में वर्ष 2007 में बून्दी जिले में 4060 लघु व कुटीर उद्योग स्थित थे।

2.13.1 जनसंख्या की आर्थिक संरचना

आर्थिक संरचना की दृष्टि से बून्दी जिले की कार्यशील एवं सीमान्त जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 2011 में क्रमशः 32.50 प्रतिशत एवं 18.85 प्रतिशत है। जनसंख्या संरचना का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि बून्दी जिले की कुल कार्यशील जनसंख्या का 68.78 प्रतिशत भाग कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में, 2.12 प्रतिशत घरेलु व कुटीर उद्योगों में तथा शेष 29.10 प्रतिशत अन्य आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है।¹⁸

तालिका-2.14 में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की कार्यशील जनसंख्या संरचना दिखाई गई है –

तालिका- 2.14

जिला बून्दी : कार्यकारी संरचना (2011)

क्र.सं.	आर्थिक क्रियाएँ	पुरुष	महिला	कुल
1	कृषक	146321	104132	250453
2	कृषक मजदूर	46143	65245	111388
3	घरेलु व कुटीर उद्योगों में कार्यरत	6451	4721	11172
4	अन्य कार्यों में संलग्न	115891	37187	153078
	कुल	314806	211285	526091

स्रोत : जिला उद्योग विभाग, बून्दी (2012)

2.14 परिवहन एवं संचार

जिले बून्दी में राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्गों, ग्राम सड़कों एवं सम्पर्क सड़कों का अस्तित्व देखा जा सकता है, जो किसी भी उद्योग विशेष के विकास को निर्धारित करने में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में रेलमार्गों का विस्तार बून्दी, केशवरायपाटन एवं इन्द्रगढ़ तहसील में है। बून्दी जिले का केशवरायपाटन शहर

दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। केशवरायपाटन से 6 किलोमीटर पहले मुम्बई की ओर से एक रेलमार्ग बून्दी शहर को जोड़ता हुआ चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर शहर से जुड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र से राष्ट्रीय राजमार्ग-12 (जयपुर-जबलपुर) निकलता है, जो बून्दी एवं हिण्डोली से गुजरता है। जिले के दक्षिणी भाग से पूर्व-पश्चिम गलियारा (राष्ट्रीय राजमार्ग-27) गुजरता है।

तालिका-2.15 से ज्ञात होता है कि बून्दी जिले में 2010-2011 में राष्ट्रीय राजमार्ग का विस्तार 105 किलोमीटर था, जो 2014-2015 में बढ़कर 204 किलोमीटर हो गया है। जिले में 2010-2011 में सड़कों से जुड़ने वाले ग्रामों की संख्या 639 थी, जो 2014-2015 में बढ़कर 747 हो गई है। जिले में 2010-2011 में कुल मोटर वाहनों का पंजीकरण 108709 था, जो 2014-2015 में बढ़ कर 192650 हो गया है। अतः जिले में सड़क परिवहन की स्थिति उत्तम अवस्था में पाई जाती है। संचार सुविधाओं के तहत सन् 2014-2015 में जिले के अन्तर्गत 175 डाकघर, 1 तारघर, 41 टेलीफोन केन्द्र, 14 सार्वजनिक संदेश कार्यालय एवं 4 स्थानिक कार्यालय स्थित है।¹⁹

2.15 व्यापार

जिले बून्दी में उत्पादित प्रमुख पदार्थ बासमती चावल तथा खाद्य तेल है। बासमती चावल का निर्यात बून्दी जिले से केवल राजस्थान तथा भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में विशेषकर कुवैत, सऊदी अरब, ईराक, ईरान, जकार्ता, सिंगापुर, दक्षिणी कोरिया आदि को भी किया जाता है जबकि बून्दी जिले से खाद्य तेल व खली (Deoiled Cake) का निर्यात राजस्थान के विभिन्न जिलों तथा उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात आदि राज्यों को भी किया जाता है।

2.16 पर्यटन

पर्यटन की दृष्टि से जिला बून्दी राज्य के हाड़ौती परिपथ के अन्तर्गत सम्मिलित है। बून्दी जिले का मैदानी, पठारी एवं पर्वतीय भू-आकार प्रकृति की विविधता को दर्शाते हैं, जो यहाँ के जनजीवन,

तालिका- 2.15

जिला बून्दी : सड़कें एवं उनका वर्गीकरण

(किलोमीटर में)

वर्ष	राष्ट्रीय मार्ग	पेन्ट की हुई सड़कें	धात्विक सड़कें	कंकरीट एवं सीमेंट सड़कें	कच्चे रास्ते	योग	सड़क से जुड़े हुए ग्रामों की संख्या
2010-11	105	2218	10	206	100	2639	639
2011-12	204	2154	9	148	37	2552	641
2012-13	204	2119.35	18445	63.86	46.05	2440.76	642
2013-14	204	2196.88	7.50	1.26	31.12	2440.76	644
2014-15	204	2344.65	15.45	11.75	34.25	2610.10	747

स्रोत - जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

इतिहास व संस्कृति में भी पाई जाती है। वर्ष 2015 में बून्दी जिले में स्वदेशी पर्यटकों की संख्या 54574 एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या 15290 रही है। इस वर्ष राज्य के कुल पर्यटकों का 0.19 प्रतिशत बून्दी जिले के अन्तर्गत रहा।²⁰

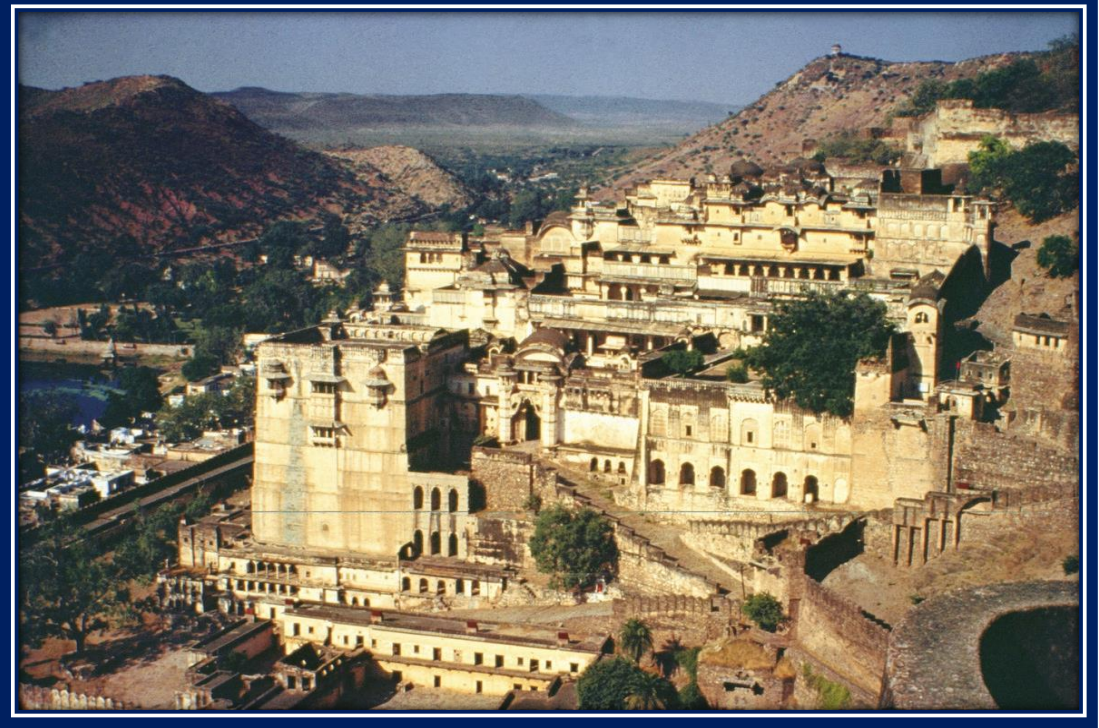
तालिका- 2.16

जिला बून्दी : पर्यटकों का आगमन

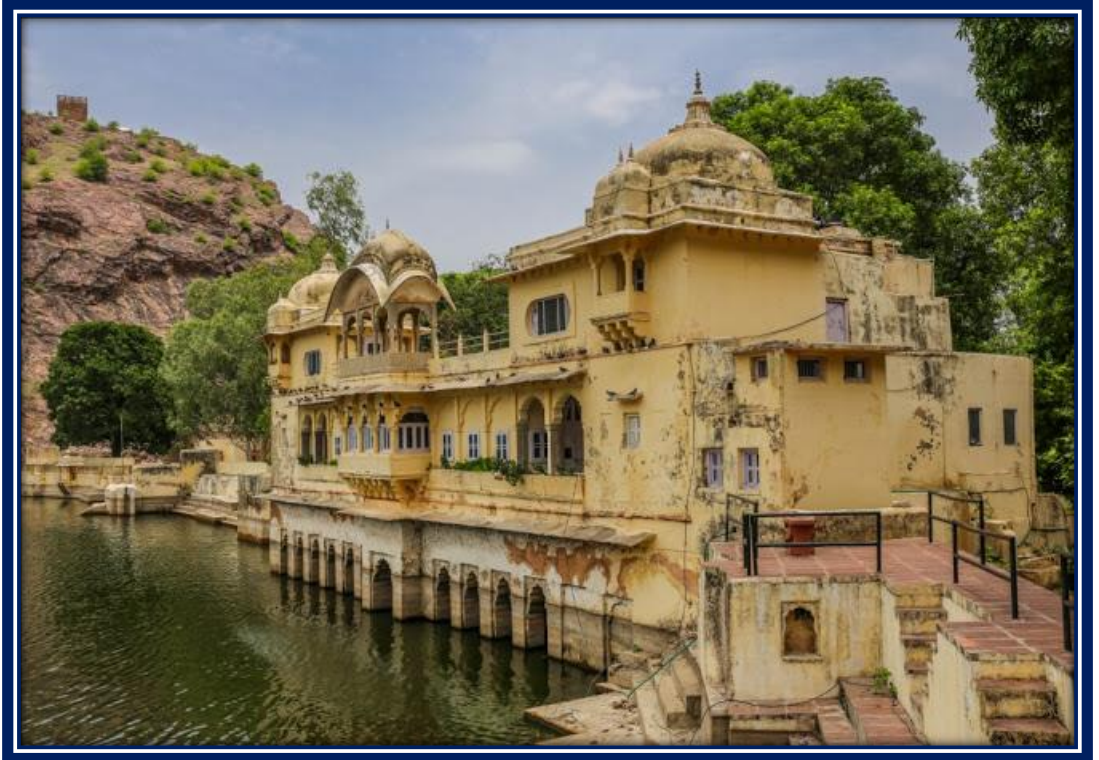
क्र.सं.	वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल
1	2012	50788	16523	67311
2	2013	49434	15739	65173
3	2014	49925	15063	64988
4	2015	54574	15290	69864

Source : www.rajasthantourism.gov.in(2016)

छायाचित्र -2.1
बून्दी : तारागढ़ दुर्ग



छायाचित्र -2.2
बून्दी : सुखमहल एवं जैत सागर



छायाचित्र -2.3

बून्दी : चौरासी खम्भों की छतरी



छायाचित्र -2.4

बून्दी : नवल सागर



अध्ययन क्षेत्र के अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार रूपयार्ड किपलिंग ने बून्दी के राजप्रसादों को मानवीय नहीं अपितु देवताओं द्वारा निर्मित बताया है। प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड के अनुसार "राजस्थान के समस्त रजवाड़े जिन्हें अपने सुन्दर राजप्रसादों पर गर्व है, उनमें बून्दी राजमहल सर्वश्रेष्ठ है"।²¹ यहाँ के पर्यटन स्थलों के अन्तर्गत तारागढ़ दुर्ग (छायाचित्र 2.1), सुख महल एवं जैत सागर (छायाचित्र 2.2), चौरासी खम्भों की छतरी (छायाचित्र-2.3), रानी जी की बावड़ी, क्षारबाग, शिकार बुर्ज, नवल सागर (छायाचित्र-2.4), केशरबाग, भीमलत, फूलसागर एवं नागर-सागर कुण्ड प्रमुख हैं। तालिका-2.16 में बून्दी जिले में देशी व विदेशी पर्यटकों की तुलनात्मक स्थिति दिखाई गई है। इस अध्याय में अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले के सन्दर्भ में भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं आर्थिक विवेचन किया गया है। बून्दी जिले का यह अध्याय अध्ययन हेतु आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

1. स्थलाकृतिक पत्रक, (2016), भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर
2. उस्मान, मोहम्मद, (2010), "बून्दी जिले में मानव संसाधन एवं कृषि विकास के स्तर का अध्ययन", पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 26
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
4. सक्सेना, डॉ. हरि मोहन, (2013), "राजस्थान का भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 25
5. तिवारी, आर. सी., (2011), "भारत का भूगोल", प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ.सं. 6
6. स्थलाकृतिक पत्रक, (2016), भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर
7. गौतम, भारतेन्दु, (2010) "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 68
8. कौशिक, एस. डी. एवं गौतम, अलका, (2015), "संसाधन भूगोल" रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ. सं. 33
9. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
10. गौतम, भारतेन्दु, (2010), "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 36
11. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 59
12. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
13. सक्सेना, डॉ. हरि मोहन, (2013), "राजस्थान का भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 193

14. सक्सेना, डॉ. हरि मोहन, (2013), "राजस्थान का भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 250
15. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
16. सक्सेना, डॉ. हरि मोहन, (2013), "राजस्थान का भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 258
17. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
18. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 13
19. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 72
20. प्रगति प्रतिवेदन, (2015–16), पर्यटन विभाग, राजस्थान
21. गौतम, भारतेन्दु, (2010) "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन" पीएच.डी. शोध ग्रंथ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 53

तृतीय अध्याय
सामान्य भूमि उपयोग एवं
कृषि प्रारूप

तृतीय अध्याय

सामान्य भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप

3.1 प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही बून्दी जिला कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला जिला रहा है, जहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 68.78 प्रतिशत भाग कृषि एवं सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है। बून्दी जिले का कृषि प्रधान औद्योगिक भू-दृश्य एवं विकास भी कृषि उत्पादन व विविधता का ही परिणाम है। जिले की भौगोलिक दशाएँ विभिन्न प्रकार की फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल है। बून्दी जिला कृषि उत्पादन में धान उत्पादन की दृष्टि से राज्य में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिला के अन्तर्गत गन्ना, सरसों, सोयाबीन, धान आदि फसलों का उत्पादन भी किया जाता है।

3.2 बून्दी जिले का सामान्य फसल प्रारूप

वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले के सकल बोया गया भौगोलिक क्षेत्रफल का 62.28 प्रतिशत भाग सकल सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत है।¹ जिले में कृषि की आदर्श दशाएँ उपलब्ध होने से कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है। विविधतायुक्त भौगोलिक परिस्थितियाँ जैसे— वर्षा, तापमान, सिंचाई, मृदा, तकनीकी, सामाजिक—आर्थिक प्रगति तहसील अनुसार स्थानिक कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करती है। अतः बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप में पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। बून्दी जिले में उत्पादित की जाने वाली फसलों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है—

3.2.1 रबी की फसल (उनालू की फसल)

3.2.2 खरीफ की फसल (स्यालु की फसल)

3.2.3 जायद की फसल

3.2.1 रबी (उनालू) की फसल

इसे “जाड़े की फसल” भी कहा जाता है। बून्दी जिले में उत्पन्न की जाने वाली प्रमुख रबी की फसलों में गेहूँ, जौ, चना, सूरजमुखी, मटर, सरसों, धनिया, तारामीरा आदि सम्मिलित है।

तालिका - 3.1

जिला बून्दी : मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल (वर्ष 2014-15)

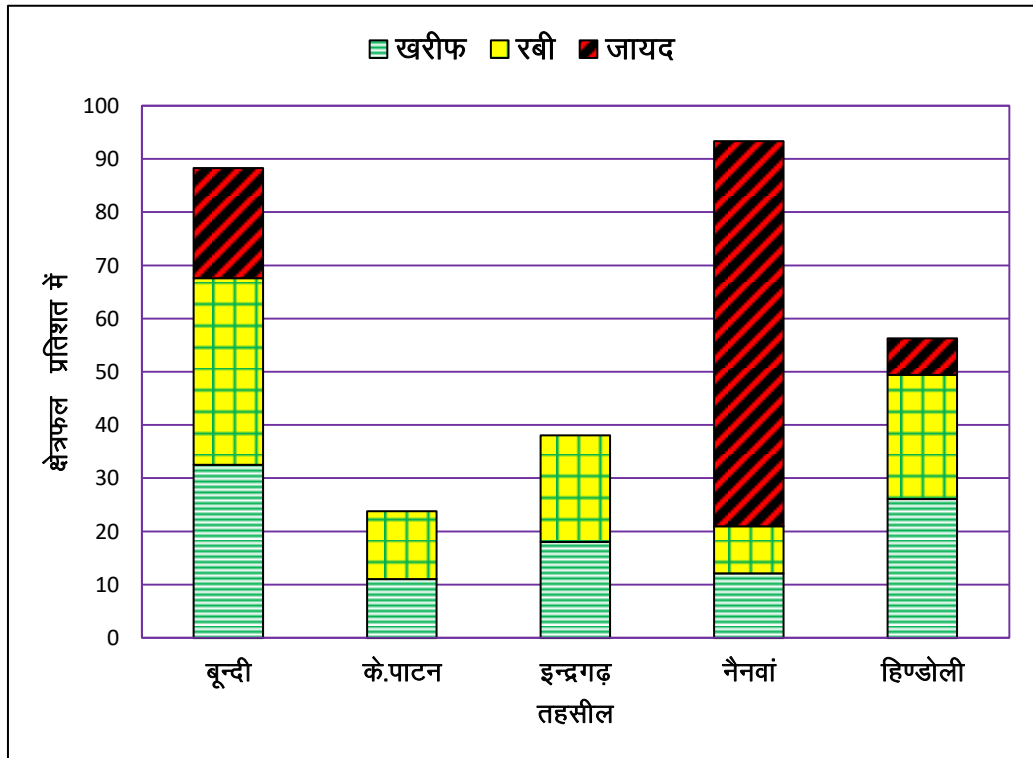
(प्रतिशत में)

क्र.सं.	तहसील	खरीफ	रबी	जायद
1	बून्दी	32.58	35.05	20.69
2	केशवरायपाटन	11.06	12.79	0
3	इन्द्रगढ़	18.07	20.04	0
4	नैनवां	12.19	8.79	72.41
5	हिण्डोली	26.1	23.34	6.9
6	कुल	100	100	100

स्रोत : जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2017-18)

आरेख - 3.1

जिला बून्दी : मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल (वर्ष 2014-15)



वर्ष 1994–95 में रबी की फसल के अन्तर्गत क्षेत्र समस्त बोया हुआ क्षेत्रफल का 36.88 प्रतिशत था, जो वर्ष 2014–15 में शत प्रतिशत से अधिक वृद्धि के साथ समस्त बोया गया क्षेत्र का 54.42 प्रतिशत हो गया है।²

3.2.2 खरीफ (स्यालु) की फसल

यह फसल मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती है इसके अन्तर्गत मुख्यतः चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, उड़द, मूंग, मूंगफली, गन्ना आदि उत्पन्न किए जाते हैं। वर्ष 2014–15 में कुल समस्त बोया हुआ क्षेत्र का लगभग 45.58 प्रतिशत भाग रबी की फसलों के अन्तर्गत था।³

3.2.3 जायद की फसल

जायद की फसल में मुख्य रूप से तरबूज, खरबूज तथा सब्जियों में मटर, गोभी, भिंडी, आलू, प्याज, टमाटर, मिर्च, शकरकंद का उत्पादन किया जाता है। जायद की फसलों के अन्तर्गत वर्ष 2014–15 में 92.33 प्रतिशत क्षेत्र में कमी आई है, जो वर्ष 1994–95 में 378 हेक्टेयर था। अतः वर्तमान में जायद की फसल एक प्रतिशत से भी कम क्षेत्रफल (29 हेक्टेयर) के अन्तर्गत उत्पादित की जाती है। हिण्डोली तहसील के बड़ा नयागाँव, चतरगंज एवं नैनवां तहसील के करवर, दुगारी, बांसी तथा केशवरायपाटन तहसील उक्त फसलों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है।

तालिका-3.1 एवं आरेख-3.1 से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल की दृष्टि से खरीफ एवं रबी में सर्वाधिक क्षेत्रफल बून्दी तहसील के अन्तर्गत सम्मिलित है, क्योंकि बून्दी तहसील में नहरों द्वारा सिंचाई होने से कृषक केवल व्यापारिक फसले ही उत्पादित करते हैं इसी प्रकार जायद की फसलों की पैदावार के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल नैनवां तहसील में है, जो जिले में 72.41 प्रतिशत क्षेत्रफल के साथ प्रथम स्थान पर है।

3.3 कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारक

बून्दी जिले की भौगोलिक दशाओं ने स्थानीय कृषि प्रारूप, प्रकार एवं वितरण को प्रभावित किया है, फलस्वरूप बून्दी जिले के

कृषि फसल प्रारूप में पर्याप्त विविधताएं दृष्टिगोचर होती हैं। बून्दी जिले में कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक भू-आकृति, मृदा, वर्षा, सिंचाई, आर्थिक व तकनीकी प्रगति, सामाजिक दशाएँ आदि हैं।

3.3.1 भू-आकृति

बून्दी जिले के कृषि प्रारूप को निर्धारित करने में भू-आकृतिक स्वरूप का महत्वपूर्ण योगदान है। बून्दी जिले में प्रथम भू-आकृतिक अरावली श्रेणी एवं द्वितीय भू-आकृतिक दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग है। पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्र के अपरदन व अपक्षय क्रिया से काली मृदा का मैदान बन गया है। अरावली श्रेणी बून्दी जिले के लगभग मध्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा की ओर फैली हुई है। अरावली श्रेणी तथा इसका उत्तरी एवं उत्तरी-पूर्वी भाग पहाड़ी व चट्टानी विशेषता वाला है, जबकि दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग अपेक्षाकृत समतल व मैदानी विशेषता वाला है, यह भू-आकृति जिले के स्थानिक कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करती है। दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग में गेहूँ, चावल, सरसों एवं सोयाबीन की कृषि की जाती है जबकि उत्तरी व उत्तरी-पूर्वी भाग में मक्का, ज्वार, बाजरा एवं दलहन की कृषि की जाती है।

3.3.2 मृदा

भू-आकृति की तरह मृदा भी कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। अध्याय-2 में मानचित्र-6 में बून्दी जिले में मृदा प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में मुख्यतः दो प्रकार की मृदा-मिश्रित लाल-काली मृदा तथा गहरी-मध्यम काली मृदा पाई जाती है। मिट्टियों के प्रकार एवं उनकी विशेषताओं के कारण अध्ययन क्षेत्र में फसलों के वितरण में भी विभिन्नता पाई जाती है। मिश्रित लाल-काली मृदा उत्तरी व उत्तरी पूर्वी भाग में पाई जाती है जबकि दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग में गहरी-मध्यम काली मृदा तथा मध्य के अरावली श्रेणी क्षेत्र में पूर्वी ढालों पर हल्की काली मृदा पाई जाती है।⁴ मिश्रित लाल-काली मृदा सरसों, दलहन व मोटे अनाजों की कृषि के लिए तथा गहरी मध्यम

काली मिट्टी गेहूँ, चावल, सोयाबीन सरसों जैसी फसलों के लिए उत्तम है।

3.3.3 वर्षा

जहाँ कृषि विकास के लिए अन्य भौतिक कारक महत्वपूर्ण हैं, वहीं जिले के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विकास वर्षा वितरण प्रतिरूप के आधार पर मिलता है। अतः वर्षा की भिन्नता कृषि उत्पादन प्रतिरूप में भिन्नता के लिए एक प्रमुख उत्तरदायी कारक है। बून्दी जिले में वार्षिक वर्षा का औसत 79.63 सेन्टीमीटर है। तहसील अनुसार वर्षा वितरण प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है, कि सर्वाधिक वार्षिक वर्षा औसत का हिण्डोली तहसील में (99.00 सेन्टीमीटर) जबकि न्यूनतम औसत इन्द्रगढ़ तहसील में 63.60 सेन्टीमीटर है। अध्याय-2 में आरेख-2.1 में बून्दी जिले में वर्ष 2005-2015 की अवधि में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप दर्शाया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त 11 वर्ष की अवधि में मात्र चार वर्षों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई है। बून्दी जिले में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप ने बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है जिसका प्रभाव कृषि आधारित उद्योगों की अवस्थिति व विकास पर पड़ा है।

3.3.4 सिंचाई

वर्षा के अभाव में फसलों को कृत्रिम रूप से जल उपलब्ध करवाना सिंचाई कहलाता है। औसत वार्षिक वर्षा कम होने के कारण बून्दी जिले में सिंचाई कृषि कार्य का एक अनिवार्य अंग बन गई है। जिले में हिण्डोली, केशवरायपाटन तथा बून्दी तहसील का दक्षिणी एवं पूर्वी भाग पर चम्बल बायीं मुख्य नहर द्वारा सिंचित है अतः कृषि विकास नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील की अपेक्षा अधिक है।

3.3.5 आर्थिक व तकनीकी प्रगति

बून्दी जिले में कृषि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक कृषकों की आर्थिक स्थिति व तकनीकी विकास है क्योंकि आर्थिक व तकनीकी सुविधा की उपलब्धि पर कृषि कार्य भली प्रकार किया जा सकता है। बून्दी जिले की पाँचों तहसीलों के सर्वेक्षण एवं अनुभव के

आधार पर ज्ञात होता है, कि बून्दी व केशवरायपाटन कृषि हेतु बैंकिंग, बीमा, वित्तीय सहायता तथा तकनीकी सुविधाएँ जैसे – कृषि उपकरण, उत्तम खाद व बीज, उत्पादन हेतु विशेषज्ञ सलाह, सिंचाई एवं शिक्षा व्यवस्था, परिवहन के साधन आदि आधारभूत संरचना की दृष्टि से विकसित तहसीलें हैं। उक्त दोनों तहसीलों में अन्य तीनों तहसीलों (इन्द्रगढ़, नैनवां, हिण्डोली) की अपेक्षा आर्थिक सुविधाएँ अधिक उपलब्ध हैं। परिणामतः बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में चावल, सरसों, गेहूँ जैसी खर्चीली फसलों की कृषि पर्याप्त मात्रा में की जाती है। बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलें समग्र कृषि उत्पादन की दृष्टि से भी बून्दी जिले में प्रमुख स्थान रखती हैं।

3.3.6. सामाजिक व्यवस्थाएँ

यह प्रणाली मुख्यतया संस्थागत कारकों के रूप में कार्य करती है। इसलिए इसे संस्थागत कारक भी कहते हैं। विभिन्न सामाजिक समूहों की अपनी अलग-अलग व्यवस्थाएँ होती हैं और इन्हीं व्यवस्थाओं के आधार पर कृषि कार्य भी किया जाता है। बून्दी तहसील को 'बावन बयालिसा' प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है,⁵ इसलिए बून्दी तहसील के किसानों को बावन के व्यापारी भी कहा जाता है। अतः बून्दी जिले के सामाजिक प्रतिरूप ने स्थानीय कृषि उत्पादन प्रारूप को प्रभावित किया है।

बून्दी जिले की बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलें आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील हैं, जिसके कारण वे कृषि कार्य में नवीन यंत्रों, तकनीकी, उत्तम खाद व बीज के प्रयोग में अन्य तहसीलों से आगे हैं। फलस्वरूप दोनों तहसीलें बून्दी व केशवरायपाटन कृषि उत्पादन व विविधता की मात्रा शेष तीनों तहसीलों से अधिक रहती हैं। हिण्डोली, नैनवां, इन्द्रगढ़ तहसीलों के कृषि क्षेत्र तहसीलों के आंतरिक क्षेत्रों में स्थित हैं न कि सम्पूर्ण क्षेत्र में। इस प्रकार तीनों तहसीलें सामाजिक व आर्थिक स्तर की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों की गिनती में आती हैं क्योंकि इन तहसीलों में सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं इसका प्रभाव स्थानीय कृषि उत्पादन व कृषि उद्योगों पर परिलक्षित होता है।

3.4 भूमि उपयोग प्रतिरूप

भूमि एक संसाधन का रूप है, जिसका उपयोग मानवीय आवश्यकताओं के रूप में किया जाता है। इसलिए भूमि उपयोग का अर्थ उन सभी प्रकार की भूमियों से लिया जाता है, जो चाहे कृषि, औद्योगिक, नगरीय या ग्रामीण क्षेत्रों में हों।

फोक्स के शब्दों में भूमि उपयोग को इस प्रकार समझा जा सकता है— “निहित भूमि विशेषताओं के आधार पर किसी क्षेत्र का वास्तविक प्रयोजन के साथ उपयोग को भूमि उपयोग कहते हैं।”⁶ अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग के अन्तर्गत कुल भौगोलिक क्षेत्रफल विभिन्न प्रकार के उपयोगों जैसे कृषि, वन, परती भूमि, कृषि के अतिरिक्त कार्यों में प्रयुक्त भूमि सम्मिलित होती है। बून्दी जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 581938 हेक्टेयर है। बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिशत क्षेत्र (80.41 प्रतिशत) समस्त बोये गये क्षेत्र के अन्तर्गत है तथा न्यूनतम प्रतिशत क्षेत्र पड़त भूमि के अन्तर्गत (5.70 प्रतिशत) है।⁷ तालिका—3.2 एवं आरेख— 3.2 तथा 3.3 में बून्दी जिले का भूमि उपयोग प्रतिरूप दर्शाया गया है।

3.4.1 कृषि भूमि

बून्दी जिले के भूमि उपयोग प्रतिरूप में वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल 265207 हेक्टेयर है अतः जिले में कृषि कार्य की प्रधानता है। जंगलात के अन्तर्गत क्षेत्रफल 141701 हेक्टेयर है। तालिका — 3.2 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप दर्शाया गया है, जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले की केशवरायपाटन तहसील के अन्तर्गत कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का वास्तविक बोया गया क्षेत्र का प्रतिशत 65.25 प्रतिशत है, जो अन्य की अपेक्षा सर्वाधिक है। भूमि उपयोग प्रतिरूप में कृषि कार्य की प्रधानता का मुख्य कारण जिले में परती भूमि को कृषि कार्य के अन्तर्गत परिवर्तन में लाना है।

3.4.2 वन भूमि

तालिका—3.2 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप दर्शाया गया है। भौगोलिक क्षेत्र के 24.35 प्रतिशत क्षेत्र पर

तालिका – 3.2

जिला बून्दी – भूमि उपयोग प्रतिरूप (2004–05 से 2014–15)

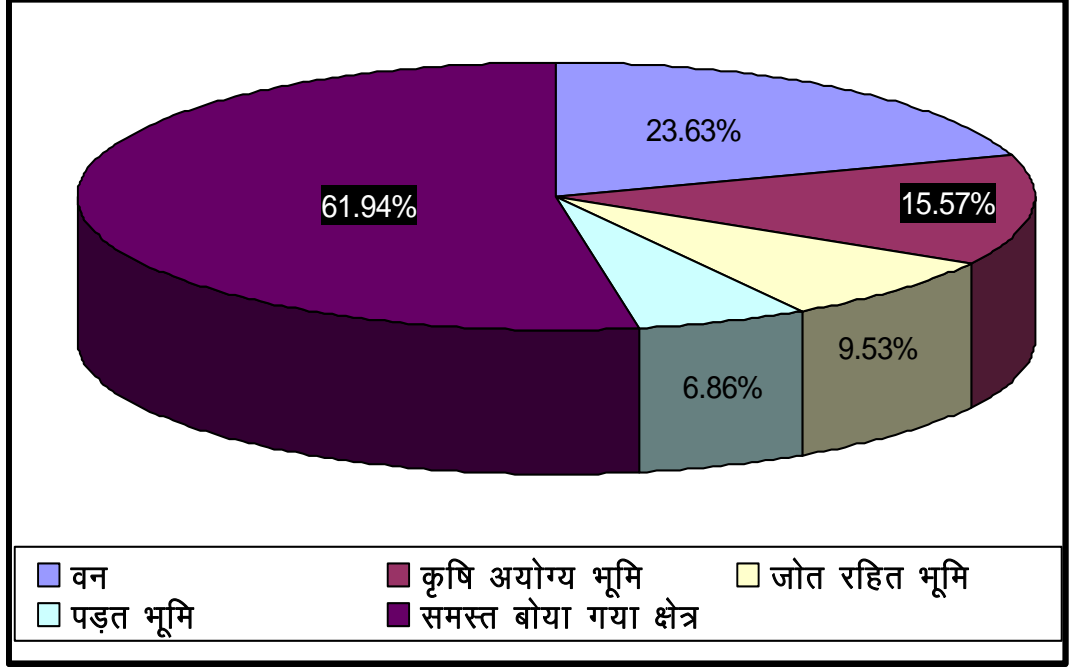
(क्षेत्रफल–हेक्टेयर)

क्र.सं.	वर्ष	भूमि उपयोग प्रतिरूप					
		कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	वन	कृषि अयोग्य भूमि	जोत रहित भूमि	पड़त भूमि	समस्त बोया गया क्षेत्र
1	2004-05	581938	137486	90583	55432	39910	360435
2	2005-06	581938	141311	89832	54464	36530	391103
3	2006-07	581938	141815	89098	54453	42599	371313
4	2007-08	581938	142086	88753	54510	42563	403236
5	2008-09	581938	142413	89274	53543	39038	413446
6	2009-10	581938	142678	90760	53452	43967	383768
7	2010-11	581938	143089	89336	53114	35023	443917
8	2011-12	581938	143637	88807	52763	34062	461365
9	2012-13	581938	142413	89274	53543	39038	413446
10	2013-14	581938	143664	88453	52104	33213	456516
11	2014-15	581938	141701	90557	51909	32564	467959

स्रोत – जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

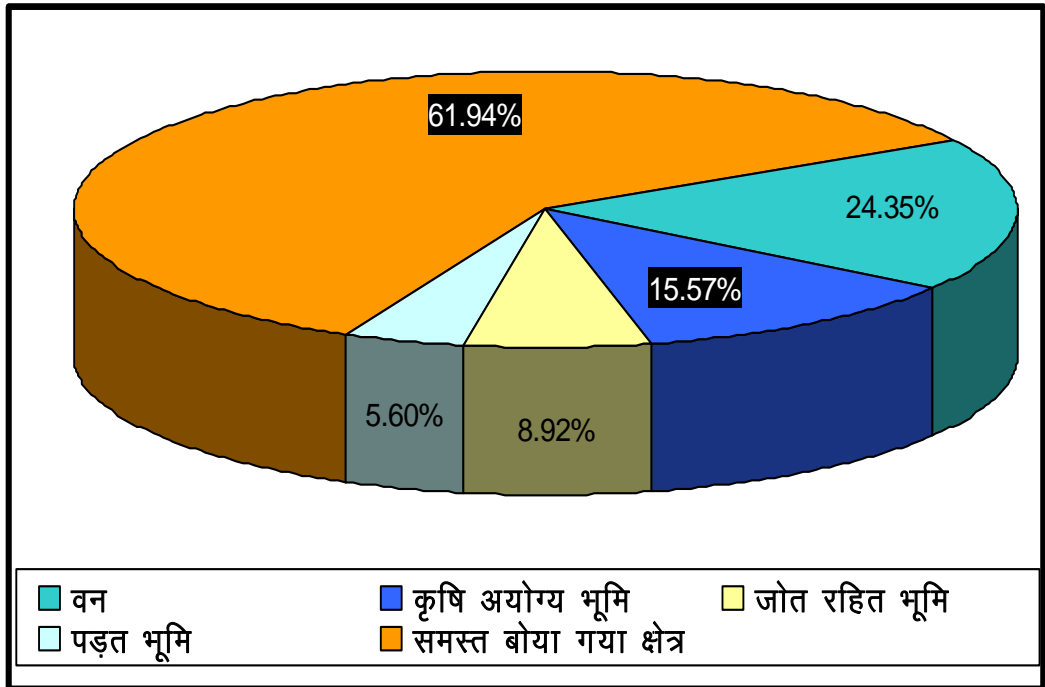
आरेख-3.2

जिला बून्दी : भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2004-05)



आरेख-3.3

जिला बून्दी : भूमि उपयोग प्रतिरूप (2014-15)



वनों का विस्तार है। कुल वनों के तहत सर्वाधिक क्षेत्रफल बून्दी तहसील में 43.45 प्रतिशत है। वन क्षेत्र की दृष्टि से हिण्डोली तहसील प्रथम स्थान पर है। जिसके कुल भौगोलिक क्षेत्र के 33.25 प्रतिशत भाग पर वनों का विस्तार है, जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है अन्तिम स्थान पर केशवरायपाटन तहसील है, जिसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर मात्र 6.57 प्रतिशत एवं कुल वनों का मात्र 3.27 प्रतिशत भू-भाग पर वनों का विस्तार है। इसका मुख्य कारण केशवरायपाटन तहसील में भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होना है।

3.4.3 कृषि अयोग्य भूमि

कृषि अयोग्य भूमि के अन्तर्गत दो प्रकार की भूमि सम्मिलित है प्रथम – वह भूमि जो कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त की जा रही है, जिसका प्रयोग आबादी, सड़कें, रेल, तालाब, उद्योग, नहरों तथा अन्य सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक क्रियाकलापों में हो रहा है। द्वितीय— वह भूमि है, जो बंजर व ऊसर होने के कारण कृषि कार्य के अयोग्य है तथा वह भूमि जो पूर्णतया पहाड़ी, चट्टानी, पठारी, मरुस्थल के रूप में है।⁸ तालिका-3.2 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 15.56 प्रतिशत भू-भाग कृषि अयोग्य भूमि के अन्तर्गत है। वह भूमि जो कृषि के अतिरिक्त और काम में ली गई है का प्रतिशत 7.08 तथा ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि का प्रतिशत 8.47 है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का न्यूनतम कृषि अयोग्य भूमि का प्रतिशत नैनवां तहसील में (9.39 प्रतिशत) तथा सर्वाधिक कृषि अयोग्य भूमि केशवरायपाटन तहसील (17.04 प्रतिशत) में है। कुल कृषि अयोग्य भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत बून्दी तहसील में 36.53 प्रतिशत एवं न्यूनतम प्रतिशत इन्द्रगढ़ तहसील में 12.10 प्रतिशत है।

3.4.4 जोत रहित भूमि

इस प्रकार की भूमि में स्थाई चरागाह, अन्य गोचर भूमि, झाड़-झंखाड़, कृषि योग्य बंजर भूमि तथा वृक्षों के झुण्ड एवं बाग सम्मिलित है, यह ऐसी भूमि है जिसको साफ करके अथवा उपचारित

कर कृषि के अन्तर्गत लाया जा सकता है। तालिका-3.2 के विश्लेषण से स्पष्ट है, कि बून्दी तहसील के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 8.32 प्रतिशत भाग जोत रहित भूमि के अन्तर्गत है, जबकि जोत रहित भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल केशवरायपाटन तहसील में (4.22 प्रतिशत) व अधिकतम क्षेत्रफल हिण्डोली तहसील में (10.71 प्रतिशत) है किन्तु कुल जोत रहित भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत भू-भाग बून्दी तहसील के अन्तर्गत है।

3.4.5 पड़त भूमि

इस भूमि के अन्तर्गत दो प्रकार की भूमि सम्मिलित है प्रथम- चालू पड़त भूमि तथा द्वितीय- अन्य पड़त भूमि। बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 5.70 प्रतिशत क्षेत्र परती भूमि के अन्तर्गत है। तालिका-3.2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में परती भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत क्षेत्र इन्द्रगढ़ तहसील में (12.02 प्रतिशत) तथा न्यूनतम प्रतिशत क्षेत्र नैनवा तहसील में (4.40 प्रतिशत) है जिसका प्रमुख कारण नैनवा तहसील में कृषि कार्य हेतु उपयुक्त भौगोलिक दशाओं का होना है, जहाँ कृषि भूमि के अन्तर्गत वास्तविक बोया गया क्षेत्र का प्रतिशत 57.51 है।

बून्दी जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप के तहसील अनुसार विश्लेषण से स्पष्ट है कि कृषित भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत क्षेत्र केशवरायपाटन, इन्द्रगढ़ तथा नैनवा में है, जबकि बून्दी एवं हिण्डोली तहसीलों में जहाँ कृषि कार्य हेतु उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ विद्यमान नहीं हैं, वहाँ भूमि का प्रयोग कृषि कार्य के अलावा अन्य कार्यों में किया जाता है।

3.5 फसलों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप

बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार के अनाज, दलहन, तिलहन, मसालें एवं फल-सब्जियों की फसलें समान रूप से उत्पन्न की जाती हैं, जिनमें खाद्यान्न, व्यापारिक तथा औद्योगिक फसलें भी सम्मिलित हैं, जो जिले की अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान रखती हैं, किन्तु तहसील स्तर पर इस फसल उत्पादन प्रतिरूप में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। प्रत्येक तहसील में भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलों की

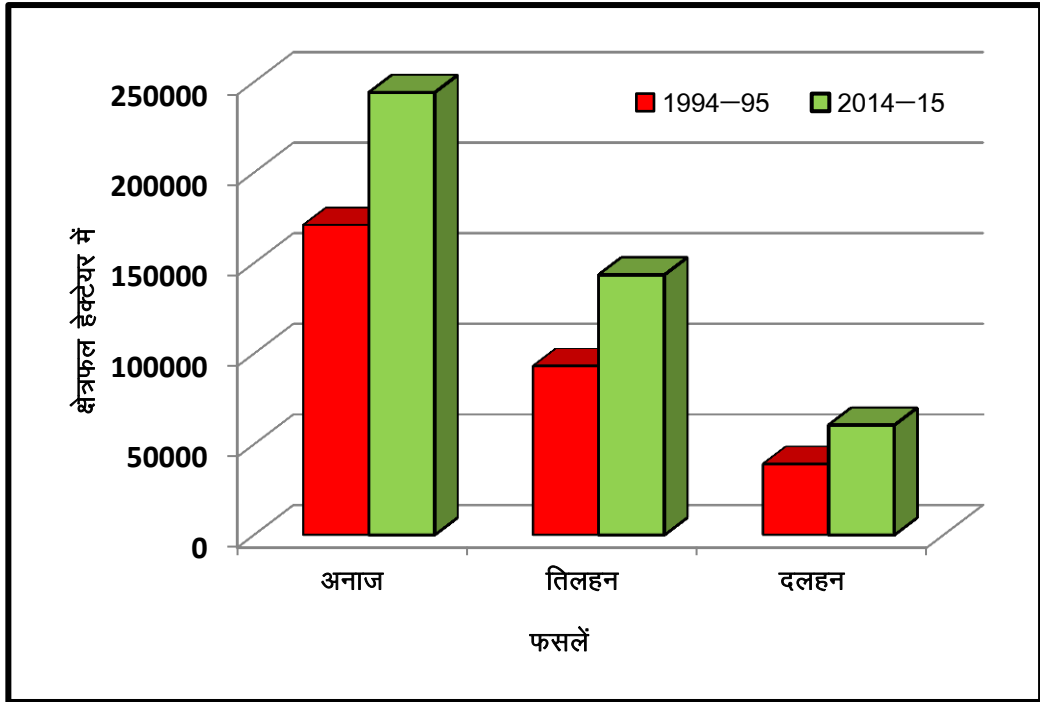
तालिका – 3.3
जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल
(हेक्टेयर में)

क्र.सं.	वर्ष	फसलें				
		अनाज	दलहन	तिलहन	मसाले	फल-सब्जी
1	1994-95	171001	39110	93185	2174	317
2	1995-96	169440	34422	64412	266	148
3	1996-97	184863	25566	117324	4127	412
4	1997-98	194463	20829	129700	4999	2416
5	1998-99	210311	29277	116840	2228	2474
6	1999-00	215535	14851	110907	1179	2183
7	2000-01	195730	29082	78206	3653	2916
8	2001-02	180779	44196	100252	7998	2827
9	2002-03	1153685	42956	69781	7875	2872
10.	2003-04	172660	42086	115014	10714	2743
11	2004-05	124658	9479	202534	2167	2974
12	2005-06	142175	11453	210047	6053	2435
13	2006-07	156050	16087	172899	2897	2813
14	2007-08	187787	36921	150098	4711	2904
15	2008-09	179482	23265	180634	10532	2834
16	2009-10	187409	28515	141746	7303	2469
17	2010-11	228377	43163	144034	7042	2524
18	2011-12	221821	61968	152046	8508	2765
19	2012-13	219416	54416	169431	2909	2785
20	2013.14	221784	47841	165410	2403	2935
21	2014.15	244104	60511	143430	4838	2716

स्रोत – जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

आरेख – 3.4

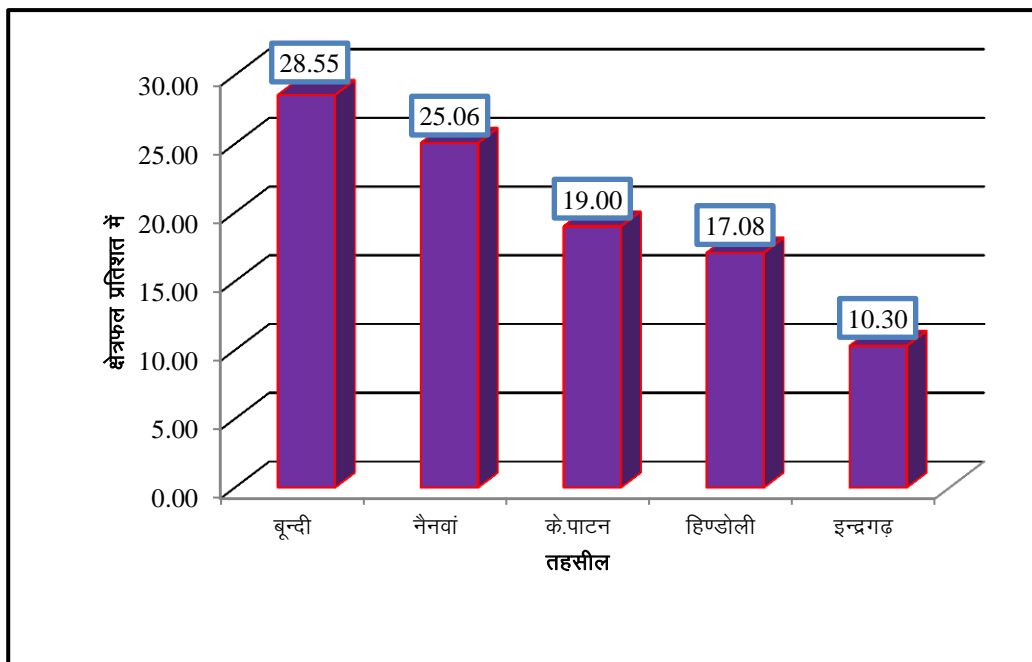
जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल



आरेख – 3.5

जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत तहसीलानुसार क्षेत्रफल

(वर्ष 2014-15)



प्रधानता दिखाई देती है। तालिका-3.3 एवं आरेख-3.4 में बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार की फसलों के अन्तर्गत उत्पादक क्षेत्र प्रतिरूप दर्शाया गया है।

फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र की दृष्टि से बून्दी जिले में बून्दी तहसील प्रथम पायदान पर है। जहाँ पर 1,31,984 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि कार्य के अन्तर्गत है, जबकि अन्तिम पायदान पर इन्द्रगढ़ है जहाँ केवल 47,632 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि के अन्तर्गत है।

आरेख-3.4 से ज्ञात होता है, कि फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक क्षेत्रफल अनाज फसलों के अन्तर्गत है। वर्ष 1994-95 में अनाजों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 1,71,001 हेक्टेयर था जो वर्ष 2014-15 में 42.75 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2,44,104 हेक्टेयर हो गया है। दलहन एवं तिलहन के बुआई के क्षेत्रफल के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 की अपेक्षा वर्ष 2014-15 में क्रमशः 53.92 एवं 54.72 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बून्दी जिले में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली फसलों में क्रमशः गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, उड़द एवं चावल है, जो क्रमशः कुल कृषित क्षेत्र के 37.43 प्रतिशत, 18.29 प्रतिशत, 11.56 प्रतिशत, 8.69 प्रतिशत एवं 7.47 प्रतिशत क्षेत्र पर बोई जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में जलवायवीय एवं भौगोलिक दशाएँ तहसील स्तर पर भिन्न-भिन्न पाई जाती है, फलस्वरूप प्रत्येक तहसील में फसल उत्पादन प्रतिरूप भी भिन्न-भिन्न पाया जाता है। जिले में कहीं खाद्यान्न फसलों की प्रधानता है, तो कहीं औद्योगिक एवं व्यावसायिक फसलों का उत्पादन किया जाता है। बून्दी जिले में उत्पादित की जाने वाली फसलों में गेहूँ, चावल, मक्का, सरसों, सोयाबीन, मसालें, गन्ना, फल-सब्जी, दलहन आदि हैं। बून्दी जिला कुल अनाज उत्पादन की दृष्टि से कोटा संभाग में प्रथम स्थान रखता है। बून्दी जिला कोटा संभाग का 44.08 प्रतिशत अनाज, 60.64 प्रतिशत दालें, 40.54 प्रतिशत तिलहन उत्पादित करता है।⁹

तालिका – 3.4

जिला बून्दी : तहसीलानुसार कृषि उत्पादन (मैट्रिक टन में)

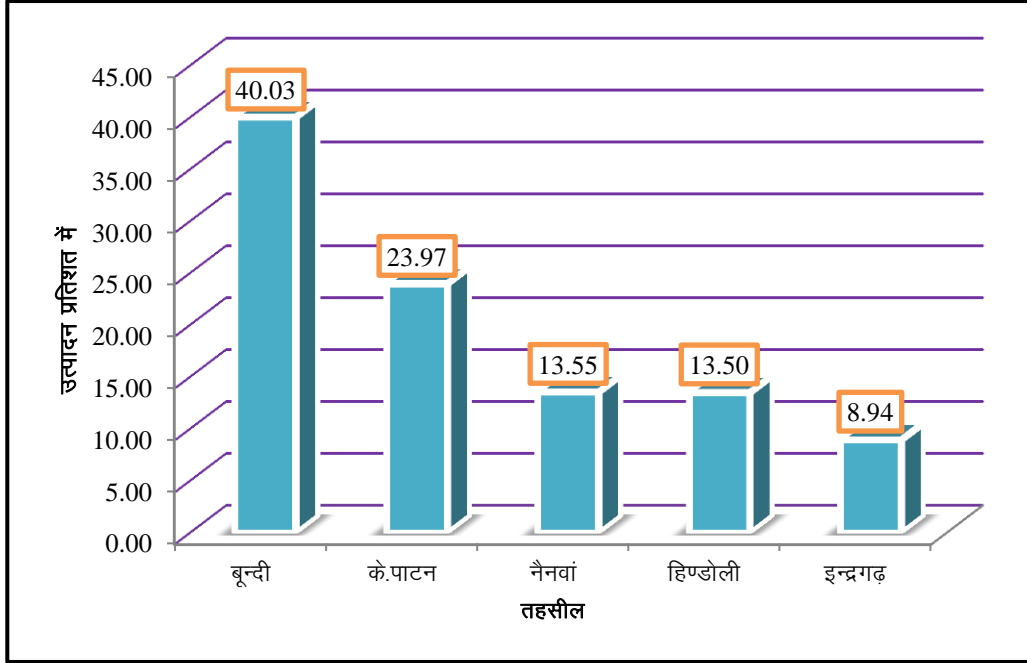
क्र. सं.	तहसील	अनाज	दलहन	तिलहन	मसाले	सब्जी	गन्ना	कुल
1	बून्दी	167725	648	24643	1322	30	405	194773
3	के.पाटन	59834	2797	53622	374	0	10	116637
4	इन्द्रगढ़	15235	5921	20908	1410	0	14	43488
5	नैनवां	12948	20543	24833	14	0	7590	65928
6	हिण्डोली	52653	3449	7197	151	79	2155	65684
7	बून्दी जिला	308395	33358	131203	3271	109	10174	486510

स्रोत – जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

बून्दी जिले का कुल कृषि उत्पादन 486510 मैट्रिक टन है। कुल कृषि उत्पादन का 63.39 प्रतिशत खाद्यान्नों से तथा 26.97 प्रतिशत तिलहन से व 6.86 प्रतिशत दलहन से, 0.67 प्रतिशत मसालों से प्राप्त होता है। तालिका-3.4 एवं आरेख-3.6 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार फसल उत्पादन प्रतिरूप दर्शाया गया है जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में कृषि उत्पादन की दृष्टि से बून्दी तहसील का प्रथम स्थान रहा है जिसके तहत बून्दी जिले के कुल कृषि उत्पादन का 40.03 प्रतिशत उत्पादित किया। द्वितीय व तृतीय स्थान पर केशवरायपाटन एवं नैनवां तहसीलें रही जिन्होंने जिले के कुल फसल उत्पादन का क्रमशः 23.97 एवं 13.55 प्रतिशत उत्पादित किया है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से इन्द्रगढ़ तहसील में सबसे कम उत्पादन (8.94 प्रतिशत) हुआ है। हिण्डोली तहसील द्वारा जिले के कुल फसल उत्पादन का 13.50 प्रतिशत उत्पादन किया गया है।

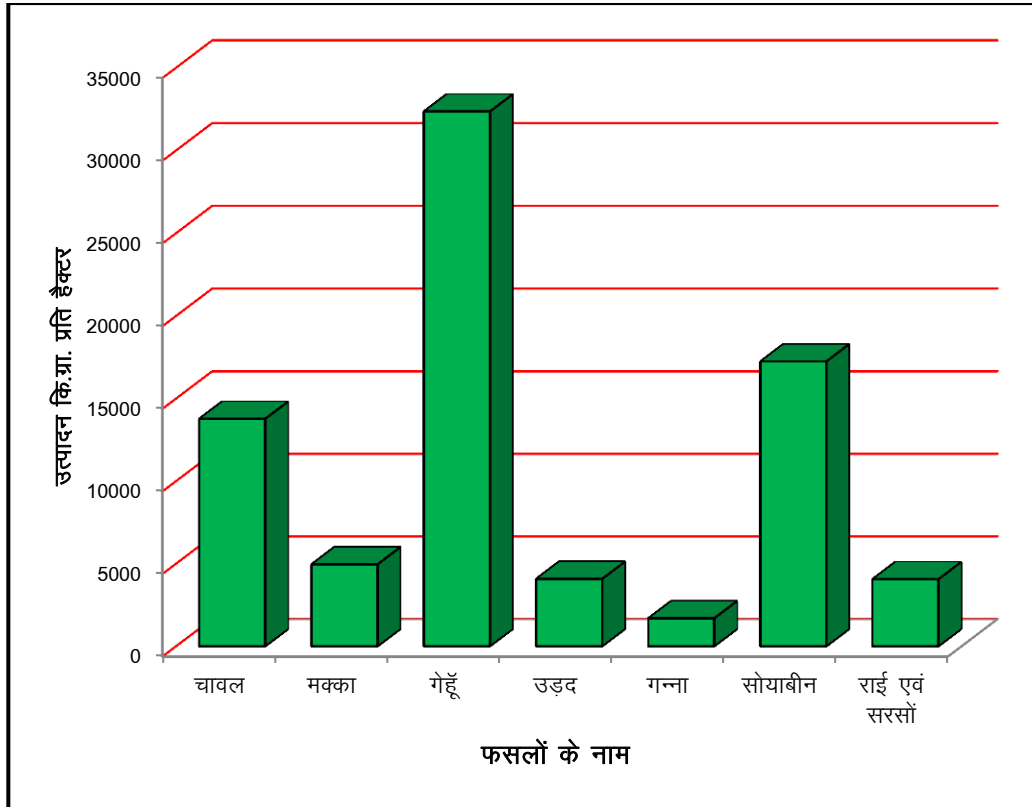
आरेख – 3.6

जिला बून्दी : तहसीलानुसार कृषि उत्पादन (2014-15)



आरेख – 3.7

जिला बून्दी : प्रमुख फसलों का औसत उत्पादन (वर्ष 2014-15)



बून्दी जिले में वर्ष 2014-15 में उत्पादन की दृष्टि से अनाज फसलों में गेहूँ की फसल प्रथम स्थान पर रही है, जो कुल कृषि उत्पादन का 39.91 प्रतिशत है। कुल कृषि उत्पादन में तिलहन के अन्तर्गत सर्वाधिक योगदान सोयाबीन का रहा। जिससे कुल कृषि उत्पादन का 21.28 प्रतिशत प्राप्त हुआ, जबकि दलहन के अन्तर्गत उड़द कुल कृषि उत्पादन का 5.04 प्रतिशत प्रदान कर प्रथम स्थान पर रही है।

इस अध्याय में बून्दी जिले का सामान्य कृषि प्रारूप, भूमि उपयोग प्रारूप एवं कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया गया है। बून्दी जिले के कृषि प्रारूप में तहसील अनुसार पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है, जिसका प्रमुख कारण भौगोलिक दशाएँ एवं जल की उपलब्धता रही है। बून्दी एवं केशवरायपाटन तहसीलों में सिंचाई के साधन प्रयाप्त मात्रा में है, वहाँ पर कृषि उत्पादन अधिक पाया जाता है। बून्दी जिले में मौसमवार बोया गया क्षेत्रफल की दृष्टि से खरीफ एवं रबी में सर्वाधिक क्षेत्रफल बून्दी तहसील के अन्तर्गत है, क्योंकि बून्दी तहसील में नहरों द्वारा सिंचाई होने से कृषक केवल व्यापारिक फसलें ही उत्पादित करते हैं। व्यापारिक फसलों का कृषि उत्पाद के रूप में उत्पादन बून्दी जिले में कृषि उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. Statistical Year Book of Rajasthan (2017), P-134
2. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (1996), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 24
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 24
4. Atlas of Bundi, Department of Geography, Government College, Bundi, (2011)
5. नागर, सत्यनारायण, (2020), "कृषि आधारित उद्योगों का समग्र क्षेत्रीय विकास में योगदान (बून्दी तहसील के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन)" पीएच.डी. शोध ग्रंथ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, पृ.सं. 22
6. शर्मा, बी.एल. एवं भारद्वाज, पलक, (2013), "कृषि भूगोल सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक", रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं. 67
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (1996), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 28
8. शर्मा, बी.एल. एवं भारद्वाज, पलक, (2013), "कृषि भूगोल सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक", रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं. 75
9. Rajasthan Agricultural Statistical - At A Glance (2015-16), P-17

चतुर्थ अध्याय
बून्दी जिले में धान कृषि
का विकास एवं परिवर्तित
स्वरूप

चतुर्थ अध्याय

बून्दी जिले में धान कृषि का विकास एवं परिवर्तित स्वरूप

4.1 धान कृषि का सामान्य परिचय

धान के पौधों का वैज्ञानिक नाम "ओरिजा सेटिवा" (Oryza sativa) है, जो एक नर्म तथा आर्द्र जलवायु का पादप है।¹ धान एक प्रकार से जंगली घास के रूप में जाना जाता था, जिसका विस्तार हिमालय की पूर्वी तलहटी में फैला हुआ था। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी उत्पत्ति दक्षिणी भारत में हुई है, जहाँ से यह उत्तरी भारत होता हुआ चीन गया। चीन से धान का पौधा कोरिया एवं 2000 बी.सी. तक यह फिलीपींस पहुँचा। 100 बी.सी. में जापान तथा इंडोनेशिया में उपजाया जाने लगा। 327 बी.सी. में इसे अलेक्जेंडर द्वारा भारत लाया गया तथा बाद में ग्रीक पहुँचा। अरबवासियों द्वारा यह मिश्र, मोरक्को, स्पेन तथा धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों तक पहुँचा।

प्रारम्भ में चावल का उत्पादन पूरे विश्व में बहुत ही धीमी गति से हुआ किन्तु धीरे-धीरे यह लोगों के लिए प्रमुख कृषि एवं आर्थिक उत्पादन की प्राथमिकता बन गया। वर्तमान में भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग चावल उत्पादन करता है। भारत चावल उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान रखता है, जहाँ विश्व का 21 प्रतिशत चावल उत्पादित होता है।² भारत में चावल की तीन फसलें प्रतिवर्ष उगायी जाती हैं— (1) ओस, (2) अमन (3) बोरो।

बून्दी जिले में चावल की फसल का उत्पादन खरीफ के अन्तर्गत किया जाता है। जिले में चावल फसल की बुआई जून एवं जुलाई के माह में की जाती है एवं जिसकी कटाई अक्टूबर एवं नवम्बर माह के मध्य की जाती है। बून्दी जिले में चावल की कृषि दो प्रकार से की जाती है— (अ) छटकावा विधि (ब) प्रतिरोपण विधि। जिले में प्रतिरोपण विधि को सर्वाधिक प्रयोग में लिया जाता है इस विधि के अन्तर्गत पौधों को सघन रूप में पहले छोटी-छोटी क्यारियों

में उगाया जाता है एवं जब ये 4-5 सप्ताह के बाद 25 से 35 सेन्टीमीटर लम्बे हो जाते हैं तो तैयार किए गये खेतों में 4 से 6 के समूह में 30-45 सेन्टीमीटर की दूरी पर प्रतिरोपण कर दिया जाता है। प्रतिरोपण विधि में अपेक्षाकृत उत्पादन अधिक होता है क्योंकि इस विधि में पौधारोपण एक निश्चित अन्तराल पर किया जाता है।

4.2 धान फसल को प्रभावित करने वाले कारक

बून्दी जिले की भौगोलिक दशाओं ने स्थानीय कृषि प्रारूप, प्रकार एवं वितरण को प्रभावित किया है। फलस्वरूप बून्दी जिले के कृषि फसल प्रारूप में पर्याप्त विविधता दृष्टिगोचर होती है। बून्दी जिले में धान फसल को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक भू-आकृति, मृदा, वर्षा, सिंचाई, आर्थिक व तकनीकी प्रगति, सामाजिक दशाएँ आदि हैं।

4.2.1 भू-आकृति

बून्दी जिले के धान प्रारूप को निर्धारित करने में भू-आकृतिक स्वरूप का महत्वपूर्ण योगदान है। बून्दी जिला अरावली श्रेणी, पठारी भाग एवं काली मृदा से निर्मित मैदान के भू-स्वरूप में है। अरावली श्रेणी बून्दी जिले के लगभग मध्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा की ओर फैली हुई है। यह भू-आकृति जिले के स्थानिक धान उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करती है। जिले के दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग में धान की कृषि की जाती है जबकि उत्तरी व उत्तरी-पूर्वी भाग में मक्का, ज्वार, बाजरा एवं दलहन की कृषि की जाती है।

4.2.2 मृदा

भू-आकृति की तरह मृदा भी धान उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। अध्याय-2 में मानचित्र-6 में बून्दी जिले में मृदा प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में मुख्यतः दो प्रकार की मृदा-मिश्रित लाल-काली मृदा तथा गहरी-मध्यम काली मृदा पाई जाती है। बून्दी जिले के दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग में गहरी-मध्यम काली मृदा पाई जाती है, जो धान फसल के लिए उत्तम है।

4.2.3 वर्षा

बून्दी जिले में वार्षिक वर्षा का औसत 79.63 सेन्टीमीटर है। तहसील अनुसार वर्षा वितरण प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा का हिण्डोली तहसील में 99.00 सेन्टीमीटर, जबकि न्यूनतम औसत इन्द्रगढ़ तहसील में 63.60 सेन्टीमीटर है। बून्दी जिले में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप ने बून्दी जिले के धान उत्पादन प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है जिसका प्रभाव चावल आधारित उद्योगों की अवस्थिति व विकास पर पड़ा है।

4.2.4 सिंचाई

वर्षा के अभाव में फसलों को कृत्रिम रूप से जल उपलब्ध करवाना सिंचाई कहलाता है। औसत वार्षिक वर्षा कम होने के कारण बून्दी जिले में सिंचाई द्वारा धान का उत्पादन किया जाता है। जिले में हिण्डोली, केशवरायपाटन तथा बून्दी तहसील का दक्षिणी एवं पूर्वी भाग पर चम्बल बायीं मुख्य नहर द्वारा सिंचित है अतः इन तहसीलों में धान फसल का उत्पादन अधिक होता है। सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता एवं धान उत्पादक मात्रा में धनात्मक सम्बंध है।

4.2.5 आर्थिक व तकनीकी प्रगति

बून्दी जिले में धान फसल को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक कृषकों की आर्थिक स्थिति व तकनीकी विकास है क्योंकि आर्थिक व तकनीकी सुविधा की उपलब्धि पर कृषि कार्य भली प्रकार किया जा सकता है। बून्दी जिले की पाँचो तहसीलों के सर्वेक्षण एवं अनुभव के आधार पर ज्ञात होता है कि बून्दी व केशवरायपाटन कृषि हेतु बैंकिंग, बीमा, वित्तीय सहायता तथा तकनीकी सुविधाएँ जैसे – कृषि उपकरण, उत्तम खाद व बीज, उत्पादन हेतु विशेषज्ञ सलाह, सिंचाई एवं शिक्षा व्यवस्था एवं परिवहन के साधन आदि आधारभूत संरचना की दृष्टि से विकसित तहसीलें हैं। अतः बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में अन्य तीनों तहसीलों (इन्द्रगढ़, नैनवां, हिण्डोली) की अपेक्षा धान का उत्पादन अधिक होता है।

4.2.6 सामाजिक व्यवस्थाएँ

बून्दी जिले के सामाजिक प्रतिरूप ने स्थानीय धान उत्पादन प्रारूप को प्रभावित किया है। बून्दी जिले की बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलें आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील हैं, जिसके कारण वे धान फसल के कृषि कार्य में नवीन यंत्रों, तकनीकी, उत्तम खाद व बीज के प्रयोग में अन्य तहसीलों से आगे हैं, फलस्वरूप दोनों तहसीलें बून्दी व केशवरायपाटन धान उत्पादन व विविधता की मात्रा शेष तीनों तहसीलों से अधिक रहती है, जिसका प्रभाव स्थानीय कृषि उत्पादन व चावल उद्योगों पर परिलक्षित होता है।

4.3 धान फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल

राजस्थान के कुल चावल उत्पादक क्षेत्र का 20.59 प्रतिशत भाग केवल बून्दी जिले में फैला हुआ है। आरेख-4.1 में जिले में धान उत्पादक क्षेत्र की तुलनात्मक प्रवृत्ति दिखाई गई है, जिसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिले का औसत चावल उत्पादक क्षेत्र 26886 हेक्टेयर है। विगत पाँच वर्षों (2014-15 के अन्त तक) के दौरान औसत उत्पादक क्षेत्रफल 25439 हेक्टेयर है।³ वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में कुल अनाज उत्पादक फसलों के क्षेत्र का 14.15 प्रतिशत उत्पादक क्षेत्र धान फसल के अन्तर्गत है।

जिले में धान फसल के उत्पादक क्षेत्रफल के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 में 19299 हेक्टेयर था।⁴ जो वर्ष 2014-15 में 34548 हेक्टेयर हो गया है इस प्रकार 21 वर्षों के दौरान 79.01 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिसका प्रमुख कारण है कि किसानों को धान की फसल से अधिक लाभ प्राप्त होता है। 21 वर्षों के दौरान धान फसल के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 1998-99 में 81378 हेक्टेयर तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वर्ष 2004-05 में 6053 हेक्टेयर रहा। जिले में 21 वर्षों में औसत से अधिक उत्पादक क्षेत्रफल वाले 9 वर्ष रहे। वर्ष 2004-05 में औसत से 77.49 प्रतिशत की कमी रही है।

बून्दी जिले में सर्वाधिक चावल उत्पादक क्षेत्र बून्दी तहसील में 28427 हेक्टेयर है, जो कि कुल जिले का 82.28 प्रतिशत क्षेत्र रखता है।⁵ जिले में चावल उत्पादक क्षेत्रफल में प्रथम स्थान पर बून्दी

तहसील तथा द्वितीय स्थान पर केशवरायपाटन तहसील है। केशवरायपाटन तहसील जिले के कुल चावल उत्पादक क्षेत्रफल का 13.65 प्रतिशत भाग रखती है, अन्य तहसीलों में हिण्डोली 3.55 प्रतिशत तथा नैनवां 0.39 प्रतिशत क्षेत्रफल रखती है।

अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में विगत 21 वर्षों के दौरान चावल उत्पादक क्षेत्र में 85.10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 से वर्ष 2014-15 में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत बून्दी, नैनवां, हिण्डोली तथा इन्द्रगढ़ तहसील में वृद्धि एवं केशवरायपाटन तहसील में कमी पाई गई है।

21 वर्षों के दौरान सर्वाधिक वृद्धि नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुई है। इन तहसीलों में वर्ष 1994-95 में मात्र 3 हेक्टेयर पर ही धान की खेती होती थी, जो वर्ष 2014-15 में 1357 हेक्टेयर वृद्धि के साथ 1360 हेक्टेयर पर की जा रही है⁶, किन्तु केशवरायपाटन तहसील में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत 26.34 प्रतिशत की कमी के साथ क्षेत्रफल 4709 हेक्टेयर रह गया है, जिसका प्रमुख कारण बायीं चम्बल नहर से जल की मात्रा में कमी करना रहा है।

4.4 धान फसल के अन्तर्गत उत्पादन

बून्दी जिले में क्षेत्रफल की अपेक्षा धान के उत्पादन में अधिक तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिसमें वर्ष 1994-95 से 2014-15 के दौरान 108.29 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। जिले में चावल की कृषि के अन्तर्गत कुल खाद्यान्नों के उत्पादन का 24.19 प्रतिशत एवं समस्त अनाज उत्पादन का 26.80 प्रतिशत उत्पादन होता है (2014-15)। बून्दी जिले की बून्दी एवं केशवरायपाटन प्रमुख चावल उत्पादक तहसीलें हैं, जो कि जिले के कुल उत्पादन का क्रमशः 82.42 प्रतिशत एवं 11.39 प्रतिशत भाग रखती है। प्रादेशिक स्तर पर जिले में चावल का उत्पादन चम्बल एवं मेज नदी के दोआब में की जाती है।

तालिका-4.1

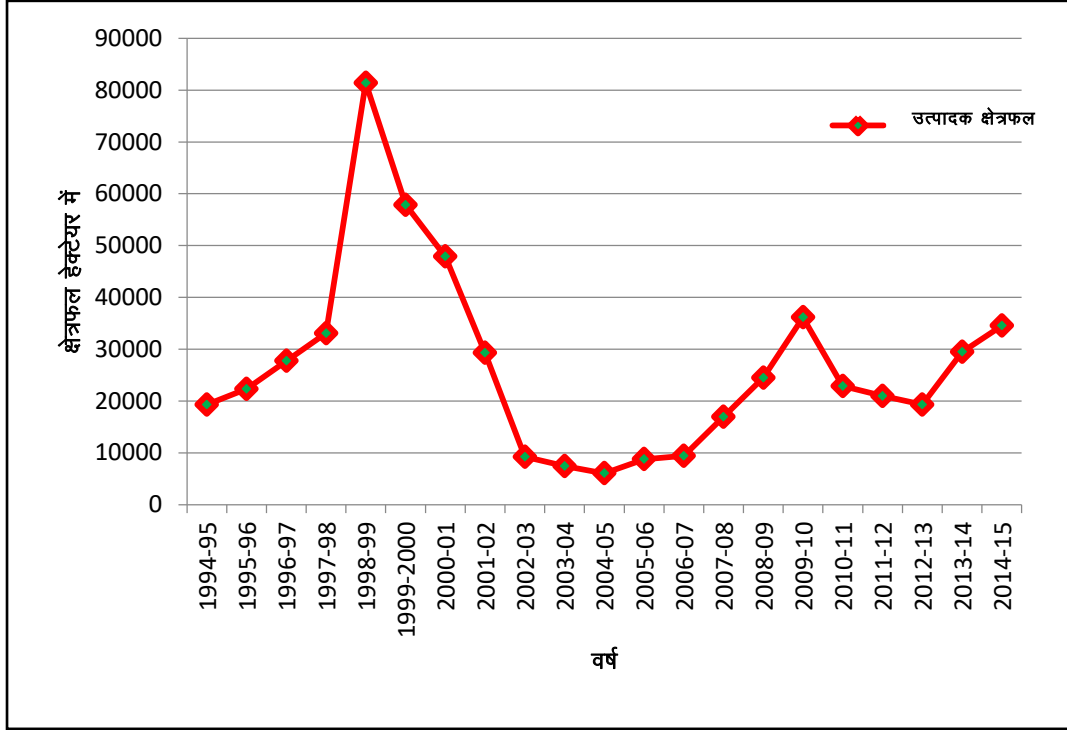
जिला बून्दी : धान उत्पादन व उत्पादक क्षेत्र का तुलनात्मक प्रतिरूप

क्र. सं.	वर्ष	उत्पादक क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	औसत से विचलन (प्रतिशत में)	उत्पादन (मै. टन)	औसत से विचलन (प्रतिशत में)
1.	1994-95	19299	-28.22	39702	86.92
2.	1995-96	22331	-16.94	46133	101.00
3.	1996-97	27725	3.12	46502	101.81
4.	1997-98	33077	23.03	65881	144.23
5.	1998-99	81378	202.68	41051	89.87
6.	1999-2000	57860	115.20	110602	242.14
7.	2000-01	47883	78.10	43058	94.27
8.	2001-02	29295	8.96	54992	120.39
9.	2002-03	9255	-65.58	2837	6.21
10.	2003-04	7442	-72.32	13206	28.91
11.	2004-05	6053	-77.49	11832	25.90
12.	2005-06	8788	-67.31	24510	53.66
13.	2006-07	9421	-64.96	26975	59.06
14.	2007-08	16957	-36.93	48835	106.91
15.	2008-09	24506	-8.85	69300	151.72
16.	2009-10	36145	34.44	32862	71.94
17.	2010-11	22898	-14.83	45764	100.19
18.	2011-12	20974	-21.99	43814	95.92
19.	2012-13	19312	-28.17	38624	84.56
20.	2013-14	29465	9.59	70096	153.46
21.	2014-15	34548	28.50	82646	180.94

स्रोत-जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996, 2005, 2012 एवं 2016)

आरेख-4.1

जिला बून्दी : धान उत्पादक क्षेत्रफल की प्रवृत्ति



तालिका-4.2

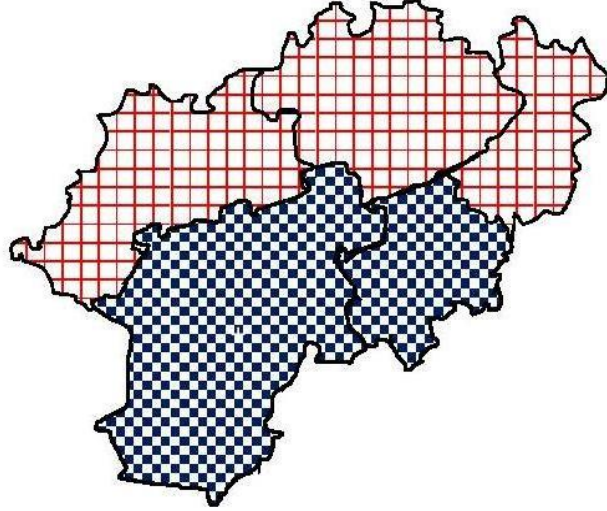
जिला बून्दी : धान फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल

क्र. सं.	तहसील	उत्पादक क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)		परिवर्तन	
		वर्ष 2014-15	वर्ष 1994-95	हेक्टेयर में	प्रतिशत में
1.	बून्दी	28427	12535	15892	126.78
2.	के.पाटन	4709	6393	-1684	-26.34
3.	नैनवां एवं इन्द्रगढ़	186	3	1357	6100.0
4.	हिण्डोली	1226	368	858	233.15
5.	जिला बून्दी	34548	19299	16423	79.01

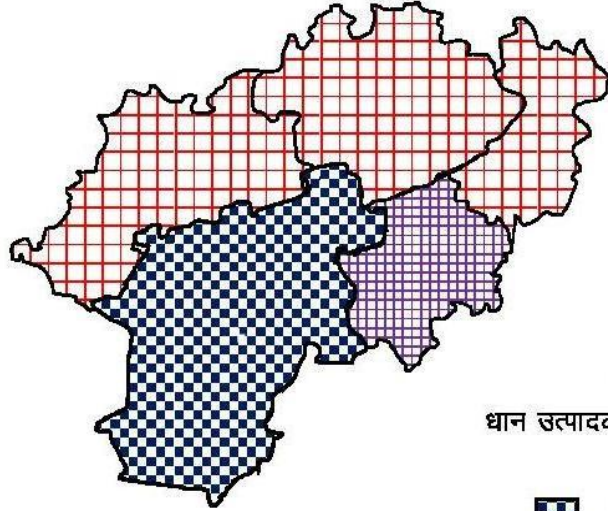
स्रोत - जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996 एवं 2016)

जिला बून्दी : तहसीलानुसार धान उत्पादक क्षेत्र

वर्ष 1994-95



वर्ष 2014-15

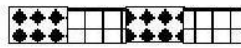


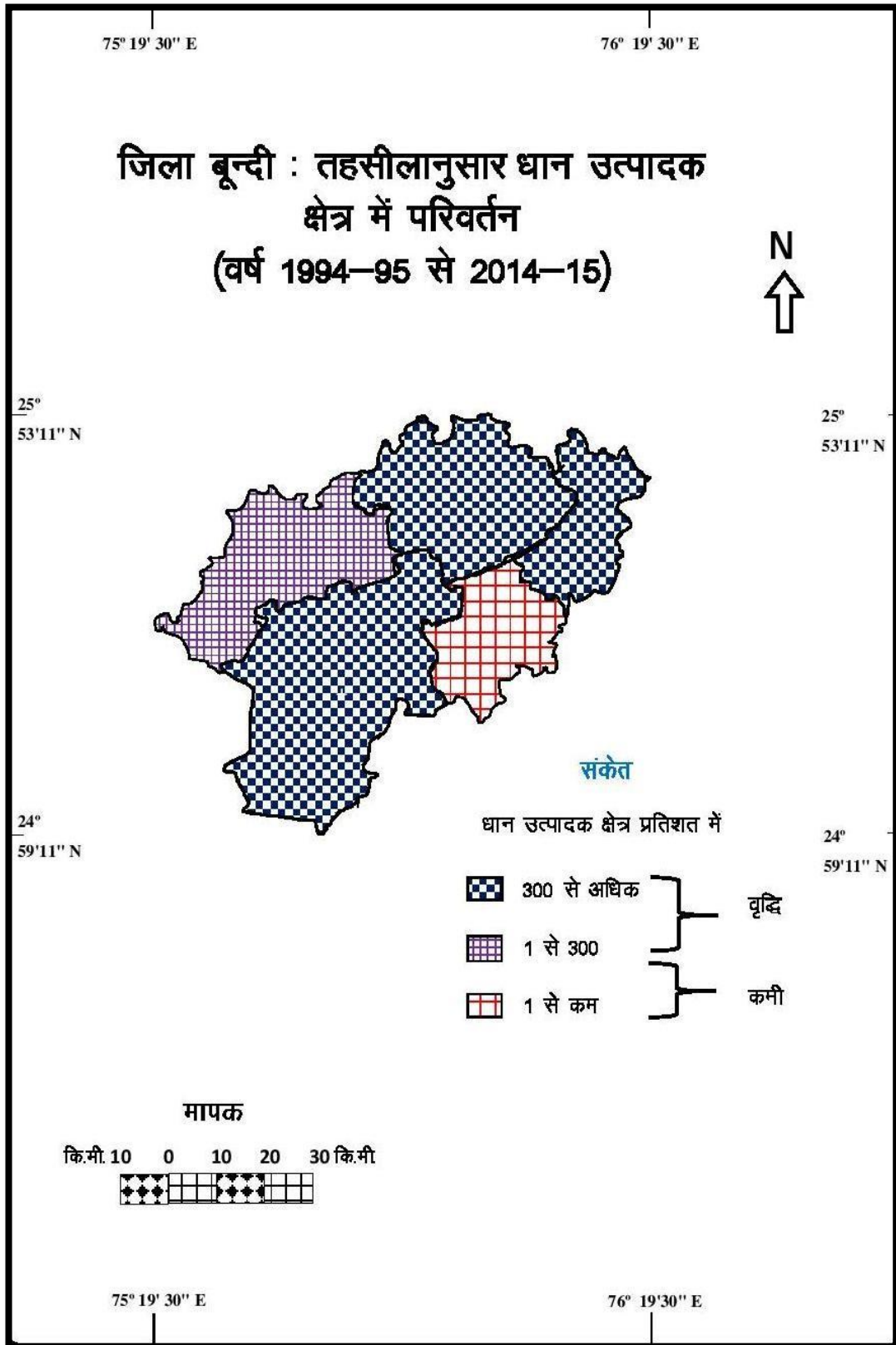
संकेत
धान उत्पादक क्षेत्र प्रतिशत में

-  20 से अधिक
-  11 से 20
-  10 से कम

मापक

कि.मी. 10 0 10 20 30 कि.मी.





वर्ष 1994-95 में जिले में कुल चावल उत्पादन 39702 मैट्रिक टन रहा, जो कि वर्ष 2014-15 में 82646 मैट्रिक टन हो गया है।⁷ वर्ष 1999-2000 के दौरान सर्वाधिक उत्पादन 110602 मैट्रिक टन हुआ है, जो कि औसत उत्पादन से 242.14 प्रतिशत अधिक एवं वर्ष 2002-03 में जिले का उत्पादन न्यूनतम के रूप में 2837 मैट्रिक टन ही रहा। अतः विगत 21 वर्षों में जिले का औसत चावल उत्पादन 45677 मैट्रिक टन है।

बून्दी जिले की बून्दी तहसील में चावल महत्वपूर्ण फसल है। जिले में कुल चावल उत्पादन में 82.42 प्रतिशत बून्दी तहसील, 11.39 प्रतिशत केशवरायपाटन तहसील एवं 5.74 प्रतिशत का उत्पादन हिण्डोली तहसील द्वारा किया गया है। बून्दी जिले का वर्ष 2014-15 में न्यूनतम उत्पादन नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुआ, जो कि कुल उत्पादन में मात्र 372 मैट्रिक टन है।

नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में विगत 21 वर्षों के दौरान चावल उत्पादन में 6100 प्रतिशत परिवर्तन आया है। हिण्डोली एवं बून्दी तहसील में वर्ष 1994-95 की अपेक्षा वर्ष 2014-15 में क्रमशः 171.89 प्रतिशत एवं 157.83 प्रतिशत की वृद्धि हुई है किन्तु केशवरायपाटन तहसील में 26.34 प्रतिशत कमी के साथ चावल उत्पादन 9478 मैट्रिक टन रहा है। तालिका-4.3 में चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादन दर्शाया गया है।

4.5 धान फसल के अन्तर्गत उत्पादकता

कृषि उत्पादकता को प्रति इकाई कृषि क्षेत्र, प्रति कृषि श्रमिक अथवा प्रति इकाई वित्तीय मूल्य पर कुल कृषि उत्पादन के रूप में व्यक्त किया जाता है। “मिट्टियों की उत्पादकता एक निश्चित इकाई क्षेत्र में फसलों के उत्पादन की मात्रा का परिचायक है।”⁸ कृषि उत्पादकता एक प्रकार से क्षेत्र के उत्पाद का गुणांक सम्बोधन है। मिट्टियों में कुछ फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में जिले के जिन कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है, उनमें भौतिक पृष्ठभूमि के साथ ही उन्नतशील बीज, उर्वरक, सिंचाई एवं यंत्रीकरण है। जिला बून्दी में वर्ष 1995-1996 में 2066 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर उत्पादकता थी जो

तलिका - 4.3

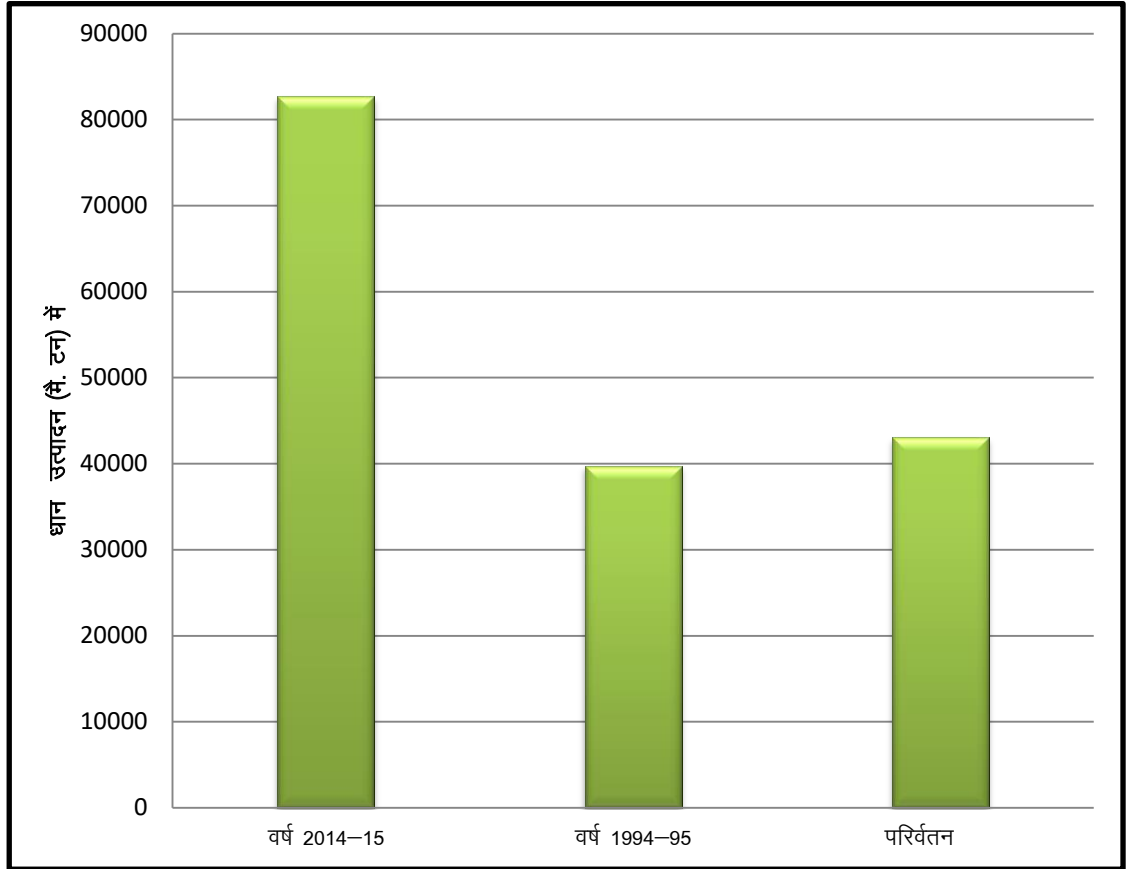
जिला बून्दी : धान उत्पादन

क्र.सं.	तहसील	उत्पादन (मै. टन)		परिवर्तन	
		वर्ष 2014-15	वर्ष 1994-95	मै. टन	प्रतिशत में
1.	बून्दी	68162	25070	43092	171.89
2.	केशवरायपाटन	9418	12786	-3368	-26.34
3.	नैनवां एवं इन्द्रगढ़	372	6	366	6100.00
4.	हिण्डोली	4744	1840	2904	157.83
5.	जिला बून्दी	82696	39702	42994	108.29

स्रोत - जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996 एवं 2016)

आरेख - 4.2

जिला बून्दी : धान उत्पादन



वर्ष 2014–2015 में 566.70 प्रतिशत वृद्धि के साथ 13774 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गई है।⁹ यह वृद्धि वर्ष 2008–2009 में 36.88 प्रतिशत रही।

आरेख–4.3 से स्पष्ट है कि जिले में चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता में वृद्धि की प्रवृत्ति वर्ष 2010–2011 से रही है। जिले में चावल फसल के अन्तर्गत औसत उत्पादकता 3253 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।

तालिका–4.4

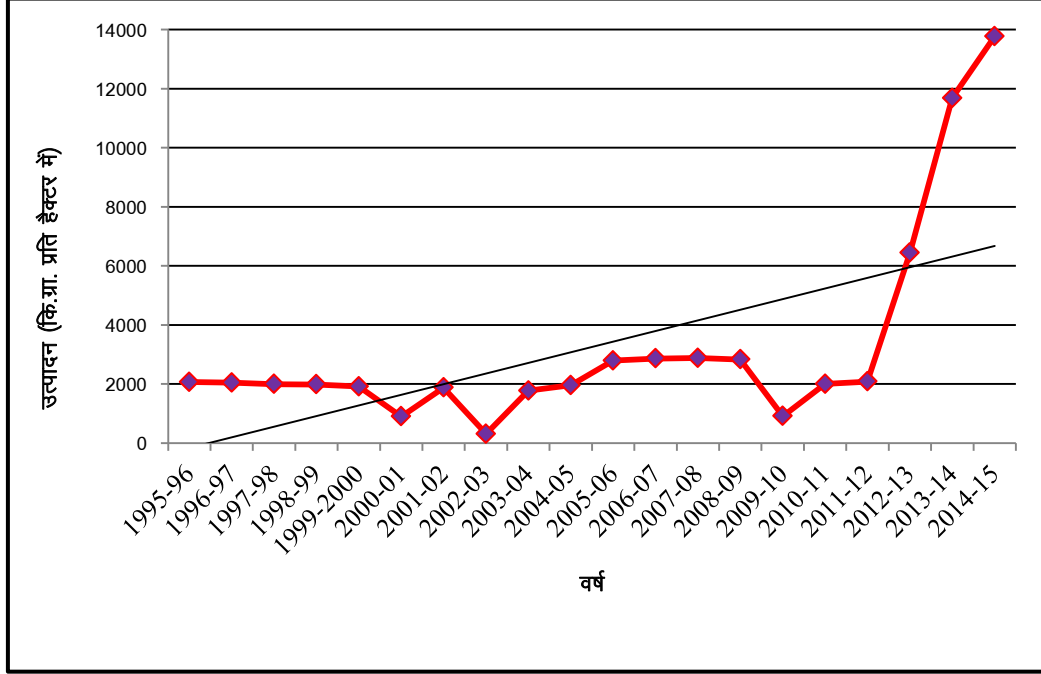
जिला बून्दी : धान उत्पादकता (किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)

क्र.सं.	वर्ष	उत्पादन	क्र.सं.	वर्ष	उत्पादन
1.	1995-96	2066	11	2005-06	2789
2.	1996-97	2046	12	2006-07	2863
3.	1997-98	1992	13	2007-08	2878
4.	1998-99	1982	14	2008-09	2828
5.	1999-2000	1912	15	2009-10	909
6.	2000-01	899	16	2010-11	1999
7.	2001-02	1877	17	2011-12	2080
8.	2002-03	307	18	2012-13	6437
9.	2003-04	1775	19	2013-14	11683
10.	2004-05	1955	20	2014-15	13774

स्रोत: जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (1996, 2006, 2012 एवं 2016)

आरेख-4.3

जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता (1995-96 से 2015-16)



इस प्रकार अध्याय में परिकल्पना “बून्दी जिले की भौगोलिक दशाएँ जैसे जलवायु, जल की उपलब्धता धान उत्पादन का आधार हैं” को आधार मान कर विश्लेषण किया गया है। विश्लेषणात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में चावल उद्योगों के विकास का आधार जिले का प्रचुर मात्रा में धान उत्पादन एवं अनुकूलतम भौगोलिक जलवायु तथा जल की उपलब्धता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

संदर्भ सूची

1. Biology of Oryza Sativa (2011), Department of Biotechnology, Government of India p.1
2. कौशिक, एस. डी. एवं गौतम, अलका, (2015), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं. 237
3. Statistical Year Book of Rajasthan (2017), P-66
4. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी, (1996), पृ. सं. 21
5. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी, (2016), पृ. सं.18
6. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी, (2016), पृ. सं. 18
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी, (2016), पृ. सं. 21
8. शर्मा बी.एल, भारद्वाज, पलक, (2017), : भारतीय कृषि भूगोल सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं.-228
9. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2016) पृ. सं. 25

पंचम अध्याय
चावल उद्योग का
स्थानीयकरण

पंचम अध्याय

चावल उद्योग का स्थानीयकरण

5.1 परिचय

बून्दी जिला एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला जिला है। यहाँ लगभग 68.78 प्रतिशत जनसंख्या कृषि तथा सम्बन्धित कार्यों में लगी हुई है।¹ स्वतंत्रता के बाद से ही जिले ने औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार के कृषि आधारित उद्योगों का पर्याप्त विकास हुआ है, जिनमें चावल उद्योग, खाद्य तेल उद्योग एवं चीनी उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिले में कृषि आधारित उद्योगों में से चावल उद्योग एक महत्वपूर्ण उद्योग है।

5.2 चावल उद्योग के स्थानीयकरण के कारक

प्रत्येक उद्योग की स्थापना स्थान विशेष पर कई अनुकूल कारकों के सम्मिलित प्रभावों का प्रतिफल होती है। इन्हीं कारकों को जो उद्योग विशेष की स्थान विशेष पर स्थापना के लिए उत्तरदायी होते हैं उद्योगों के स्थानीयकरण के कारक हैं।

रोबिन्सन ने उद्योगों के कारकों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए लिखा है कि – “यद्यपि कतिपय उद्योगों का उद्भव एकाएक हो गया फिर भी किसी स्थान विशेष पर उसकी उपस्थिति के पीछे निश्चित कारण रहे हैं। यह स्पष्ट है कि पुराने एवं दीर्घकाल से स्थापित उद्योगों के लिए यह अधिक सत्य है।”²

किसी भी उद्योग की अनुकूलतम परिस्थितियाँ हमेशा एक समान नहीं रहती है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के विकास के साथ औद्योगिक प्रक्रम कुशल होता जाता है अतः अनुकूलतम परिस्थितियाँ भी भिन्न-भिन्न होती जाती है। अनुकूलतम परिस्थितियाँ सभी उद्योगों के लिये एक समान नहीं होती है। यही कारण है कि विभिन्न उद्योगों के वितरण का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न होता है।

अनुकूलतम परिस्थितियों की उपलब्धता में वृद्धि के साथ ही उद्योग स्थापना हेतु उपयुक्त स्थान का चुनाव कठिन होता जाता है।

बून्दी जिले में चावल उद्योग की स्थापना में जिन प्रमुख कारकों की उपस्थिति अथवा उपलब्धता रही हैं वह निम्न है—

उद्योगों के अवस्थिति कारक

भौगोलिक कारक		मानवीय कारक	
1.	कच्चा माल	1.	तकनीकी व प्रबंधन
2.	ऊर्जा संसाधन	2.	सरकारी नीति
3.	बाजार	3.	व्यक्तिगत रुचि
4.	परिवहन	4.	कर
5.	कुशल मजदूर	5.	पूँजी
6.	समतल भूमि		

5.2.1 कच्चा माल

उन सभी वस्तुओं को कच्चे माल के अन्तर्गत रखा जाता है जो वस्तु निर्माण प्रक्रम के पश्चात् मानवीय उपयोग के उपयुक्त हो जाती है। अनेकों उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। बून्दी जिले में उद्योगों में चावल उद्योग सर्वोपरि है इस उद्योग में प्रयुक्त होने वाला प्रमुख कच्चा माल धान है।

कच्चा माल कई प्रकार का हो सकता है जिसका वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है —

- (1) प्रकृति से प्राप्त कच्चा माल
- (2) कृषि से प्राप्त कच्चा माल
- (3) औद्योगिक प्रक्रियाओं से प्राप्त सामग्री
- (4) पशु पालन तथा कीट पालन से प्राप्त सामग्री

बून्दी जिले में कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित उद्योगों हेतु विभिन्न प्रकार की अनुकूलतम परिस्थितियाँ उपस्थित है। अतः विभिन्न प्रकार के कृषि आधारित उद्योग जिले में स्थापित हुए है।

जहाँ उस उद्योग से सम्बन्धित कृषि पदार्थ पर्याप्त मात्रा में उत्पादित किया जा रहा है।

कृषि आधारित उद्योगों के सन्दर्भ में कच्चे माल को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

(अ) शुद्ध कच्चा माल

(ब) मिश्रित कच्चा माल

(अ) शुद्ध कच्चा माल

वे कच्चा माल जिनका वजन निर्माण प्रक्रिया में कम नहीं होता शुद्ध कच्चा माल कहलाते हैं।³ जैसे— कपास से सूती कपड़ा बनाना, आटा पिसाई उद्योग तथा मसाला उद्योग आदि।

(ब) मिश्रित कच्चा माल

वे कच्चा माल जिनका वजन निर्माण प्रक्रिया में कम होता है अशुद्ध कच्चा माल या मिश्रित पदार्थ कहलाते हैं⁴ जिसमें विभिन्न प्रकार के अनुपयोगी पदार्थ भी सम्मिलित रहते हैं। निर्माण प्रक्रिया में उन पदार्थों को अलग करने पर निर्मित पदार्थ का भार कच्चे पदार्थ से कम होता है जैसे— गन्ने से चीनी बनाना, तिलहन से तेल निकालना, धान से चावल निर्माण आदि।

बून्दी जिले के चावल उद्योगों की अवस्थापना में सबसे महत्वपूर्ण कारक कच्चा माल ही है अर्थात् धान जिसका यहाँ प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। जिले के चावल आधारित उद्योगों में मिश्रित प्रकार का कच्चा माल प्रयुक्त होता है। अध्याय-4 में तालिका-4.1 में बून्दी जिले में धान की फसल का उत्पादन प्रतिरूप दर्शाया गया है, जो कच्चे माल के रूप में स्थानीय चावल उद्योग को आधार प्रदान करता है।

5.2.2 ऊर्जा संसाधन

औद्योगिक प्रक्रम में ऊर्जा दूसरा महत्वपूर्ण कारक है। इतिहास में जितना परिवर्तन ऊर्जा एवं ईंधन को लेकर हुआ है उतना अन्य किसी कारक में नहीं हुआ है। उर्जा संसाधनों ने उद्योगों के वितरण, विकास तथा स्थानीयकरण को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

ऊर्जा का उद्योग के सन्दर्भ में सामान्य अभिप्राय जैविक या यांत्रिक ऊर्जा से है। वर्तमान समय में उद्योगों के लिए शक्ति का महत्व बढ़ता जा रहा है। साथ-साथ उद्योगों में मशीनों का प्रयोग भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। ऊर्जा की मात्रा का उपयोग भिन्न-भिन्न उद्योगों में भिन्न-भिन्न होता है। ऊर्जा का उपयोग उद्योगों में उनकी विशेषता, उत्पादन का पैमाना व श्रम शक्ति के अनुपात के अनुसार भी अलग-अलग होता है। वर्तमान में उद्योगों में उपयोग की दृष्टि से ऊर्जा के स्रोत में कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस एवं जल विद्युत महत्वपूर्ण है।

बून्दी जिले के चावल आधारित उद्योगों में प्रमुखतः लकड़ी का कोयला, जल विद्युत, गन्ने की खोई, सरसों की खल आदि को भी उर्जा संसाधनों के रूप में प्रयोग किया जाता है। बून्दी जिले में जल विद्युत उत्पादन हेतु चम्बल नदी पर जवाहर सागर सबस्टेशन विद्युत उत्पादन केन्द्र स्थापित है, जिससे बून्दी जिले में स्थित चावल आधारित उद्योगों को विद्युत शक्ति प्राप्त होती है।

5.2.3 बाजार

बाजार को हम दूसरे शब्दों में औद्योगिक उत्पाद की माँग कह सकते हैं। बाजार का प्रभाव औद्योगिक उत्पादन एवं वितरण पर विशेष रूप से होता है, जिन उद्योगों की स्थिति बाजार के समीप होती है वे तीव्र गति से विकसित होते हैं। बाजारों के निकट पर्याप्त संख्या में श्रमिक की प्राप्ति की भी सुविधा होती है। वर्तमान में उद्योग की अवस्थिति के निर्णायक कारकों में बाजार की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। बाजार को वस्तु के वजन या आकार में वृद्धि, उसकी शीघ्र नष्टता, बाजार क्षेत्र का आकार, उद्योगों की प्रवृत्ति एवं बाजार में प्रचलित पदार्थ की उपलब्धता प्रमुखता से प्रभावित करते हैं।

बून्दी जिले में कृषि उद्योग आधारित उत्पाद मूल रूप से उपभोक्ता आधारित उत्पाद है जिनको अपेक्षाकृत कम समय में उपभोक्ता तक पहुँचाना अनिवार्य है। चावल उद्योग उत्पाद मानव की खाद्य सामग्री का अनिवार्य अंग है, जिसे बाजार एवं उपभोक्ता तक

पहुँचाना आवश्यक है। इस प्रकार चावल आधारित उद्योग घनी जनसंख्या के केन्द्र में स्थापित होते हैं।

जिला बून्दी के चावल आधारित उद्योग बून्दी नगर के समीप स्थापित है। बून्दी नगर से मात्र 35 किलोमीटर की दूरी पर कोटा नगर स्थित है, जहाँ स्थानीय चावल आधारित उद्योगों के उत्पादों का एक महत्वपूर्ण भाग खप जाता है। जिले से चावल का निर्यात राजस्थान के बाहर अन्य राज्यों (दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश) तथा विदेशों (ईरान, कुवैत, सउदी अरब, ओमान आदि) को भी किया जाता है।

5.2.4 परिवहन

औद्योगिक क्रांति के युग में परिवहन के साधन एवं मार्गों का क्रांतिकारी विकास हुआ है। तीव्रगामी एवं सस्ता परिवहन तन्त्र औद्योगिक क्रांति का एक महत्वपूर्ण आधार रहा है। उद्योगों को परिवहन की आवश्यकता दो समय होती है— (अ) कच्चे माल को कारखाने तक लाने तथा (ब) तैयार माल को बाजार अथवा उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए। उद्योगपति परिवहन लागत न्यूनतम रख कर उपभोक्ता तक औद्योगिक उत्पाद को पहुँचाते हैं ताकि वस्तु पर अधिक मूल्य प्राप्त हो सके। परिवहन व्यय को विभिन्न कारक यथा— दूरी, पूरक स्थानों के मध्य स्थानिक विशेषताएँ, परिवहन का प्रकार, वस्तु की प्रकृति, अंतः क्रिया की मात्रा, राजकीय नियमन व नियंत्रण, परिवहन दर आदि प्रभावित करते हैं।

बून्दी जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्गों, ग्राम सड़कों एवं सम्पर्क सड़कों का अस्तित्व देखा जा सकता है, जो किसी भी उद्योग विशेष के विकास को निर्धारित करने में अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। जिले से गुजरने वाला महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या—52 (जयपुर—जबलपुर) है, जिसकी जिले में कुल लम्बाई 114 किलोमीटर है। जिले का केशवरायपाटन शहर दिल्ली—मुम्बई रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। कोटा व केशवरायपाटन के बीच से एक रेलमार्ग बून्दी शहर को जोड़ता हुआ चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर शहर से जुड़ा हुआ है। तालिका—2.15 (अध्याय—2) में बून्दी जिले में परिवहन जाल

प्रतिरूप दर्शाया गया है। जिससे बून्दी जिले में औद्योगिक विकास हेतु परिवहन सुविधा प्रतिरूप स्पष्ट होता है।

बून्दी जिले से तीन राज्य राजमार्ग तथा एक मेगा हाइवे भी गुजरते हैं, जो निम्न है—

- i. राज्य राजमार्ग संख्या 9 — भीलवाड़ा से बून्दी
- ii. राज्य राजमार्ग संख्या 29 — बून्दी से लाखेरी—इन्द्रगढ़—स.माधोपुर
- iii. राज्य राजमार्ग संख्या 34 — बून्दी से नैनवां—उनियारा—टोंक
- iv. मेगा हाइवे 148क — बून्दी से जहाजपुर—शाहपुरा—बिजयनगर

वर्ष 2014—15 में बून्दी जिले में सभी प्रकार की सड़कों की कुल लम्बाई 2610.10 किलोमीटर थी।⁵

5.2.5 श्रम

किसी भी उद्योग में श्रमिकों के बिना औद्योगिक उत्पाद प्राप्त करना सम्भव नहीं है अतः श्रमिकों की अनिवार्य आवश्यकता होती है। उद्योगों के स्तर उनकी विशेषता, उत्पादन के पैमाने तथा श्रम एवं शक्ति के आधार पर श्रमिकों की संख्या भिन्न—भिन्न उद्योग में अलग—अलग होती है। किसी भी उद्योग के स्थानीयकरण में श्रमिकों की संख्या की अपेक्षा उनका गुणात्मक पक्ष महत्वपूर्ण है।

चावल आधारित उद्योगों की अवस्थापना तथा विकास में पर्याप्त मात्रा में श्रम की आवश्यकता होती है। उद्योगों में वस्तु विनिर्माण से लेकर उत्पाद को बाजार तक पहुँचाने में कुशल—अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है। वर्ष 2014—15 में जिले में कुल कार्यरत लोगों की संख्या 526091 है⁶ अतः जिले में पर्याप्त स्थानीय श्रमिकों की उपलब्धता है। बून्दी जिले में कार्यकारी संरचना प्रतिरूप के अन्तर्गत 11172 जनसंख्या घरेलू व कुटीर उद्योगों में कार्यरत है।

5.2.6 पूँजी

उद्योग के स्थानीयकरण के प्राथमिक महत्व के कारकों में पूँजी की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। स्थानीयकरण की दृष्टि से पूँजी को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है, व्यक्तिगत पूँजी तथा सरकारी पूँजी। बड़े पैमाने के उद्योगों में जिस प्रकार शक्ति अनिवार्य है उसी प्रकार पूँजी भी आवश्यक है। एक उद्योगपति को उद्योग के

स्थानीयकरण हेतु भूमि, यंत्र, मशीनें, कर, वेतन, उत्पादन, कच्चा माल आदि के लिए पर्याप्त मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है।

चावल आधारित उद्योगों में भूमि, मशीनें, कच्चा माल क्रय करने, बड़ी संख्या में श्रमिकों को वेतन, परिवहन आदि कार्यों में अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।

जिला बून्दी वित्तीय सुविधा की दृष्टि से अपेक्षाकृत निर्धन है क्योंकि यहाँ पूँजीपतियों एवं उद्योगपतियों की कमी है। जिले में उद्योगों को पूँजी की कमी की समस्या का सामना करना पड़ता है किन्तु औद्योगिक विकास हेतु बून्दी जिले में वाणिज्यिक बैंकों एवं सरकार से आर्थिक सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

5.2.7 तकनीकी व प्रबंधन

उद्योगों में कच्चा माल, ईंधन, शक्ति, परिवहन आदि हेतु तकनीकी व प्रबंधन सम्बन्धी परिवर्तनों की आवश्यकता होती है। शक्कर उद्योग, वस्त्र और जूट उद्योग तथा खनिजों को साफ करने के उद्योगों से जो व्यर्थ पदार्थ निकलता है, उसके निस्तारण का सही प्रबंधन न हो तो प्रदूषण एक समस्या हो जाती है अतः उद्योगों में तकनीकी प्रबंधन अत्यन्त जरूरी है।

चावल आधारित उद्योगों में विनिर्माण प्रक्रिया के दौरान उच्च तकनीकी तथा कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है। धान को चावल तैयार करने से पूर्व पानी में गलाया जाता है, तत्पश्चात् इस दौरान व्यर्थ पदार्थ (छिलकों) के निपटारण हेतु प्रबंधन जरूरी है। इनके अलावा कितनी मात्रा में धान की आवश्यकता है, चावल को साफ करने का प्रक्रम किस प्रकार से है, बाजार में उत्पाद का वितरण कैसे करना है, श्रमिकों के साथ व्यवहार किस प्रकार का रखना है जैसे कार्यों के लिये उद्योगों में तकनीकी प्रबंधन जरूरी है।

वर्तमान समय में बून्दी जिले में कार्यरत उद्योगों में आवश्यक यंत्रों का आयात जापान से किया जाता है जबकि इन यंत्रों के संचालन हेतु कुशल तकनीकी कर्मचारी तैयार करने हेतु 4 आई.टी.आई. महाविद्यालय सरकारी क्षेत्र में एवं दो निजी क्षेत्र में स्थित है। प्रबंधन के क्षेत्र में योग्यता प्रदान करने हेतु राजकीय

महाविद्यालय, बून्दी में बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन का पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

5.2.8 भूमि

सभी प्रकार के विनिर्माण उद्योग की अवस्थापना हेतु भूमि की अनिवार्य आवश्यकता होती है। यंत्रों की स्थापना, कच्चे माल का संग्रह, तैयार माल का भण्डारण, कार्यालय, श्रमिक आवास आदि के लिए पर्याप्त व सस्ती भूमि की आवश्यकता होती है। जिले में उद्योगों की आवश्यकता हेतु पर्याप्त एवं सस्ती भूमि परिवहन साधनों के समीप उपलब्ध है। बून्दी जिले में कुल 6 औद्योगिक क्षेत्र हैं, जिनके अन्तर्गत 216.81 एकड़ भूमि आवंटन है।⁷ जहाँ औद्योगिक इकाईयों की अवस्थापना हेतु विभिन्न आधारभूत सुविधाओं का विकास किया गया है।

बून्दी जिले के औद्योगिक क्षेत्र निम्न हैं—

- (1) बून्दी बाईपास रोड़, बून्दी
- (2) बून्दी चित्तौड़गढ़ रोड़, बून्दी
- (3) बून्दी नैनवां रोड़, बून्दी
- (4) सुमेरगंज मण्डी, जिला बून्दी
- (5) गोविन्दपुर बावड़ी, जिला बून्दी
- (6) हट्टीपुरा, जिला बून्दी

5.2.9 राजनीतिक कारक

सरकार का प्रारूप कैसा भी हो, वर्तमान में भारत के राज्यों में उद्योगों का विकास सर्वव्यापी लक्ष्य बन चुका है। प्रशासनिक—राजनीतिक प्रोत्साहन तथा सहयोग के अभाव में किसी भी क्षेत्र का औद्योगिक विकास संभव नहीं है, क्योंकि प्रशासनिक—राजनीतिक नीतियाँ ही किसी भी क्षेत्र में उद्योगों के विकास हेतु उत्तरदायी होती हैं। सरकारी नियम नवीन औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं और हतोत्साहित भी कर सकते हैं। राजस्थान सरकार ने राज्य में नये उद्योग लगाने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा वेब पोर्टल (<https://rajudyogmitra.rajasthan.gov.in>) का शुभारम्भ किया गया है। अतः एक उद्योग की स्थिति सरकार की सकारात्मक

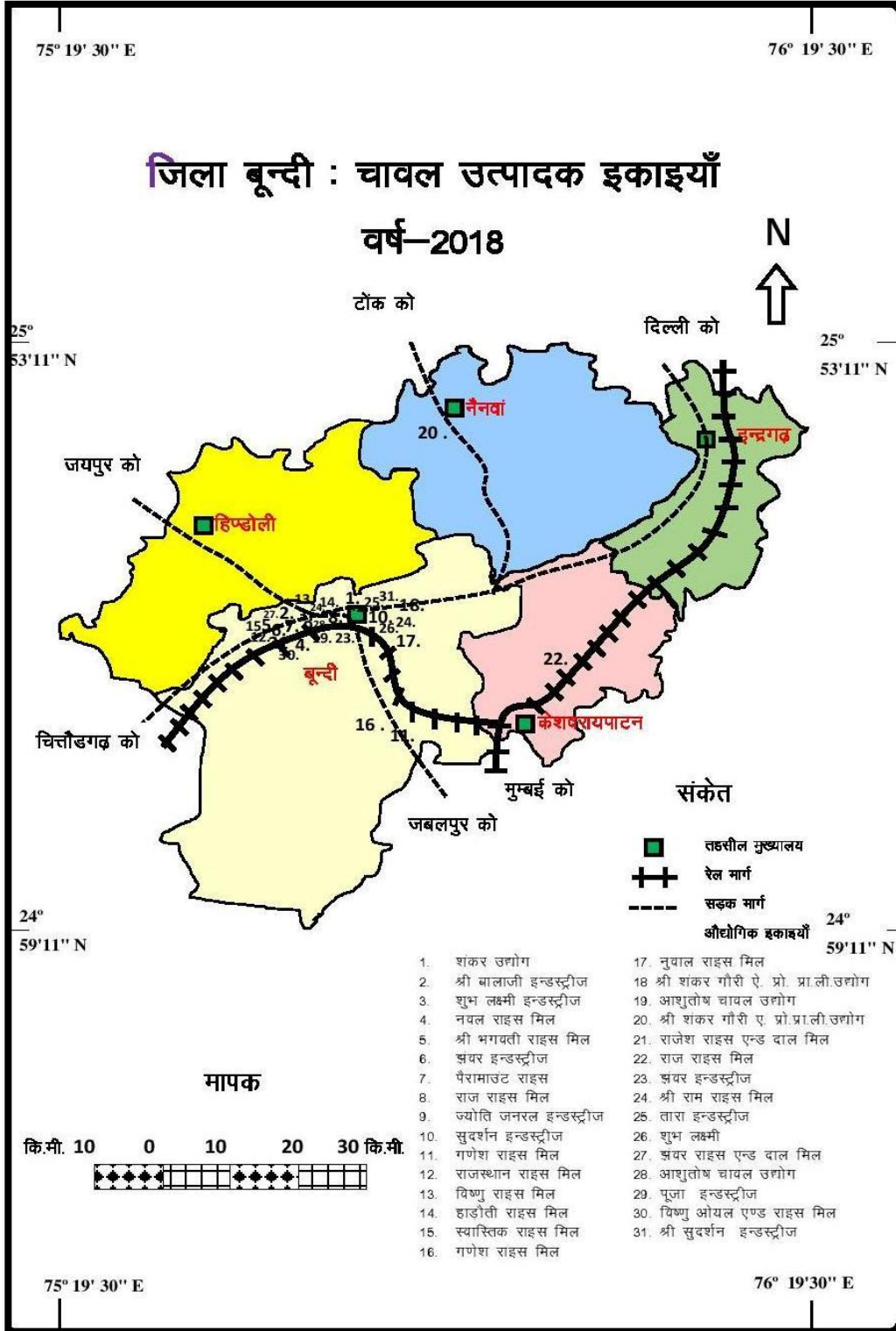
प्रवृत्ति को दर्शाती है, किन्तु फिर भी बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था के आधार चावल उद्योगों के प्रोत्साहन व सहयोग हेतु कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। क्षेत्र विशेष में किसी विशेष उद्योग का विकास उद्योगपति की व्यक्तिगत रुचि व करों पर भी आधारित होता है। उपर्युक्त कारक क्षेत्र में आवश्यक कारकों की उपलब्धता रखते हैं, फलस्वरूप बून्दी जिले में चावल आधारित उद्योगों का विकास अन्य उद्योगों की अपेक्षा अधिक हुआ है क्योंकि जिले में धान पर्याप्त व सरलता से उपलब्ध है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि चावल आधारित उद्योगों की अवस्थापना व विकास विभिन्न कारणों से प्रभावित होता है।

अतः स्पष्ट है कि जिले में चावल उद्योगों का विकास अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक हुआ है। जिसका प्रमुख कारण कच्चे माल के रूप में जिले का प्रचुर एवं विविधतापूर्ण कृषि उत्पादन है।

5.3 चावल उद्योग की स्थापना व विकास

बून्दी जिले में चावल उद्योग विकास की एक लम्बी प्रक्रिया से गुजरा और अन्त में 1980 के दशक में एक महत्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग के रूप में विकसित हुआ है।

कृषि प्रधान बून्दी जिले में 1980 के दशक तक खांडसारी उद्योग का प्रचलन अधिक था। जिले में बाजार की कमी तथा गन्ना उत्पादन में निरन्तर कमी के कारण खांडसारी उद्योग का पतन शुरू हो गया। वर्ष 1985 के बाद से चावल उद्योग ने अपने पैर जमाना शुरू किया तथा लगातार 30 वर्षों से चावल उद्योग जिले की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बना हुआ है। जिला बून्दी में 1974 में बी.सी.आर. औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना हुई तत्पश्चात् विष्णु व मान राइस मिल ने सर्वप्रथम चावल उद्योग प्रारम्भ किया। हरियाणा व पंजाब से आये हुये चावल निर्यातक बी.आर. एण्ड सन्स एवं अर्जुन ब्रिज इत्यादि ने वर्ष 1984 में बून्दी जिले में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। सन् 1980 में राज राइस मिल एवं आशुतोष चावल उद्योग की स्थापना से जिले में चावल उत्पादन में ओर अधिक वृद्धि हुई। वर्ष 1985 के बाद से खुशीराम बिहारी लाल,



तालिका— 5.1
जिला बून्दी : प्रमुख चावल उत्पादक इकाइयाँ

क्र. सं.	इकाई	अवस्थिति	उत्पाद/ब्रांड
1	शंकर उद्योग	जिला मुख्यालय, बून्दी	मखमल व रजनीगंधा ब्रांड, बासमती चावल
2	श्री बालाजी इन्डस्ट्रीज	जिला मुख्यालय, बून्दी	तानसेन ब्रांड, बासमती चावल
3	शुभ लक्ष्मी इन्डस्ट्रीज	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	पकीजा व 56 भोग ब्रांड चावल
4	नवल राइस मिल	सिलोर रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	तानपुरा व 777 ब्रांड चावल
5	श्री भगवती राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	जादूगर व बहुरानी ब्रांड चावल
6	झंवर इन्डस्ट्रीज	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	रायल जैम ब्रांड, चावल
7	पैरामाउंट राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	351 ब्रांड, बासमती चावल
8	राज राइस मिल	इन्डस्ट्रीयल एरिया, हट्टीपुरा तह. बून्दी	वी.आई.पी. ब्रांड बासमती चावल
9	ज्योति जनरल इन्डस्ट्रीज	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	555 व 565 ब्रांड चावल
10	सुदर्शन इन्डस्ट्रीज	दलेलपुरा, तहसील बून्दी	बासमती चावल
11	गणेश राइस मिल	तालेड़ा, तहसील बून्दी	बासमती चावल
12	राजस्थान राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
13	विष्णु राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
14	हाड़ौती राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला	बासमती चावल

		मुख्यालय, बून्दी	
15	स्वास्तिक राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
16	नुवाल राइस मिल	दौलाडा-तहसील बून्दी	बासमती चावल
17	आशुतोष चावल उद्योग	शिव कोलानी, बून्दी	बासमती चावल
18	श्री शंकर गौरी एगो प्रोडक्ट प्रा.ली.उद्योग	गनपतपुरा, बून्दी	बासमती चावल
19	राजेश राइस एन्ड दाल मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
20	राज राइस मिल	कापरेन, बून्दी	बासमती चावल
21	झंवर इन्डस्ट्रीज	हट्टीपुरा, बून्दी	बासमती चावल
22	श्री राम राइस मिल	न्यू ग्रेन मण्डी, बून्दी	बासमती चावल
23	तारा इन्डस्ट्रीज	BCR इन्डस्ट्री एरिया, बून्दी	बासमती चावल
24	शुभ लक्ष्मी	जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
25	झंवर राइस एन्ड दाल मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
26	आशुतोष चावल उद्योग	BCR इन्डस्ट्री एरिया, बून्दी	बासमती चावल
27	पूजा इन्डस्ट्रीज	BCR इन्डस्ट्री एरिया, बून्दी	बासमती चावल
28	विष्णु ऑयल एण्ड राइस मिल	चित्तौड़ रोड, जिला मुख्यालय, बून्दी	बासमती चावल
29	श्री सुदर्शन इन्डस्ट्रीज	छलेलपुरा, बून्दी	बासमती चावल
30	गणेश राइस मिल	तालेड़ा, बून्दी	बासमती चावल
31	गणपति राइस मिल	तालेड़ा, बून्दी	बासमती चावल
32	श्री शंकर गौरी एगो प्रोडक्ट प्रा.ली.उद्योग	नैनवां, बून्दी	बासमती चावल

स्रोत – जिला उद्योग केन्द्र, बून्दी (2018)

सतनाम ओवरसीज, के.जे. इंटरनेशनल, आर.टी. एक्सपोर्ट आदि ने बून्दी में चावल उद्योग स्थापित किए।

वर्ष 1998-99 का वर्ष बून्दी के चावल उद्योग के लिए स्वर्ण युग माना जाता है क्योंकि इस वर्ष चावल उद्योगों ने 150 करोड़ रु. का कारोबार किया था, इस समय में सेला बासमती चावल 3700 रु. प्रति क्विंटल बिका जो एक रिकॉर्ड है।⁸

1990 के दशक के प्रारंभ में बून्दी जिले में चावल की लगभग 40 मिलें कार्यरत थी,⁹ किन्तु वर्तमान समय में बून्दी जिले में 32 चावल मिलें कार्यरत है जिनमें से 30 बून्दी तहसील, 1 नैनवां तहसील तथा 1 केशवरायपाटन तहसील में स्थित है। मानचित्र-13 तथा तालिका-5.1 में बून्दी जिले में प्रमुख चावल उत्पादक इकाइयों को दर्शाया गया है।

वर्ष 2014-15 में बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों ने बून्दी का 82.28 प्रतिशत धान उत्पादित किया।¹⁰ बून्दी जिले में विशेष रूप से धान की रतना, जया, बासमती 370, सुगंधा, बासमती, सेला बासमती, पूसा-1, पूसा-5, शरबती, पूसा-1121, पी.एच.बी. 71 किस्मों का उत्पादन किया जाता है।

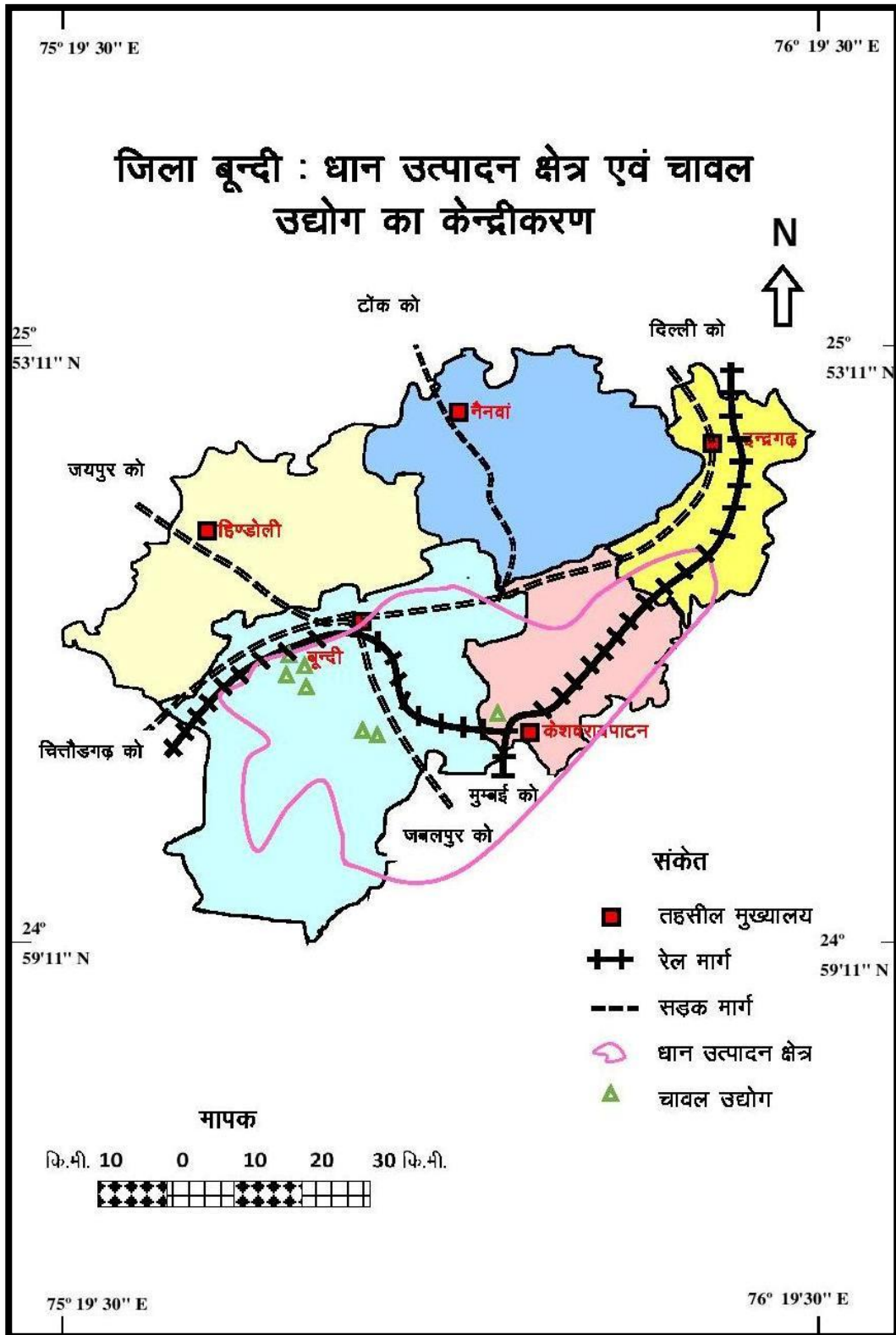
तालिका-5.2

जिला बून्दी : तहसील अनुसार चावल उद्योग का वितरण प्रारूप

(वर्ष - 2018)

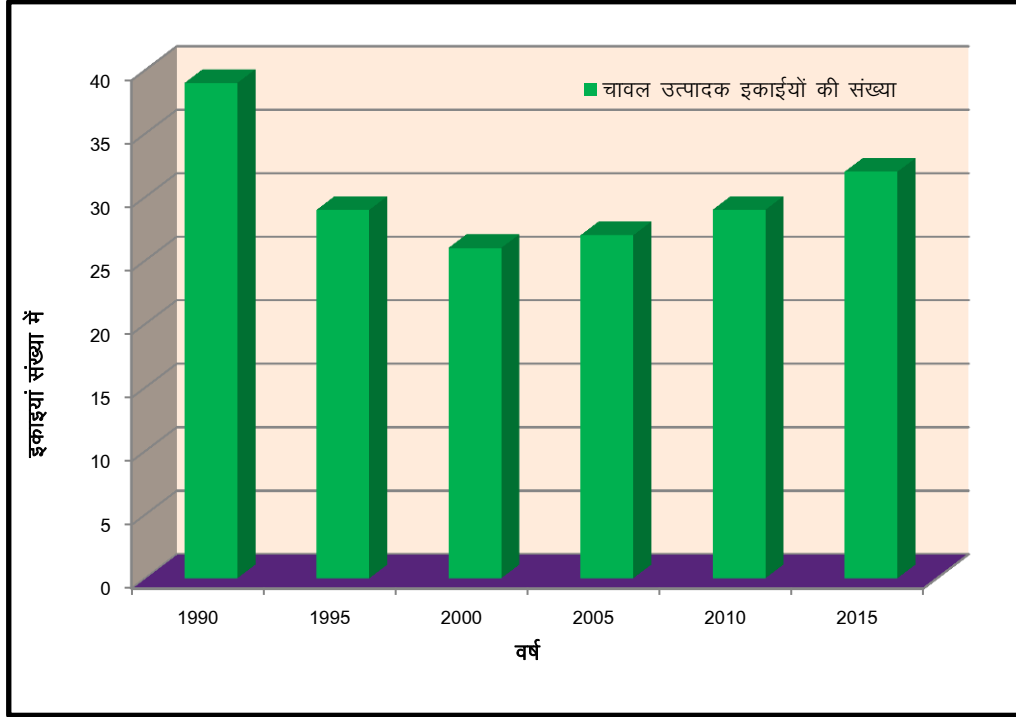
तहसील	बून्दी	केशवरायपाटन	हिण्डोली	नैनवां	इन्द्रगढ़
चावल मिलों की संख्या	30	1	—	1	—

स्रोत - जिला औद्योगिक संभाविता सर्वेक्षण, बून्दी (2018)



आरेख – 5.1

जिला बून्दी : चावल उद्योग का प्रतिरूप



तालिका-5.2 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार चावल उद्योग के वितरण प्रारूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में बून्दी जिले में 32 चावल मिलें संचालित हैं।¹¹ इनमें से 30 बून्दी तहसील, 1 नैनवां में तथा 1 केशवरायपाटन तहसील में स्थित हैं। मानचित्र-14

में बून्दी जिले में धान उत्पादक क्षेत्र व चावल उद्योग का केन्द्रीयकरण प्रतिरूप दर्शाया गया है, इससे स्पष्ट होता है कि बून्दी जिले में धान उत्पादक क्षेत्र एवं चावल उद्योग के केन्द्रीयकरण में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

बून्दी जिले में चावल उद्योगों का विकास अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक हुआ है जिसका प्रमुख कारण जिले का प्रचुर एवं विविधतापूर्ण कृषि उत्पादन है। बून्दी जिले में धान उत्पादक क्षेत्र एवं चावल उद्योग के केन्द्रीयकरण में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। जिले के कुल 32 चावल उद्योगों में से 30 चावल उद्योग केवल बून्दी तहसील में ही स्थित है क्योंकि बून्दी तहसील में चावल उद्योग की स्थापना के सभी कारकों का केन्द्रीयकरण हुआ है।

संदर्भ सूची

1. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 8
2. लोढ़ा, डॉ. राजमल, एवं माहेश्वरी, दीपक, (2016), "औद्योगिक भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 31
3. लोढ़ा, डॉ. राजमल, एवं माहेश्वरी, दीपक, (2016), "औद्योगिक भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 32
4. लोढ़ा, डॉ. राजमल, एवं माहेश्वरी, दीपक, (2016), "औद्योगिक भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 32
5. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 71
6. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 11
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 125
8. गौतम, भारतेन्दु, (2010), "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन" पीएच. डी. शोध ग्रंथ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 129
9. जिला उद्योग प्रतिवेदन, (2016), जिला बून्दी
10. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 18
11. जिला उद्योग प्रतिवेदन, (2016), जिला बून्दी

षष्ठम अध्याय
बून्दी जिले में चावल
उत्पादन एवं औद्योगिक
स्वरूप

षष्ठम अध्याय

बून्दी जिले में चावल उत्पादन एवं औद्योगिक स्वरूप

6.1 परिचय

चावल उद्योग का प्रमुख आधार धान का उत्पादन है। धान अपने प्रारम्भिक स्वरूप में चावल उद्योगों हेतु कच्चे माल के रूप में कार्य करता है। जिले में धान की प्राप्ति कृषि उपज मण्डी बून्दी, कोटा एवं बारां से की जाती है। चावल मिल में धान को साफ करके भोजन के रूप में तैयार करने के लिए अनेक मशीनों में धान को कई प्रक्रियाओं से हो कर गुजारना होता है।

6.2 चावल उद्योग में चावल तैयार करने की प्रक्रिया

चावल मिल में धान से चावल तैयार करने के लिए आवश्यक प्रमुख मशीनें निम्न हैं —

1. राइस क्लीनिंग मशीन
2. राइस डे-स्टोर मशीन
3. पेडी हसकर मशीन
4. राइस कलन सोर्टर मशीन
5. पेडी सेपरेटर मशीन
6. राइस व्हाइटनर मशीन
7. राइस पोलिशिंग मशीन
8. ग्रेडिंग मशीन
9. ग्रेन ड्रेयर मशीन
10. मेजर एवं पैकिंग मशीन
11. राइस मिल्लिंग डिटेक्शन मशीन

चावल उद्योग में धान को कृषि उपज मण्डियों से ट्रैक्टर एवं ट्रक के द्वारा लाया जाता है। धान को चावल के रूप में तैयार करके बाजार में बेचने के लिए निम्न प्रक्रियाओं से गुजारा जाता है¹ —

6.2.1 सफाई

इस चरण में धान में सम्मिलित सभी अशुद्धियों को साफ किया जाता है। साथ-साथ खराब अनाज को भी इससे अलग कर दिया जाता है।

6.2.2 डी-स्टोनिंग

इस प्रक्रिया में धान में मौजूद सभी प्रकार के छोटे-छोटे पत्थरों को हटाया जाता है।

6.2.3 पर्बोलिंग

इस प्रक्रिया में चावल की पौष्टिक एवं गुणवत्ता में वृद्धि की जाती है।

6.2.4 हस्किंग एसपिरेशन

इस चरण में धान में से भूसी को अलग किया जाता है।

6.2.5 धान का पृथक्करण

इस प्रक्रिया में धान में से चावल को अलग किया जाता है।

6.2.6 पोलिशिंग

इस प्रक्रिया में चावल के बाहरी भाग पर पॉलिश किया जाता है।

6.2.7 लेंथ ग्रेडिंग

इस प्रक्रिया में चावल के छोटे-छोटे कणों को अलग-अलग आकार के आधार पर एकत्रित किया जाता है।

6.2.8 पैकेजिंग

इस अन्तिम चरण में चावल को तोल के आधार पर अलग-अलग मात्रा में पैकेट तैयार किये जाते हैं।

6.3 चावल उद्योग के बून्दी जिले में केन्द्रित होने के कारण

बून्दी जिले में उपलब्ध चम्बल बाँधी नहर द्वारा सिंचाई सुविधा, उपजाऊ मृदा संसाधन एवं किसानों का व्यापारिक फसलों की पैदावार की ओर रुझान ने धान उत्पादन में वृद्धि एवं चावल उद्योग के केन्द्रीकरण को आकर्षित किया है। जिले में चावल उद्योग के केन्द्रित होने के लिए निम्न कारण उत्तरदायी हैं –

6.3.1 सिंचाई की सुविधा

बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में प्रारम्भ से ही धान उत्पादन हेतु सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध रही हैं। इन दोनों तहसीलों में जिले के कुल सिंचित क्षेत्रफल का बून्दी तहसील में 72.88 प्रतिशत तथा केशवरायपाटन में 91.83 प्रतिशत क्षेत्र नहरी सिंचाई के अन्तर्गत है।² फलस्वरूप तहसीलों में धान का सर्वाधिक उत्पादन किया जाता है।

नैनवां तहसील में कुएँ एवं नलकूपों द्वारा सिंचाई से धान का उत्पादन किया जाता है। तहसील में कुल सिंचित क्षेत्र का 93.83 प्रतिशत क्षेत्र कुएँ एवं नलकूपों द्वारा सिंचित किया जाता है।³

6.3.2 मृदा संसाधन

बून्दी तहसील में काली व दोमट मिट्टी पाई जाती है, जिन्हे अध्याय-2 में मानचित्र-6 में दर्शाया गया है। इन्द्रगढ़ तहसील के पूर्वी भाग तथा केशवरायपाटन के सम्पूर्ण क्षेत्र में गहरी काली मृदा का विस्तार पाया जाता है। यह मृदा विशेषतः सरसों, सोयाबीन, धान, मसालें, मक्का, गेहूँ आदि की कृषि हेतु उपयुक्त है।⁴ अतः जिले में धान की कृषि के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ विद्यमान हैं, जिसके परिणामस्वरूप धान का प्रचुर मात्रा में उत्पादन किया जाता है।

6.3.3 धान का पर्याप्त उत्पादन

बून्दी व केशवरायपाटन तहसीलों में धान का उत्पादन व्यापारिक दृष्टि से किया जाता है। ज्वार, मक्का, तिल, सोयाबीन आदि फसलों में कम पैदावार के कारण कृषकों को अधिक मुनाफा नहीं होता है, किन्तु धान की फसल में अधिक पैदावार एवं बाजार मूल्य भी अधिक प्राप्त होने के कारण अधिक उत्पादन किया जाता है।

उपर्युक्त कारणों के फलस्वरूप जिले में चावल उत्पादन पर अधिक जोर दिया जाता है। चावल उद्योग के केन्द्रीकरण का मुख्य कारण इन इकाइयों के पृष्ठ प्रदेश में धान का अधिक

उत्पादन है जिससे इन इकाइयों को पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध हो जाता है।

अध्याय-5 में मानचित्र-14 धान उत्पादक क्षेत्र व चावल उद्योग का केन्द्रीकरण प्रतिरूप दर्शाया गया है। इसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि चावल उद्योग का शत प्रतिशत संकेन्द्रण बून्दी, नैनवां व केशवरायपाटन तहसीलों में हैं। जिसका प्रमुख कारण इन दोनों तहसीलों (बून्दी व केशवरायपाटन) में मध्यम काली-दोमट मिट्टी का पाया जाना है। साथ-साथ सिंचाई सुविधा के रूप में कोटा बैराज की बायों नहर द्वारा जल की उपलब्धता भी काफी सहायक है, जो धान की कृषि के लिए उपयुक्त है।

6.4 चावल निर्यात

औद्योगिक उत्पाद चावल मानव की खाद्य सामग्री का अनिवार्य अंग है। जिसे बाजार तक अंतिम उपभोक्ता तक पहुँचाना आवश्यक है। बून्दी जिले में प्रमुख कृषि उद्योगों के अन्तर्गत बासमती चावल मुख्य उत्पाद है जो अपने विकास के प्रारंभ से ही बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बना हुआ है। बून्दी जिले में तैयार किये जाने वाला बासमती चावल अपनी भीनी महक एवं उत्तम स्वाद के कारण उपभोक्ताओं की पहली पसन्द रहा है। अतः बून्दी जिले के बासमती चावल की मांग स्थानीय, देशीय एवं विभिन्न देशों में समान रूप से बनी रहती हैं। चावल के निर्यात से होने वाली आय बून्दी जिले की अर्थव्यवस्था को प्रमुख रूप से प्रभावित करती है।

भारत ने वित्त वर्ष 2013-14 में 29000 करोड़ रुपये के बासमती चावल का निर्यात किया है। ईरान भारत का सबसे बड़ा चावल आयातक देश है। देश में बासमती चावल की औसत उत्पादन में वृद्धि का प्रमुख कारण, ईरान, टर्की, बांग्लादेश सहित विभिन्न देशों में चावल की अधिक माँग रही है जिसके फलस्वरूप देश में विगत तीन वर्षों (2016, 2017 एवं 2018) से धान के उत्पादन एवं मूल्यों में निरन्तर वृद्धि हुई है।

वर्ष 2017-18 में भारत द्वारा बांग्लादेश को 326 लाख टन एवं टर्की को 29891 टन चावल का निर्यात किया गया है।⁵ ईरान धान की उन्नत किस्म 1121 का सर्वाधिक आयात करता है। भारत से ईरान के लिए प्रति वर्ष लगभग 4 से 6 लाख टन चावल का निर्यात किया जाता है।

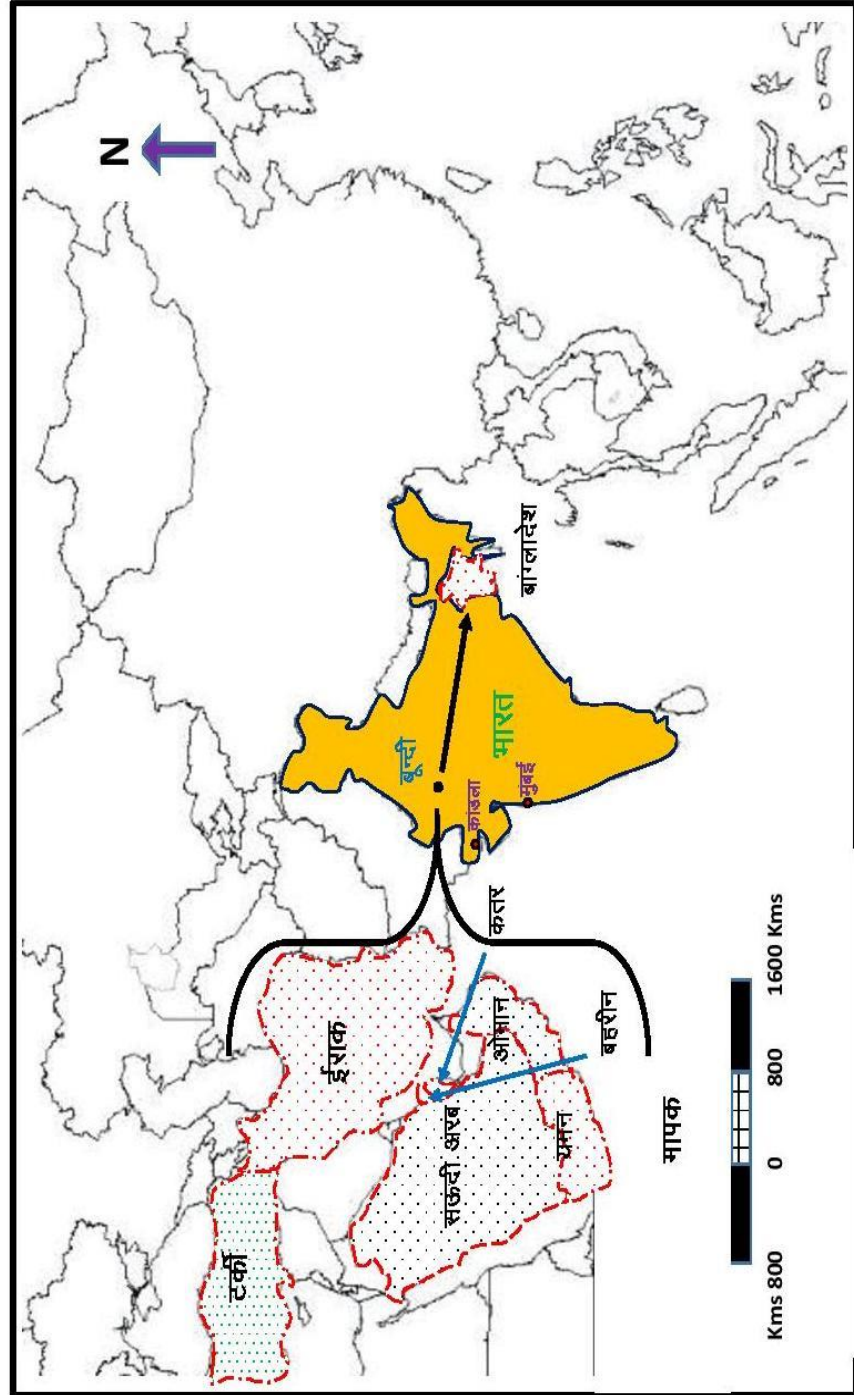
बून्दी जिले से उत्पादित चावल का 90 प्रतिशत भाग निर्यात किया जाता है। जिले में धान की किस्म 1121 का सर्वाधिक उत्पादन किया जाता है, जिसकी मांग ईरान में सर्वाधिक है।

बून्दी नगर से मात्र 35 किलोमीटर की दूरी पर कोटा नगर स्थित है, जहाँ स्थानीय चावल आधारित उद्योगों के उत्पादों का एक महत्वपूर्ण भाग खप जाता है। बून्दी जिले से चावल का निर्यात राजस्थान के बाहर अन्य राज्यों यथा—दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में किया जाता है। बून्दी के बासमती चावल की मांग कुवैत, ईरान, ईराक, सऊदी अरब, कतर, बहरीन आदि देशों से लेकर अफ्रीका के सोमालिया जैसे देशों तक भी है इन देशों को निर्यात के लिए सर्वप्रथम बून्दी जिले में उत्पादित बासमती चावल को विभिन्न साधनों द्वारा कांडला (गुजरात) एवं मुम्बई बन्दरगाहों तक पहुँचाया जाता है, वहाँ से खाड़ी देशों को निर्यात किया जाता है। (मानचित्र-15)

6.5 बून्दी जिले में सम्भावित चावल उद्योग अवस्थिति

चावल उद्योग विकास हेतु बून्दी जिले में अपार संभावनाएँ निहित हैं। यद्यपि वर्ष 1995 से 2005 के मध्य में वर्षा की अनियमितता, सिंचाई हेतु जल की अनुपलब्धता के कारण किसानों का रुझान कम होने से चावल मिलों की संख्या में कमी आई है, परन्तु फिर भी जिले में समग्र रूप से पर्याप्त मात्रा में धान का उत्पादन होता है। वर्ष 2014-15 में 82646 मैट्रिक टन धान का उत्पादन हुआ।⁶ वर्तमान समय में बून्दी जिले में 32 चावल मिलें हैं जो बून्दी, नैनवां व केशवरायपाटन तहसीलों में स्थित है।

जिला बुन्दी : बासमती चावल का निर्यात



तालिका – 6.1

जिला बून्दी :चावल उद्योगों की संख्या तथा चावल के उत्पादक क्षेत्र
(वर्ष 2014–15)

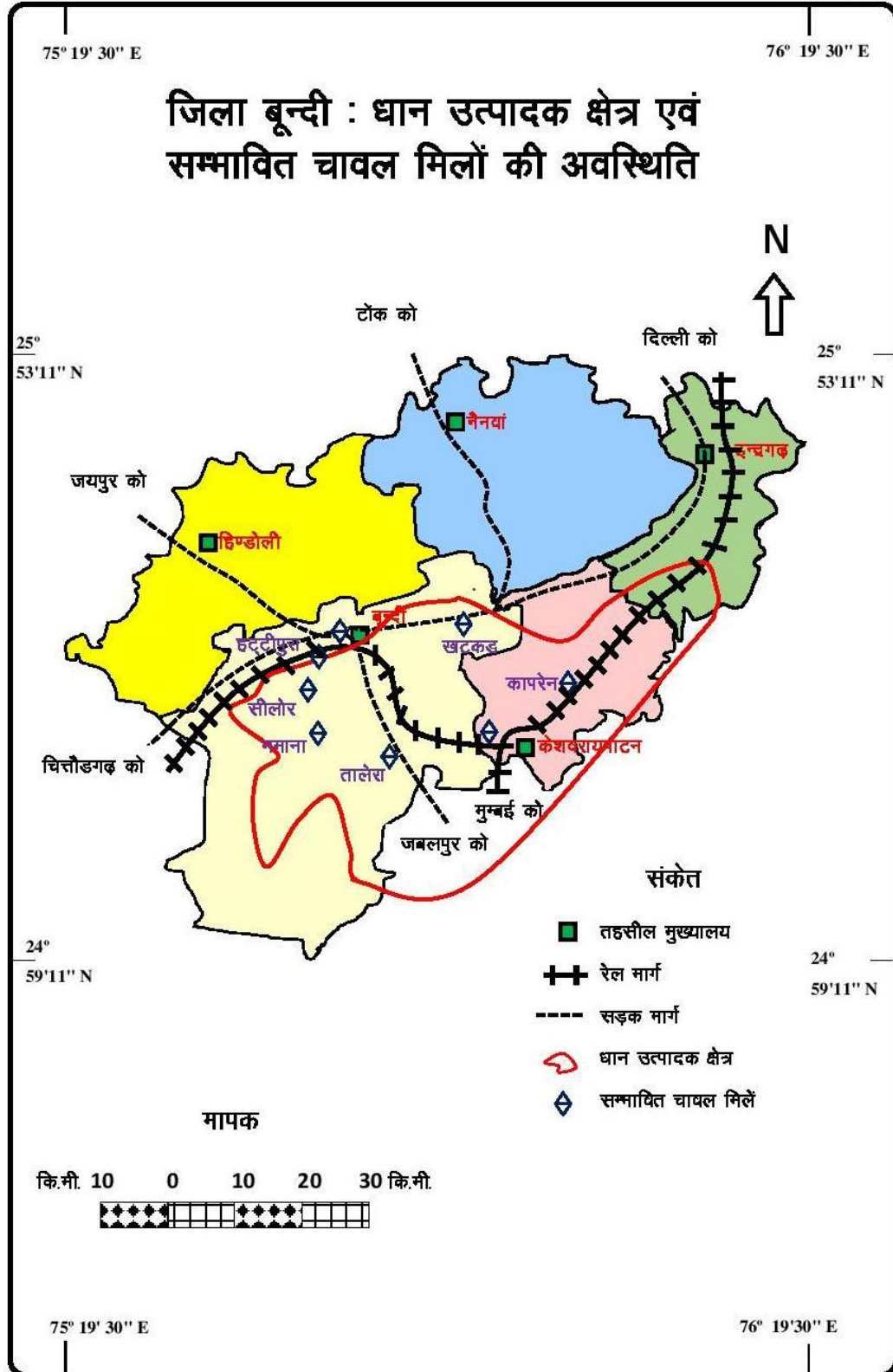
क्र. सं.	तहसील	चावल उत्पादक क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	चावल उद्योगों की संख्या
1.	बून्दी	28427	32
2.	के.पाटन	4709	1
3.	नैनवां एवं इन्द्रगढ़	186	1
4.	हिण्डोली	1226	.

स्रोत – जिला सांख्यिकी रूपरेखा, बून्दी (2016)

मानचित्र-16 में बून्दी जिले में प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्र तथा सम्भावित वृहद मध्यम स्तर की चावल उत्पादक इकाइयों की सम्भावित अवस्थिति दर्शायी गई हैं। जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रचुर मात्रा में धान उत्पादन के कारण बून्दी तहसील में हट्टीपुरा, सीलोर, नमाना, तालेड़ा एवं खटकड़ तथा केशवरायपाटन तहसील में कापरेन एवं केशवरायपाटन नामक स्थान पर नवीन चावल उत्पादक इकाइयों की स्थापना की पर्याप्त सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। अर्थात् बून्दी जिले में चावल उत्पादक इकाइयों की सम्भावित अवस्थिति दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में है। तालिका-6.1 में चावल उद्योगों की संख्या तथा चावल के उत्पादन क्षेत्र को दर्शाया गया है। बून्दी जिले की बून्दी तहसील में चावल उत्पादक क्षेत्रफल सर्वाधिक है अतः यहाँ पर चावल उत्पादक इकाइयों की संख्या भी अधिक है।

6.6 बून्दी जिले में औद्योगीकरण स्तर का मापन

वर्ष 2011 में बून्दी जिले में कुल 526091 जनसंख्या कार्यशील एवं सीमान्त जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है। जिले में औद्योगिक कार्यों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत 2.12 है जबकि



बून्दी तहसील में कुल कार्यशील व सीमान्त जनसंख्या (186554) का 2.25 प्रतिशत (4195) उद्योगों में लगा हुआ है।⁷ तालिका-6.2 में बून्दी तहसील एवं बून्दी जिले की अन्य तहसीलों में औद्योगिक कार्यों में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत दर्शाया गया है।

तालिका-6.2

जिला बून्दी : उद्योगों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत

वर्ष	तहसील व जिला	उद्योगों में लगी जनसंख्या	कुल कार्यशील व सीमान्त जनसंख्या	जिले व तहसील में उद्योगों में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत
1991	जिला बून्दी	2866	309439	0.93
	हिण्डोली	573	68731	0.83
	नैनवां	798	58487	1.36
	केशवरायपाटन	794	76569	1.04
	बून्दी	701	105652	0.66
2011	जिला बून्दी	11172	526091	2.12
	हिण्डोली	1865	123116	1.51
	नैनवां	3494	149694	2.33
	केशवरायपाटन	1618	66727	2.42
	बून्दी	4195	186554	2.25

स्रोत - जिला सांख्यिकी विभाग, बून्दी

तलिका -6.3

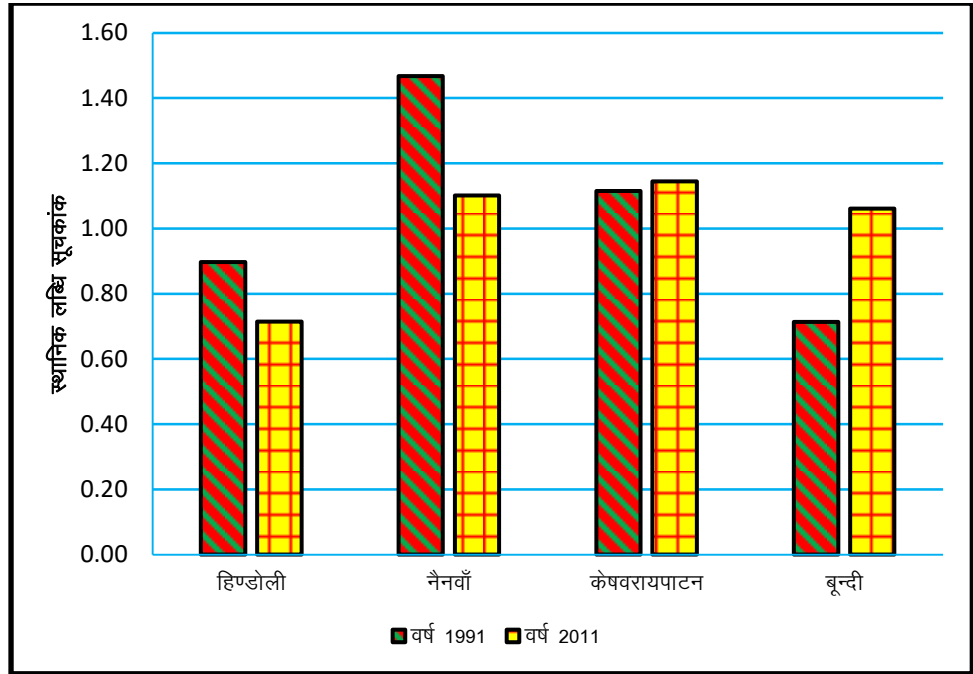
जिला बून्दी : उद्योगों का स्थानिक लब्धि सूचकांक

क्र.सं.	तहसील	वर्ष 1991	वर्ष 2011
1.	हिण्डोली	0.90	0.71
2.	नैनवां	1.47	1.10
3.	केशवरायपाटन	1.12	1.14
4.	बून्दी	0.71	1.06

स्रोत - सूत्र द्वारा अभिकलन

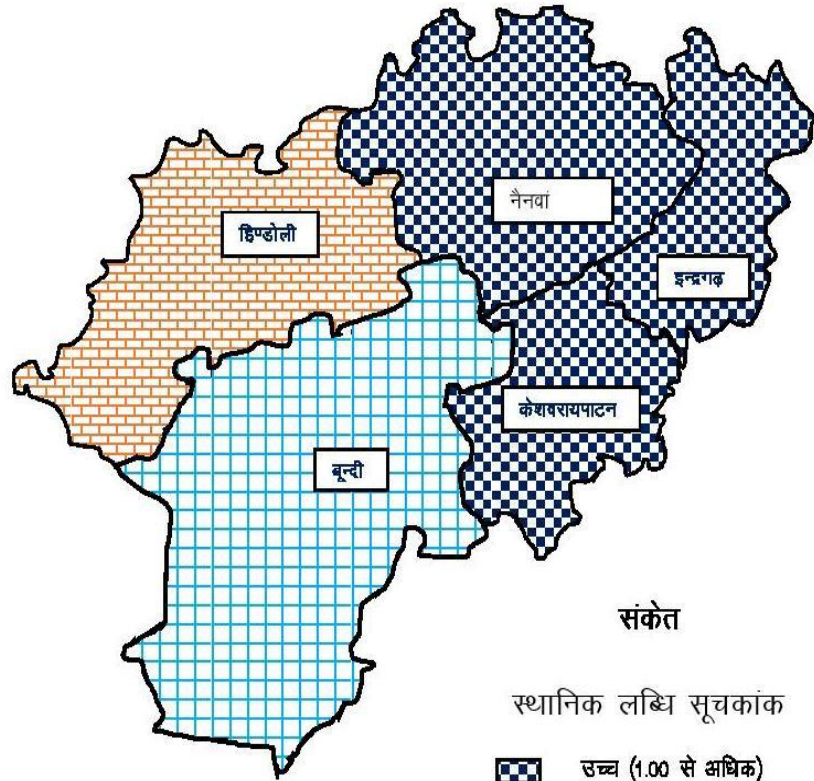
आरेख - 6.1

जिला बून्दी : औद्योगीकरण का स्तर






स्रोत - सूत्र द्वारा अभिकलन

बून्दी जिला : तहसीलानुसार
औद्योगीकरण स्तर
(वर्ष -1991)



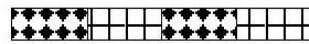
संकेत

स्थानिक लब्धि सूचकांक

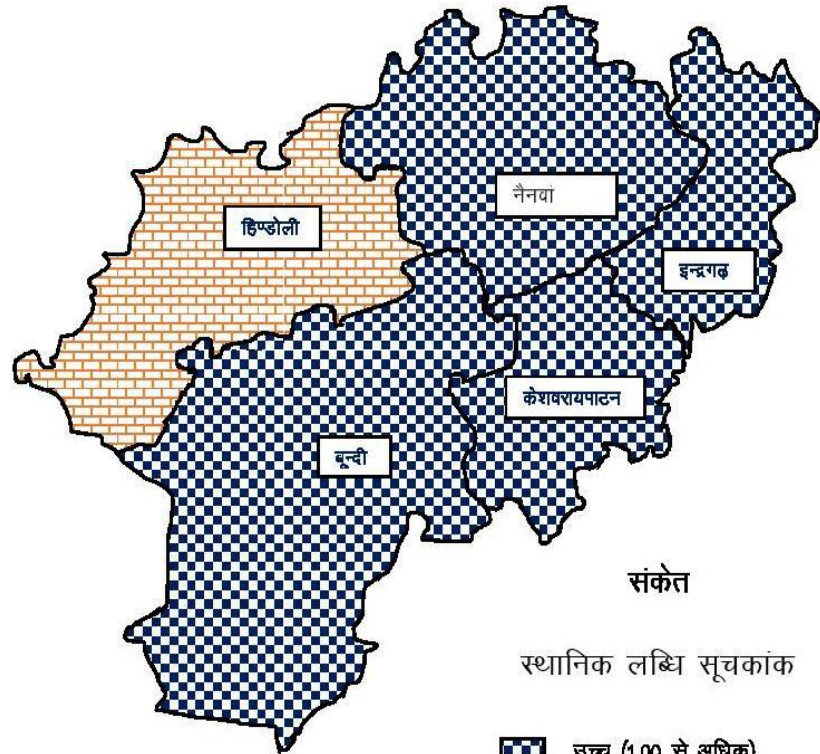
-  उच्च (1.00 से अधिक)
-  मध्यम (0.80 से 1.00 तक)
-  निम्न (0.80 से कम)

मापक

कि.मी. 10 0 10 20 30 कि.मी.






बून्दी जिला : तहसीलानुसार औद्योगीकरण
स्तर
(वर्ष -2011)



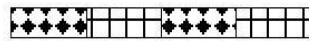
संकेत

स्थानिक लब्धि सूचकांक

-  उच्च (1.00 से अधिक)
-  मध्यम (0.80 से 1.00 तक)
-  निम्न (0.80 से कम)

मापक

कि.मी. 10 0 10 20 30 कि.मी.

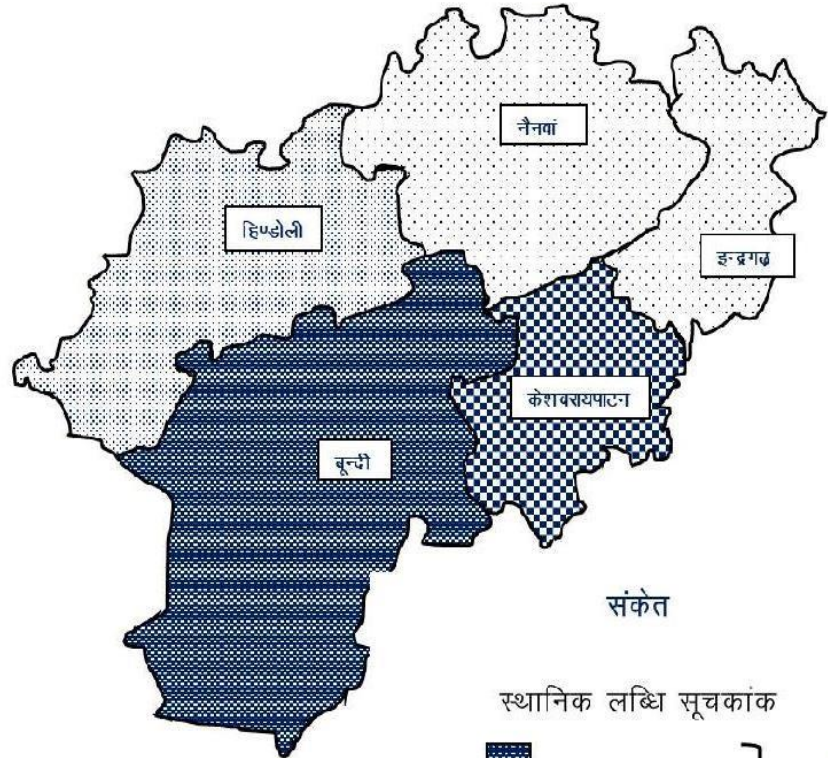


तालिका-6.3 में बून्दी जिले में स्थानिक लब्धि सूचकांक दर्शाया गया है, जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में वर्ष 1991 में सर्वाधिक स्थानिक लब्धि सूचकांक नैनवां तहसील में (1.47) है। जिसका प्रमुख कारण नैनवां तहसील में लघु व ग्रामीण स्तर पर तेल घाणी उद्योग, गुड़-खांडसारी उद्योग, दाल-मसाला उद्योग, आटा पिसाई उद्योग, फर्नीचर उद्योग, इलेक्ट्रिक उद्योग इत्यादि का कार्यरत होना हैं। जिनमें तहसील की लगभग 1.36 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है जो बून्दी जिले में सर्वाधिक है। स्थानिक लब्धि सूचकांक की दृष्टि से बून्दी तहसील वर्ष 1991 में अन्तिम स्तर पर एवं वर्ष 2011 में तृतीय स्तर रही है। मानचित्र-17 एवं 18 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार औद्योगीकरण स्तर एवं मानचित्र-19 में परिवर्तन को दर्शाया गया है। हिण्डोली, नैनवां तथा इन्द्रगढ़ तहसील में औद्योगीकरण का स्तर निम्न एवं बून्दी तहसील में उच्च पाया गया है।

इस अध्याय में चावल उद्योग में चावल तैयार करने की प्रक्रिया, चावल उद्योग के बून्दी जिले में केन्द्रित होने के कारणों, चावल निर्यात, बून्दी जिले में सम्भावित चावल उद्योग अवस्थिति एवं बून्दी जिले में औद्योगीकरण स्तर का मापन के विवेचन से ज्ञात होता है कि बून्दी जिले में चावल उद्योगों का विकास का प्रमुख कारण, जिले में काली मृदा का विस्तार एवं सिंचाई की सुविधा का होना रहा है। सहायक कारकों में परिवहन सुविधा की महती भूमिका है।

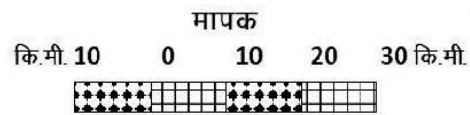
अध्ययन से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में धान उत्पादक क्षेत्र एवं चावल उद्योग के स्थानीयकरण में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है अतः परिकल्पना “चावल उद्योग की अवस्थिति तथा चावल के उत्पादन क्षेत्र में सहसम्बन्ध है” स्वीकार की जाती है।

जिला बून्दी : तहसीलानुसार औद्योगीकरण
स्तर में परिवर्तन
(वर्ष - 1991 से 2011)



संकेत

स्थानिक लब्धि सूचकांक



संदर्भ सूची

1. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018–19)
2. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 42
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 42
4. नागर, एस.एन., (2018), बून्दी तहसील में मृदा संसाधन एवं फसल प्रतिरूप में परिवर्तन (ग्रामीण विकास के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन), ऐसेन्ट इन्टरनेशनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, VOL.-III (अक्टूबर–दिसम्बर) पृ.सं. 55
5. Market Times Report on Rice (2018), Noida, P.7
6. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 18
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 8

सप्तम अध्याय
आर्थिक विकास में चावल
उद्योग की भूमिका

सप्तम अध्याय

आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका

7.1 परिचय

मानव द्वारा किये जाने वाले आर्थिक कार्यों में कृषि के उपरान्त उद्योग ही महत्वपूर्ण आर्थिक कार्य है। इनमें बून्दी जिले की औद्योगिक क्षेत्र में कुल कार्यशील जनसंख्या का 2.12 प्रतिशत जीविका प्राप्त करता है।¹ उद्योगों को विकास क्षेत्र के आर्थिक विकास का मापदण्ड भी माना जाता है। जिन क्षेत्रों में उद्योगों का विकास हुआ है वहाँ अन्य आर्थिक कार्यों जैसे— व्यापार तथा परिवहन का विकास होना स्वभाविक है। उद्योगों द्वारा तैयार किया गया सामान स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जाता है एवं औद्योगिक क्रियाओं से मानवीय जीवन स्तर में भी वृद्धि होती है।

‘इंडस्ट्री’ शब्द का अंग्रेजी में अर्थ है, कच्चे माल से वस्तुओं का निर्माण करना (Fabrication from raw material)। जर्मन शब्द इण्डस्ट्री (Industry) का अर्थ है “मशीनों अथवा प्रक्रिया से आधुनिक विधियों द्वारा बड़े पैमाने पर निर्माण” (Processing on large scale with the use of machinery or modern method of working)।²

इस प्रकार उद्योग वह आर्थिक क्रिया है जिसके अन्तर्गत आधुनिक तकनीक से कच्चे माल से उपयोगी वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

7.2 आर्थिक विकास

राज्य का औद्योगिक पिछड़ापन जहाँ एक ओर प्राकृतिक कारणों से रहा है तो वहीं दूसरी ओर आर्थिक एवं राजनीतिक कारण भी इसके लिये उत्तरदायी रहे हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है किन्तु औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान का विकास अन्य राज्यों की अपेक्षा कम हुआ है। वर्ष 1994—95 में राजस्थान में कुल पंजीकृत उद्योगों की संख्या 172015 रही है।³

तालिका-7.1 व आरेख-7.2 में राज्य एवं बून्दी जिले में पंजीकृत उद्योगों का वार्षिक स्वरूप दर्शाया गया है।

वर्ष 2015-16 में राजस्थान में औद्योगिक विकास के तहत कुल पंजीकृत उद्योग 4.54 लाख, कुल रोजगार 21.03 लाख एवं 29495.27 करोड़ रुपये निवेश किये गये हैं।⁴

राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य में कृषि आधारित उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है जिसका प्रमुख कारण राजस्थान में प्रचुर एवं विविधतापूर्ण कृषि उत्पादन है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से बून्दी जिला राजस्थान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले में कृषि उत्पादन के तहत चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेहूँ, जौ, चना, उड़द आदि फसलें उपजाई जाती हैं।

वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले के अन्तर्गत 467959 हेक्टेयर भूमि पर 66.96 प्रतिशत भाग पर खाद्यान्न फसलों का उत्पादन किया गया।⁵ अतः जिले के कृषि उत्पादन में विविध औद्योगिक फसलों का महत्वपूर्ण स्थान है फलस्वरूप जिले में कृषि आधारित उद्योगों का विकास अपेक्षाकृत अधिक हुआ है।

7.3 औद्योगिक क्षेत्र

राजस्थान राज्य उद्योग विकास और निवेश निगम लिमिटेड द्वारा राज्य में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। रीको (RICCO) के द्वारा बून्दी जिले में 6 औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है। जिले में औद्योगिक क्षेत्रों का विस्तार बून्दी शहर के बाई पास रोड़ एवं चित्तौड़गढ़ रोड़ के सहारे क्रमशः 9.22 एवं 32.20 एकड़ में फैला हुआ है।

अन्य औद्योगिक क्षेत्रों के अन्तर्गत बून्दी नैनवां रोड़, गोविन्दपुर बावडी, इन्द्रगढ़-सुमेरगंजमण्डी एवं हट्टीपुरा क्षेत्र हैं मानचित्र-20 में जिले के औद्योगिक क्षेत्रों को दर्शाया गया है।

बून्दी जिले में कुल औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत 208.36 एकड़ भूमि आवंटित है।⁶ जिले में सर्वाधिक आवंटित भूमि हट्टीपुरा औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित है।

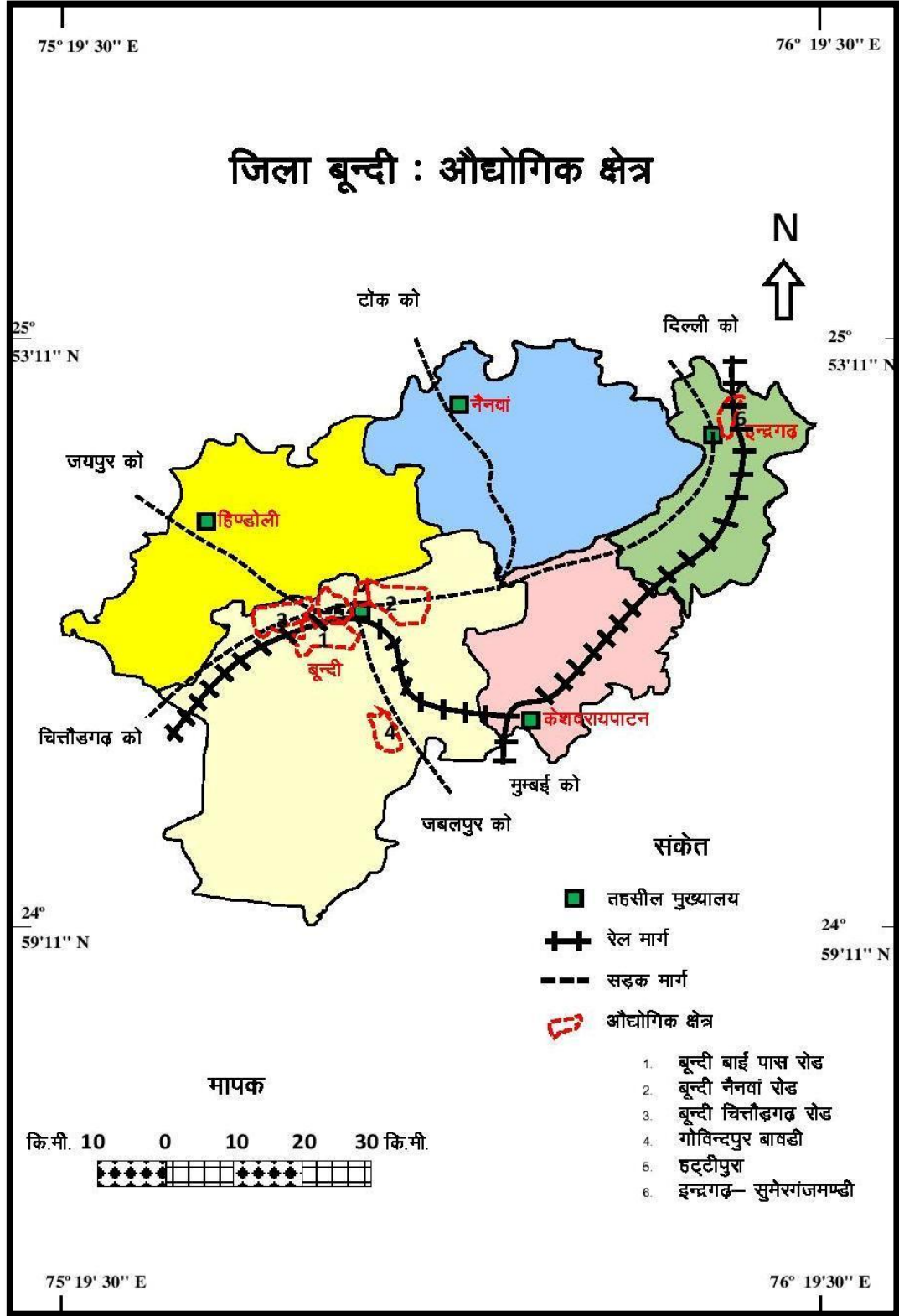
तालिका-7.1

जिला बून्दी : उद्योगों का तुलनात्मक प्रतिरूप

(वर्ष 1995 से 2015)

वर्ष	पंजीकृत उद्योगों की संख्या (जिला बून्दी)	पंजीकृत उद्योगों की संख्या (राजस्थान)	बून्दी जिले में राजस्थान का प्रतिशत
1995	1043	172015	0.61
1996	1142	177607	0.64
1997	1297	185720	0.70
1998	1452	193820	0.75
1999	1612	202627	0.80
2000	1777	211721	0.84
2001	1926	221369	0.87
2002	2071	231444	0.89
2003	2216	241045	0.92
2004	2376	251493	0.94
2005	2551	262881	0.97
2006	2741	275400	1.00
2007	2955	291305	1.01
2008	3180	305145	1.04
2009	3405	319841	1.06
2010	3630	334518	1.09
2011	3855	349412	1.10
2012	4080	364090	1.12
2013	4310	379453	1.14
2014	4550	397054	1.15
2015	4585	415709	1.10

स्रोत- जिला उद्योग प्रतिवेदन, बून्दी (2016-17)



आरेख-7.2

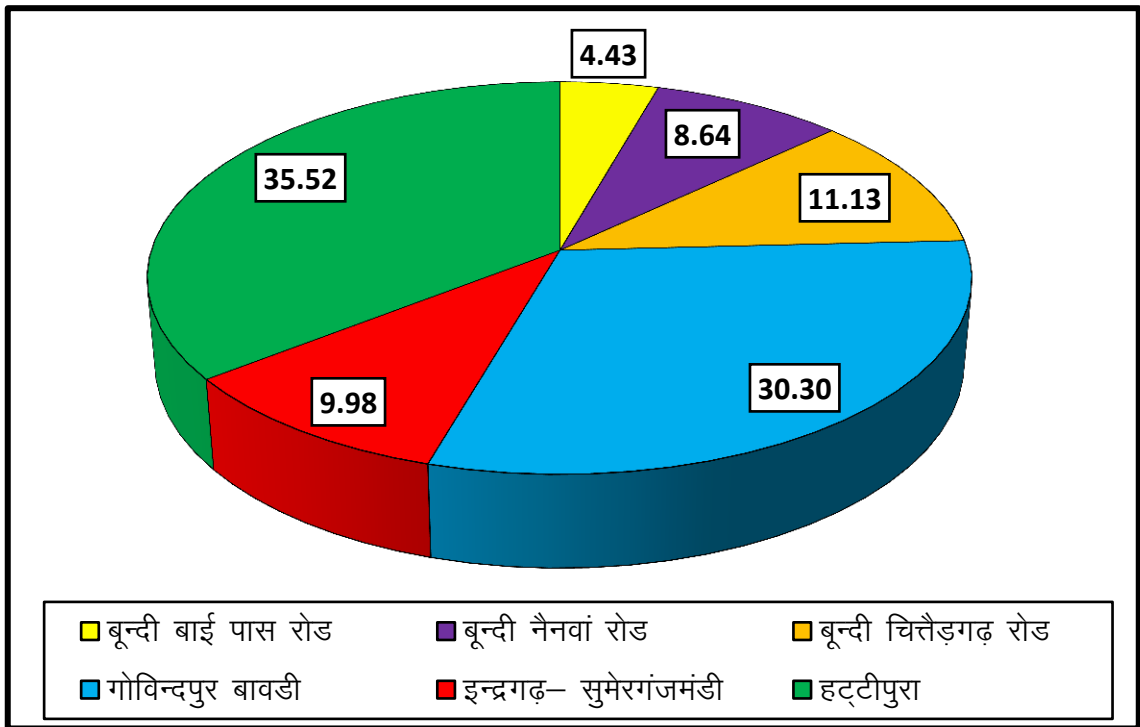
जिला बून्दी : औद्योगिक क्षेत्र

क्र. सं.	क्षेत्र का नाम	आवंटित क्षेत्र (एकड़ में)	बिक्री योग्य क्षेत्र	प्लॉट आवंटित
1	बून्दी बाई पास रोड़	9.22	4.44	82
2	बून्दी-नैनवां रोड़	18	12.15	40
3	बून्दी-चित्तौड़गढ़ रोड़	23.20	11.93	18
4	गोविन्दपुर बावड़ी	63.14	26.81	64
5	इन्द्रगढ़-सुमेरगंजमंडी	20.80	13.98	50
6	हट्टीपुरा	74	41.27	124
7	योग	208.36	110.58	378

स्रोत : जिला उद्योग प्रतिवेदन, बून्दी (2015-16)

आरेख - 7.1

जिला बून्दी : आवंटित औद्योगिक क्षेत्र (प्रतिशत में)



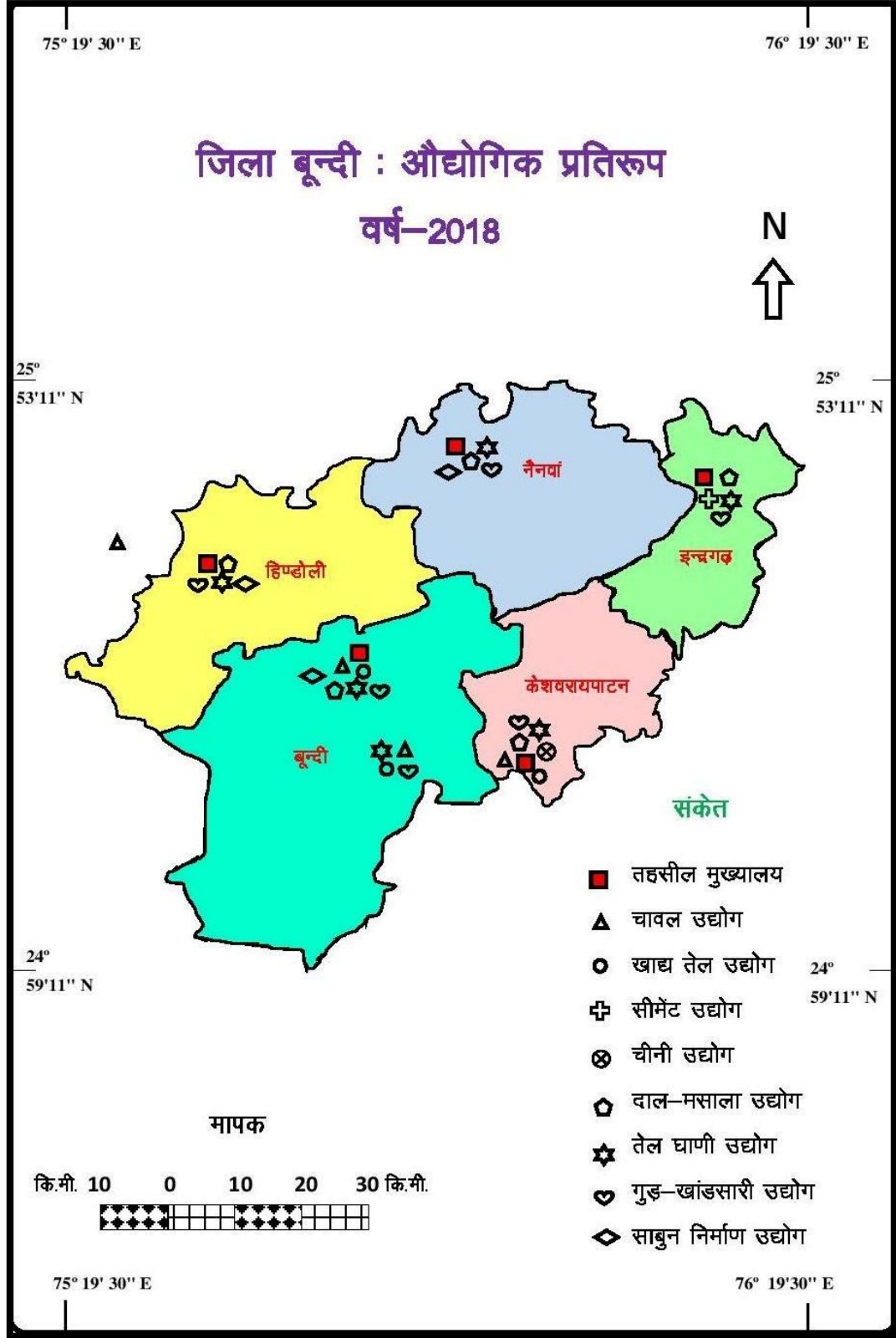
7.4 औद्योगिक विकास

वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में कार्यरत वृहद एवं मध्यम स्तर की 6 इकाइयाँ पंजीकृत हैं। जिले में वर्ष 1995 तक कुल 1043 इकाइयाँ लघु-कुटीर स्तर के अन्तर्गत पंजीकृत थी। बून्दी जिले में वर्ष 2014-15 में औद्योगिक विकास के तहत कुल पंजीकृत उद्योग की संख्या 4585 है, जो कि राज्य के कुल पंजीकृत उद्योगों का एक प्रतिशत है। वर्ष 2016 तक कुल 4699 इकाइयाँ लघु-कुटीर स्तर के उद्योगों के अन्तर्गत पंजीकृत हैं, जिनके तहत 8140.24 लाख रुपये निवेश किये गये हैं और इनसे 14499 श्रमिकों को रोजगार प्राप्त हुआ है।⁷

वर्ष 2005 में 2551 एवं 2015 में 4585 इकाइयों का पंजीकरण हुआ है। जिले में सर्वाधिक वृद्धि वर्ष 2014 में 240 इकाइयों के रूप में हुई है। लघु-कुटीर स्तर की इकाइयों में वर्ष 1995 से 2005 तक 144.58 प्रतिशत वृद्धि हुई है। जिले में वर्ष 2015 में वर्ष 1995 की अपेक्षा 3542 इकाइयाँ अधिक हैं। 21 वर्षों में बून्दी जिले के अन्तर्गत लघु-कुटीर स्तर की इकाइयों में 339.60 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आरेख-7.2 से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में औद्योगिक विकास में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

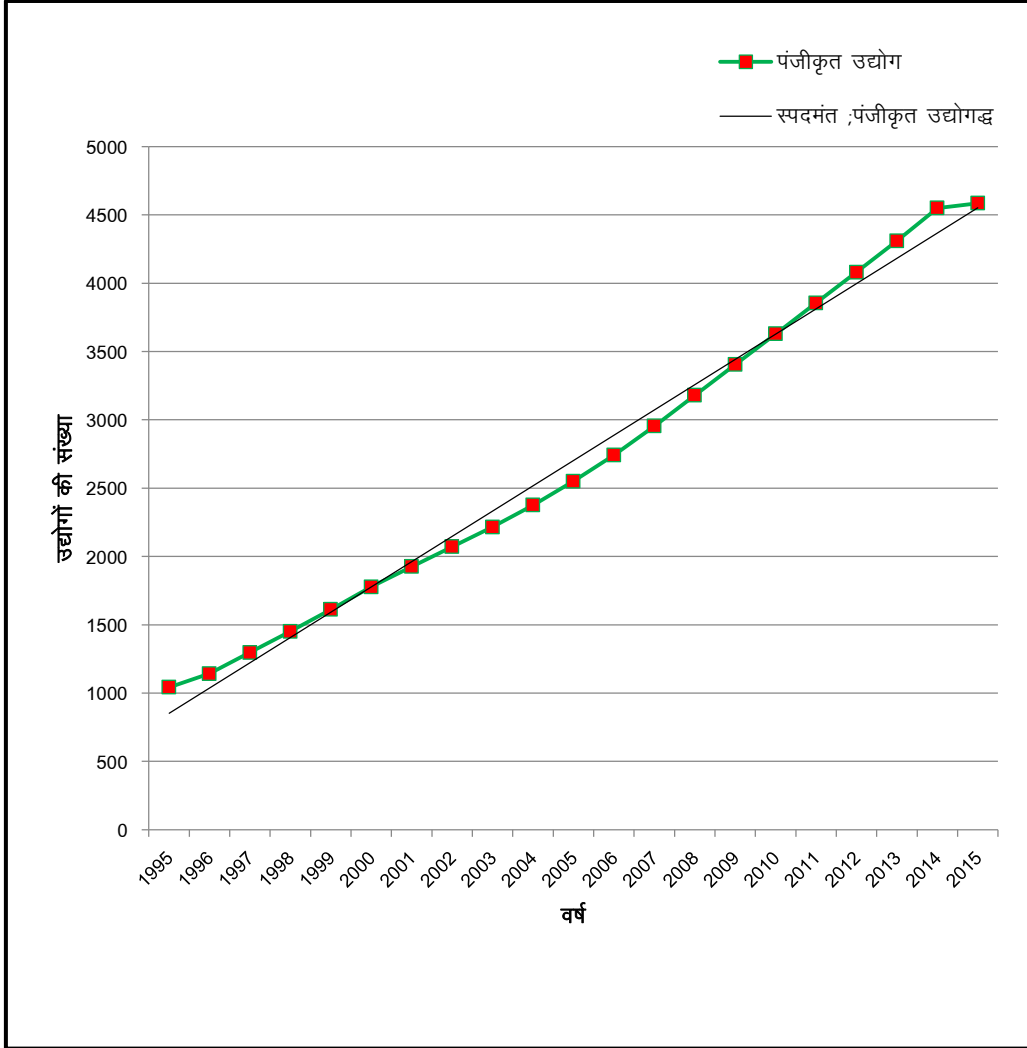
बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार के उद्योग जैसे- सीमेन्ट उद्योग, चावल उद्योग, खाद्य तेल उद्योग, चीनी उद्योग, आटा पिसाई उद्योग, खनन उद्योग, गुड़-खांडसारी, इमारती लकड़ी, फर्नीचर, बर्तन, इंजीनियरिंग, हस्तकला, पशु उत्पाद, खादी उद्योग, सूत कताई आदि महत्वपूर्ण उद्योग विकसित हुए हैं। मानचित्र-21 में जिले के प्रमुख उद्योगों को दर्शाया गया है।

बून्दी जिले को औद्योगिक विकास की दृष्टि से अल्प विकसित श्रेणी में रखा जा सकता है। बून्दी जिले में अल्प औद्योगिक विकास का प्रमुख कारण आधारभूत संरचना यथा- परिवहन एवं कुशल श्रमिकों का अविकसित होना है। परिणामतः उद्योगों के अवस्थापना व विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है।



आरेख – 7.2

जिला बून्दी : उद्योगों का विकास



बून्दी जिले में वर्ष 1995 में लघु कुटीर उद्योगों में पंजीकृत उद्योग की संख्या 84 थी, जो कि वर्ष 2014 में 185.71 प्रतिशत वृद्धि के रूप में 240 हो गई है किन्तु वर्ष 2015 में वर्ष 2014 की अपेक्षा मात्र 14.58 प्रतिशत (35) ही लघु कुटीर उद्योगों के अन्तर्गत पंजीकृत हुए हैं। जिले में सर्वाधिक पंजीकृत उद्योग वर्ष 2014 में हुए हैं। तालिका-7.3 से ज्ञात होता है कि जिले में उद्योगों के तहत वृद्धि की प्रवृत्ति वर्ष 2003 से 2014 के मध्य हुई है।

तालिका- 7.3

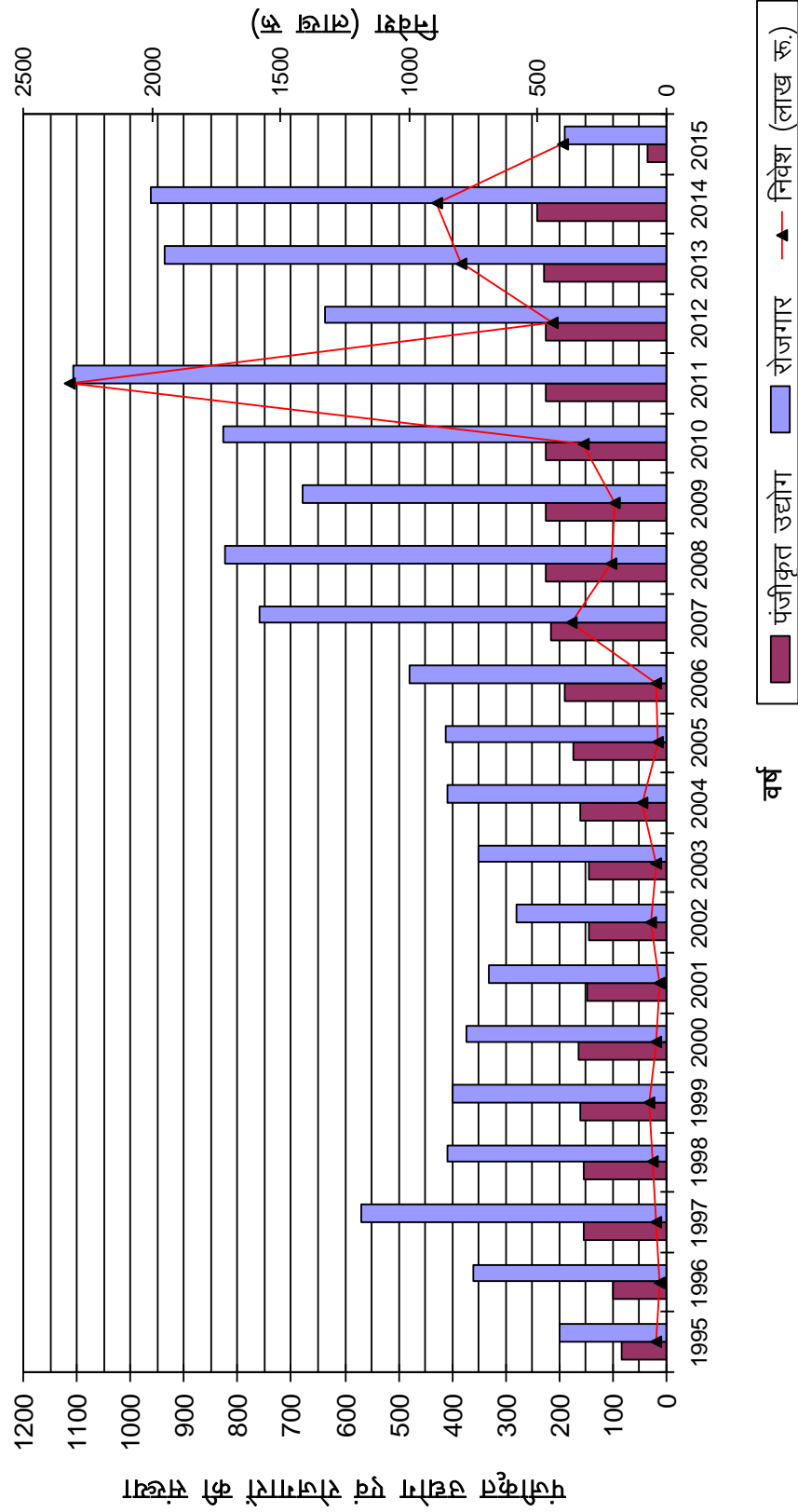
जिला बून्दी : पंजीकृत लघु-कुटीर उद्योग रोजगार व निवेश

(1995-2015)

क्र.सं.	वर्ष	पंजीकृत उद्योग	रोजगार	निवेश (लाख रू.)
1	1995	84	199	41.53
2	1996	99	360	29.56
3	1997	155	570	41.14
4	1998	155	407	54.14
5	1999	160	400	68.46
6	2000	165	374	37.41
7	2001	149	331	29.35
8	2002	145	279	63.31
9	2003	145	352	37.9
10	2004	160	410	93.34
11	2005	175	411	31.25
12	2006	190	480	39.29
13	2007	214	758	370.09
14	2008	225	825	216.74
15	2009	225	678	199.41
16	2010	225	826	320.37
17	2011	225	1107	2320.34
18	2012	225	637	440.4
19	2013	230	937	798.94
20	2014	240	961	894.6
21	2015	35	189	402.92

स्रोत- जिला उद्योग प्रतिवेदन, बून्दी (2016-17)

आरेख-7.3
जिला बून्दी : पंजीकृत लघु-कृटीर उद्योग रोजगार व निवेश (1995-2015)



आरेख -7.3 में तुलनात्मक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निवेश एवं रोजगार में समान परिवर्तन पाया जाता है। वर्ष 2011 में सर्वाधिक निवेश किया गया था। उसी वर्ष रोजगार भी सर्वाधिक प्राप्त हुआ है किन्तु वर्षवार पंजीकृत उद्योग एवं रोजगार के मध्य किसी प्रकार का सम्बन्ध दिखाई नहीं दे रहा है। जिले में जहाँ एक ओर पंजीकृत उद्योग में निरन्तर वृद्धि हो रही है तो वहीं दूसरी ओर रोजगार में वृद्धि होना नहीं पाया जाता है। अतः स्पष्ट है कि जिले में पंजीकृत उद्योगों की संख्या में हुई वृद्धि के कारण औद्योगिक विकास का प्रभाव केवल उद्योगपतियों तक ही सीमित रहा है।

7.5 आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका

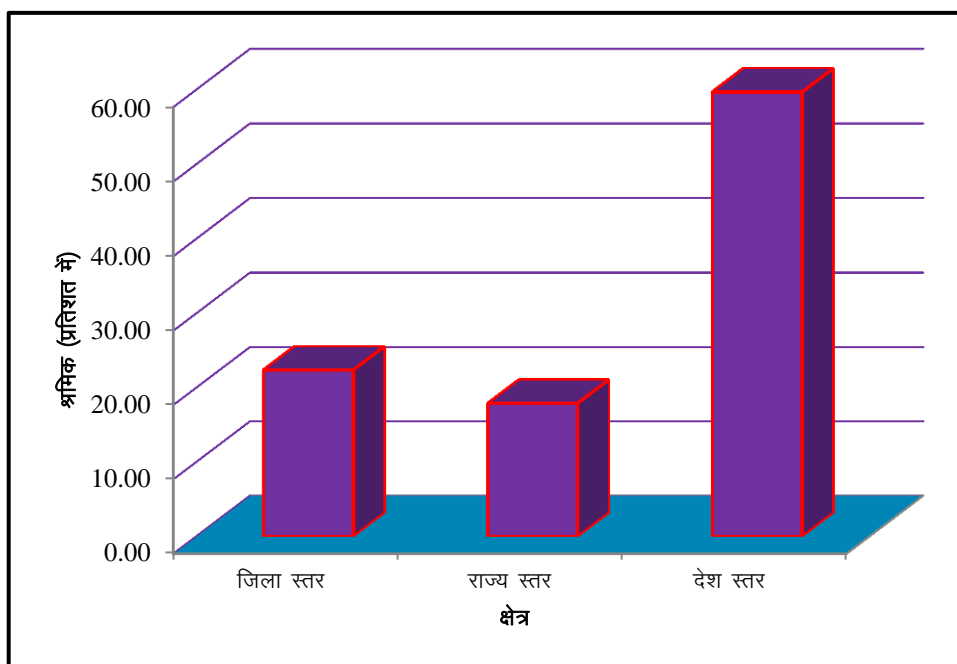
बून्दी जिले में चावल उद्योग की भूमिका को ज्ञात करने के लिए जिले में मध्य स्तर की इकाइयों में आशुतोष चावल उद्योग, श्री शंकर उद्योग, राज राइस मिल उद्योग एवं पैरामाउंट चावल उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का अध्ययन किया गया है।

आशुतोष चावल उद्योग में स्थायी रूप से कार्य करने वाले श्रमिकों का प्रतिशत 26.87 है, जबकि अस्थायी श्रमिकों का प्रतिशत 73.13 है। आशुतोष चावल उद्योग के अन्तर्गत कुल श्रमिकों में से जिला स्तर से मात्र 22.29 प्रतिशत ही कार्य करते हैं। उद्योग में बून्दी जिले से बाहर राज्य स्तर पर 17.91 प्रतिशत एवं देश स्तर पर 59.70 प्रतिशत श्रमिक (बिहार—मिर्जापुर एवं उत्तर प्रदेश—ओरिया, इटावा जिले) कार्य करते हैं। आरेख—7.4 में उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों का स्थानिक स्तर दिखाया गया है। जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उद्योग द्वारा प्रादेशिक (जिला स्तर पर) स्तर की अपेक्षा बाह्य क्षेत्रों के व्यक्तियों को रोजगार अधिक प्रदान किया गया है।

श्री शंकर उद्योग में 20.37 प्रतिशत श्रमिक स्थायी एवं 79.63 प्रतिशत श्रमिक अस्थायी रूप से कार्य करते हैं। उद्योग में जिला बून्दी से 23.15 प्रतिशत, राज्य स्तर से 25.93 प्रतिशत एवं राज्य से बाहर के 50.93 प्रतिशत श्रमिक कार्यरत हैं।

आरेख -7.4

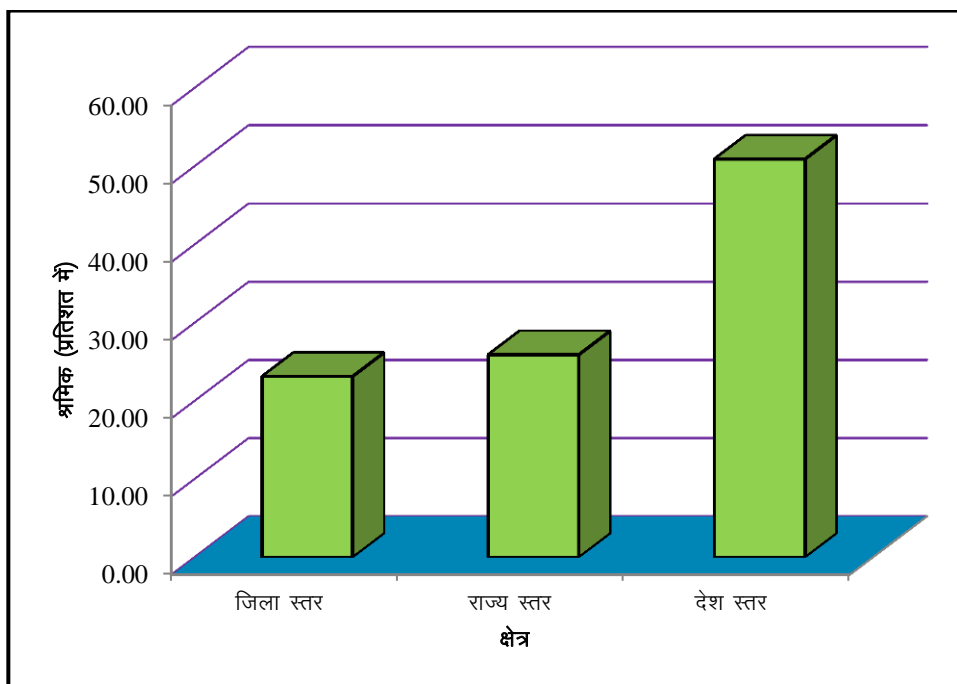
जिला बून्दी : आशुतोष चावल उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख -7.5

जिला बून्दी : श्री शंकर उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख—7.5 में उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों का स्थानिक स्तर दिखाया गया।

राज राइस मिल उद्योग में स्थायी रूप से कार्य करने वाले श्रमिकों का प्रतिशत 28.57 प्रतिशत है, जबकि अस्थायी श्रमिकों का प्रतिशत 71.43 प्रतिशत है। राज राइस मिल के अन्तर्गत कुल श्रमिकों में से जिला स्तर से मात्र 11.11 प्रतिशत ही कार्य करते हैं। उद्योग में बून्दी जिले से बाहर राज्य स्तर पर 13.83 प्रतिशत एवं 46.30 प्रतिशत बिहार एवं उत्तर प्रदेश के हैं। (आरेख 7.6)

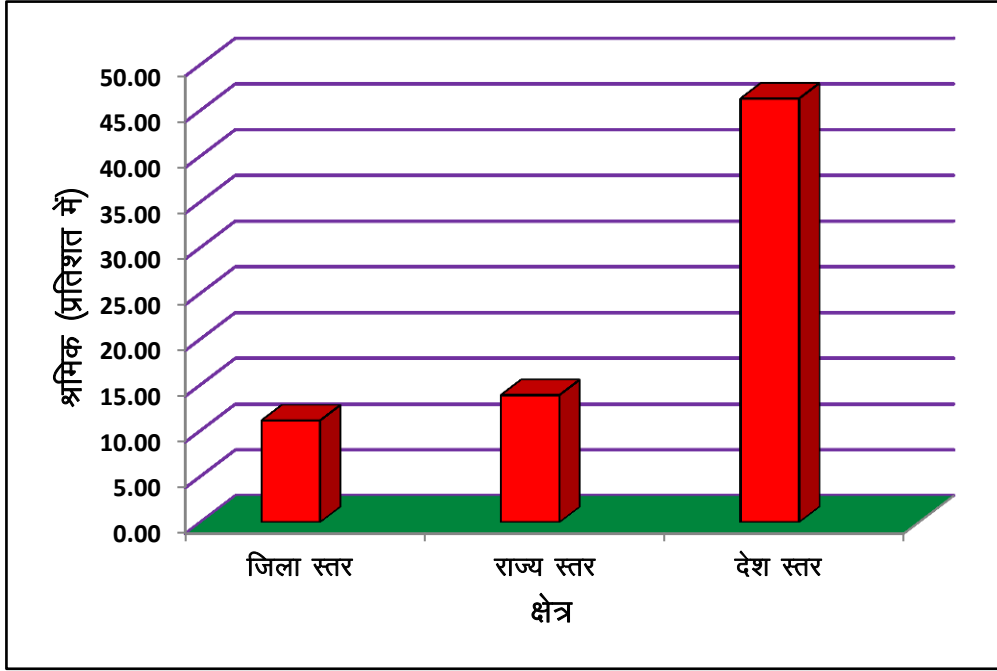
पैरामाउंट चावल उद्योग में स्थायी रूप से कार्य करने वाले श्रमिकों का प्रतिशत 23.16 प्रतिशत है। जबकि अस्थायी श्रमिकों का प्रतिशत 76.84 प्रतिशत है। पैरामाउंट चावल उद्योग के अन्तर्गत कुल श्रमिकों में से जिला स्तर से मात्र 16.67 प्रतिशत ही कार्य करते हैं। उद्योग में बून्दी जिले से बाहर राज्य स्तर पर 20.37 प्रतिशत एवं बिहार, उत्तरप्रदेश तथा पश्चिम बंगाल के 50.93 प्रतिशत श्रमिक कार्य करते हैं। (आरेख 7.7)

आरेख—7.4, 7.5, 7.6 व 7.7 में उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों का स्थानिक स्तर दिखाया गया है। जिनके विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले में स्थापित चावल उद्योगों से स्थानीय स्तर पर सृजित रोजगार में योगदान मात्र 18.33 प्रतिशत है। उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों के निवास स्थान की दूरी उद्योग से 20 किलोमीटर तक है। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि 90 प्रतिशत श्रमिक निवास से मिल तक आने के लिए अपने साधन जैसे मोटर साईकिल का उपयोग करते हैं। यह भी स्पष्ट हुआ है कि लगभग 75 प्रतिशत श्रमिक एक ही पारी में साथ-साथ ड्यूटी पर आने पर एक ही वाहन पर आते हैं अर्थात् एक वाहन पर दो श्रमिक साथ आते हैं।

ज्ञातव्य है कि आर्थिक विकास, औद्योगिक क्षेत्र, बून्दी जिले में औद्योगिक विकास एवं आर्थिक विकास में चावल उद्योग की अहम भूमिका है। बून्दी जिले में कुल 6 औद्योगिक क्षेत्र हैं। चावल उद्योगों में किये गये सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि जिले में

आरेख -7.6

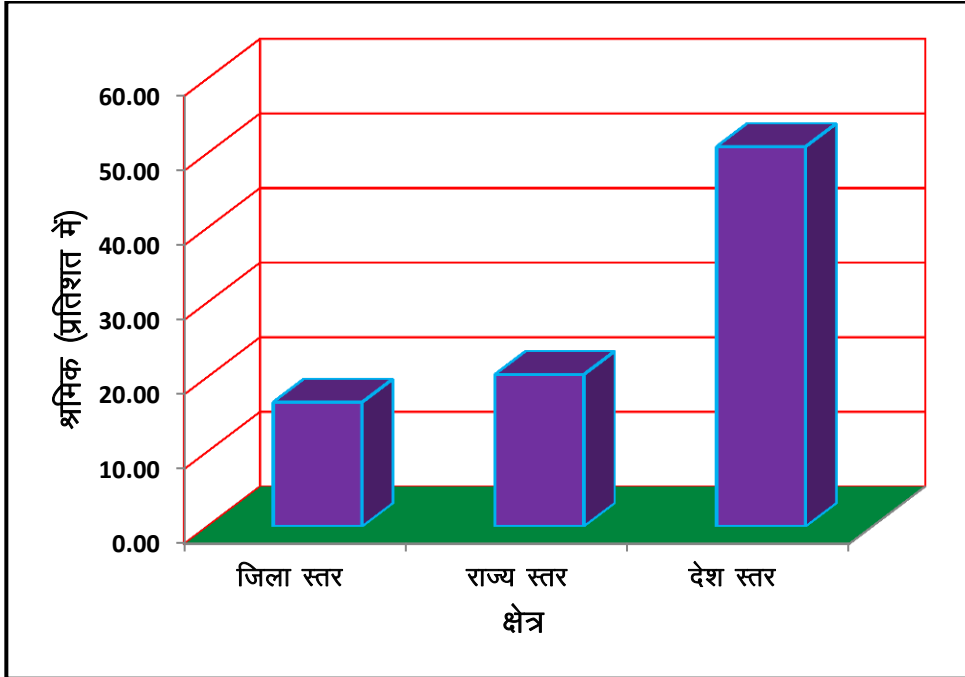
जिला बून्दी : राज राइस मिल के अन्तर्गत श्रमिक



स्रोत- सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख - 7.7

जिला बून्दी : पैरामाउंट चावल उद्योग के अन्तर्गत श्रमिक



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

चावल उद्योगों का स्थानीय स्तर पर सृजित रोजगार में मात्र 18.33 प्रतिशत योगदान है। चावल उद्योगों द्वारा प्रादेशिक या जिला स्तर की अपेक्षा मध्यप्रदेश, बिहार एवं उत्तरप्रदेश के व्यक्तियों को रोजगार अधिक प्रदान किया गया है। सामान्यतः पंजीकृत उद्योगों की संख्या में वृद्धि तो हो रही है किन्तु सर्वेक्षण से यह तथ्य उजागर हुआ है कि औद्योगिक विकास का प्रभाव केवल उद्योगपतियों तक ही सीमित है। श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार न्यून है, साथ ही उद्योगों द्वारा क्षेत्र के आर्थिक-सामाजिक विकास हेतु कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया गया है। अतः परिकल्पना "चावल उद्योग के विकास का प्रभाव बून्दी जिले के आर्थिक-सामाजिक विकास पर परिलक्षित होता है।" अस्वीकार की जाती है।

संदर्भ सूची

1. Statistical Year Book of Rajasthan, (2017), p.39
2. डॉ. प्रमिला एवं कुमार, श्री कमल, (2013), "औद्योगिक भूगोल", मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ.सं. 1
3. Profile of Small Scale Industries in Rajasthan (2015)
4. Statistical Year Book of Rajasthan (2017), p-97
5. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, (2016), जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 18
6. Industrial Potential Survey, (2016), Bundi, p-23
7. Industrial Potential Survey , (2016), Bundi, p-28

अष्टम अध्याय
चावल उद्योग का विकास
एवं स्थानिक प्रतिदर्श
अध्ययन

अष्टम अध्याय

चावल उद्योग का विकास एवं स्थानिक प्रतिदर्श अध्ययन

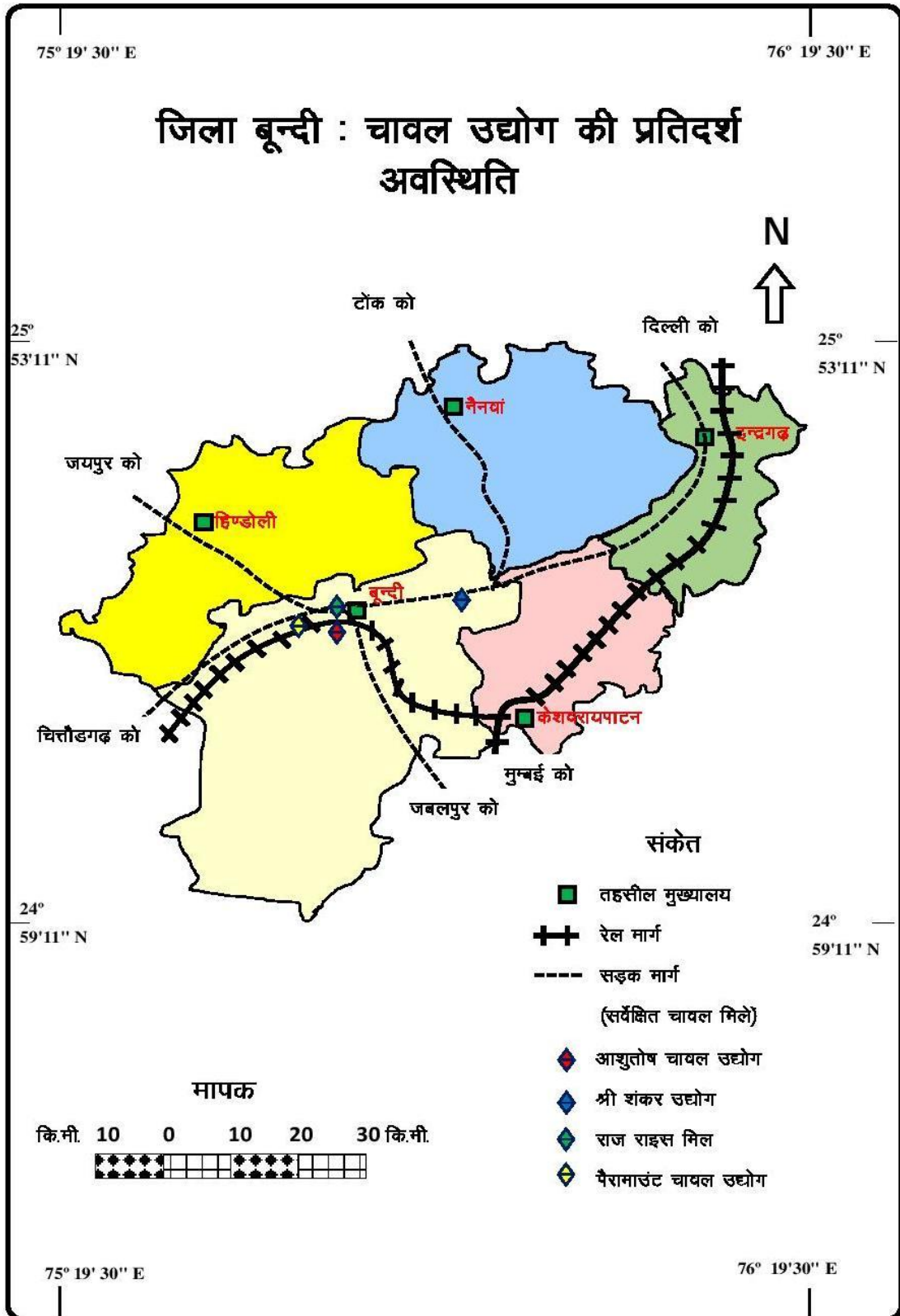
8.1 परिचय

उद्योगों का विकास किसी भी प्रदेश के लिए गौरव का विषय है, क्योंकि उद्योगों की संख्या, विनिर्माण की मात्रा, निर्यात एवं रोजगार आदि तत्त्व ही किसी भी प्रदेश के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की दशा को इंगित करते हैं। जिला बून्दी हाड़ौती प्रदेश का सबसे बड़ा चावल उत्पादक एवं निर्यातक केन्द्र है। रोबिन्सन ने उद्योगों के कारकों के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि “यद्यपि कतिपय उद्योगों का उद्भव एकाएक हो गया फिर भी किसी स्थान विशेष पर उसकी उपस्थिति के पीछे निश्चित कारण रहे हैं।” यह स्पष्ट है कि पुराने एवं दीर्घकाल से स्थापित उद्योगों के लिए यह अधिक सत्य है।¹

8.2 चावल उद्योगों का प्रतिदर्श अध्ययन

बून्दी जिले में चावल उद्योग के अध्ययन हेतु उद्योगों की अवस्थिति के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारकों में कच्चे माल की प्रधानता, बाजार की समीपता एवं श्रमिकों की उपलब्धता को ध्यान में रखा गया है, ताकि क्षेत्र में उद्योगों को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करके विश्लेषण किया जा सके। उद्योग में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं में परिवहन, शक्ति के संसाधन, श्रमिक, पूंजी, मशीनरी एवं प्रबंधन व तकनीकी को आधार मान कर अध्ययन किया गया है।

उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के निवास स्थान की दूरी का स्तर (जिला, राज्य व देश) एवं श्रमिकों की संख्या के आधार पर क्षेत्र की रोजगार स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। चावल आधारित उद्योग से सृजित आय का श्रमिकों के परिवार के भरण-पोषण में योगदान तथा क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विकास को निर्धारित करता है। मानचित्र-22 में चावल उद्योगों की प्रतिदर्श अवस्थिति को दर्शाया गया है।



8.2.1 आशुतोष चावल उद्योग

आशुतोष चावल उद्योग बून्दी जिले में बून्दी शहर के बी.सी. आर. औद्योगिक क्षेत्र में स्थित है। उद्योग की स्थापना वर्ष 1980 में हुई है। भारत में आशुतोष चावल उद्योग सूचीबद्ध उत्पादों की सूची में अंकित है। वर्ष 2013 में आशुतोष चावल उद्योग ने भारत में शीर्ष आपूर्तिकर्ताओं की श्रेणी में अपना स्थान बनाया है। आशुतोष चावल उद्योग एक गुणवत्ता संचालित संगठन है, जो बासमती चावल एवं गैर बासमती चावल का उत्पादन करता है। उद्योग की अवस्थिति के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारकों में कच्चे माल की समीपता रही है। आधारभूत सुविधाओं में परिवहन के अन्तर्गत ट्रेक्टर-ट्राली एवं ट्रक का प्रयोग किया जाता है। उद्योग में मशीनों के संचालन हेतु विद्युत शक्ति को उपयोग में लिया जाता है। उद्योग में संचालित सभी मशीनें आधुनिक एवं मेड इन इण्डिया तकनीकी पर आधारित हैं, जिनके संचालन हेतु कुशल श्रमिक कार्यरत हैं।

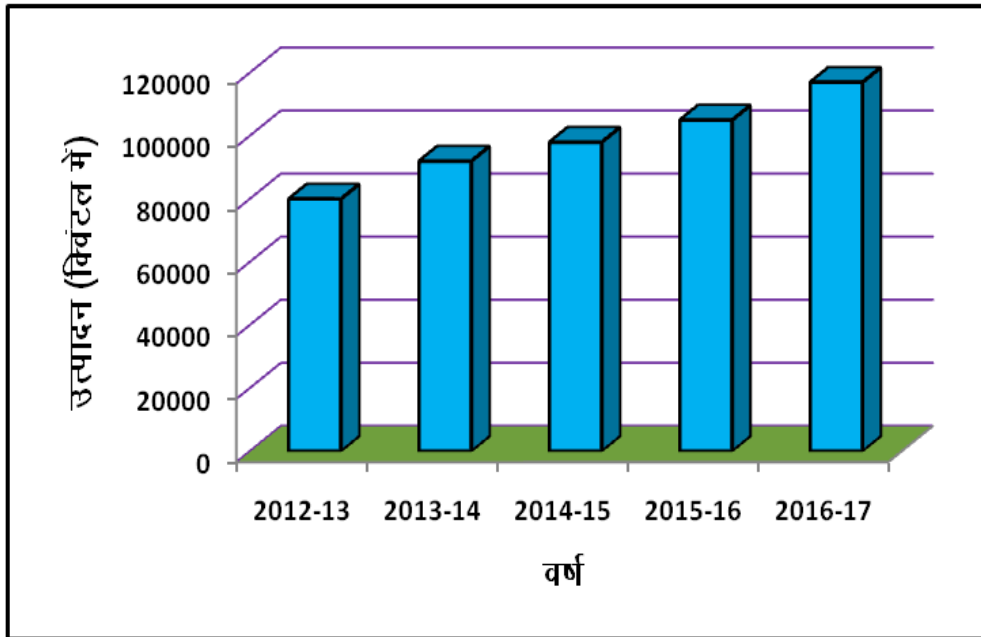
आशुतोष चावल उद्योग द्वारा औसत उत्पादन प्रतिदिन 1000 क्विंटल किया जाता है।² उत्पादित तैयार माल का 80 प्रतिशत निर्यात राज्य से बाहर किया जाता है। आरेख-8.1 में प्रति वर्ष उत्पादन की मात्रा दर्शायी गई है, जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आशुतोष चावल उद्योग द्वारा औसत उत्पादन (प्रतिदिन 1000 क्विंटल) में लगातार वृद्धि हो रही है। (छायाचित्र 8.1)

8.2.2 श्री शंकर उद्योग

वर्ष 1973 में बून्दी शहर में श्री राधेश्याम माहेश्वरी द्वारा चावल आधारित शंकर उद्योग की अवस्थापना की। सन् 2004 में उद्योग ने वैश्विक स्तर पर उत्पादन करने का लक्ष्य रखा। वर्तमान में उद्योग अनेकों प्रकार के चावल उत्पादों के आधार पर वैश्विक बाजार में अपना स्थान बनाये हुए है। श्री शंकर उद्योग सन् 1985 से वैश्विक बाजार स्तर पर पोहा एवं चावल के निर्यातक है। आज श्री शंकर उद्योग भारत में खाद्य उत्पाद के अन्तर्गत एक अग्रणी और गुणवत्ता युक्त उत्पादों की श्रेणी में है। वर्तमान में श्री शंकर उद्योग के अन्तर्गत दो प्लांट कार्यरत हैं।

आरेख-8.1

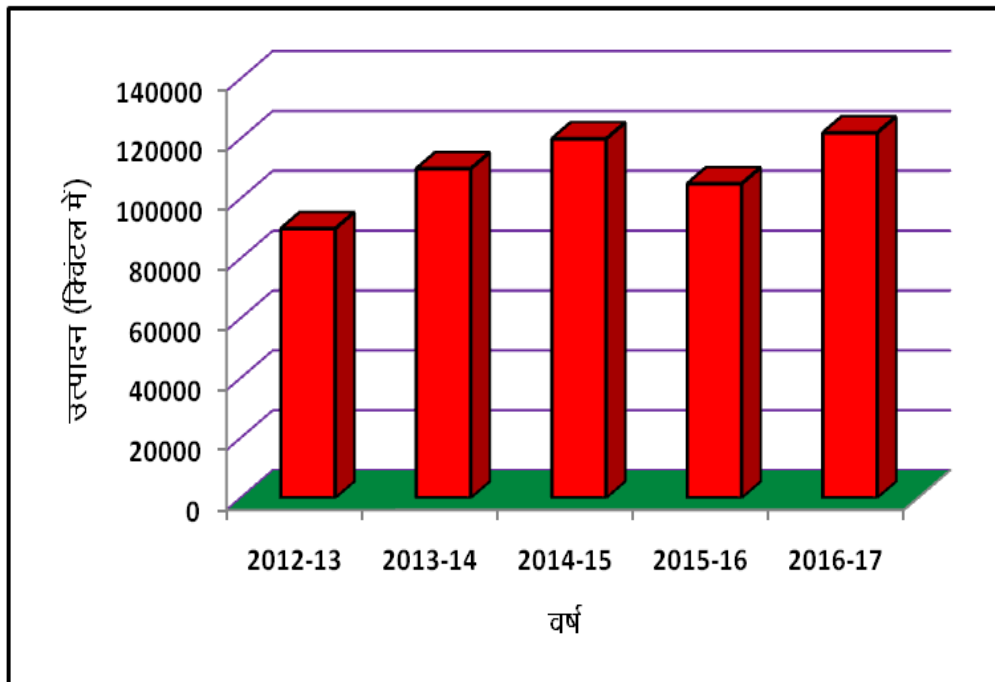
जिला बून्दी : आशुतोष चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख -8.2

जिला बून्दी : श्री शंकर चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

छायाचित्र-8.1

जिला बून्दी : आशुतोष चावल उद्योग



छायाचित्र -8.2

जिला बून्दी : श्री शंकर उद्योग



उद्योग की अवस्थिति के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारकों में श्रमिकों की उपलब्धता एवं कच्चे माल की प्रधानता रही है। आधारभूत सुविधाओं में परिवहन के अन्तर्गत ट्रेक्टर-ट्रौली एवं ट्रक का उपयोग किया जाता है। उद्योग में मशीनों के संचालन हेतु विद्युत शक्ति को उपयोग में लिया जाता है। उद्योग में संचालित सभी मशीनें आधुनिक तकनीक पर आधारित मेड इन इण्डिया एवं मेड इन जापान है।

श्री शंकर उद्योग द्वारा ब्राण्ड मखमल चावल का निर्यात किया जाता है। उद्योग द्वारा औसत उत्पादन प्रतिदिन 15000 क्विंटल किया जाता है। उत्पादित तैयार माल का 70 प्रतिशत निर्यात राज्य से बाहर किया जाता है।³ आरेख-8.2 में प्रति वर्ष उत्पादन की मात्रा दर्शायी गई है, जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि श्री शंकर उद्योग द्वारा औसत उत्पादन में उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है, किन्तु वृद्धि भी बनी हुई है। (छायाचित्र-8.2)

8.2.3 राज राइस मिल

राज राइस मिल की स्थापना सन् 1980 में हुई थी। विगत 35 वर्षों से मिल अनेक चावल उत्पादों का निर्यात कर रही है। बून्दी जिले में राज राइस मिल की अवस्थिति बून्दी चित्तौड़गढ़ रोड़, बून्दी शहर के नजदीक है। उद्योग के अन्तर्गत निर्यात के लिये निम्न चावल उत्पादों को तैयार किया जाता है—

1. पूसा बासमती चावल
2. लॉन्ग ग्रेन बासमती
3. गैर बासमती चावल
4. ब्राउन बासमती चावल
5. इण्डियन बासमती चावल

उद्योग की स्थापना जिले में धान के उत्पादन को आधार मान कर की गई है। धान चावल उद्योग में कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। आधारभूत सुविधाओं में परिवहन के अन्तर्गत ट्रेक्टर-ट्रौली एवं ट्रक का उपयोग किया जाता है। उद्योग में संचालित सभी

छायाचित्र-8.3
जिला बून्दी : राज राइस मिल



छायाचित्र -8.4
जिला बून्दी : पैरामाउंट चावल उद्योग



मशीनें आधुनिक एवं मेड इन इण्डिया तकनीकी पर आधारित हैं, जिनका संचालन विद्युत शक्ति के प्रयोग द्वारा किया जाता है। मशीनों को चलाने के लिये उद्योग में कुशल श्रमिक एवं गैर-मशीनरी कार्य के लिये अकुशल श्रमिक कार्यरत है। उद्योग द्वारा औसत उत्पादन प्रतिदिन 40 टन किया जाता है।⁴ आरेख-8.3 में प्रति वर्ष उत्पादन की मात्रा दर्शायी गई है। (छायाचित्र-8.3)

8.2.4 पैरामाउंट चावल उद्योग

पैरामाउंट चावल उद्योग का जिले में खण्डित बासमती चावल उद्योग को मजबूत करने के उद्देश्य से सन् 1988 में चित्तौड़ रोड़ पर बून्दी शहर से 5 कि.मी. पश्चिम में स्थापित किया गया था। कुछ दशकों के पश्चात उद्योग ने बून्दी जिले में अग्रणीय मिलों में अपना स्थान बना लिया। उद्योग के विकास में कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध विशेषज्ञता, कला अवसंरचना की स्थिति, बाजार का ज्ञान जैसे महत्वपूर्ण कारक शामिल रहे हैं।

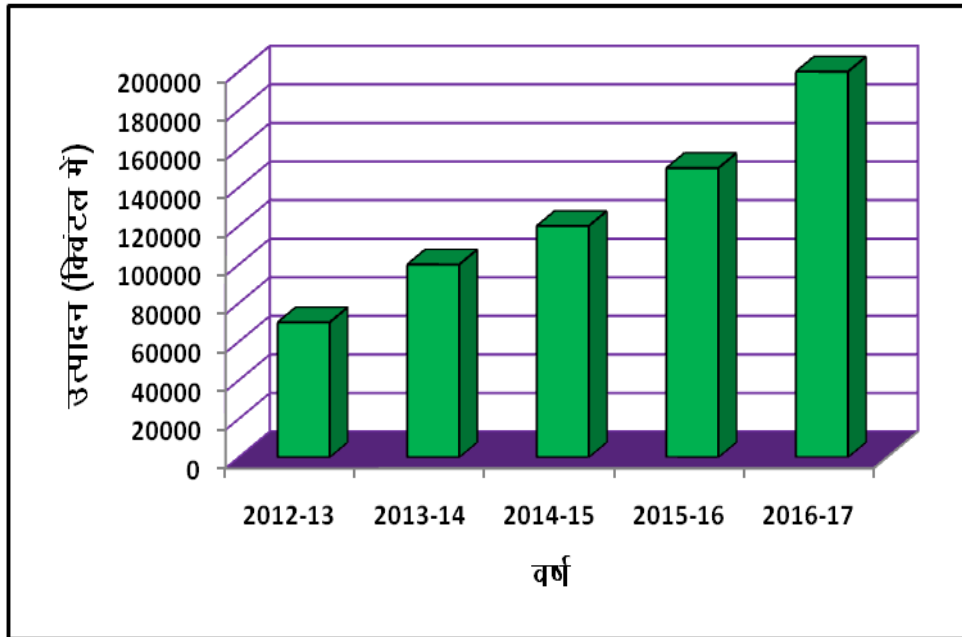
पैरामाउंट चावल उद्योग द्वारा बाजार में बेहतरीन किस्म के चावलों का निर्यात किया जाता है। पैरामाउंट चावल उद्योग ने 351 ब्रांड बासमती चावल के माध्यम से घरेलू बाजार में अपनी हिस्सेदारी अर्जित की है। चावल उद्योग द्वारा तैयार निम्न उत्पादों ने बाजार की श्रृंखला में अपना स्थान बनाया है—

1. 351 सेला बासमती चावल
2. 1121 बासमती चावल
3. सुगन्धा चावल
4. पूसा बासमती चावल

उद्योग की अवस्थिति के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारकों में प्रथम प्राथमिकता कच्चे माल उत्पादक क्षेत्र की समीपता एवं द्वितीयक प्राथमिकता श्रमिकों की उपलब्धता रही है। उद्योग में मशीनों के संचालन हेतु सौर ऊर्जा एवं विद्युत शक्ति को उपयोग में लिया जाता है। सौर ऊर्जा के उपयोग से उत्पादन लागत में कमी आती है। उद्योग में संचालित मशीनें आधुनिक एवं पुरानी तकनीक पर आधारित है,

आरेख-8.3

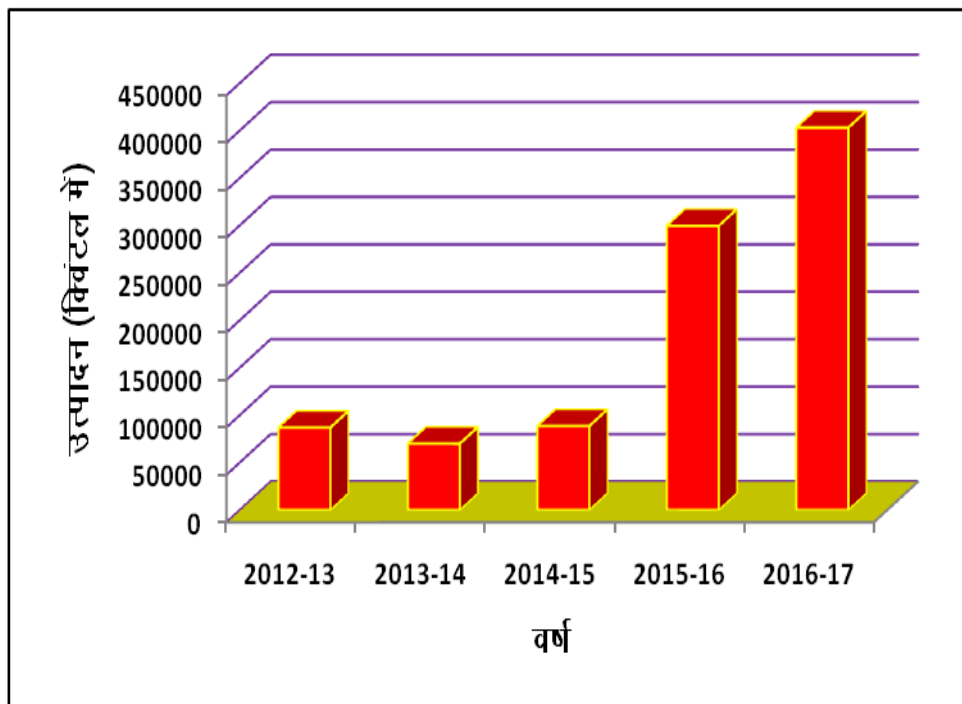
जिला बून्दी : राज राइस मिल के अन्तर्गत उत्पादन



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख-8.4

जिला बून्दी : पैरामाउंट चावल उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

इनके संचालन हेतु कुशल एवं सामान्य श्रमिक कार्यरत है। पैरामाउंट चावल उद्योग द्वारा औसत उत्पादन प्रतिदिन 100टन किया जाता है।⁵ उत्पादित तैयार माल का 60% निर्यात कुवैत, ईरान, ईराक, सऊदी अरब, कतर, बहरीन देशों को किया जाता हैं। आरेख-8.4 में प्रति वर्ष उत्पादन की मात्रा दर्शायी गई है। (छायाचित्र 8.4)

आरेख - 8.1, 8.2, 8.3 व 8.4 में उद्योग में वार्षिक चावल उत्पादन का स्तर दिखाया गया है जिसके विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बून्दी जिले में चावल उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। औद्योगिक उत्पादन कच्चे माल की उत्पादन मात्रा से प्रभावित रहती है अतः जिले में औद्योगिक विकास अपनी प्रगति पर है। धान उत्पादन में वृद्धि के कारण बून्दी जिले में चावल उद्योगों के अन्तर्गत प्रति वर्ष उत्पादन में 27.70 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

8.3 चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का विश्लेषण

बून्दी जिले में लगे चावल उद्योगों से स्थानीय व्यक्तियों की अपेक्षा बाहरी राज्यों यथा— बिहार एवं उत्तर प्रदेश के व्यक्तियों को रोजगार अधिक प्राप्त हो रहा हैं क्योंकि बाहरी राज्यों से कम मजदूरी दर पर श्रमिक मिल जाते हैं। उद्योगों में लोगों को रोजगार प्रदान करने का कार्य ठेकेदारी प्रथा पर आधारित है। फलस्वरूप स्थानीय युवाओं को चावल उद्योगों से रोजगार कम प्राप्त हो रहा हैं।

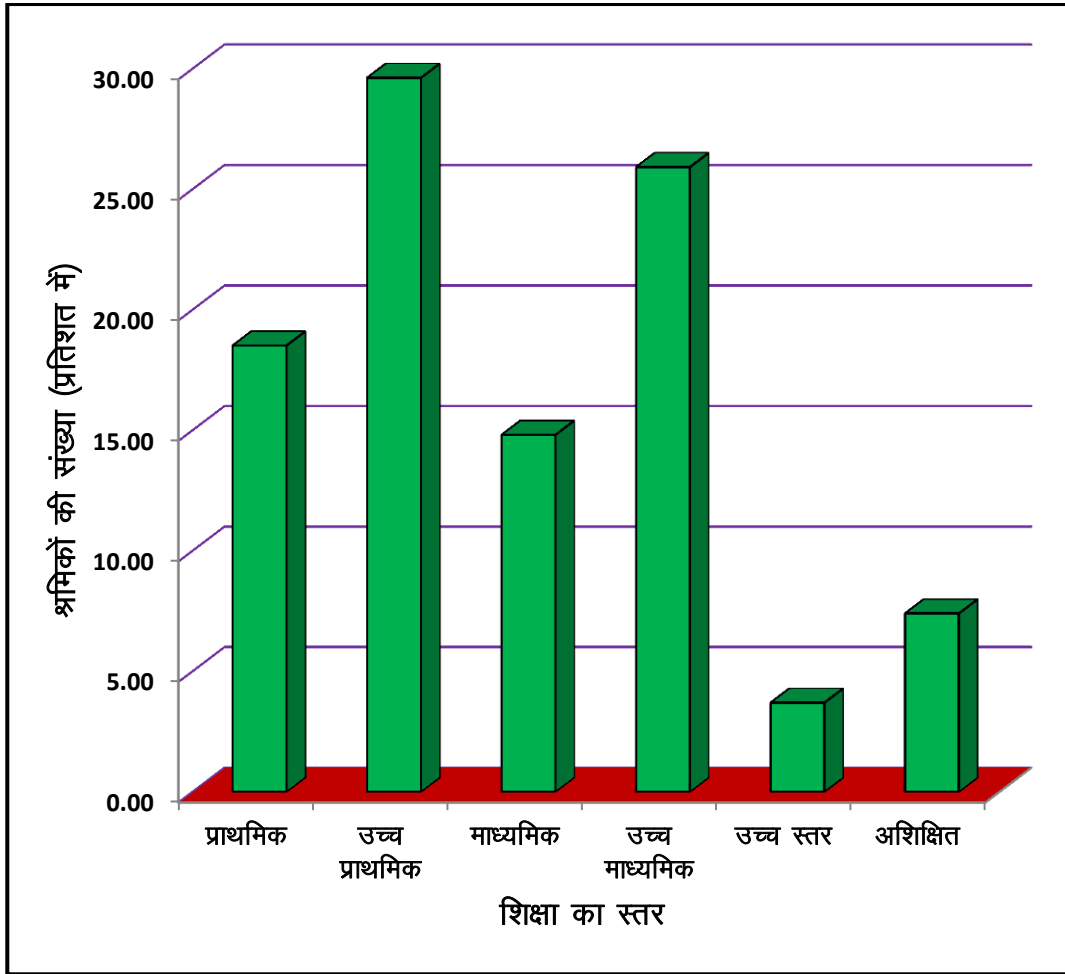
चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों की सामाजिक एवं पारिवारिक जानकारी यथा— गृह संरचना, परिवार संरचना, जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति, वार्षिक आय, सामाजिक—सांस्कृतिक खर्च एवं सामाजिक—आर्थिक विवरण के आधार पर व्यक्तिगत विकास को ज्ञात किया गया है। अतः बून्दी जिले में चावल उद्योगों के स्थानिक वितरण प्रतिरूप को समझने हेतु विभिन्न चावल उद्योगों का पृथक—पृथक विश्लेषण के साथ—साथ उद्योगों में संलग्न श्रमिकों का अध्ययन करना भी आवश्यक है।

8.3.1 श्रमिकों में शिक्षा का स्तर

शिक्षा का स्तर व्यक्तिगत विकास को निर्धारित करता है। चावल उद्योग में मशीनों के संचालन हेतु शिक्षित श्रमिकों की

आरेख -8.5

जिला बून्दी : श्रमिकों में शिक्षा का स्तर



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित(2018)

आवश्यकता होती हैं। जिले में चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों में 29.63 प्रतिशत श्रमिक उच्च प्राथमिक स्तर तक एवं 25.92 प्रतिशत श्रमिक उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं। उद्योगों में उच्च स्तर की शिक्षा के साथ कार्य करने वाले श्रमिकों का प्रतिशत मात्र 3.7 प्रतिशत है, जो अत्यन्त कम है। उद्योगों में अशिक्षित श्रमिकों का प्रतिशत 7.40 प्रतिशत है। आरेख-8.5 में उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों में शिक्षा का स्तर दिखाया गया है।

8.3.2 पारिवारिक संरचना

क्षेत्र में टिकाऊ विकास के विभिन्न आर्थिक एवं पर्यावरणीय घटकों के साथ-साथ सामाजिक संरचना का सम्मिलित होना भी

जरूरी हैं।⁶ जिले में क्षेत्रीय विकास में वृद्धि को निर्धारित करने में पारिवारिक संरचना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चावल आधारित उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की पारिवारिक संरचना परिवार की खुशहाली को निर्धारित करती है। जिन परिवारों में संयुक्त परिवार प्रथा पायी जाती है, उन परिवारों में खुशहाल जीवन देखने को मिलता है क्योंकि वह सुख और दुःख में एक दूसरे का साथ देते हैं। उद्योग में कार्यरत 40.74 प्रतिशत श्रमिकों की पारिवारिक संरचना एकल परिवार युक्त है किन्तु संयुक्त परिवार में रहने वाले श्रमिकों का प्रतिशत 59.26 प्रतिशत है। अतः चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों की पारिवारिक रूप से सम्पन्नता का स्तर पूर्णतः सही नहीं है। परिवारों में औसत व्यक्तियों की संख्या 6-7 के मध्य पायी पाई गई है। परिवार का मुखिया पुरुष होता है तथा महिलाएँ भी परिवार के कार्यों में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

8.3.3 अधिवास प्रतिरूप

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र एवं अधिवास है जिन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि, खनिज संसाधन, औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित होती हैं, वहाँ अधिवासों का विकास स्वाभाविक है। द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं में संलग्न व्यक्तियों द्वारा स्थायी अधिवास बसाए जाते हैं।⁷ अतः प्रदेश में क्षेत्रीय विकास एवं उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की उन्नति में उनके अधिवास संरचना का विकास होना महत्वपूर्ण है।

अधिवास प्रतिरूप के अन्तर्गत गृह प्रकार, कमरों की संख्या, स्नानघर एवं शौचालय के प्रकार को सम्मिलित किया गया है। चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों के अधिवास प्रतिरूप भी बून्दी जिले के विकास के चरों में प्रमुख है। उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों के अधिवास प्रतिरूप पक्के मकान ईंट, सीमेंट एवं बजरी द्वारा निर्मित है जबकि कच्चे मकान मिट्टी व लकड़ी से निर्मित हैं।

अध्ययन क्षेत्र में गृह संरचना कमजोर आर्थिक स्थिति एवं परिवार संख्या अधिक होने के कारण प्रभावित है। श्रमिकों से

साक्षात्कार करने पर ज्ञात हुआ है कि उनके पास परम्परागत एवं आधुनिक दोनों प्रकार के अधिवास हैं।

चावल उद्योगों के अन्तर्गत सर्वेक्षित श्रमिकों में कुल 127 परिवारों में आधुनिक तरीके से बने हुए मकान मात्र 11.11 प्रतिशत हैं। उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के निर्मित मकानों में सर्वाधिक प्रतिशत कच्चे मकानों का है जो कि 55.56 प्रतिशत है। इसी प्रकार परम्परागत मकानों का प्रतिशत 18.51 प्रतिशत है। उद्योग में कार्य करने वाले कुल सर्वेक्षित श्रमिकों में से 14.81 प्रतिशत श्रमिक किराये के मकानों में निवास करते हैं। तालिका-8.1 एवं आरेख-8.6 में चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना दर्शायी गई है।

8.3.4 कमरों का प्रकार

अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्यरत कुल 127 श्रमिकों में किए गए सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि 81.48 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं, जिनके घरों में 1 से 3 कमरे पाए जाते हैं। चावल उद्योगों में 4 से 6 कमरे वाले श्रमिक परिवारों का केवल 11.11 प्रतिशत ही है। चावल उद्योगों में 6 से अधिक कमरों वाले श्रमिक परिवारों का प्रतिशत 7.41 प्रतिशत है अतः स्पष्ट है कि चावल उद्योगों में कार्य करने वाले सर्वेक्षित श्रमिकों में 3 से अधिक कमरे रखने वाले श्रमिक परिवार 18.52 प्रतिशत ही हैं।

8.3.5 सामाजिक-आर्थिक सेवाएँ

बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का सर्वेक्षण करने पर पता चलता है कि वहाँ कार्य करने वाले 127 श्रमिक परिवारों में से 37.04 प्रतिशत परिवारों के द्वारा मनोरंजन एवं सामान्य सूचनाओं के लिये टेलीविजन (टी.वी.) का उपयोग किया जा रहा है किन्तु 62.96 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनके घरों में टी. वी. एवं रेडियो जैसे मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं है। संचार के लिये श्रमिकों के परिवारों के द्वारा मोबाईल फोन का प्रयोग किया जाता है, जो 92.59 प्रतिशत है। उद्योगों में सर्वेक्षित कुल श्रमिकों में से 11.11 प्रतिशत जनसंख्या के घरों में रेफ्रिजरेटर का प्रयोग किया जाता है,

तालिका-8.1

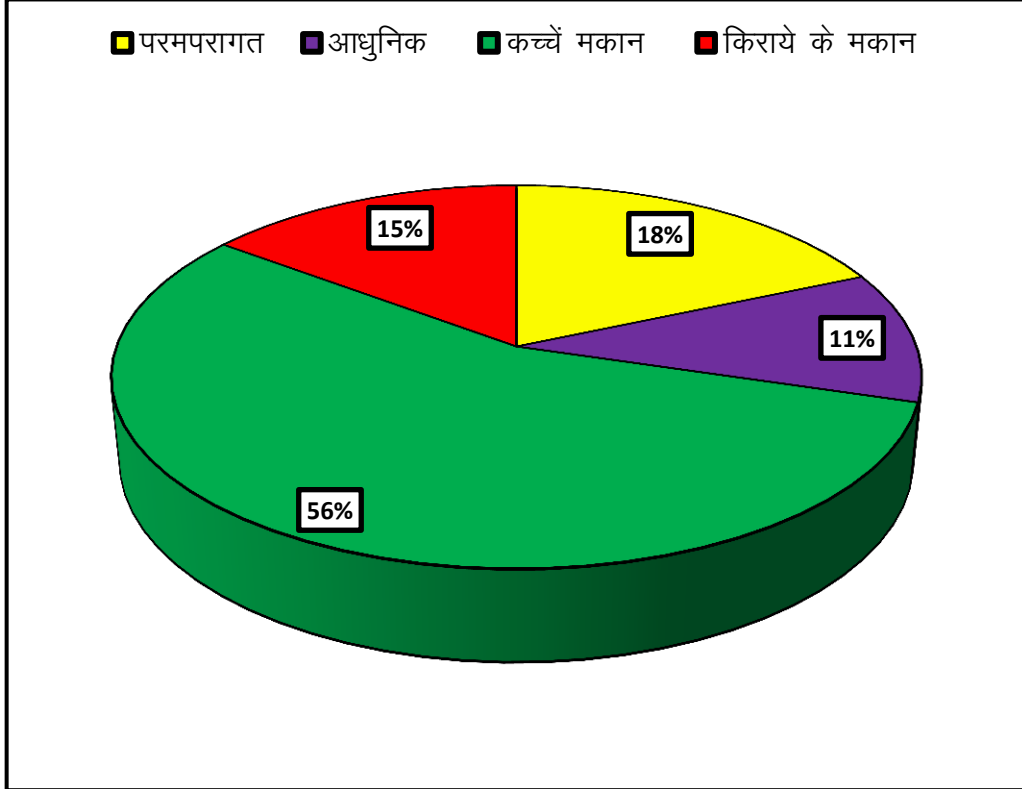
जिला बून्दी: उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना

क्र.सं.	गृह संरचना	प्रतिशत
1.	परम्परागत	18.51
2.	आधुनिक	11.11
3.	कच्चे मकान	55.56
4.	किराये के मकान	14.81
5.	कुल	100

स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख-8.6

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

जबकि 88.89 प्रतिशत श्रमिक परिवारों के पास रेफ्रिजरेटर संसाधन नहीं है।⁸

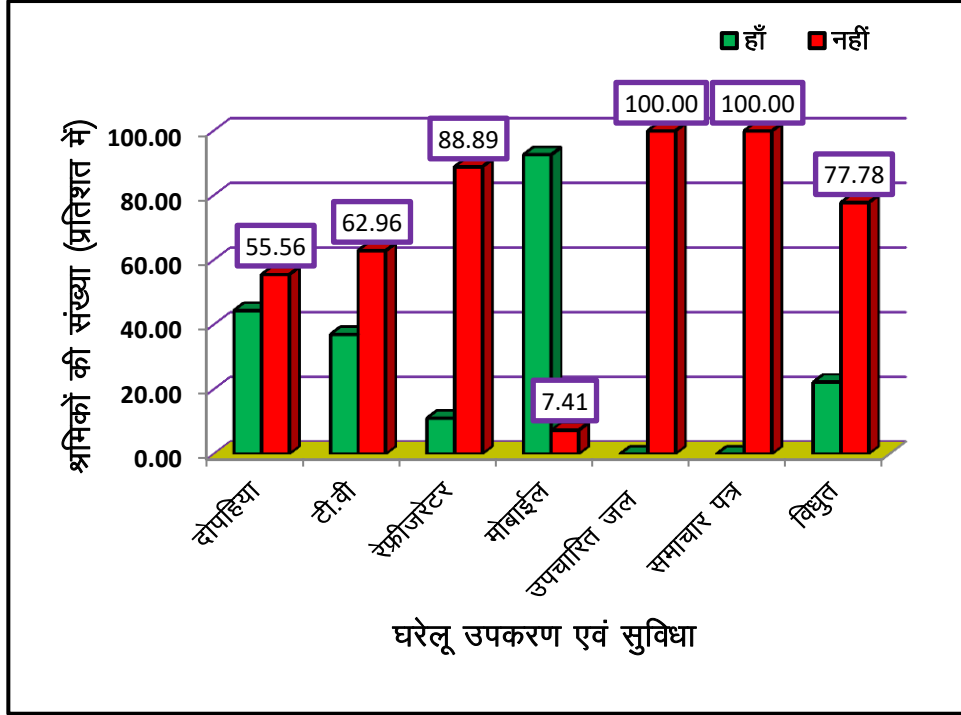
चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों में से 55.56 प्रतिशत श्रमिक परिवार केवल सार्वजनिक परिवहन के साधनों का ही उपयोग कर रहे हैं। दोपहिया वाहनों का उपयोग करने वाले श्रमिकों का प्रतिशत 44.44 प्रतिशत है, जबकि चौपहिया वाहनो के प्रयोग के लिये श्रमिकों की पहुँच तक नहीं है अतः इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के द्वारा परिवहन के रूप में दोपहिया वाहनो का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है। आरेख-8.7 एवं तालिका-8.2 में घरेलू उपकरणों के प्रयोग एवं सामान्य सुविधा को दर्शाया गया है।

आरेख-8.7 से स्पष्ट है कि चावल उद्योगों में कार्य करने वाले सर्वेक्षित श्रमिक परिवारों में शत प्रतिशत परिवार अनुपचारित जल का प्रयोग करते हैं। सर्वेक्षण के दौरान यह भी ज्ञात हुआ है कि उद्योगों के श्रमिकों के द्वारा समाचार-पत्रों का उपयोग भी शत प्रतिशत नहीं किया जाता है। फलस्वरूप ये लोग देश एवं समाज की दैनिक एवं राजनैतिक जानकारियों से अनभिज्ञ रहते हैं।

भारत देश में 12 वीं पंचवर्षीय योजना में इस बात पर बल दिया गया कि सतत् आर्थिक विकास के लिए जरूरी आर्थिक और वाणिज्यिक गतिविधियों को समर्थन देने हेतु ऊर्जा की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की जाए, साथ-साथ समाज के सभी वर्गों के लिए ऊर्जा का उपयोग सुनिश्चित किया जाये।⁹ चावल आधारित उद्योगों में सर्वेक्षित श्रमिकों में से 77.78 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनके घरों में विद्युत का कनेक्शन नहीं है अतः केवल 22.22 प्रतिशत श्रमिक परिवार ही ऐसे हैं जिनके घरों में विद्युत का उपयोग होता है।

आरेख –8.7

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सामान्य सुविधा



स्रोत – सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

तालिका-8.2

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की सामान्य सुविधा

क्र. सं.	घरेलू उपकरण एवं सुविधा	हाँ	नहीं
1.	दो पहिया वाहन	44.44	55.56
2.	टी.वी	37.04	62.96
3.	रेफ्रिजरेटर	11.11	88.89
4.	मोबाईल	92.59	7.41
5.	उपचारित जल	0.00	100.00
6.	समाचार पत्र	0.00	100.00
7.	विद्युत	22.22	77.78

स्रोत – सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

तालिका-8.3

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की गृह संरचना

क्र.सं.	कमरों की संख्या	प्रतिशत
1.	1-3	81.48
2.	4-6	11.11
3.	6 से अधिक	7.41
4.	कुल	100

स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

8.3.6 पारिवारिक खर्च

चावल उद्योगों में श्रमिकों के अध्ययन द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिकों के परिवारों द्वारा भरण-पोषण पर होने वाला खर्च, कुल खर्च का 34.80 प्रतिशत है। श्रमिक परिवारों द्वारा शिक्षा एवं बीमारी पर होने वाला खर्च का प्रतिशत क्रमशः 21.03 प्रतिशत एवं 11.43 प्रतिशत है।¹⁰

इस सर्वेक्षण से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि श्रमिकों के परिवारों द्वारा त्यौहार पर होने वाला खर्च 17.44 प्रतिशत एवं अन्य संसाधनों पर होने वाला खर्च 15.30 प्रतिशत है अतः तालिका-8.4 से ज्ञात होता है कि चावल उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों के परिवार द्वारा सर्वाधिक खर्च भरण-पोषण, शिक्षा एवं त्यौहारों पर किया जाता है। तालिका-8.4 एवं आरेख-8.8 में चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का पारिवारिक खर्च दर्शाया गया है।

8.3.7 स्नानघर एवं शौचालय का उपयोग

चावल उद्योगों में कार्य करने वाले सर्वेक्षित श्रमिक परिवारों के अन्तर्गत 54.74 प्रतिशत परिवार स्नानघरों का उपयोग करते हैं और घरों के बाहर स्नान करने वाले परिवार 45.26 प्रतिशत है। आरेख-8.9 के द्वारा ज्ञात होता है कि उद्योगों में कार्यरत 55.56 प्रतिशत श्रमिकों के घरों में शौचालयों का उपयोग किया जाता है।

तालिका -8.4

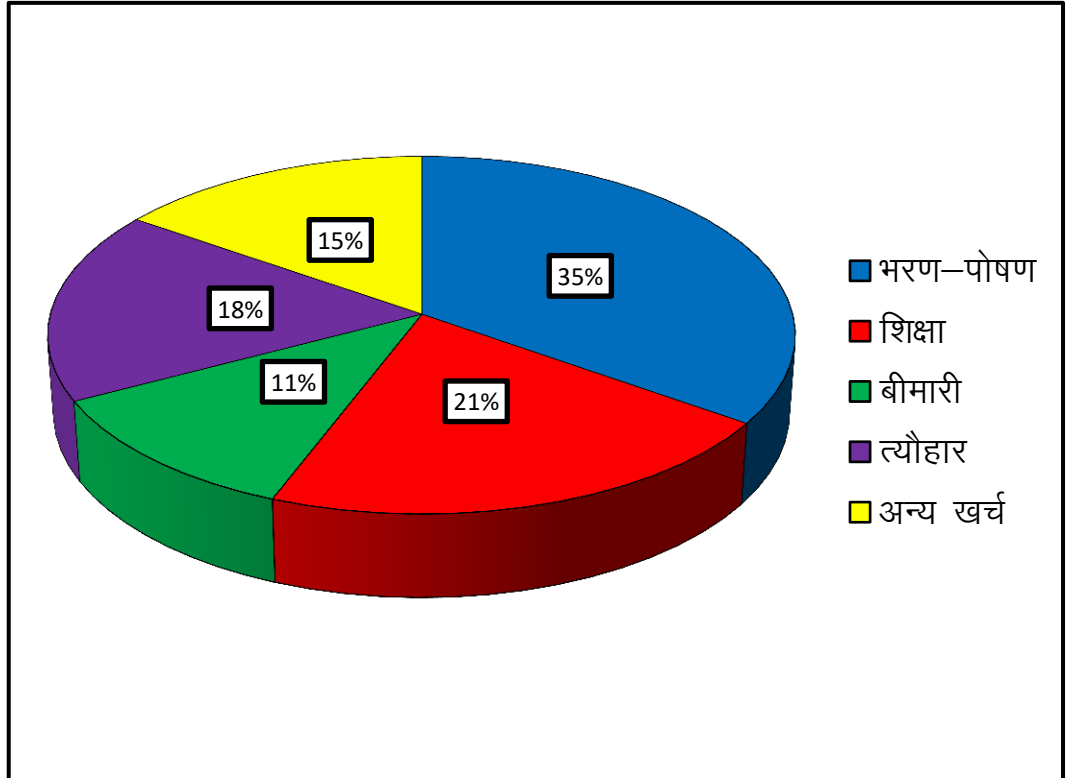
जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का पारिवारिक खर्च

क्र.सं.	चर	कुल खर्च का प्रतिशत
1.	भरण-पोषण	34.80
2.	शिक्षा	21.03
3.	बीमारी	11.43
4.	त्यौहार	17.44
5.	अन्य खर्च	15.30
6.	योग	100

स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख -8.8

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का पारिवारिक खर्च



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

इसी प्रकार शेष 44.44 प्रतिशत परिवार सार्वजनिक शौचालयों का प्रयोग नहीं करते हुए खुले में शौच करते हैं। शौचालय युक्त श्रमिक परिवारों में से 81.48 प्रतिशत श्रमिक परिवारों ने स्वयं शौचालयों का निर्माण करवाया है, किन्तु सरकार द्वारा सर्वेक्षित कुल श्रमिकों में से मात्र 18.52 प्रतिशत श्रमिकों के घरों में शौचालयों का निर्माण करवाया गया है।

8.3.8 जलापूर्ति

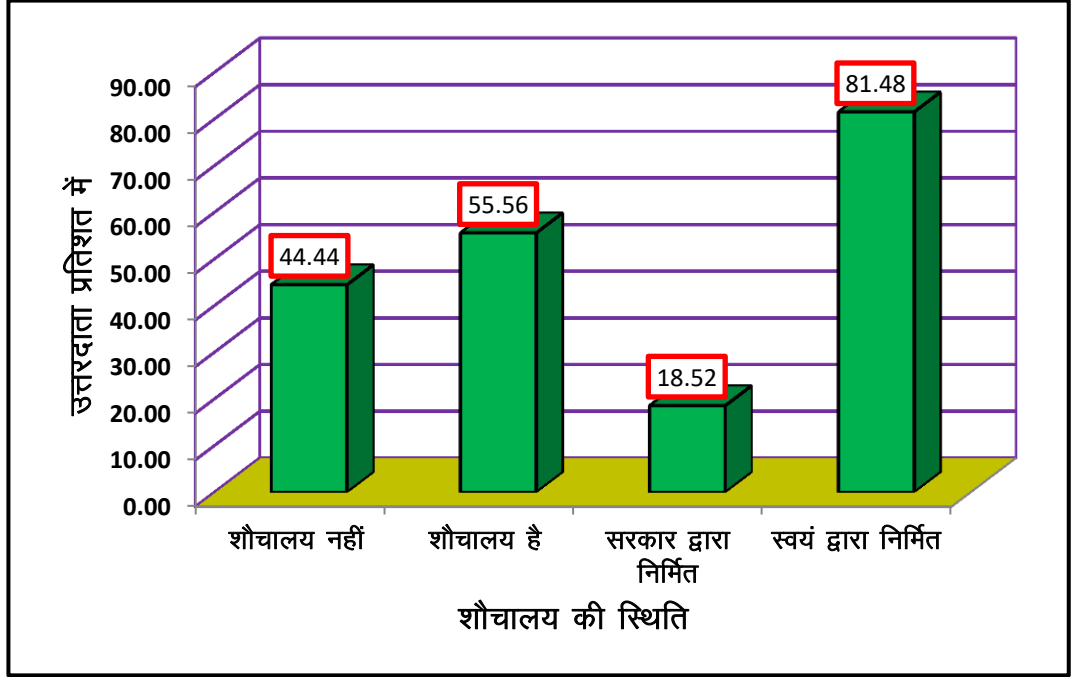
अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों के सर्वेक्षण से उनकी जलापूर्ति संरचना का स्वरूप ज्ञात किया गया है। कुल सर्वेक्षण श्रमिक परिवारों में से 18.52 प्रतिशत परिवारों में सरकारी नल द्वारा जलापूर्ति होती है। नल द्वारा प्रतिदिन एक-डेढ़ घंटे ही जलापूर्ति हो पाती है। उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिकों के लिये जलापूर्ति में ट्यूबवेलों का योगदान 33.33 प्रतिशत है। चावल उद्योगों में कार्य करने वाले सर्वेक्षित श्रमिकों में अन्य जलस्रोतों की सुविधा में कुओं के द्वारा 3.70 प्रतिशत एवं हैंडपम्पों के द्वारा 44.44 प्रतिशत जलापूर्ति होती है।¹² अतः चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिकों में सर्वाधिक जलापूर्ति केवल हैंडपम्प एवं ट्यूबवेल द्वारा होती है। आरेख-8.10 एवं तालिका-8.5 में चावल उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिकों के द्वारा उपयोग में लिये जाने वाले जलापूर्ति के स्रोतों को दर्शाया गया है।

8.3.9 रसोई में ईंधन का उपयोग

रसोई एवं उसमें प्रयुक्त ईंधन का उपयोग व्यक्तियों के जीवन स्तर को दर्शाता है। बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिक परिवारों में रसोई का निर्माण अलग से है, जो कि कुल सर्वेक्षित श्रमिकों को 51.85 प्रतिशत है। चावल उद्योगों में 18.52 प्रतिशत सर्वेक्षित परिवार ऐसे हैं, जिन्होंने रसोई को किसी कमरे के एक भाग में बनाया हुआ है। केवल 29.63 प्रतिशत श्रमिक परिवार द्वारा रसोई का प्रयोग घर के बाहर अर्थात् खुले चौक में किया जाता है। तालिका-8.6 में चावल उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिकों के परिवारों में रसोई एवं उसमें प्रयुक्त ईंधन को दर्शाया गया है।

आरेख-8.9

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के घरों में शौचालय की स्थिति



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

तालिका-8.5

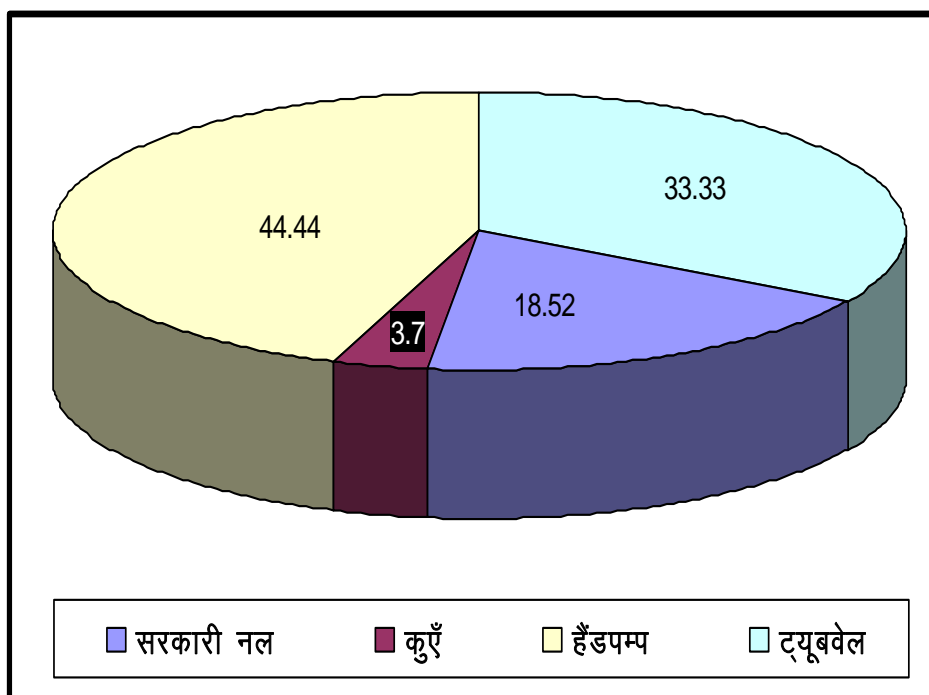
जिला बून्दी : चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के जलापूर्ति के स्रोत

क्र.सं.	जलापूर्ति के स्रोत	प्रतिशत
1.	सरकारी नल	18.52
2.	कुएँ	3.70
3.	हैंडपंप	44.44
4.	ट्यूबवेल	33.33

स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख –8.10

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के जलापूर्ति के स्रोत



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

भारत देश में भोजन पकाने के लिए एल.पी.जी. को प्राथमिक ईंधन के रूप में उपयोग करने वाले परिवारों की हिस्सेदारी 2001 में 18 प्रतिशत से बढ़कर सन् 2011 में 60 प्रतिशत हो गई है।¹² बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्य करने वाले 57.49 प्रतिशत सर्वेक्षित श्रमिक परिवार रसोई में ईंधन के रूप में गैस का प्रयोग करते हैं। सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिक परिवारों में लकड़ी का प्रयोग 9.37 प्रतिशत और कैरोसीन का उपयोग मात्र 0.94 प्रतिशत किया जाता है, जो कि पर्यावरण के अनुकूल है। कुछ परिवारों द्वारा लकड़ी और कैरोसीन दोनों को साथ-साथ उपयोग में लिया जाता है जिनका कुल प्रतिशत 2.83 प्रतिशत है।

चावल उद्योगों में सर्वेक्षित श्रमिकों में से 26.60 प्रतिशत लकड़ी के साथ-साथ गैस का प्रयोग भी करते हैं। कुछ श्रमिक परिवारों के द्वारा कैरोसीन, गैस व लकड़ी का सम्मिलित रूप में उपयोग किया जाता है, जो 0.94 प्रतिशत है इस प्रकार सर्वेक्षण से पता चला है कि

तालिका-8.6

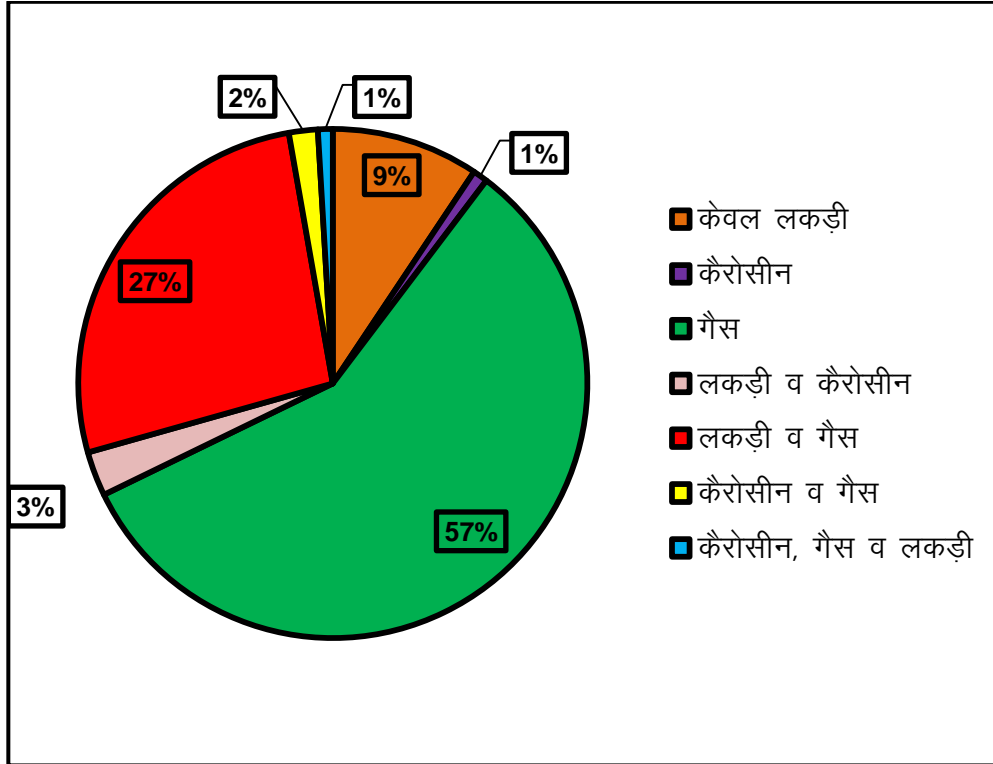
जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के घरों में ईंधन का उपयोग

क्र.सं.	ईंधन	प्रतिशत
1	केवल लकड़ी	9.37
2	कैरोसीन	0.94
3	गैस	57.49
4	लकड़ी व कैरोसीन	2.83
5	लकड़ी व गैस	26.60
6	कैरोसीन व गैस	1.83
7	कैरोसीन, गैस व लकड़ी	0.94

स्रोत- सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

आरेख-8.11

जिला बून्दी : कार्यरत श्रमिकों के घरों में ईंधन का उपयोग



स्रोत - सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

वहाँ श्रमिकों के परिवारों में गैस का प्रचलन अधिक है साथ ही साथ 51.85 प्रतिशत परिवारों में रसोई घर अलग से हैं, जो श्रमिकों के उच्च जीवन स्तर को दर्शाता है। आरेख-8.11 में चावल उद्योगों में कार्यरत सर्वेक्षित श्रमिक परिवारों द्वारा रसोई में प्रयुक्त ईंधन के स्रोत को दिखाया गया है।

8.3.10 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधा

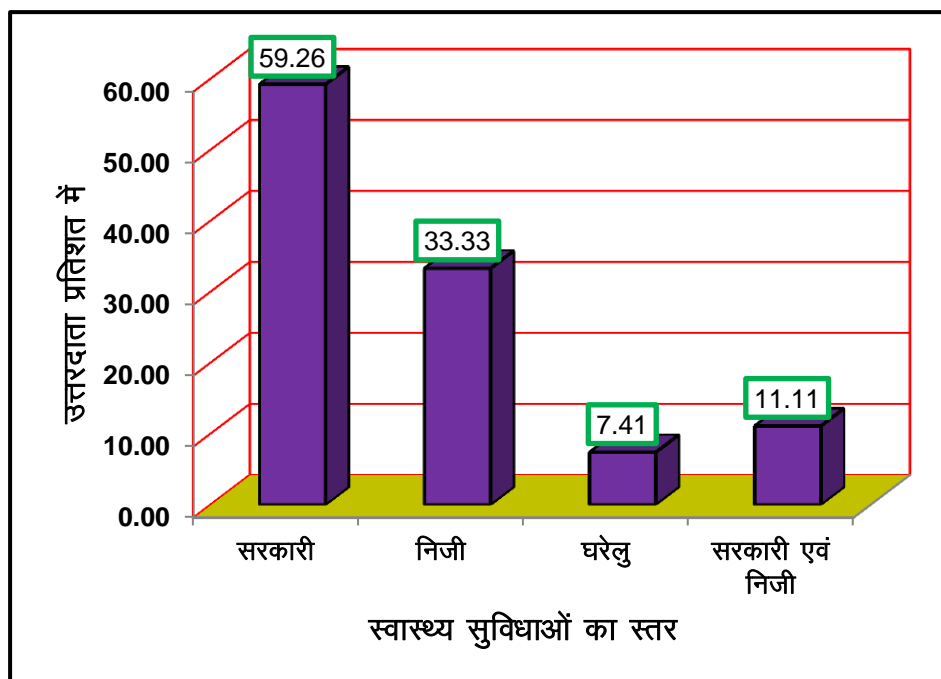
किसी भी राष्ट्र-राज्य के लिए स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। देश को स्वस्थ बनाए रखने के लिए सरकार ने हमेशा से प्रयास किए हैं, किन्तु फिर भी कई बार सरकारी प्रयास उस दिशा में नहीं होता, जिस दिशा में होना चाहिए। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 में सरकार ने यह संकल्प लिया है कि 2025 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय को जीडीपी में 2.5 प्रतिशत तक बढ़ाया जाएगा।¹³ इस नीति का उद्देश्य सभी के लिए संभव उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवा का लक्ष्य प्राप्त करना रहा है।

बून्दी जिले में चावल उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के लिये उन्नत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का होना आवश्यक है। श्रमिकों में किये गये सर्वेक्षण द्वारा पता चला है कि सरकारी चिकित्सालयों में उपचार करवाने वाले श्रमिक परिवारों का प्रतिशत 59.26 है जबकि निजी चिकित्सालयों में उपचार प्राप्त करने वाले श्रमिक परिवारों का प्रतिशत 33.33 प्रतिशत है। 11.11 प्रतिशत श्रमिक परिवार ऐसे हैं जो बीमारी के दौरान उपचार सरकारी एवं निजी दोनों स्तर पर करवाते हैं। कुछ श्रमिक परिवारों के द्वारा घरेलू स्तर पर भी उपचार किया जाता है, जो कि कुल सर्वेक्षित श्रमिकों का 7.41 प्रतिशत है। आरेख-8.12 में उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं को दर्शाया गया है।

अतः इस सर्वेक्षण के द्वारा स्पष्ट है कि चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिक सरकारी चिकित्सालयों से अधिक एवं निजी चिकित्सालयों से कम सेवा लेते हैं, जिससे पता चलता है कि वहाँ पर लोग सामान्य रूप से समृद्ध नहीं है और परिवार के भरण-पोषण को व्यवस्थित रूप से नहीं चला पाते हैं।

आरेख-8.12

जिला बून्दी : उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधा



स्रोत : सर्वेक्षण पर आधारित (2018)

अध्याय में चावल उद्योगों का प्रतिदर्श अध्ययन एवं चावल उद्योगों के कार्यरत श्रमिकों का विश्लेषण किया गया, जिसमें श्रमिकों की पारिवारिक जानकारी यथा— गृह संरचना, परिवार संरचना, जलापूर्ति, विद्युत आपूर्ति, वार्षिक आय, सामाजिक-सांस्कृतिक खर्च एवं सामाजिक-आर्थिक विवरण के आधार पर व्यक्तिगत विकास को ज्ञात किया गया है।

उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के निर्मित मकानों में सर्वाधिक प्रतिशत कच्चे मकानों का है जो कि 55.56 प्रतिशत है। चावल उद्योगों में कार्य करने वाले सर्वेक्षित श्रमिकों में 3 से अधिक कमरे रखने वाले श्रमिक परिवार 20 प्रतिशत से भी कम हैं इसी प्रकार 44.44 प्रतिशत परिवारों के घरों में शौचालय का निर्माण नहीं है अतः वे खुले में शौच करते हैं।

उद्योगों के श्रमिकों के द्वारा समाचार-पत्रों का उपयोग भी शत प्रतिशत नहीं किया जाता है फलस्वरूप ये लोग देश एवं समाज की

दैनिक एवं राजनैतिक जानकारियों से अनभिज्ञ रहते हैं। चावल उद्योगों में कार्य करने वाले श्रमिक सरकारी चिकित्सालयों से उपचार करवाते हैं।

सामान्यतः बून्दी जिले में चावल उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है अतः जिले में औद्योगिक विकास अपनी प्रगति पर है, किन्तु इस विकास का प्रभाव श्रमिकों को बहुत कम प्राप्त हो रहा है।

संदर्भ सूची

22. लोढ़ा, राजमल एवं माहेश्वरी, दीपक, (2016), "औद्योगिक भूगोल", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 31
23. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
24. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
25. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
26. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
27. दास, के.बी. (2018), "शहरी नियोजन और विकास" इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृ.सं. 9
28. भल्ला, लाजपतराय (2016), "राजस्थान का भूगोल", कुलदीप पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, पृ.सं. 261
29. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
30. माथुर, ऋतु, (अगस्त 2016), "योजना-भारत की ऊर्जा चुनौतियाँ व सतत विकास", सूचना भवन, नई दिल्ली, पृ.सं. 15
31. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
32. सर्वेक्षण पर आधारित, (2018)
33. माथुर, ऋतु, (अगस्त 2016), "योजना-भारत की ऊर्जा चुनौतियाँ व सतत विकास", सूचना भवन, नई दिल्ली, पृ.सं. 18
34. सिंह, आशुतोष कुमार, (मार्च 2018), "कुरुक्षेत्र-ग्रामीण विकास को समर्पित", सूचना भवन, नई दिल्ली, पृ.सं. 24

नवम अध्याय
सारांश—समस्याएँ
एवं सुझाव

नवम अध्याय

सारांश—समस्याएँ एवं सुझाव

कृषि न केवल ग्रामीण जनसंख्या के व्यवसाय एवं आय का आधार है बल्कि औद्योगिक कच्चे माल का स्रोत और अर्थव्यवस्था की आधारशिला भी है। धान की कृषि तथा चावल उद्योग परस्पर पूरक आर्थिक क्रियाएँ हैं। प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य जिला बून्दी में चावल उद्योग का स्थानिक—सामयिक प्रतिरूप का अध्ययन करना रहा है। धान की कृषि तथा चावल उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। जिले में अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है जिनका जीविकोपार्जन का प्रमुख आधार कृषि है। धान की कृषि बून्दी जिले के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की रीढ़ है।

जिला बून्दी राज्य का 20 प्रतिशत चावल का उत्पादन करता है। जिले में धान की कृषि के अनुकूल दशाएँ पायी जाती है जिससे यहाँ पर धान उत्पादन एवं चावल उद्योग की संभावनाएँ अधिक हैं, इन्हीं पहलू को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने “बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्थानिक—सामयिक प्रतिरूप” को शोध विषय के रूप में चुना है।

शोध की दिशा निर्धारण व स्पष्टता के उद्देश्य से शोध कार्य को निम्न उद्देश्यों में आबद्ध कर पूरा किया गया है — 1. बून्दी जिले की भौगोलिक विशेषताओं को स्पष्ट करना, जो चावल उद्योग का आधार है। 2. जिले में कृषि की वर्तमान स्थिति का विशेषकर चावल उत्पादन हेतु भूमि उपयोग तथा चावल प्रतिरूप का स्थानिक वितरण प्रस्तुत करना। 3. चावल उद्योग का स्थानिक वितरण व सामयिक परिवर्तन का विश्लेषण। 4. चावल उद्योग से आर्थिक एवं सामाजिक विकास पर पडने वाले प्रभावों की विवेचना। 5. चावल उद्योग से सम्बन्धित समस्याओं तथा उनके समाधान हेतु उपायों का विवरण प्रस्तुत करना है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निर्धारित प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नानुसार रही हैं – (1) बून्दी जिले की भौगोलिक दशाएँ जैसे— जलवायु, जल की उपलब्धता धान उत्पादन का आधार है। (2) बून्दी जिले में चावल उद्योग की अवस्थिति तथा धान के उत्पादन क्षेत्र में सहसम्बन्ध है। (3) चावल उद्योग के विकास का प्रभाव बून्दी जिले के आर्थिक—सामाजिक विकास पर परिलक्षित होता है।

शोध अध्ययन में प्राथमिक आंकड़े अनुसूची तथा साक्षात्कार के द्वारा एकत्र किये गये हैं। बून्दी जिले में प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए प्रतिचयन विधि (Purposive Sampling) का प्रयोग कर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में प्रतिचयन हेतु कुल (32 इकाइयाँ) चावल उद्योगों के 12 प्रतिशत उद्योगों का सर्वेक्षण किया गया है। चावल आधारित उद्योगों में कार्यरत कुल श्रमिकों के 40 प्रतिशत प्रतिचयन के रूप में श्रमिक परिवारों का चयन किया गया जिनका आधार निम्न रहा है— द्वितीय समंक जनगणना विभाग, कृषि विभाग, उद्योग विभाग, जिला सांख्यिकी विभाग एवं संदर्भ पुस्तकों से प्राप्त किये गये हैं। समंकों का सारणीयन, प्रतिशत, औसत, विचलन के आधार पर मानचित्र एवं आरेख तैयार कर विश्लेषण किया गया है। बून्दी जिले की तहसीलों में औद्योगीकरण स्तर के मापन हेतु स्थानिक लब्धि विधि (Location Quotient Method) को उपयोग में लिया है।

अध्याय योजना के अन्तर्गत शोध विषय को 9 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय शोध विषय परिचय से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत शोध विषय का चयन, महत्व, उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, विधि तन्त्र, साहित्य पुनरावलोकन, अध्याय योजना तथा शोध विषय का महत्व प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय में बून्दी जिले का भौगोलिक स्वरूप एवं जनांकिकीय संरचना का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सामान्य भूमि उपयोग एवं कृषि प्रारूप, कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले कारकों एवं फसलों के क्षेत्रीय विवरण प्रतिरूप का विश्लेषण कर विवेचन दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में बून्दी जिले में धान कृषि का विकास एवं परिवर्तित स्वरूप, धान फसल को

प्रभावित करने वाले कारकों, धान फसल के अन्तर्गत उत्पादकता एवं उत्पादन विश्लेषण कर विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में चावल उद्योग का स्थानीकरण के कारकों, चावल उद्योग की स्थापना व विकास का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में बून्दी जिले में चावल उत्पादन, औद्योगिक स्वरूप, चावल उद्योग में चावल तैयार करने की प्रक्रिया एवं चावल उद्योग के जिले में केन्द्रित होने के कारणों को बताया गया है। सप्तम अध्याय में आर्थिक विकास में चावल उद्योग की भूमिका, औद्योगिक क्षेत्र का विश्लेषण है। अष्टम अध्याय में चावल उद्योग का विकास एवं स्थानिक प्रतिदर्श के अन्तर्गत श्रमिकों से सम्बन्धित सामाजिक-आर्थिक समंकों का विश्लेषण समाविष्ट किया है। नवम अध्याय में शोध सारांश एवं सम्बन्धित समस्याएँ एवं सुझावों को बताया गया है।

बून्दी जिले की आकृति अनियमित समलम्ब चतुर्भुज के समान है। जिले की भौगोलिक सीमाएँ 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22वाँ स्थान है। बून्दी जिले की भौगोलिक सीमा टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ तथा कोटा जिले से लगती है। बून्दी जिले में 6 तहसीलें (बून्दी, नैनवा, केशवरायपाटन, हिण्डोली, इन्द्रगढ़ तथा तालेड़ा) हैं।

बून्दी जिले में अपवाह तंत्र ने जनसंख्या वितरण, कृषि एवं औद्योगिक विकास को प्रभावित किया है यहाँ मुख्यतः चम्बल, मैज, मांगली, भीमलत, कुराल, घोड़ापछाड़, माछली तथा तालेड़ा की नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ मैदान है। चम्बल नदी प्रमुख रूप से प्रवाहित होती है जो कि कोटा जिले से सीमा बनाती है।

बून्दी जिले में औसत तापमान 15° सेन्टीग्रेड है जबकि उच्चतम तापमान 45° सेन्टीग्रेड व न्यूनतम तापमान 6° सेन्टीग्रेड है। इस प्रकार यह जलवायु धान की कृषि के लिए उपयुक्त है। यहाँ पशु, गाय, बैल, भैंस, बकरी भेड़ तथा मुर्गे आदि प्रमुख हैं। सर्वाधिक पशु बून्दी तहसील में पाये जाते हैं जबकि इन्द्रगढ़ तहसील में न्यूनतम है।

बून्दी जिले में सिंचाई का प्रमुख साधन नहरें हैं जिसका प्रमुख स्रोत कोटा बैराज की बायों नहर है। सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र बून्दी तहसील एवं न्यूनतम स्थान पर इन्द्रगढ़ तहसील है। बून्दी जिले में सिंचित क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हुई है और यही वृद्धि जिले में धान की पैदावार के लिए सहायक है।

बून्दी जिले में जनसंख्या का प्रारूप एवं प्रतिरूप औद्योगिक अर्थव्यवस्था को विशेष प्रकार से प्रभावित करता है। जनसंख्या की दृष्टि से बून्दी जिले का राज्य में 30वाँ स्थान है। बून्दी जिले की पुरुष साक्षरता 75.40 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 46.60 प्रतिशत है। जिला बून्दी में 79.95 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या एवं 20.05 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या पाई जाती है। बून्दी जिले में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या बून्दी व न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या इन्द्रगढ़ तहसील में पाई जाती है, इसी प्रकार सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या बून्दी व न्यूनतम हिण्डोली तहसील में पाई जाती है।

जिला बून्दी में राष्ट्रीय राजमार्गों, ग्राम सड़कों एवं सम्पर्क सड़कों का अस्तित्व है, जो चावल उद्योग के विकास के लिए आवश्यक है। जिले में रेलमार्गों का विस्तार बून्दी, केशवरायपाटन एवं इन्द्रगढ़ तहसील में है। प्रमुख रेल मार्ग मुम्बई-कोटा-दिल्ली एवं कोटा-चित्तौड़गढ़ है तथा प्रमुख सड़क मार्ग जयपुर-जबलपुर है।

जिला बून्दी में मुख्यतः बासमती चावल तथा खाद्य तेल उत्पादित किया जाता है। बासमती चावल का निर्यात बून्दी जिले से भारत में ही नहीं अपितु कुवैत, सऊदी अरब, ईराक, ईरान, जकार्ता, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया आदि को भी किया जाता है। बून्दी जिले से खाद्य तेल व खली का निर्यात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गुजरात आदि राज्यों को किया जाता है।

जिला बून्दी प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला जिला रहा है, यहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 68.78 प्रतिशत भाग कृषि एवं सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है। अनुकूल भौगोलिक दशाओं के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार की फसलें यथा . चावल, गन्ना, सरसों, सोयाबीन आदि फसलों का उत्पादन होता है।

बून्दी जिला कृषि उत्पादन की दृष्टि से राज्य में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 62.28 प्रतिशत भाग सकल सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत है। वर्ष 1994-95 में रबी की फसल के अन्तर्गत क्षेत्र समस्त बोया हुआ क्षेत्रफल का 36.88 प्रतिशत था, जो 2014-15 में बढ़कर 54.42 प्रतिशत हो गया है। जिसका प्रमुख कारण सिंचाई के साधन (नलकूप) में वृद्धि होना रहा है। खरीफ की फसल के अन्तर्गत मुख्यतः चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, सोयाबीन, उडद, मूंग, मूंगफली, गन्ना आदि उत्पन्न किए जाते हैं। 2014-15 में कुल समस्त बोया हुआ क्षेत्र 45.58 प्रतिशत रहा।

कृषि कार्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में भू-आकृति, मृदा, वर्षा, सिंचाई, आर्थिक व तकनीकी प्रगति, सामाजिक दशाएँ प्रमुख हैं। अरावली व दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग बून्दी जिले में प्रमुख दो भू-आकृतियाँ हैं। अरावली श्रेणी जिले में लगभग मध्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तरी-पूर्वी दिशा की ओर विस्तृत है। इसका उच्चतम बिन्दु सथूर चोटी (1793 फीट) है।

जिला बून्दी में मुख्यतः दो प्रकार की मृदा, मिश्रित लाल-काली मृदा, गहरी मध्यम काली मृदा पायी जाती है। मिश्रित लाल-काली मृदा में सरसों, दलहन व मोटे अनाजों की कृषि तथा गहरी मध्यम काली मिट्टी गेहूँ, चावल, सोयाबीन, सरसों जैसी फसलों के लिए उत्तम है। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विकास वर्षा वितरण प्रतिरूप के आधार पर मिलता है। सर्वाधिक वार्षिक वर्षा हिण्डोली तहसील में जबकि न्यूनतम औसत वर्षा इन्द्रगढ़ तहसील में होती है। विगत 11 वर्षों (2005 से 2015 तक) की अवधि में मात्र चार बार वर्षा सामान्य से अधिक हुई। वर्षा की परिवर्तनशीलता ने बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वर्षा के अभाव में कृषि उत्पादकता का स्तर बनाये रखने के लिए सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता आवश्यक है।

किसी भी क्षेत्र में आर्थिक व तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता कृषि विकास हेतु महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है। बून्दी जिले की पाँचों तहसीलों में बून्दी व केशवरायपाटन कृषि हेतु बैंकिंग, बीमा, वित्तीय सहायता तथा तकनीकी सुविधाएँ जैसे—कृषि उपकरण, उत्तम खाद व बीज, उत्पादन हेतु विशेषज्ञ सलाह, सिंचाई एवं शिक्षा व्यवस्था, परिवहन के साधन आदि आधारभूत संरचना की दृष्टि से विकसित तहसीले हैं अतः यहाँ धान, सरसों, गेहूँ जैसी फसलों की कृषि पर्याप्त मात्रा में की जाती है व ये दोनों तहसीलें समग्र कृषि उत्पादन की दृष्टि से भी बून्दी जिले में प्रमुख स्थान रखती हैं। जिले में बून्दी एवं केशवरायपाटन तहसील अधिक विकसित होने से आधुनिक कृषि उपकरणों, उन्नत खाद बीजों का प्रयोग करते हैं जिससे उच्च स्तरीय कृषि उत्पादन होता है व शेष तीनों तहसीलों (इन्द्रगढ़, नैनवा, हिण्डोली) सामाजिक दृष्टि से तुलनात्मक रूप से पिछड़ी होने के कारण यहाँ का कृषि उत्पादन पर भी उसका प्रभाव परिलक्षित होता है।

बून्दी जिले में कुल भौगोलिक क्षेत्र का 15.56 प्रतिशत भू भाग कृषि अयोग्य भूमि के अन्तर्गत है। इस कुल का सर्वाधिक प्रतिशत बून्दी तहसील में 36.53 प्रतिशत एवं न्यूनतम प्रतिशत इन्द्रगढ़ तहसील में 12.10 प्रतिशत है। जोत रहित भूमि में स्थाई चारागाह, अन्य गोचर भूमि, झाड़-झंखाड़ कृषि योग्य बंजर भूमि तथा वृक्षों के झुण्ड एवं बाग सम्मिलित है। यह ऐसी भूमि है जिसको साफ करके अथवा उपचारित कर कृषि के अन्तर्गत लाया जा सकता है।

बून्दी तहसील के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 8.32 प्रतिशत भाग जोत रहित भूमि के अन्तर्गत आता है प्रथम चालू पड़त भूमि एवं द्वितीय – अन्य पड़त भूमि। बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 5.70 प्रतिशत क्षेत्र परती भूमि के अन्तर्गत आता है।

जिला बून्दी में भूमि उपयोग प्रतिरूप के तहत कृषित भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत क्षेत्र केशवरायपाटन (65.25 प्रतिशत), नैनवा (57.51 प्रतिशत) एवं इन्द्रगढ़ (48.72 प्रतिशत) में है। जिला बून्दी में विभिन्न प्रकार के अनाज, दलहन, मसालें एवं फल-सब्जियों की फसलें

समान रूप से उत्पन्न की जाती है ये जिले की अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान रखती है, किन्तु तहसील स्तर पर इस फसल उत्पादन प्रतिरूप में पर्याप्त भिन्नता पायी जाती है। बून्दी जिले में फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी तहसील प्रथम पायदान पर है, जहाँ पर 131984 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि कार्य के अन्तर्गत है जबकि अन्तिम पायदान पर इन्द्रगढ़ है, जहां केवल 47632 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि के अन्तर्गत है।

फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक क्षेत्रफल अनाज फसलों के अन्तर्गत है। वर्ष 1994-95 में अनाजों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 171001 हेक्टेयर था जो 2014-15 में 42.75 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 244104 हेक्टेयर है, इसी तरह दलहन एवं तिलहन क्षेत्र 1994-95 की अपेक्षा 2014-15 में क्रमशः 53.92 प्रतिशत एवं 54.72 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिसका प्रमुख कारण बून्दी जिले में सिंचाई के साधनों में वृद्धि एवं कृषि क्रियाओं में कृषि यन्त्रों का अधिक प्रयोग होना है।

बून्दी जिले में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली फसलों में क्रमशः गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, उड़द एवं धान है। बून्दी जिला कुल अनाज उत्पादन की दृष्टि से कोटा संभाग में प्रथम स्थान रखता है। बून्दी जिला कोटा संभाग का 44.08 प्रतिशत अनाज, 60.64 प्रतिशत दालों, 40.54 प्रतिशत तिलहन उत्पादित करता है।

कुल कृषि उत्पादन का 63.39 प्रतिशत खाद्यान्नों से, 26.97 प्रतिशत तिलहन से, 6.86 प्रतिशत दलहन से एवं 0.67 प्रतिशत मसालों से प्राप्त होता है। जिले में वर्ष 2014-15 में उत्पादन की दृष्टि से अनाज फसलों में गेहूँ की फसल प्रथम स्थान पर रही है जो कुल कृषि उत्पादन का 39.91 प्रतिशत है। कुल कृषि उत्पादन में तिलहन के अन्तर्गत सर्वाधिक योगदान सोयाबीन का रहा, जिससे कुल कृषि उत्पादन का 21.28 प्रतिशत प्राप्त हुआ जबकि दलहन के अन्तर्गत उड़द कुल कृषि उत्पादन का 5.04 प्रतिशत प्रदान कर प्रथम स्थान पर है। बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप में तहसील स्तर

पर पर्याप्त भिन्नता पाई गई है जिन तहसीलों में सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में हैं, वहाँ पर कृषि उत्पादन अधिक पाया गया है।

बून्दी जिले में चावल की फसल का उत्पादन खरीफ के अन्तर्गत किया जाता है। जिले में चावल फसल की बुवाई जून एवं जुलाई के माह में की जाती है एवं जिसकी कटाई अक्टूबर एवं नवम्बर माह के मध्य की जाती है। बून्दी जिले में चावल की खेती दो प्रकार से की जाती है— (अ) छटकावा विधि (ब) प्रतिरोपण विधि। जिले में प्रतिरोपण विधि को सर्वाधिक प्रयोग में लिया जाता है, क्योंकि इस विधि से अपेक्षाकृत अधिक धान उत्पादन होता है।

राजस्थान के कुल चावल उत्पादक क्षेत्र का 20.59 प्रतिशत भाग केवल बून्दी जिले में फैला हुआ है। जिले का औसत चावल उत्पादक क्षेत्र 26886 हेक्टेयर है। विगत पाँच वर्षों (2010—11 से 2014—15 के अन्त तक) के दौरान औसत उत्पादक क्षेत्रफल 25439 हेक्टेयर है। वर्ष 2014—15 में बून्दी जिले में कुल उत्पादक फसलों के क्षेत्र का 14.15 प्रतिशत उत्पादक क्षेत्र धान फसल के अन्तर्गत है।

बून्दी जिले में विगत 21 वर्षों के दौरान चावल उत्पादक क्षेत्र में 85.10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 1994—95 से वर्ष 2014—15 में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत बून्दी, नैनवां, हिण्डोली तथा इन्द्रगढ़ तहसील में वृद्धि एवं केशवरायपाटन तहसील में कमी पाई गई है। 21 वर्षों के दौरान सर्वाधिक वृद्धि नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुई है।

बून्दी जिले की बून्दी तहसील में चावल महत्वपूर्ण फसल है। जिले में कुल चावल उत्पादन में 82.42 प्रतिशत बून्दी तहसील, 11.39 प्रतिशत केशवरायपाटन तहसील एवं 5.74 प्रतिशत का उत्पादन हिण्डोली तहसील द्वारा किया गया है। बून्दी जिले का वर्ष 2014—15 में न्यूनतम उत्पादन नैनवां एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुआ, जो कि कुल उत्पादन में मात्र 372 मैट्रिक टन है। बून्दी जिले में कृषि उत्पादकता एक प्रकार से क्षेत्र के उत्पाद का गुणांक सम्बोधन है। कृषि उत्पादकता अभिवृद्धि में जिले के जिन कारकों का

महत्वपूर्ण स्थान है उनमें भौतिक पृष्ठभूमि के अलावा उन्नतशील बीज, उर्वरक, सिंचाई एवं यंत्रीकरण है।

बून्दी जिले में चावल के उत्पादन में अधिक तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिसमें वर्ष 1994-95 से 2014-15 के दौरान 108.29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। जिले में धान की कृषि के अन्तर्गत कुल उत्पादन खाद्यान्नों के उत्पादन का 24.19 प्रतिशत एवं समस्त अनाज उत्पादन का 26.80 प्रतिशत है। बून्दी जिले में सर्वाधिक चावल उत्पादक क्षेत्र बून्दी तहसील में 28427 हेक्टेयर है जो कुल जिले का 82.28 प्रतिशत क्षेत्र रखता है। जिले में चावल उत्पादक क्षेत्रफल में प्रथम स्थान पर बून्दी तहसील तथा द्वितीय स्थान केशवरायपाटन तहसील है।

बून्दी जिले में चावल उद्योग के स्थानीयकरण के कारणों, चावल उद्योग की स्थापना व विकास एवं औद्योगिक विकास का विवेचन स्पष्ट करता है कि जिले की अर्थव्यवस्था में चावल उद्योग का विशिष्ट स्थान है। बून्दी जिले में कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित उद्योगों हेतु विभिन्न प्रकार की अनुकूलतम परिस्थितियाँ उपस्थित है। जिले के चावल आधारित उद्योगों में प्रमुखतया लकड़ी का कोयला, जल विद्युत, गन्ने की खोई, सरसों की खल आदि को भी ऊर्जा संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। बून्दी जिले में चावल उद्योग के अंतर्गत तैयार माल की खपत निकटवर्ती बाजार में हो जाती है। बून्दी जिले में कच्चे माल को कारखाने तक लाने तथा तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, ग्राम सड़कों एवं संपर्क सड़कों का परिवहन जाल मिलता है। बून्दी जिले से 3 राज्य राजमार्ग तथा एक मेगा हाइवे गुजरता है।

वर्ष 2014-15 में जिला बून्दी में कुल कार्यरत लोगों की संख्या 526091 है। चावल आधारित उद्योगों में भूमि, मशीनें, कच्चा माल क्रय करने, बड़ी संख्या में श्रमिकों को वेतन, परिवहन आदि कार्यों में अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता होती है, किन्तु बून्दी जिले में वित्तीय सुविधा की कमी है।

उद्योग हर क्षेत्र के लिए गौरव होते हैं। बून्दी जिले के भौगोलिक, आर्थिक, मानवीय आदि कारकों ने बून्दी जिले को चावल निर्यात में अग्रणी बनाया है साथ ही उद्योगों की संख्या, अवस्थिति व रोजगार को निश्चित किया है।

1980 के दशक में बून्दी जिले में चावल उद्योग एक महत्वपूर्ण कृषि आधारित उद्योग के रूप में पनपा है। हरियाणा व पंजाब के चावल निर्यातक बी.आर. एण्ड सन्स एवं अर्जुन ब्रिज इत्यादि ने वर्ष 1984 में बून्दी जिले में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। 1985 के बाद से खुशीराम बिहारी लाल, सतनाम ओवरसीज, के.जे. इंटरनेशनल, आर.टी. एक्सपोर्ट आदि ने बून्दी में चावल उद्योग स्थापित किए। वर्ष 1998-99 का वर्ष बून्दी जिले में चावल उद्योग का स्वर्णयुग था क्योंकि इस वर्ष चावल उद्योगों ने 1.50 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। चावल आधारित उद्योगों में विनिर्माण प्रक्रिया के दौरान उच्च तकनीकी तथा कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है। धान से चावल के छिलकों का पृथक्करण, मजदूरों से व्यावहारिक सम्बन्ध, मशीनी पुर्जों का रखरखाव आदि के संदर्भ में जिले में 4 आई.टी. आई. महाविद्यालय सरकारी तथा 2 निजी क्षेत्र में है। यंत्रों की स्थापना, कच्चे माल का संग्रह, तैयार माल का भण्डारण, कार्यालय, श्रमिक, आवास आदि के लिए पर्याप्त व सस्ती भूमि की आवश्यकता होती है, इस हेतु जिले में औद्योगिक क्षेत्र के अंतर्गत 216.81 एकड़ भूमि आरक्षित है।

वर्तमान समय में बून्दी जिले में 32 चावल मिलें कार्यरत हैं। चावल मिल में धान को साफ करके भोजन के रूप में तैयार करने के लिए अनेक मशीनों में धान को विभिन्न प्रक्रियाओं से होकर गुजरना होता है यथा— राइस क्लीनिंग मशीन, राइस डे स्टोर मशीन, पेड़ी हसकर मशीन, राइस कलन सोर्टर मशीन, पेड़ी सेपरेटर मशीन, राइस व्हाइटनर मशीन, राइस पोलिशिंग मशीन, ग्रेडिंग मशीन, ग्रेनड्रेयर मशीन, मेजर एवं पैकिंग मशीन एवं राइस मिल्लिंग डिटेक्शन मशीन।

बून्दी जिले में वर्ष 1991 में सर्वाधिक स्थानिक लब्धि सूचकांक नैनवां तहसील में 1.47 है जिसका प्रमुख कारण नैनवां तहसील में लघु व ग्रामीण स्तर पर तेल घाणी उद्योग, गुड़-खांडसारी उद्योग, दाल-मसाला उद्योग, आटा पिसाई उद्योग, फर्नीचर उद्योग, इलेक्ट्रिक उद्योग कार्यरत होना है जिनमें तहसील की लगभग 1.36 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है जो बून्दी जिले में सर्वाधिक है। स्थानिक लब्धि सूचकांक की दृष्टि से बून्दी तहसील का वर्ष 1991 में अन्तिम स्तर पर एवं वर्ष 2011 में तृतीय स्तर रही है।

बून्दी जिले की कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 2.12 प्रतिशत भाग औद्योगिक कार्यों में संलग्न है। उद्योगों का विकास व्यापार तथा परिवहन के विकास का पूरक माना जाता है क्योंकि उद्योगों से तैयार माल व्यापार तथा परिवहन के माध्यम से स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जाता है।

बून्दी जिले में फसल प्रतिरूप में विभिन्नता के कारण विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों का विकास अधिक हुआ है। राजस्थान राज्य उद्योग विकास और निवेश निगम लिमिटेड द्वारा बून्दी जिले में 6 औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है, जिनमें बाईपास रोड़, चित्तौड़गढ़, नैनवा रोड़, गोविंदपुर बावड़ी, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमंडी एवं हट्टीपुरा क्षेत्र हैं। बून्दी जिले में कुल औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत 208.36 एकड़ भूमि आवंटित है।

बून्दी जिले में चावल उद्योगों की दशा को जानने के लिए कच्चा माल, बाजार, श्रम तथा आधारभूत सुविधाओं परिवहन, ऊर्जा, श्रमिक, पूंजी, तकनीक, प्रबंधन व मशीनरी जैसे कारकों को आधार मानकर अध्ययन किया है। उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के निवास स्थान के आधार पर उनके रोजगार, पारिवारिक स्थिति, उद्योग से प्राप्त आय का अध्ययन किया गया है, फलस्वरूप ज्ञात हुआ है कि श्रमिकों की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक विकास निम्न से मध्य स्तर का है।

आशुतोष चावल उद्योग की अवस्थिति में कच्चा माल व आधारभूत सुविधाओं में ट्रेक्टर/ट्रोल्ली (परिवहन), आधुनिक भारत में

निर्मित शक्ति द्वारा संचालित मशीनें तथा कुशल श्रमिकों का प्रमुख योगदान है, इस उद्योग में स्थायी श्रमिक 26.87 प्रतिशत, अस्थायी श्रमिक 73.13 प्रतिशत है। गृह जिले बून्दी से 22.29 प्रतिशत तथा अन्य जिलों से 17.91 व राजस्थान से बाहर के 59.70 प्रतिशत श्रमिक कार्यरत है। सर्वेक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि बाहरी राज्यों के श्रमिकों को अधिक रोजगार प्राप्त हुआ है। आशुतोष चावल उद्योग का औसत उत्पादन 1000 क्विंटल प्रतिदिन है, जिससे 80 प्रतिशत माल राजस्थान के बाहर निर्यात कर दिया जाता है। उद्योग में उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 2012-13 में 80000 क्विंटल उत्पादन था जो 2016-17 में बढ़कर 120000 क्विंटल हो गया है।

राज राइस मिल उद्योग की स्थापना का आधार जिले में कच्चे माल की उपलब्धता, परिवहन (ट्रेक्टर-ट्राली व ट्रक), विद्युत से चालित भारत में निर्मित आधुनिक मशीनें तथा कुशल व अकुशल श्रमिकों की उपलब्धता है। इस उद्योग में कार्यरत 28.57 प्रतिशत श्रमिक स्थायी, 71.43 प्रतिशत श्रमिक अस्थायी है, कुल श्रमिकों में से गृह जिले से 11.11 प्रतिशत, अन्य जिलों से 13.83 प्रतिशत तथा 46.30 प्रतिशत राजस्थान के बाहर मुख्यतः बिहार, उत्तरप्रदेश से है। उद्योग द्वारा प्रतिदिन 40 टन चावल उत्पादित होता है। हर वर्ष उत्पादन बढ़ा है। 2012-13 में चावल उत्पादन 80,000 क्विंटल से बढ़कर 2016-17 में 180000 क्विंटल चावल उत्पादित हुआ है।

पैरामाउण्ट चावल उद्योग 351 सेला, 1121 जैसे बासमती तथा सुगन्धा व पूसा बासमती चावल का उत्पादन करता है। इस उद्योग की अवस्थिति के कारकों में कच्चे माल की प्रधानता, श्रमिक उपलब्धता एवं सोलर व विद्युत से संचालित मशीनें हैं। इस उद्योग में 23.16 प्रतिशत स्थायी व 76.84 प्रतिशत अस्थायी श्रमिक कार्यरत है यहाँ पर 16.67 प्रतिशत जिला स्तर से, 20.37 प्रतिशत अन्य जिलों व 62.04 प्रतिशत देश स्तर से है। श्रमिक 20 किलोमीटर दूर तक रहते हैं। पैरामाउण्ट उद्योग प्रतिदिन 100 टन चावल उत्पादन करता है यहाँ का 60 प्रतिशत चावल अरब राष्ट्रों—कुवैत, ईरान, ईराक, कतर को निर्यात होता है। इस उद्योग में 2013-14 को छोड़कर निरन्तर

चावल उत्पादन बढ़ा है। 2012-13 में 50 हजार टन था जो 2016-17 में बढ़कर 4 लाख टन हो गया है।

श्री शंकर उद्योग की अवस्थिति के कारकों में कच्चे माल की प्रधानता, परिवहन, विद्युत शक्ति से चालित मशीनें, श्रम व तकनीक प्रमुख है। उद्योग में कार्यरत श्रमिक 20.37 प्रतिशत स्थायी एवं 79.63 प्रतिशत अस्थायी है। उद्योग में 23.15 प्रतिशत जिला स्तर से, 25.93 प्रतिशत राज्य स्तर से तथा 50.93 प्रतिशत श्रमिक राज्य से बाहर के है। शंकर उद्योग मखमल चावल का उत्पादन करता है, यह औसतन 15000 क्विंटल चावल प्रतिदिन उत्पादित करता है, यहाँ का 70 प्रतिशत निर्यात राज्य के बाहर दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश तथा खाड़ी देशों में होता है। वर्ष 2015-16 को छोड़कर हर वर्ष चावल उत्पादन बढ़ा है। 2016-17 में यहाँ से 120000 क्विंटल चावल उत्पादित हुआ है।

चावल उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की पारिवारिक संरचना समाज की खुशहाली की सूचक है। 40.74 प्रतिशत श्रमिक एकल परिवार तथा 59.26 प्रतिशत संयुक्त परिवार में रहते हैं। श्रमिकों के परिवार में सम्पन्नता का स्तर पूर्णतः सही नहीं है। परिवार का मुखिया पुरुष होता है, महिलाओं की भूमिका भी मुख्य होती है। परिवार में औसतन 6-7 व्यक्ति होते हैं। अधिवास प्रतिरूप में गृह प्रकार, कक्षों की संख्या, स्नानघर एवं शौचालय को शामिल करते हैं।

बून्दी जिले में श्रमिकों के अधिवास प्रतिरूप पक्का मकान ईंट, सीमेंट, बजरी से निर्मित तथा कच्चा मकान मिट्टी व लकड़ी से निर्मित होता है। श्रमिकों की गृह संरचना, पारिवारिक संरचना, पेयजल, विद्युत, आय का अध्ययन स्पष्ट करता है कि सभी परिवार अनुपचारित पेयजल का प्रयोग करते हैं तथा अधिकांश श्रमिक समाचार पत्रों का भी प्रयोग नहीं करते हैं। बून्दी के चावल उद्योगों में कार्यरत कुल श्रमिकों में से सरकारी अस्पताल में उपचार करवाने वाले श्रमिक परिवार 59.26 प्रतिशत एवं निजी अस्पताल में उपचार करवाने वाले श्रमिक परिवार 33.33 प्रतिशत है अतः श्रमिकों की आर्थिक स्थिति सामान्य स्तर पर ही है।

बून्दी जिले में चावल उद्योग निरन्तर प्रगति के पथ पर है किन्तु चावल उद्योग बून्दी व राजस्थान के नागरिकों के अलावा बाह्य राज्यों यथा— उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल के नागरिकों को ही अधिक रोजगार प्रदान कर रहा है।

बून्दी जिले में चावल आधारित उद्योगों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बून्दी जिले के औद्योगिक भू-दृश्य में कृषि आधारित उद्योगों की प्रधानता है किन्तु बून्दी जिले में धान उत्पादन की संभावनाओं तथा चावल आधारित उद्योगों की वर्तमान दशा के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चावल आधारित उद्योगों का विकास विद्यमान संभावनाओं की तुलना में पर्याप्त नहीं हो पाया है जिसका प्रमुख कारण चावल आधारित उद्योगों के विकास में विद्यमान बाधक निम्न समस्याएँ हैं —

- बून्दी जिले का कृषि उत्पादन प्रतिरूप निरन्तर परिवर्तनशील रहा है। जिले में कृषि उत्पादन मात्रा में भी समय के साथ वृद्धि व गिरावट होती रही है। जिले में विभिन्न फसलों के उत्पादन में वृद्धि व कमी पर विभिन्न कारकों जैसे — सम्बन्धित उद्योगों की स्थापना, फसलों में प्रतिस्पर्द्धा, कृषि कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाओं का प्रभाव पड़ा है। बून्दी जिले के कृषि प्रारूप में अलग-अलग समय पर विविध फसलों जैसे — गन्ना, धान, सरसों, सोयाबीन जैसी फसलों की प्रधानता रही है। बून्दी जिले में अलग-अलग समय पर कृषि उत्पादन प्रतिरूप में जिन फसलों की प्रधानता रही है, जिले में तत्सम्बन्धी उद्योगों का विकास अन्य उद्योगों की अपेक्षा अधिक हुआ है जैसे गन्ने का उत्पादन अधिक होने पर चीनी उद्योग व गुड़-खांडसारी उद्योग का विकास, धान का उत्पादन अधिक होने पर चावल उद्योग का विकास एवं सरसों व सोयाबीन का उत्पादन अधिक होने पर खाद्य तेल उद्योग व तेल-घाणी उद्योगों का विकास अधिक हुआ है।
- बून्दी जिले में उत्पादित की जाने वाली मुख्य औद्योगिक फसलें जैसे— सोयाबीन, सरसों व धान पूर्णतया वर्षा व सिंचाई की सुविधाओं पर आधारित है। जिले में सिंचाई की सुविधाएँ भी कृषित क्षेत्र व कृषि उत्पादन की तुलना में अपर्याप्त है।

- कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा कृषि कार्य के विकास हेतु कृषकों को प्रोत्साहन तथा आर्थिक सुविधा प्रदान करना आवश्यक है। बून्दी जिले में कृषि उत्पादन में संलग्न कृषकों तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों को प्रशासन व सरकार की ओर से प्रोत्साहन तथा आर्थिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं करवाई गईं जिससे जिले के कृषकों का रुझान धान फसल की ओर से हट गया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण धान उत्पादन में आयी निरंतर गिरावट है। बून्दी जिले धान की विभिन्न उत्तम किस्मों के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है किन्तु धान उत्पादक किसानों को भी प्रशासन व सरकार की उदासीन नीतियों तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है।
- आज भी कृषक प्राचीन तकनीकी व प्रविधि के प्रयोग के कारण औद्योगिक फसलों का अधिक उत्पादन नहीं कर पा रहा है। उसका रुझान केवल खाद्यान्नों व मोटे अनाजों के उत्पादन की ओर रहता है जिनका उत्पादन आसानी से हो जाता है। ग्रामीण कृषकों की यह प्रवृत्ति धान फसल के उत्पादन में कमी के लिए उत्तरदायी है जो चावल आधारित उद्योगों हेतु कच्चे माल का प्रधान स्रोत है।
- बून्दी जिले में धान, सरसों एवं सोयाबीन की गुणवत्ता व उत्पादन में आई गिरावट का प्रमुख कारण तहसील में प्रमाणिक बीज केन्द्र का अभाव होना भी रहा है। बून्दी जिले में प्रमाणिक व उत्तम किस्म के बीज उपलब्ध न होने के कारण बून्दी तहसील में खाद्य तेल उत्पादन मात्रा व गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से पिछड़ता चला गया जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव बून्दी तहसील में ग्रामीण क्षेत्रों के तेल घाणी उद्योग पर पड़ा। बून्दी जिले में उत्तम एवं प्रमाणिक किस्म के बीज प्राप्ति हेतु प्रमाणिक राजकीय बीज केन्द्र का अभाव है, जिसके कारण किसान अनाधिकृत विक्रेताओं से निम्न व घटिया किस्म के बीज अज्ञानतावश खरीद लेते हैं।
- बून्दी जिले में कृषि से सम्बन्धित एक प्रमुख समस्या किसानों को उत्पादन का पूरा मूल्य न मिलना है फलस्वरूप कृषक समय पर उत्तम खाद, बीज, कृषि यंत्र खरीदने में असमर्थ होते हैं

साथ-साथ परिश्रम का पूरा लाभ न मिल पाने के कारण कृषक कृषि कार्य के इतर अन्य आर्थिक गतिविधियों की ओर ध्यान देने लगते हैं।

- कृषि उत्पादन को सुरक्षित रखने के लिए भंडारण व अवशीतन केंद्रों की महती आवश्यकता है, जहाँ कृषक अतिरिक्त उत्पादन को सुरक्षित रख सकें तथा कृषि आधारित उद्योगों को निरंतर कच्चा माल प्राप्त हो सके। बून्दी जिले में पर्याप्त क्षमता एवं उच्च तकनीकी वाले एक राजकीय भंडारण व अवशीतन केन्द्र का अभाव है। सर्वेक्षित से यह भी ज्ञात हुआ है कि कृषक को फसल उत्पादन का फसल काटने के तुरन्त बाद ही विपणन करना होता है क्योंकि कृषकों के पास उत्पाद को सुरक्षित रखने के लिए भंडारण कक्ष का अभाव है फलस्वरूप उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है। विस्तृत क्षेत्र सर्वेक्षण से प्रत्यक्ष संवाद द्वारा ज्ञात हुआ कि कृषि से सम्बन्धित उक्त समस्याएँ सम्पूर्ण जिले के कृषकों से सम्बन्धित है जो विशेषतः औद्योगिक फसलों के उत्पादन में संलग्न है।
- बून्दी जिले में कोयला, पेट्रोलियम जैसे शक्ति संसाधनों का पूर्णतया अभाव है तथा जिले में स्थित चावल आधारित उद्योगों में शक्ति प्राप्त करने हेतु जल विद्युत, लकड़ी का कोयला आदि का प्रयोग मुख्यतः किया जाता है। ये संसाधन बून्दी जिले के कृषि आधारित उद्योगों को शक्ति प्रदान करने हेतु अपर्याप्त ही है। विद्युत शक्ति की प्राप्ति में भी निरंतर अनिश्चितता व अनियमितता बनी रहती है जिसका प्रभाव औद्योगिक उत्पादन की मात्रा व नियमितता पर पड़ता है।
- बून्दी जिले में परिवहन व्यवस्था मुख्यतः दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग तथा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 पर आधारित है। दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग तहसील के दक्षिणी भाग से गुजरता है किन्तु उक्त परिवहन सुविधाएँ बून्दी जिले के चावल आधारित उद्योगों हेतु पर्याप्त नहीं है। दिल्ली-मुम्बई रेल मार्ग पर कच्चे माल के आयात व तैयार कृषि औद्योगिक उत्पादों के निर्यात माल की कोई

व्यवस्था नहीं है परिणामतः जिले के औद्योगिक उत्पाद बड़े बाजार केंद्रों से वंचित रह जाते हैं।

- किसी भी उद्योग के विकास हेतु पूँजी व वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता एक अनिवार्य तत्त्व है। उद्योग की अवस्थापना से लेकर तैयार माल के निर्यात तक की समस्त प्रक्रियाओं में पर्याप्त मात्रा में पूँजी की आवश्यकता बनी रहती है। जिले में पूँजी तथा वित्तीय संस्थानों की सुविधा न होने के कारण उद्योगपति नवीन चावल आधारित उद्योगों की अवस्थापना का साहस नहीं जुटा पाते हैं।
- उत्तम व कुशल उत्पादन तकनीकी के अभाव में औद्योगिक इकाइयों का विकास सम्भव नहीं है। लाभ प्राप्ति एवं प्रतिस्पर्द्धा में बने रहने के लिए नवीनतम मशीनरी व उत्पादन तकनीकी की आवश्यकता रहती है। बून्दी जिले के अधिकांश चावल आधारित उद्योग (मध्यम स्तर के उद्योगों को छोड़कर) अपेक्षाकृत प्राचीन तकनीकी से उत्पादन कर रहे हैं जिससे श्रम व पूँजी का निवेश अधिक होने पर भी तुलनात्मक लाभ कम प्राप्त होता है।
- चावल उद्योग की विनिर्माण प्रक्रिया में ठोस, द्रव एवं गैसीय अपशिष्ट निकल कर मानव स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव डाल रहे हैं। जल में कैल्शियम, सोडियम व पोटेशियम एवं वायु में धुँएँ व धूल के कण जैसे प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि हो रही है फलस्वरूप श्वसन के रोग, आँतों में जलन, खाँसी, दमा, तपेदिक एवं पाचन तंत्र विकार जैसी बीमारियाँ भी श्रमिकों में पाई गई, साथ-साथ श्रमिकों द्वारा अधिक समय तक कार्य करने पर मानसिक तनाव जैसी बीमारी से भी श्रमिक प्रभावित है।

बून्दी जिले में चावल आधारित उद्योगों के प्रबन्धन व नीति निर्धारण हेतु निम्न सुझाव क्रियान्वित किये जाने चाहिये—

- औद्योगिक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार एवं सिंचाई व्यवस्थाओं में सुधार करने की आवश्यकता है। कृषकों को रियायती दरों पर कृषि ऋण, कृषि यंत्र व उपकरणों पर सरकारी सहायता एवं उर्वरकों की यथा समय पर उपलब्धता प्रदान की जाए।

- जवाहर सागर राजकीय विद्युत केन्द्र एवं केशवरायपाटन में गैस आधारित विद्युत केन्द्र की क्षमता में वृद्धि करने की आवश्यकता है। बून्दी जिले में सरसों का उत्पादन अधिक होने के कारण सरसों के भूसे पर आधारित विद्युत केन्द्र की स्थापना पर कार्य किया जाए।
- राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-52 पर भण्डार ग्रह की व्यवस्था की जाए ताकि कोटा-चित्तौड़गढ़ व दिल्ली-मुंबई रेल मार्ग पर कच्चे माल एवं निर्यात माल के आयात व निर्यात की सुविधाएँ प्राप्त हो सकें।
- जिले में "कृषि व कृषि उद्योग विकास संस्थान" की स्थापना, "राजकीय कृषि उद्योग प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना", जिले के कृषि आधारित उद्योगों में प्राचीन मशीनरी व तकनीकी का अपेक्षाकृत नवीन तकनीकी से प्रतिस्थापन पर बल दिया जाए। जिला उद्योग केन्द्र में प्रबन्धकीय क्षमता से दक्ष व्यक्तियों की नियुक्ति की आवश्यकता है।
- बून्दी जिले में "जिला उद्योग विकास समिति" द्वारा सभी चावल उद्योगपतियों में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि चावल उत्पादन में वृद्धि की जा सके।
- जिले के औद्योगिक विकास व बंद पड़ी कृषि औद्योगिक इकाइयों को पुनः प्रारम्भ करवाने हेतु कार्य किये जाए।
- बून्दी जिले को राज्य में विशेष औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं वाले जिले का दर्जा दिलवाने के प्रयास किये जाएं।
- उद्योगों में बाह्य व स्थानीय एवं कुशल व अकुशल बेरोजगारों को अधिक रोजगार के अवसर दिये जाने की आवश्यकता है ताकि क्षेत्रीय सामाजिक, आर्थिक ढांचा मजबूत हो सके।
- सरकारी प्रोत्साहन- सस्ती भूमि एवं सस्ती दरों पर ऋण देने में त्वरित निर्णय लेकर पादर्शिता अपनाई जाए।

- नये उद्योगों का विकास पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के मानदण्डों को पूरा करने पर ही उनकी स्थापना की मंजूरी दी जाए।
- पर्यटकों के आवागमन में वृद्धि हेतु चावल उत्पादक इकाइयों में बून्दी से संकेन्द्रित विभिन्न पर्यटक स्थानों की गैलेरी विकसित करनी होगी।
- उद्योगों के विकास हेतु कच्चे माल का अतिरिक्त उत्पादन में वृद्धि आवश्यक है ताकि नई इकाइयों को पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध हो।
- बून्दी जिले में धान उत्पादन में वृद्धि हेतु सिंचाई सुविधाओं का विकास इस रूप में किया जाना चाहिए ताकि चम्बल की बायीं नहर से सिंचित होने वाले अंतिम सिरे तक पानी की उपलब्धता हो, जिससे प्रति एकड़ उपज में वृद्धि हो सके और उद्योगों को पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध हो सके।
- चावल उद्योग में कार्यरत श्रमिकों के स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं की समय-समय पर मेडिकल कैंप लगाकर जांच करने की व्यवस्था उद्योग प्रबंधक द्वारा की जाए।
- बून्दी जिले में लाल चावल की पैदावर एवं उत्पादन के लिए भी कृषकों एवं उद्योगपतियों को ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि लाल चावल मैग्नीशियम एवं फाइबर का एक अच्छा स्रोत होने के साथ साथ लाल चावल की भूसी शरीर में ऑक्सीजन परिसंचरण में सुधार, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करना एवं हृदय से संबंधी रोगों को रोकती है।
- उद्योगों एवं उद्योग विभाग बून्दी द्वारा उत्पादन एवं आय सम्बन्धित आंकड़ों का उचित संधारण नहीं किया जाता है, साथ ही सरकारी स्तर पर भी इस हेतु स्तरीय प्रयास नहीं नजर आये अतः पारदर्शिता एवं शोध गुणवत्ता हेतु समकों के संधारण व्यवस्था की आवश्यकता है।

उक्त उपायों के क्रियान्वयन से बून्दी जिले के चावल आधारित उद्योगों के विकास एवं अवस्थापना को नई दिशा प्रदान किया जाना

संभव है, साथ ही इससे जिले के समग्र विकास के साथ-साथ राज्य व राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा तथा जिला बून्दी चावल आधारित उद्योगों के विशिष्ट केन्द्र के रूप में उभरेगा।

BIBLIOGRAPHY

1. Agrawal, K.C. [1982] : "Industrial Location In Agra District And Their Impact On Regional Development", Ph.D. Thesis, Agra University, Agra
2. Alexander, J.W. And Gibson L.J. [1979]: Economic Geography, N.J. [U.S.A.]
3. Alexanderson, G. [1967] : Geography of Manufacturing, Printice Hall
4. Callius, J.C.R. And Irwin, P.G.[1985]:Economic And Settlement Geography
5. Chaudhary, M.R. [1970]: Indian Industries Development And Location, Indian Book House, Kolkata
6. Durrani, P.K. [1965] : "Industrial Development And Locational Factors In Rajasthan". Annals Of Social Sciences, Vol. 1, Pp. 46-45.
7. Garg, H.S. [1980] : "Location Analysis of Industries In National Capitalregion, Ph.D. Thesis, Agra University, Agra
8. Gupta, Santosh [1995]: Research Methodology And Statistical Techniques,Deep And Deep Publications, New Delhi
9. Harrison, C.And Theakstone, W.H. [1970] : The Analysis of Geograp-hicaldata, Heinman, London.
10. Hoover, E.M. [1971] : Location of Economic Activity
11. Howard, F.G. [1970] : Geography of Agriculture : Themes And Research
12. Hull, O. [1968] : Geography of Production, Macmillan
13. Hussain, Majid [1994] : Industrial Geography, Anomal Publications Pvt. Ltd.,New Delhi
14. Industrial India Annual, Govt. Of India Publication, Various Issues
15. Kalwar, S.C. Et. Al [1991] : Remote Sensing In Resources Geography, Pointerpublisher, Jaipur, Pp. 7
16. Loknathan, P.S. [1932] : "Location of Industries In India", Journal of Themadras Geographical Association Pp. 7-14.
17. Mehta, M.M. [1952]: Location of Indian Industries, Friends Book Depot,Allahbad
18. Miller, E.W. [1971] : A Geography of Manufacturing, Printice Hall

19. Munani, M.C. [1962] : Location of Industries In Mysore City, Indianstatistical Institute.
20. Nandi, K.L. [1972] : Growth of Selected Indian Industries, The World Presspvt. Ltd. Kolkata
21. Peach, W.N. And James, A.C. [1972] : Zimmermann's World Resources Andindustries, U.S.A.
22. Rao, B.S. [1950] : Survey of Indian Industries, Oxford University Press,Kolkata, Vol. 1&2.
23. Rao, V.L.S.P. [1942] : "The Geographers And The Location of Industries",Journal Of Madras Geographical Association, Pp. 16-21.
24. Renner, G.T. [1947] : Geography of Industrial Location, Economi-cgeography, Vol. 23, Pp. 167-185.
25. Riley, R.C. [1973] : Industrial Geography
26. Saxena, Aruna [1988] : Perspectives In Industrial Geography, A Case Studyof Industrial City Of U.P., Concept Publishing Company, New Delhi.
27. Sharma, T.R.[1954]:Location Of Industries In India, Hind Kitab Ltd.,Bombay
28. Singh, S.N. [1978] : Kanpur : A Study Of Industrial Geography, Ph.D. Thesis,Gorakhpur University, Gorakhpur
29. Sinha, B.N. [1972] : Industrial Geography
30. Smith, D.M. [1981] : Industrial Location, John Willey And Sons
31. Smith, J. And Thomas, R. [1955] : Industrial And Commercial Geography,N.Y.
32. Thakur, Devendra [1993] : Research Methodology In Social Sciences, Deepand Deep Publications, New Delhi
33. Thoman, R.S. [1968] : The Geography of Economic Activity, Mcgraw Hillpublishing Company, New Delhi
34. White, C.L. And Griffen, P.N. [1966] : World Economic Geography, Metuen
35. कौशिक, एस.डी. (2001) : मानव तथा आर्थिक भूगोल, रस्तौगी पब्लिकेशंस, मेरठ
36. जैन, पुरुषोत्तम (1998) : आर्थिक भूगोल की समीक्षा, रस्तौगी प्रकाशन, मेरठ
37. टॉड, जेम्स (1987) : राजस्थान का इतिहास, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर
38. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (1997) : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद

39. नेगी, बी.एस. (2000) मानव तथा आर्थिक भूगोल, केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, मेरठ
40. नेगी. बी.एस. (2000) : कृषि भूगोल, केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, मेरठ
41. भल्ला, एल.आर. (2000) : औद्योगिक भूगोल, कुलदीप प्रकाशन, अजमेर
42. भल्ला,एल.आर. (2001) : राजस्थान का भूगोल, कुलदीप प्रकाशन, अजमेर
43. मामोरिया, सी. एवं जैन, एस.एम. (1998) : आर्थिक भूगोल, साहित्य भवन
44. शर्मा, राजीव लोचन (1975) : प्रादेशिक एवं नगरीय नियोजन, किताब घर, कानपुर
45. शर्मा, जे.पी. (2003) : प्रायोगिक भूगोल, रस्तौगी प्रकाशन, मेरठ
46. सिंह, काशीनाथ एवं सिंह जगदीश (1975) : मानव और आर्थिक भूगोल, तारा प्रकाशन,वाराणसी
47. सिंह, सविन्द्र (2001) : पर्यावरण भूगोल, प्रयोग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
48. श्रीवास्तव, जे.पी. (1993) : सामाजिक सर्वेक्षण, विधियाँ और सिद्धान्त, श्री प्रकाशन, दिल्ली

Journals and Annals

1. Annals of The Association of Rajasthan Geographer : Rajasthan Geographical Association : Annual [Various Issues]
2. A Survey of Research In Geography : ICSSR : Annual [Various Issues]
3. Geographical Aspects: Rajasthan Geographical Association: Annual [Various Issues]
4. The Geographical Review of India: Geographical Society Of India, Kolkata [Various Issues]
5. Yojana : Govt. of India : Monthly [Various Issues]
6. Kurukshetra : Govt. of India : Monthly [Various Issues]

प्रकाशित शोध पत्र



चावल फसल का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप (बून्दी जिले के सन्दर्भ में एक
भौगोलिक अध्ययन)

¹मीठा लाल मीणा

¹शोधार्थी भूगोल विभाग, कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज.)

Received: Jan 22, 2020 Revised: Jan 30, 2020; Accepted: Feb 22, 2020

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume -7, Year-(2020)
Issue-01
Article Id:-
KIJAHS 2020/V-7/ISS-1/A5

© 2020 Kaav Publications. All rights reserved

Abstract

धान के पौधे का वैज्ञानिक नाम 'ओइजा सटाइवा' है, जो एक नम तथा आर्द्र जलवायु का पादप है। धान एक प्रकार से जंगली घास के रूप में जाना जाता था, जिसका विस्तार हिमालय की पूर्वी तलहटी में फेला हुआ था। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी उत्पत्ति दक्षिणी भारत में हुई है। जहा से यह उत्तरी भारत होता हुआ चीन गया। चीन से धान का पौधा कोरिया एवं 2000 बी.सी तक यह फिलिपींस पहुंचा। 100 बी.सी में जापान तथा इंडोनेशिया में उपजाया जाने लगा। 327 बी.सी में इसे अलेक्जेंडर द्वारा भारत लाया गया तथा बाद में ग्रीक पहुंचा। अरबवासियों द्वारा यह इजिप्ट, मोरक्को, स्पेन तथा धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों तक पहुंचा। पुर्तगाली तथा नीदरलैंड द्वारा यह पश्चिमी अफ्रीका से होता हुआ अमोरेडा पहुंचा।

सामान्य परिचय :-

धान के पौधे का वैज्ञानिक नाम 'ओइजा सटाइवा' है, जो एक नम तथा आर्द्र जलवायु का पादप है। धान एक प्रकार से जंगली घास के रूप में जाना जाता था, जिसका विस्तार हिमालय की पूर्वी तलहटी में फेला हुआ था। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी उत्पत्ति दक्षिणी भारत में हुई है। जहा से यह उत्तरी भारत होता हुआ चीन गया। चीन से धान का पौधा कोरिया एवं 2000 बी.सी तक यह फिलिपींस पहुंचा। 100 बी.सी में जापान तथा इंडोनेशिया में उपजाया जाने लगा। 327 बी.सी में इसे अलेक्जेंडर द्वारा भारत लाया गया तथा बाद में ग्रीक पहुंचा। अरबवासियों द्वारा यह इजिप्ट, मोरक्को, स्पेन तथा धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों तक पहुंचा। पुर्तगाली तथा नीदरलैंड द्वारा यह पश्चिमी अफ्रीका से होता हुआ अमोरेडा पहुंचा। प्रारम्भ में चावल का उत्पादन पूरे विश्व में बहुत ही धीमी गति से हुआ। किन्तु धीरे-धीरे यह लोगों के लिए यह प्रमुख कृषि एवं आर्थिक उत्पादन की प्राथमिकता बन गया। वर्तमान में भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग चावल उत्पादन करता है। भारत विश्व का चावल उत्पादन में दूसरा स्थान रखता है, जहाँ विश्व का 21 प्रतिशत चावल

उत्पादित होता है। भारत में चावल की तीन फसलें प्रतिवर्ष उगायी जाती हैं— (1) ओस, (2) अमन तथा (3) बोरो।

आज चावल दैनिक भोजन का महत्वपूर्ण अंग बन गया है, जिसे अमीर व गरीब दोनों की थाली में परोसा जाता है। हिन्दू समाज के पर्व व त्योहार के धार्मिक कार्यों में चावल विशेष महत्व रखता है।

बून्दी जिले में उद्योग के कारक, प्रवृत्ति एवं समस्याओं के आधार पर अध्ययन किया गया है इस विधि को उद्योग विशेष आधारित अध्ययन विधि कहते हैं। इस विधि के अन्तर्गत एक ही प्रकार का उद्योग लिया गया है एवं उस उद्योग का समग्र रूप से अध्ययन किया गया है।

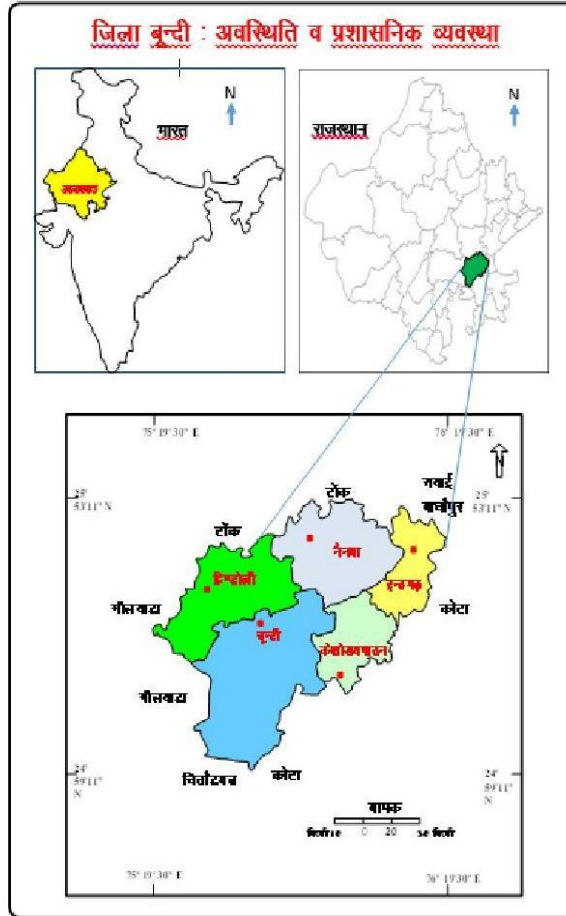
अध्ययन क्षेत्र : एक परिचय :-

अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह मैदानों, पठारों एवं पहाड़ियों का मिलाजुला स्वरूप है। बून्दी जिला इतिहास में प्रेम, बलिदान, शौर्य व त्याग की कहानियाँ समेटे हुये हैं। कुण्ड तथा बाण्डियों की इस ऐतिहासिक नगरी को "सिटी ऑफ स्टेपवेल्ट" भी कहा जाता है। सन् 1241 में हाडा वंश के श्री राय देवा ने मीणा सरदारों से जीता और बून्दी राज्य

की स्थापना की। प्रशासनिक दृष्टि से 1987 के दौरान अस्तित्व में आया। 15 जनवरी 1987 में संभागीय व्यवस्था के अन्तर्गत राजस्थान राज्य को 7 संभागों में विभाजित किया गया है, जिनमें बून्दी जिला कोटा संभाग में सम्मिलित है। बून्दी जिले की आकृति "अनियमित समलम्ब चतुर्भुज" के समान है, जो पूर्व की ओर झुका हुआ है। जिला की भौगोलिक सीमाएँ 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।² जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार बून्दी जिले का कुल क्षेत्रफल 5763.00 वर्ग किलोमीटर है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22 वाँ स्थान है। बून्दी जिले का उत्तर से दक्षिण विस्तार 104.6 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार 111 कि.मी. है।³ बून्दी जिले के उत्तर में टोंक जिला, पश्चिम में भीलवाड़ा, दक्षिण-पश्चिम में चित्तौड़ तथा दक्षिणी में कोटा स्थित है जो चम्बल नदी द्वारा बून्दी जिले से विभाजित होता है। जिले की अन्य तहसीलों में नैनवा का क्षेत्रफल 1189.95 वर्ग किमी, केशवराय पाटन तहसील का क्षेत्रफल 706.13 वर्ग किमी तथा बून्दी तहसील (बून्दी तथा तालेड़ा ब्लोक) का क्षेत्रफल 1922.27 वर्ग किमी है।⁴

मानचित्र नं. 1 बून्दी तहसील की भौगोलिक स्थिति



स्रोत : स्थलाकृतिक पत्रक , भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर (2005).

शोध – उद्देश्य :-

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. बून्दी जिले में चावल फसल का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप का अध्ययन करना ।
2. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तहसीलों के अन्तर्गत चावल फसल उत्पादन एवं उत्पादकता के स्तर को जानना ।

शोध – प्रश्न :-

प्रस्तुत लघु शोध प्रपत्र में निम्न प्रश्न निर्धारित किये गये हैं।

1. बून्दी जिले में चावल फसल का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप किस प्रकार से है ?
2. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तहसीलों के अन्तर्गत चावल फसल उत्पादन एवं उत्पादकता किस प्रकार से है ?

शोध – प्रविधियाँ :-

अध्ययन क्षेत्र में कृषि का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप के विश्लेषण करने के लिये द्वितीयक आंकड़ों को उपयोग में लिया गया है। इनके अतिरिक्त भूगोल विषय में प्रयुक्त जैसे- आरेख विधि, सांख्यिक विधि एवं मानचित्रों का प्रयोग किया है।

शोध- विश्लेषण :-

चावल फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल

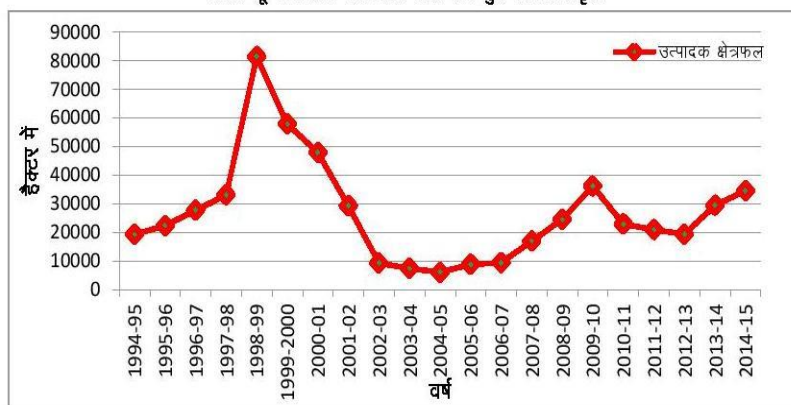
राजस्थान के कुल चावल उत्पादक क्षेत्र का 20.59 प्रतिशत भाग केवल बून्दी जिले में फैला हुआ है। आरेख क्रमांक 3.8 में जिले में धान उत्पादक क्षेत्र की तुलनात्मक प्रवृत्ति दिखाई गई है, जिसके अध्ययन से ज्ञात होत है कि जिले का औसत चावल उत्पादक क्षेत्र 26886 हैक्टर है। विगत पाँच वर्षों (2014-15 के अन्त तक) के दौरान औसत उत्पादक क्षेत्रफल 25439 हैक्टर है। जिले में धान फसल के उत्पादक क्षेत्रफल के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 में 19299 हैक्टर था, जो वर्ष 2014-15 में 34548 हैक्टर हो गया है। इस प्रकार 21 वर्षों के दौरान 79.01 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 21 वर्षों के दौरान धान फसल के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 1998-99 में

81378 हैक्टर तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वर्ष 2004-05 में 6053 हैक्टर रहा।

बून्दी जिले में सर्वाधिक चावल उत्पादक क्षेत्र बून्दी तहसील में 28427 हैक्टर है, जो कि कुल जिले का 82.28 प्रतिशत क्षेत्र रखता है। अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिले में विगत 21 वर्षों के दौरान चावल उत्पादक क्षेत्र में 85.10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 से वर्ष 2014-15 में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत बून्दी, नैनवा, हिण्डोली तथा इन्द्रगढ़ तहसील में वृद्धि एवं केशवरायपाटन तहसील में कमी पाई गई है। 21 वर्षों के दौरान सर्वाधिक वृद्धि नैनवा एवं इन्द्रगढ़ हुई है। इन तहसीलों में वर्ष 1994-95 में मात्र 3 हैक्टर पर ही धान की खेती होती थी, जो वर्ष 2014-15 में 1357 हैक्टर वृद्धि के साथ 1360 हैक्टर पर की जा रही है। किन्तु केशवरायपाटन तहसील में चावल उत्पादक क्षेत्र के अन्तर्गत 26.34 प्रतिशत की कमी के साथ क्षेत्रफल 4709 हैक्टर रह गया है। जिसका प्रमुख कारण बाँय चम्बल नहर से जल की मात्रा में कमी करना रहा है।

आरेख - 1

जिला बून्दी : धान उत्पादक क्षेत्र का तुलनात्मक प्रवृत्ति



तालिका - 1 जिला बून्दी : धान उत्पादन व उत्पादक क्षेत्र का तुलनात्मक प्रतिरूप

क्र. सं.	वर्ष	उत्पादक क्षेत्रफल (हैक्टर में)	औसत से विचलन (प्रतिशत में)	उत्पादन (मि. टन)	औसत से विचलन (प्रतिशत में)
1.	1994-95	19299	-28.22	39702	86.92
2.	1995-96	22331	-16.94	46133	101.00
3.	1996-97	27725	3.12	46502	101.81
4.	1997-98	33077	23.03	65881	144.23
5.	1998-99	81378	202.68	41051	89.87
6.	1999-2000	57860	115.20	110602	242.14
7.	2000-01	47883	78.10	43058	94.27
8.	2001-02	29295	8.96	54992	120.39
9.	2002-03	9255	-65.58	2837	6.21
10.	2003-04	7442	-72.32	13206	28.91
11.	2004-05	6053	-77.49	11832	25.90
12.	2005-06	8788	-67.31	24510	53.66
13.	2006-07	9421	-64.96	26975	59.06
14.	2007-08	16957	-36.93	48835	106.91

15.	2008-09	24506	-8.85	69300	151.72
16.	2009-10	36145	34.44	32862	71.94
17.	2010-11	22898	-14.83	45764	100.19
18.	2011-12	20974	-21.99	43814	95.92
19.	2012-13	19312	-28.17	38624	84.56
20.	2013-14	29465	9.59	70096	153.46
21.	2014-15	34548	28.50	82646	180.94

स्रोत - जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी 2016

तालिका - 2 जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल

क्र. स.	तहसील	उत्पादक क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)		परिवर्तन	
		वर्ष 2014-15	वर्ष 1994-95	हेक्टेयर में	प्रतिशत में
1.	बून्दी	28427	12535	15892	126.78
2.	के.पाटन	4709	6393	-1684	-26.34
3.	नैनवा एवं इन्द्रगढ़	186	3	1357	6100.0
4.	हिण्डोली	1226	368	858	233.15
5.	जिला बून्दी	34548	19299	16243	79.01

स्रोत : जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादन :-

बून्दी जिले में क्षेत्रफल की अपेक्षा चावल के उत्पादन में और तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिसमें वर्ष 1994-95 से 2014-15 के दौरान 108.29 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। जिले में चावल की कृषि के अन्तर्गत कुल खालान्तो के उत्पादन का 24.19 प्रतिशत एवं समस्त अनाज उत्पादन का 26.80 प्रतिशत उत्पादन होता है (2014-15)। वर्ष 1994-95 में जिले में कुल चावल उत्पादन 39702 मैट्रिक टन रहा, जो कि वर्ष 2014-15 में 82646 मैट्रिक टन हो गया है। वर्ष 1999-2000 के दौरान सर्वाधिक उत्पादन 110602 मैट्रिक टन हुआ जो कि औसत उत्पादन से 242.14 प्रतिशत अधिक एवं वर्ष 2002-03 में जिले का उत्पादन न्यूनतम के रूप में 2837 मैट्रिक टन की रहा। अतः विगत 21 वर्षों में जिले का औसत चावल उत्पादन 48677 मैट्रिक टन है।

बून्दी जिले में बून्दी तहसील में चावल महत्वपूर्ण फसल है। जिले में कुल चावल उत्पादन में 82.42 प्रतिशत बून्दी तहसील, 11.39 प्रतिशत केशवरायपाटन तहसील एवं 5.74 प्रतिशत का उत्पादन हिण्डोली तहसील द्वारा किया गया है। बून्दी जिले का वर्ष 2014-15 में न्यूनतम उत्पादन नैनवा एवं इन्द्रगढ़ तहसील में हुआ, जो कि कुल उत्पादन में मात्र 372 मैट्रिक टन है। नैनवा एवं इन्द्रगढ़ तहसील में विगत 21 वर्षों के दौरान चावल उत्पादन क्षेत्र में 6100 प्रतिशत परिवर्तन आया है। हिण्डोली एवं बून्दी तहसील में वर्ष 1994-95 की अपेक्षा वर्ष 2014-15 में क्रमशः 171.89 प्रतिशत एवं 157.83 प्रतिशत की वृद्धि हुई है किन्तु केशवरायपाटन तहसील में 26.34 प्रतिशत कमी के साथ चावल उत्पादन 9478 मैट्रिक टन रहा है। तालिका क्रमांक 3.8 में चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादन दर्शाया गया है।

तालिका - 3 जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादन

क्र. स.	तहसील	उत्पादन (मै. टन)		परिवर्तन	
		वर्ष 2014-15	वर्ष 1994-95	(मै. टन) में	प्रतिशत में
1.	बून्दी	68162	25070	43092	171.89
2.	के.पाटन	9418	12786	-3368	-26.34
3.	नैनवा एवं इन्द्रगढ़	372	6	366	6100.00
4.	हिण्डोली	4744	1840	2904	157.83
5.	जिला बून्दी	82696	39702	42994	108.29

स्रोत : जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2016)

चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता

कृषि उत्पादकता को प्रति इकाई कृषि क्षेत्र, प्रति कृषि श्रमिक अथवा प्रति इकाई वित्तीय मूल्य पर कुल कृषि उत्पादन के रूप में व्यक्त किया जाता है। कृषि उत्पादकता एक प्रकार से क्षेत्र के उत्पाद का गुणांक सम्बोधन है। कृषि उत्पादकता बढ़ाने में जिले के

जिन कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है उनमें भौतिक पृष्ठभूमि के अलावा उन्नतशील बीज, उर्वरक, सिंचाई एवं यंत्रीकरण हैं। जिले में वर्ष 1994-95 में 2066 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर उत्पादकता थी जो वर्ष 2014-15 में 566.70 प्रतिशत वृद्धि के साथ 13774 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई है। यह वृद्धि वर्ष 2008-09 में 36.88 में प्रतिशत

रही। आरेख क्रमांक 3.9 से स्पष्ट है कि जिले में चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता में वृद्धि की प्रवृत्ति वर्ष 2010-11 से रही है।

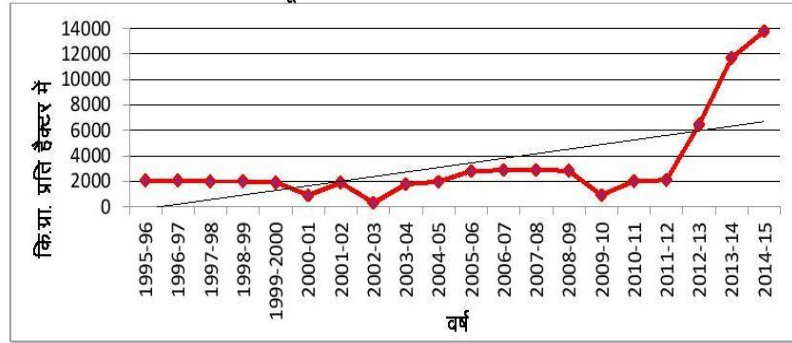
जिले में चावल फसल के अन्तर्गत औसत उत्पादकता 3253 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर है।

तालिका - 4 जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता (कि.ग्रा. प्रति हैक्टर)

क्र. स.	वर्ष	उत्पादन	क्र. स.	वर्ष	उत्पादन
1.	1995-96	2066	11	2005-06	2789
2.	1996-97	2046	12	2006-07	2863
3.	1997-98	1992	13	2007-08	2878
4.	1998-99	1982	14	2008-09	2828
5.	1999-2000	1912	15	2009-10	909
6.	2000-01	899	16	2010-11	1999
7.	2001-02	1877	17	2011-12	2080
8.	2002-03	307	18	2012-13	6437
9.	2003-04	1775	19	2013-14	11683
10.	2004-05	1955	20	2014-15	13774

स्रोत : जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी (2018)

आरेख - 2 जिला बून्दी : चावल फसल के अन्तर्गत उत्पादकता



संश्लेषण एवं निष्कर्ष :-

वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में कुल अनाज उत्पादक फसलों के क्षेत्र का 14.15 प्रतिशत उत्पादक क्षेत्र धान फसल के अन्तर्गत हुआ है। जिले में 21 वर्षों में औसत से अधिक उत्पादक क्षेत्रफल वाले 9 वर्ष रहे। वर्ष 2004-05 में औसत से 77.49 प्रतिशत की कमी आयी है।

जिले में चावल उत्पादक क्षेत्रफल में प्रथम स्थान पर बून्दी तहसील तथा द्वितीय स्थान पर केशवरायपाटन तहसील है। केशवरायपाटन तहसील जिले के कुल चावल उत्पादक क्षेत्रफल का 13.65 प्रतिशत भाग रखती है। अन्य तहसीलों में हिण्डोली 3.55 प्रतिशत तथा नैनवां 0.39 प्रतिशत क्षेत्रफल रखती है। बून्दी जिले की बून्दी एवं केशवरायपाटन प्रमुख चावल उत्पादक तहसील है, जो कि जिले के कुल उत्पादन का क्रमशः 82.42 प्रतिशत एवं 11.39 प्रतिशत भाग रखती है। प्रदेशिक स्तर पर जिले में चावल का उत्पादन चम्बल एवं मेज नदी के दोआब में किया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- कौशिक, एस. डी. एवं अलका गौतम (2015), संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.सं. 237
- स्थलाकृतिक पत्रक(2016), भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर
- मोहम्मद, उस्मान (2010) "बून्दी जिले में मानव संसाधन एवं कृषि विकास के स्तर का अध्ययन, पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 26
- जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2016, जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 6
- Rajasthan Agricultural Statistical- At A Glance (2015-16), P-178



KAAV
PUBLICATIONS ... Stepping into New Horizon

Visit us at: www.kaavpublications.org; www.kaav.org

Ref No.: KIJAHS 2020 /V-7/I-1/As5

ISSN: 2348 - 4349

IMPACT FACTOR :- 7.9103

Certificate of Publication

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Blind Peer Review Quarterly Online Journal (KIJAHS)

This is to certify that

मीहा लाल मीणा, बोचार्थी भूगोल विभाग, कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज.)

has written an article/research paper on entitled

“यावल फसल का स्थानिक रूप- सामयिक प्रक्षेप (बन्दी प्रिले के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन)”

Is Approved by the
Review Committee, and is therefore published in (KIJAHS)
In Volume 7 Issue 1 Year 2020


KAHV PUBLICATIONS
203 2nd Floor, Kirti Nagar
New Delhi-110060
Editor-in-Chief
Prof. (Dr) Kirti Agarwal
Kaav Publications

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

* मीठा लाल मीणा

सामान्य परिचय

प्राचीन काल से ही बून्दी जिला कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला जिला रहा है, जहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 32.57 प्रतिशत भाग कृषि एवं सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है। बून्दी जिले का कृषि प्रधान औद्योगिक भू-दृश्य एवं विकास भी कृषि उत्पादन व विविधता का ही परिणाम है। जिले की भौगोलिक दशाएँ विभिन्न प्रकार की फसलों के उत्पादन के लिए अनुकूल वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले के सकल बोया गया भौगोलिक क्षेत्रफल का 62.28 प्रतिशत भाग सकल सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत है।¹ जिले में कृषि की आदर्श दशाएँ उपलब्ध हैं। फलस्वरूप बून्दी जिले में कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है, किन्तु प्रतिकूल एवं विविधतायुक्त भौगोलिक परिस्थितियाँ जैसे - वर्षा, तापमान, सिंचाई, मृदा, तकनीकी, सामाजिक-आर्थिक प्रगति तहसील अनुसार स्थानिक कृषि उत्पादन प्रतिरूप को प्रभावित करती है। अतः बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप में पर्याप्त विभिन्नता पाई जाती है। बून्दी जिले में उत्पादित की जाने वाली फसलों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है -

1. रबी की फसल (जनालू की फसल)
2. खरीफ की फसल (स्यालू की फसल)
3. जायद की फसल

अध्ययन क्षेत्र : एक परिचय

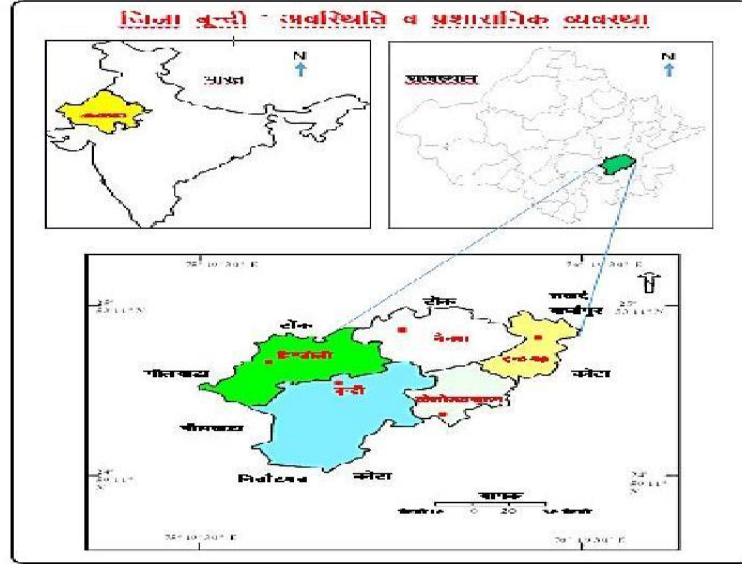
अध्ययन क्षेत्र बून्दी जिला राजस्थान राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह मैदानों, पठारी एवं पहाड़ियों का मिलाजुला स्वरूप है। बून्दी जिला इतिहास में प्रेम, बलिदान, शौर्य व त्याग की कहानियाँ समेटे हुये हैं। कुण्ड तथा बावडियों की इस ऐतिहासिक नगरी को सिटी ऑफ स्टेपवेल्स भी कहा जाता है। सन् 1241 में हाडा वंश के श्री राव देवा ने मीणा सरदारों से जीता और बून्दी राज्य की स्थापना की। प्रशासनिक दृष्टि से 1987 के दौरान अस्तित्व में आया। 15 जनवरी 1987 में संभागीय व्यवस्था के अन्तर्गत राजस्थान राज्य को 7 संभागों में विभाजित किया गया है, जिनमें बून्दी जिला कोटा संभाग में सम्मिलित है। बून्दी जिले की आकृति अनियमित समलम्ब चतुर्भुज के समान है, जो पूर्व की ओर झुका हुआ है। जिला की भौगोलिक सीमाएँ 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।² जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार बून्दी जिले का कुल क्षेत्रफल 5763.00 वर्ग किलोमीटर है।

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

क्षेत्रफल की दृष्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22 वाँ स्थान है। बून्दी जिले का उत्तर से दक्षिण विस्तार 104.6 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार 111 कि.मी. है।³ बून्दी जिले के उत्तर में टोंक जिला, पश्चिम में भीलवाड़ा, दक्षिण-पश्चिम में चित्तौड़ तथा दक्षिणी में कोटा स्थित है जो चम्बल नदी द्वारा बून्दी जिले से विभाजित होता है।

मानचित्र नं. 1 बून्दी तहसील की भौगोलिक स्थिति



स्रोत : स्थलाकृतिक पत्रक , भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर (2005).

उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. बून्दी जिले में कृषि का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तहसीलों के अन्तर्गत फसल उत्पादन एवं उत्पादकता के स्तर को जानना।

शोध-प्रश्न

प्रस्तुत लघु शोध प्रपत्र में निम्न प्रश्न निर्धारित किये गये हैं।

1. बून्दी जिले में कृषि का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप किस प्रकार से है?
2. अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तहसीलों के अन्तर्गत फसल उत्पादन एवं उत्पादकता किस प्रकार से है?

शोध-प्रविधियाँ

अध्ययन क्षेत्र में कृषि का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप के विश्लेषण करने के लिये द्वितीयक आंकड़ों को उपयोग में लिया गया है। है। इनके अतिरिक्त भूगोल विषय में प्रयुक्त जैसे- आरेख विधि, सारणीकरण विधि एवं मानचित्रों का प्रयोग किया है।

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

शोध-विश्लेषण

फसलों का तहसील अनुसार क्षेत्र वितरण प्रतिकरूप

तालिका - 1
जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र

(क्षेत्रफल-हैक्टर में)

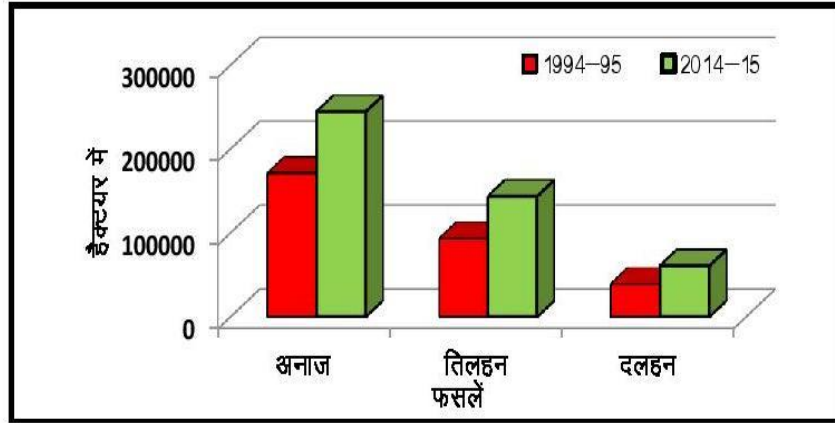
क्र.स.	वर्ष	फसलें				
		अनाज	दलहन	तिलहन	मसाले	फल-सब्जी
1.	1994-95	171001	39110	93185	2174	317
2.	1995-96	169440	34422	64412	266	148
3.	1996-97	184863	25566	117324	4127	412
4.	1997-98	194463	20829	129700	4999	2416
5.	1998-99	210311	29277	116840	2228	2474
6.	1999-00	215535	14851	110907	1179	2183
7.	2000-01	195730	29082	78206	3653	2916
8.	2001-02	180779	44196	100252	7998	2827
9.	2002-03	1153685	42956	69781	7875	2872
10.	2003-04	172660	42086	115014	10714	2743
11.	2004-05	124658	9479	202534	2167	2974
12.	2005-06	142175	11453	210047	6053	2435
13.	2006-07	156050	16087	172899	2897	2813
14.	2007-08	187787	36921	150098	4711	2904
15.	2008-09	179482	23265	180634	10532	2834
16.	2009-10	187409	28515	141746	7303	2469
17.	2010-11	228377	43163	144034	7042	2524
18.	2011-12	221821	61968	152046	8508	2765
19.	2012-13	219416	54416	169431	2909	2785
20.	2013-14	221784	47841	165410	2403	2935
21.	2014-15	244104	60511	143430	4838	2716

स्रोत : जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन (2016), बून्दी

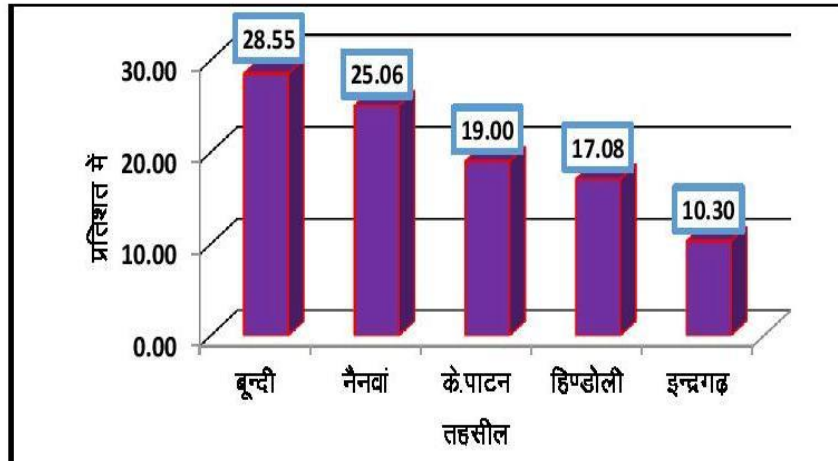
बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिकरूप

मीठा लाल मीणा

आरेख - 1
जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल



आरेख - 2
जिला बून्दी : फसलों के अन्तर्गत
तहसील अनुसार क्षेत्रफल (2014-15)



बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार के अनाज, दलहन, तिलहन, मसाले एवं फल-सब्जियों की फसलें समान रूप से उत्पन्न की जाती हैं जिनमें खाद्यान्न, व्यापारिक तथा औद्योगिक फसलें भी सम्मिलित हैं, जो जिले की अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान रखती हैं। किन्तु तहसील स्तर पर इस फसल उत्पादन प्रतिरूप में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। प्रत्येक तहसील में भिन्न-भिन्न प्रकार की फसलों की प्रधानता दिखाई देती है। तालिका व आरेख 3.4 में बून्दी जिले में विभिन्न प्रकार की फसलों के अन्तर्गत उत्पादक क्षेत्र प्रतिरूप दर्शाया गया है।

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

वर्ष 1994-95 में अनाजों के अन्तर्गत क्षेत्रफल 171001 हैक्टर था जो वर्ष 2014-15 में 42.75 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 244104 हैक्टेयर हो गया है।⁴ दलहन एवं तिलहन के बुआई के क्षेत्रफल के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 की अपेक्षा वर्ष 2014-15 में क्रमशः 53.92 एवं 54.72 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बून्दी जिले में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली फसलों में क्रमशः गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, उड़द एवं चावल है, जो क्रमशः कुल कृषित क्षेत्र के 37.43 प्रतिशत, 18.29 प्रतिशत, 11.56 प्रतिशत, 8.69 प्रतिशत एवं 7.47 प्रतिशत क्षेत्र पर बोई जाती है।

फसल उत्पादन प्रतिरूप

अध्ययन क्षेत्र में जलवायवीय एवं भौगोलिक दशाएँ तहसील स्तर पर भिन्न-भिन्न पाई जाती है। फलस्वरूप प्रत्येक तहसील में फसल उत्पादन प्रतिरूप भी भिन्न-भिन्न पाया जाता है। जिले में कहीं खाद्यान्न फसलों की प्रधानता है तो कहीं औद्योगिक एवं व्यवसायिक फसलों का उत्पादन किया जाता है। बून्दी जिले में उत्पादित की जाने वाली फसलों में गेहूँ, चावल, मक्का, सरसों, सोयाबीन, मसाले, गन्ना, फल-सब्जी, दलहन आदि हैं। बून्दी जिला कोटा संभाग का 44.08 प्रतिशत अनाज, 60.64 प्रतिशत दालें, 40.54 प्रतिशत तिलहन उत्पादित करता है।⁵

तालिका एवं आरेख 3.6 में बून्दी जिले में तहसील अनुसार फसल उत्पादन प्रतिरूप दर्शाया गया है। जिसके विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्ष 2014-15 में बून्दी जिले में कृषि उत्पादन की दृष्टि से बून्दी तहसील का प्रथम स्थान रहा जिसने बून्दी जिले के कुल कृषि उत्पादन का 40.03 प्रतिशत उत्पादित किया।⁶ द्वितीय व तृतीय स्थान पर केशवरायपाटन एवं नैनवां तहसीलें रही जिन्होंने कुल उत्पादन का क्रमशः 23.97 एवं 13.55 प्रतिशत उत्पादित किया। कृषि उत्पादन की दृष्टि से इन्द्रगढ़ तहसील में सबसे कम उत्पादन (8.94 प्रतिशत) हुआ है। हिण्डोली तहसील द्वारा जिले के कुल उत्पादन का 13.50 प्रतिशत उत्पादन किया है। बून्दी जिले में वर्ष 2014-15 में उत्पादन की दृष्टि से अनाज फसलों में गेहूँ की फसल प्रथम स्थान पर रही है, जो कुल कृषि उत्पादन का 39.91 प्रतिशत है।⁷

तालिका - 2

जिला बून्दी : तहसील अनुसार कृषि उत्पादन

(मैट्रिक टन में)

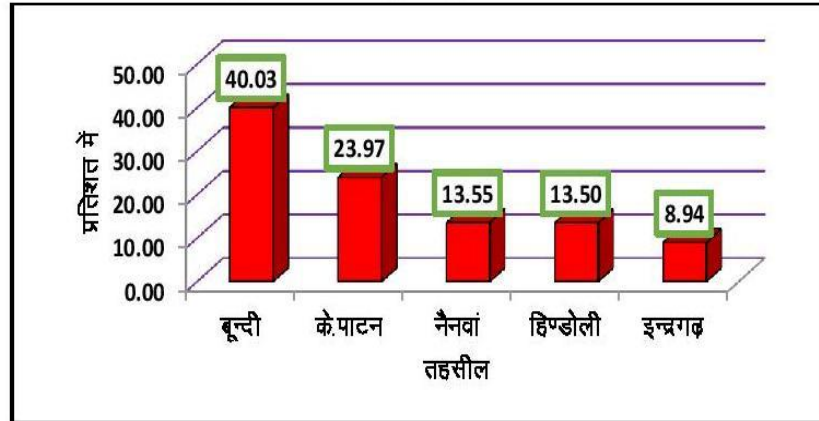
क्र. स.	तहसील	अनाज	दलहन	तिलहन	मसाले	सब्जी	गन्ना	कुल
1.	बून्दी	167725	648	24643	1322	30	405	194773
2.	के.पाटन	59834	2797	53622	374	0	10	116637
3.	इन्द्रगढ़	15235	5921	20908	1410	0	14	43488
4.	नैनवां	12948	20543	24833	14	0	7590	65928
5.	हिण्डोली	52653	3449	7197	151	79	2155	65684
6.	बून्दी जिला	308395	33358	131203	3271	109	10174	486510

स्रोत - जिला भू-अभिलेख प्रतिवेदन, बून्दी 2016

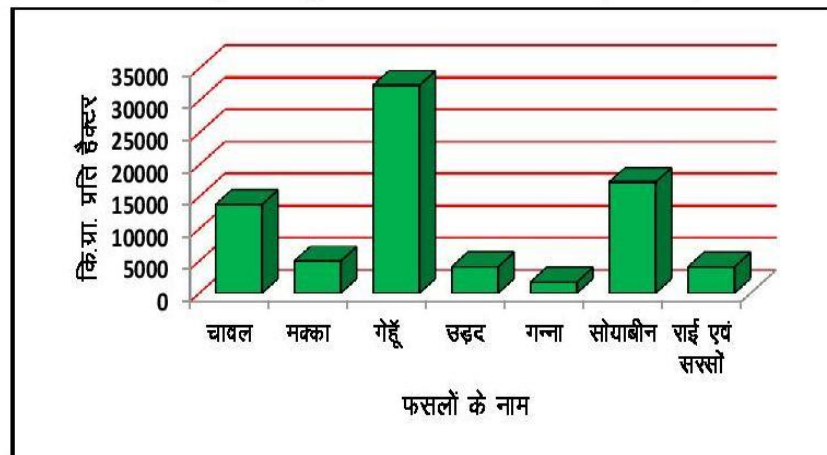
बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

आरेख - 3
जिला बून्दी : तहसील अनुसार कृषि उत्पादन (2014-15)



आरेख - 4
जिला बून्दी : प्रमुख फसलों का औसत उत्पादन (2014-15)



सारांश एवं निष्कर्ष

बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप का प्रतिदर्श अध्ययन करने से स्पष्ट है कि बून्दी जिले के कृषि उत्पादन प्रतिरूप में तहसील अनुसार पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है, जिसका प्रमुख कारण भौगोलिक दशाएँ एवं जल की उपलब्धता रही है। जिन तहसील में सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में है वहाँ पर कृषि उत्पादन उच्च पाया गया है। बून्दी जिले में फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र की दृष्टि से बून्दी तहसील प्रथम

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

पायदान पर है जहाँ पर 131984 हैक्टर क्षेत्र कृषि कार्य के अन्तर्गत है जबकि अन्तिम पायदान पर इन्द्रगढ़ है जहाँ केवल 47632 हैक्टर क्षेत्र कृषि के अन्तर्गत है। अतः फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक क्षेत्रफल अनाज फसलों के अन्तर्गत है।

बून्दी जिला कुल अनाज उत्पादन की दृष्टि से कोटा संभाग में प्रथम स्थान रखता है। कुल कृषि उत्पादन में तिलहन के अन्तर्गत सर्वाधिक योगदान सोयाबीन का रहा जिससे कुल कृषि उत्पादन का 21.28 प्रतिशत प्राप्त हुआ। जबकी दलहन के अन्तर्गत उड़द कुल कृषि उत्पादन का 5.04 प्रतिशत प्रदान कर प्रथम स्थान पर रही है। बून्दी जिले का कुल कृषि उत्पादन 486510 मैट्रिक टन है। कुल कृषि उत्पादन का 63.39 प्रतिशत खाद्यान्नों से तथा 26.97 प्रतिशत तिलहन से, 6.86 प्रतिशत दलहन से एवं 0.67 प्रतिशत मसालों से प्राप्त होता है।

***शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा (राज.)**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Statistical Year Book of Rajasthan (2017),P-134
2. स्थलाकृतिक पत्रक(2016), भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जयपुर
3. मोहम्मद, उस्मान (2010) "बून्दी जिले में मानव संसाधन एवं कृषि विकास के स्तर का अध्ययन, पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, पृ.सं. 26
4. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 1996, जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 33
5. गौतम, भारतेन्दु(2010) "कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक-सामयिक विश्लेषण जिला बून्दी का एक प्रतिक अध्ययन" पीएच.डी. शोध ग्रन्थ, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा पृ.सं. 68
6. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2016, जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 19
7. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2016, जिला बून्दी, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान, जयपुर, पृ.सं. 19

बून्दी जिले में कृषि फसलों का स्थानिक एवं सामयिक प्रतिरूप

मीठा लाल मीणा

ASCENT INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH ANALYSIS

(A Bi-lingual Multi Disciplinary Peer Reviewed International Quarterly Journal)

ISSN : 2455-5967 • Impact Factor (PIF) 2.148 • Indexed in I2OR

Certificate OF PUBLICATION

Is hereby awarding this certificate to

Prof./ Dr./ Mr/ Ms./ मीरालाल श्रीणा , शोधार्थी


of भूगोल विभाग , कोटा विश्वविद्यालय

in recognition of publication of research paper entitle

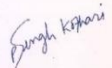
बुन्दी जिले में हृषि फसलो का स्थानिक एवं

सांभयिक प्रतिरूप

Published in AIJRA Vol - V ISSUE IV Oct Dec 2019
www.ijcms2015.co Article No 8


Dr. Anshul Sharma
Associate Editor


Dr. Anupam Jain
Managing Editor


Dr. Surendra P. Kothari
Chief Editor



PUBLISHED BY:
NAVBHARAT MEMORIAL FOUNDATION
(A tribute to Late Shri Narendra Singh Kothari)

प्रश्नावली एवं परिशिष्ट

प्रश्नावली -1

प्रश्नावली मिल संचालक हेतु

दिनांक :

1. मिल का नाम व स्तर :.....
2. ग्राम/क्षेत्र :.....
3. प्रबंधक/मालिक का नाम :.....
4. उद्योग की अवस्थिति के लिए उत्तरदायी कारक—
बाजार की समीपता श्रमिकों की उपलब्धता कच्चे माल की
प्रधानता
5. औसत उत्पादन (प्रतिदिन)
6. आधारभूत सुविधाएँ व स्रोत—
 - I. परिवहन
 - II. शक्ति संसाधन
 - III. श्रमिक
 - IV. पूँजी
 - V. प्रबंधन व तकनीकी
 - VI. मशीनरी
7. कच्चे माल का स्रोत
8. निर्यातक उत्पाद हाँ नहीं
9. कच्चा माल एवं उत्पादन की मात्रा

वर्ष	2009 -2010	2010 -2011	2011 -2012	2012 -2013	2013 -2014	2014 -2015	2015 -2016	2016 -2017	2017 -2018
कच्चा माल									
उत्पादन									

10. उत्पादन का विपणन

11. मिल में कार्यरत श्रमिकों के निवास स्थान की दूरी का स्तर—

I. स्थानीय

10 कि.मी. 20 कि.मी. 30 कि.मी. 30 कि.मी.से अधिक

II. जिला

III. राज्य

IV. देश

12. कृषि आधारित उद्योग से सृजित आय का परिवार के भरण—पोषण में योगदान

25 प्रतिशत 50 प्रतिशत 75 प्रतिशत 100 प्रतिशत

13. क्षेत्र/ ग्राम की अर्थव्यवस्था में योगदान

I. रोजगार

II. आय

III. आर्थिक विकास

14. क्षेत्र/ ग्राम की सामाजिक विकास में योगदान

I. व्यक्तिगत विकास

II. सामूहिक विकास

15. उद्योग के समक्ष प्रमुख समस्याएँ —

16. समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव/ आवश्यकता —.....

.....
.....
.....
.....

उत्तरदाता के हस्ताक्षर

प्रश्नावली – 2

मिल में कार्यरत श्रमिकों हेतु

दिनांक :

1. श्रमिक का नाम :.....
2. ग्राम :.....
3. मिल का नाम :.....
4. शैक्षणिक योग्यता :.....
5. एकल परिवार () संयुक्त परिवार ()
6. कृषि आधारित उद्योग से सृजित आय का परिवार के भरण-पोषण में योगदान
25 प्रतिशत 50 प्रतिशत 75 प्रतिशत 100 प्रतिशत
7. गृह संरचना –
 - a) गृह प्रकार : कच्चा / पक्का / मिश्रित
परम्परागत आधुनिक झोंपड़ी / कच्चा घर
 - b) कमरों की संख्याकुल निर्मित क्षेत्रफल
(Builtup area)Sq.Ft.
 - c) स्नानघर का प्रकार हाँ / नहीं
घर के अन्दर घर के बाहर
 - d) शौचालय का प्रकार हाँ / नहीं
 - I. घर में सार्वजनिक खुले में
 - II. शौचालय-स्वयं द्वारा निर्मित () या सरकार द्वारा सहायता प्राप्त निर्मित ()
8. जलापूर्ति – व्यक्तिगत / सार्वजनिक
नल कुँआ हैंड पम्प ट्यूबवेल
9. विद्युत – हाँ / नहीं ? यदि हाँ – औसत मासिक व्यय.....
 1. रसोई का प्रकार
अलग से किसी कमरे के एक भाग में घर के बाहर
 2. रसोई में ईंधन

- लकड़ी केरोसीन गैस अन्य
3. घर से अपशिष्ट/कचरे का निस्तारण
4. वार्षिक आय..... प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष आय.....
5. बीमारी के दौरान उपचार—
सरकारी निजी घरेलू उपचार
6. एक वर्ष में परिवार के खर्चे
a) कुल खर्च.....
b) स्वास्थ्य.....शिक्षा..... सांस्कृतिक कार्यक्रम/त्योहारअन्य साधन.....
7. सामाजिक-आर्थिक विवरण :
अ. विद्युत उपकरण – प्रकार संख्या
i. टी.वी. : रंगीन/एल सी डी/अन्य
- ii. रेफ्रीजरेटर : हाँ/नहीं
- iii. टेलीफोन : मोबाइल/लैण्डलाइन
- iv. परिवहन : सार्वजनिक/साईकिल/दोपहिया/चौपहिया/अन्य ..
- v. पेयजल : उपचारित/अनुपचारित
- vi. समाचार पत्र : हाँ/नहीं

उत्तरदाता के हस्ताक्षर

परिशिष्ट -1

जिला बून्दी : जनसंख्या

क्र. सं.	वर्ष	पुरुष	महिला	कुल जनसंख्या
1.	1931	118156	108326	226482
2.	1941	135794	124626	260420
3.	1951	152768	139389	292157
4.	1961	186383	166884	353267
5.	1971	248055	219738	467793
6.	1981	324259	287758	612017
7.	1991	407826	362422	770248
8.	2001	504818	457802	962620
9.	2011	577160	533746	1110906

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, बून्दी

परिशिष्ट - 2

जिला बून्दी : जनसंख्या प्रतिरूप

क्र. सं.	तहसील	पुरुष		महिला		कुल जनसंख्या	
		वर्ष 2001	वर्ष 2011	वर्ष 2001	वर्ष 2011	वर्ष 2001	वर्ष 2011
1	हिण्डोली	99580	115099	89710	106502	189290	221601
2	नैनवा	89733	102334	81668	93736	171401	196070
3	इन्द्रगढ़	58194	66461	53553	61254	111747	127715
4	केशवरायपाटन	72214	79664	65794	74323	138008	153987
5	बून्दी	185097	213602	167077	197931	352174	411533
6	जिला बून्दी	504818	577160	457802	533746	962620	1110906

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, बून्दी

परिशिष्ट – 3

जिला बून्दी : वन एवं वनों का प्रतिरूप (वर्ष 1994-95 से 2002-03)
(वर्ग कि.मी. में)

क्र. स.	वर्ष	आरक्षित	संरक्षित	अवर्गीकृत	योग
1	1994-1995	800.50	647.07	34.77	1482.34
2	1995-1996	800.49	671.61	10.24	1482.34
3	1996-1997	800.49	671.61	10.24	1482.34
4	1997-1998	800.49	671.61	10.24	1482.34
5	1998-1999	834.75	710.59	9.77	1555.11
6	1999-2000	834.75	710.59	9.77	1555.11
7	2000-2001	801.26	693.34	12.85	1507.45
8	2001-2002	801.26	693.34	12.85	1507.45
9	2002-2003	704.38	693.34	13.85	1411.57

स्रोत – जिला सांख्यिकी विभाग, बून्दी

परिशिष्ट – 4

जिला बून्दी : वन एवं वनों का प्रतिरूप (वर्ष 2003-04 से 2014-15)
(वर्ग कि.मी. में)

क्र. स.	वर्ष	आरक्षित	संरक्षित	अवर्गीकृत	योग
1	2003-2004	704.38	693.34	13.85	1411.57
2	2004-2005	804.71	706.65	14.04	1525.40
3	2005-2006	705.85	706.65	16.04	1428.54
4	2006-2007	705.85	706.65	16.04	1428.54
5	2007-2008	705.85	706.65	16.04	1428.54
6	2008-2009	705.85	706.65	16.04	1428.54
7	2009-2010	710.94	712.50	11.60	1435.04
8	2010-2011	710.94	712.50	11.60	1435.04
9	2012-2013	818.89	712.68	11.40	1542.98
10	2013-2014	588.97	579.55	8.98	1177.50
11	2014-2015	552.21	432.14	8.61	992.96

स्रोत – जिला सांख्यिकी विभाग, बून्दी